भोजपुरी के अस्मिता-चिन्तन

भोजपुरी के अस्मिता-चिन्तन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
पहिलका पन्द्रह अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण

भोजपुरी के अस्मिता-चिन्तन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका पन्द्रह अधिवेशन
के अध्यक्षीय भाषण

सम्पादक

आनन्द सन्धिदूत : कृष्णानन्द कृष्ण : भगवान सिंह भास्कर

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका पन्द्रह अधिवेशन
के अध्यक्षीय भाषण

भोजपुरी के अस्मिता-चिन्तन

सम्पादक

आनन्द सन्धिदूत : कृष्णानन्द कृष्ण : भगवान सिंह 'भास्कर'

प्रकाशक

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,
इन्द्रपुरी, पटना-800 024

संस्करण

पहिला, 1997 ई०

मूल्य

200/- रुपया
(सम्मेलन के सदस्य खातिर 100/- रुपया)

फोटो कम्पोजर और मुद्रक

जे० एम० कम्प्यूटर्स
पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-800 003

BHOJPURI KE ASMITA CHINTAN

Presidential Addresses of First Fifteen Sessions of
AKHIL BHARATIYA BHOJPURI SAHITYA SAMMELAN

Edited by
Anand Sandhidoot : Krishnanand Krishna : Bhagwan Singh Bhaskar

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
के पहिलका अधिवेशन (प्रयाग)
के
अध्यक्ष

स्वर्गीय डॉ० उदयनारायण तिवारी

के
पुण्य स्मृति में

अनुक्रम

●

प्रकाशकीय

कवनो काम करे के पहिले आदमी के मन में कुछ सवाल उठेला । आखिर ई काम काहे खातिर कइल जाउ ? एह काम के कइला से का होई ? वगैरह - वगैरह । आ ई सवाल बड़ा स्वाभाविक बा । बाकिर एकर जवाब ओतना सरल स्वाभाविक नइखे । तबहूँ हम रउरा सभे के सामने एह सवाल के जवाब देबे के हिम्मत करत बानीं । सवाल बा कि कंवन अइसन बाध्यता बा, कवन अइसन दबाव बा जवना के तहत अबतक के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण के संकलित संपादित क के निकालल जाउ । एकर उपादेयता का बा, का हो सकेला ?

भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र के पिछिला पचास बरिस के समय के आकलन कइल जाउ त साइत एकरा प कुछ प्रकाश पड़ सकत बा । एह भाषणन के संकलन के पीछे एगो खास उद्देश्य ई बा कि एकनी के एक जगह एकट्ठे केहू पढ़ सके आ भोजपुरी भाषा-साहित्य के बाबत गुन सके । एक साथे एकनी के पढ़ला से भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र के साहित्यिक सांस्कृतिक आ आर्थिक स्थितियनके तस्वीर पाठक का सोझा उभरि के आ सकेला । विभिन्न रूप-रंग, विभिन्न मन:स्थितियन में लिखाइल एह अध्यक्षीय भाषणन के एक ओर जहाँ भोजपुरिया चरित्र आ ओकर पहचान उभर के आइल बा, उहवें भाषा आ साहित्य पर गाझिन चिंतन कइल गइल बा । ललित साहित्य से लगायत लोक साहित्यो के आकलन इन्हनीं में भरपूर भेंटाई ।

'भोजपुरी के अस्मिता चिन्तन' के प्रकाशन का पीछा इहों मंशा रहल बा कि एकरा माध्यम से लोग अपना के जानो-पहिचानो । एकरा प्रकाशन के योजना सुकवि आनंद संधिदूत के मन में उपजल । बाकिर सवाल रहे अर्थ के जे चट्टान अस पहाड़ बन के राह में रोड़ा अस खाड़ रहे । एकरा खातिर ई तय भइल कि एकर खर्चा अगर भोजपुरी के तीन साहित्यिक उठावे त ई सार्थक किताब छप सकत बा । एह योजना के तहत कविवर आनंद सधिदूत, बन्धुवर कृष्णानन्द कृष्ण (वर्तमान महामंत्री अ. भा. भो. साहित्य सम्मेलन) आ भाई भगवान सिंह 'भास्कर' तइयार भइलें । एह लोगन के आर्थिक आ संपादकीय सहयोग के बदौलत ई ग्रन्थ प्रकाशित हो के रउरा सभे के सोझा आ रहल बा। सम्मेलन एह तीनो रचनाकारन के सहयोग खातिर आभारी बा। विश्वास बा, एह ऐतिहासिक दस्तावेज के मनगर स्वागत होई आ सभे रचनाधर्मी संजोके राखल चाही।

दीपावली, 1997

भगवती प्रसाद द्विवेदी
प्रबन्धमंत्री
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना

सम्पादकीय

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संगठन अपना स्थापना का समय से भोजपुरी जवार का आम जनता से लेके विशिष्ट समुदाय तक समराजी तौर पर सकल के अपना ओर आकर्षिआवे में समर्थ रहल ह आ भोजपुरी का सांस्कृतिआउत पृष्ठभूमि पर एकर प्रभाकारी प्रभाव आश्चर्यजनक ढंग से सफल होत लउकल ह । शायद एकर कारन भोजपुरी का उन्नयन के आवश्यकता रहे जवना खातिर पँचवें आ छठवाँ दशक मे अनेकन गो संस्था बनां के आ जलसा-इजलास लगा के प्रयास होत रहल ह । बाकिर एह क्षेत्र का हरेक प्रभावशाली व्यक्ति का राष्ट्रीय समस्या के सझुरावे में बाझ गइले साधन आ संगठनकर्ता के अभाव सफलता का नगीच ना पहुँचे दिहलस आ भोजपुरी आन्दोलन आपन गोड़ लेके ओह गाय नियर बइठे लागल जवन अपने पगहा में अझुरा के लड़खड़ा गइल होखे । एही पगहा के अतीत का बैनर के सझुरा के आकाश में लहरावे के दायित्व अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मिलल जवन अपना आधुनिक स्वर, मौलिक दृष्टिकोण आ नवीन शैली का गतिविधि से भोजपुरी आन्दोलन का सोच, उन्नयन आ अस्मिता के एगो नया उत्साह, एगो नयी दिशा आ एगो नया संकल्प शक्ति देले बा आ अपना पूर्ववर्ती आयोजनन के निष्प्रभावी आ प्रसंगहीन करत चाहे विलीन आ अंगीभृत करत पिछला लगभग पचीस बरिस से साहित्य आ संस्कृति का क्षेत्र में आपन ऐतिहासिक योगदानो दर्ज करवले बा ।

भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का एही सर्जनशील स्वभाव के परिणाम रहे जहाँ एह संस्था का बैनर में भोजपुरी के हरेक रचनाशील आ चिन्तनशील भाइन के विटोर भइल ओहिजे अपना समय के कुल्हिये प्रसिद्धि सिद्ध महानुभाव एह मंच से विचार व्यक्त करत आपन सौभाग्य समझलन आ देखते-देखते भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच भोजपुरी नवजागरण के पर्याय हो गइल आ एकर सालाना जलसा जवन उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश चाहे बिहार का कवनो गाँव-शहर में होला देश-विदेश का हजारन गो सन्त-महात्मा, चिन्तक, विचारक, विद्वान, कवि, कलाकार समेत अनेकन उच्च पदाधिकारी आ राजनेता लोग खातिर एगो सांस्कृतिक मेला हो गइल। लगभग दू दिन तक चले वाला एह सालाना जलसा में आतिथेय का सुस्वादु भोजन का अलावे अनेकन गो विचार गोष्ठी, पुस्तक के प्रदर्शनी आ रात खानी मंच पर परोसल संगीत आ नाटक के आयोजन एकर आकर्षण होला जवना में समय-समय पर अपना फन के विशेषज्ञ प्रसिद्ध व्यक्तियो दर्शन देत आ विचार व्यक्त करत रहलन ।

भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ई संकल्प रहल ह कि ऊ अपना मंच के अध्यक्षता सांस्कृतिक साधना में लागल-जानल मानल वरिष्ठ व्यक्ति के देही आ एही सिद्धान्त का खींचल रेखामार्ग पर अबतक आहूत पनरह गो अधिवेशन में भोजपुरी क्षेत्र के पनरह गो चिन्तनशील, सर्जनशील यशस्वी अध्यापक, विद्वान, कवि, लेखक आ सांस्कृतिक संगठनकर्ता के अध्यक्षीय पीढ़ा पर बइठा के गरिमामंडित भइल जा चुकल बा आ आगे

के नम्पर विकास सीढ़ी पर सीढ़ी शिखरोन्मुख बा । पाठक का हाथ में परोसल जा रहल संकलन एही अध्यक्ष लोग के भाषण ह । ओइसे त ई भाषण रस्मी लिबास में बान्हाइल बाड़न स. इहनी में समारोह के औपचारिकी बा, अध्यक्ष के कृतज्ञता ज्ञापन बा, जवार, इतिहास आ संस्कृति के स्तुति कइल गइल बा ; बाकिर एकरा अलावे अइसन बहुत कुछ बाँचत बा जवन एक बेर ना बार-बार पढ़े लायक बा, हमेशा सोचे आ मनन करे लायक बा ।

साँच पूछीं त एह कुल के एक साथ मिला के पढ़ला पर एगो गजबे के पाठोपरान्त चिन्तन प्रक्रिया प्राप्त होतिया आ अइसन लागत बा जइसे ई पनरहो भाषण कवनो वर्कशाप के ग्रुपवर्क होखे । ओइसहीं पनरहो अध्यक्षन के भाषण मिल के एगो इतिहास के रचना कइले बा आ कुल मिलाके ई सिर्जना एगो धरोहर आ दस्तावेज बन गइल बा !

ई पनरहो भाषण परस्पर कवनो गतिशील प्रबन्ध का सर्ग का ऊपर सर्ग नियर बाड़न स । अगर डा० उदयनारायण तिवारी के भाषण एह अभियान का ''सुमिरन'' नियर बा जेमें ऊ भोजपुरी जनता का विश्व-व्यापी प्रभाव, पीरता, नेतृत्व-क्षमता आ भाषा-साहित्य का सिर्जना में अगहर सहभागिता के आ भोजपुरी का उन्नयन में लागल अनेकन साहित्यकार आ संगठनकर्ता के स्मरण करत मंगलाचरण कइले बानीं त डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के भाषण विषय के स्थापना करत लउकत बा जेकरा बाद एक पर एक आवश्यक अध्याय जुड़त जात बा । एह में कुछ त अइसनो बा जवन कवनो भाषा खातिर रश्क के कारण हो सकेला, जइसे डा० भगवत शरण उपाध्याय के भाषण जवन साहित्यकार कर्तव्य पर बहुत सुन्दर वक्तव्य हो गइल बा । अइसहीं डा० विवेकी राय का भाषण में भोजपुरी का आपन साहित्यकारन के विशद चर्चा आ आचार्य विश्वनाथ सिंह का भाषण में भोजपुरी का साहित्य के सिंहावलोकन बा त श्री ईश्वर चन्द्र सिनहा का भाषण में साहित्य आ संगठन का समस्या पर बेवहारिक विचार आ पं० गणेश चौबे का भाषण में भाषा समस्या पर आधुनिक ढंग से उदार दृष्टिकोण प्रस्तुत भइल बा । एह अध्यक्षीय भाषण पर वृत्तिरंजन के प्रभावो अगर पड़ल बा त ऊ बहुत उपयोगी हो गइल बा जइसे आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा के भाषण यदि शिक्षक नियर सुझावपरक बा त डॉ. विद्यानिवास मिश्र के भाषण सिलिक लेखा ललित निबन्ध का ताना-बाना से झल-झल आ डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय का भाषण में भोजपुरी में ओह समय तक भइल सम्पूर्ण शोध, अध्ययन आ तत्सम्बन्धी विद्वान के एगो छोट-मोट निर्देशिका समाहित बा ! एह संकलन में कुछ भाषण अइसनो बाड़न स जवना में भोजपुरी क्षेत्र का इतिहास पर पूरा रोशनी फेंकल गइल बा । अइसना उल्लेख में पं० गणेश चौबे, आचार्य विश्वनाथ सिंह आ दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती के भाषण प्रमुख बा । रेणुकूट सम्मेलन का बाद भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन समारोह खातिर समारोह ना रहि के वास्तविकता के सोचत लउकत बा । भूत आ वर्तमान का काल चिन्तन में ढेर ना अझुरा के ई संगठन भविष्य का कार्यक्रम पर ढेर विचार कइले बा आ भोजपुरी का उपेक्षा का तल्खियत से भउराइल शब्दन में परिपक्वता लउकत बा । एकर कारन रेणुकूट का बाद छपरा, मुबारकपुर आ गाजीपुर में भइल अधिवेशन में भोजपुरी का आपन ध्वजवाहक दस्ता के एकमुश्तकिया तीन-तीन गो अध्यक्षन के पीठासीन भइल, जेकरा मन में अगर उपेक्षियावल

भोजपुरी का भविष्य खातिर बेअखरा लेसल लउकल त स्वाभाविक बा । कविवर मोती बी० ए० सरकारी साहित्य सहायता के खारिज कइके पुनर्विचार करत कवनो रेखा का सामने बड़रेखा खींच के पहली के छांट करे के रणनीति अपनवले बानीं जबकि कविवर भोलानाथ गहमरी दिशाहीनता में अँजोर खातिर अनशन जइसन आध्यात्मिक बल खातिर तत्पर बानीं । ई आक्रोश के पहिनी अभिव्यक्ति रहे । सम्मेलन के पनरहवाँ आ एह श्रृंखला के अन्तिम अध्यक्ष आचार्य पांडेय कपिल का साथे भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एगो कालखण्ड पूरा हो रहल बा । कारन कि आचार्य कपिल खाली नीति नियामके ना रहली हँ बलुक भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अबतक के सम्पूर्ण सफलता-असफलता का जमा-नाम के दायित्व बोध भी धारण कइले बानीं, एह से उनका अध्यक्षीय भाषण के विशेष महत्त्व बा आ ओह से भोजपुरी का भविष्य अभियान के संकेतो मिलत बा । उहाँ का भाषण में हिन्दी का लोकभाषा सूमह आ हिन्दीतर भारतीय भाषा मंडल से आधुनिक हिन्दी का राजनैतिक सम्बन्ध से उत्पन्न भाषायी विभेद पर जवन प्रहार भइल बा ऊ एकर उदाहरण बा । दिल्ली का भोजपुरी रैली (1996) के विशद चर्चा से भोजपुरी का उत्साह अभियान के प्रेरणो अवश्य मिलल होई ।

वस्तुत: एह पनरहो भाषण का साथ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एगो युग पूरा होत बा जवना के तुलना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रारम्भिक युग से कइल जा सकत बा जवन प्रस्ताव पारित कइला तक लिमिटेड रहे । आगे का मार्ग में शक्ति के आवश्यकता पड़ी । ई शक्ति लेखकीय रचनाशक्ति का साथे नेतृत्व के चिन्तनशक्ति आ सुदृढ़ संगठन के जनशक्ति होई । एह में लेखकीय रचनाशक्ति त समयसिद्ध कार्यक्रम होई बाकिर नेतृत्व के चिन्तनशक्ति जवन सुदृढ़ संगठन के आधार होले ओही इतिहास भउर का चिन्तन-चिनगारी में से लहकी जवन आँख-कान का सोझा देखे-सुने के धइल बा ।

देखत-सुनत के ई पनहरो अध्यक्षीय भाषण भोजपुरी क्षेत्र का सभ्यता-संस्कृति का इतिहास, भोजपुरी भाषा का क्रमिक विकास आ एकर इतर भाष्याउत सम्बन्ध, भोजपुरी के प्राचीन आ नवीन लेखन, अबतक के लेखकीय रंग प्रयोग प्रयास आ तत्परता से जुटल लेखकन के जिकिर, शोध-अध्ययन का सूचना के अनुमार्ग कुंजी आ भविष्य खातिर चिन्तित जन-जन के अभियान आकुलता के पुरहर दस्तावेज बा। ई ओह पाठक के बहुत भायी जे एके जगह भोजपुरी के सम्यक् परिचय बटोर लेबे चाहत बा। भविष्य का भोजपुरी नेतृत्वो के चिन्तन शक्ति के गोमुख अइसने कुल संकलिआवल स्थानन पर सुलभ होई । भोजपुरी का अबतक का एह अस्मिता अभियानो से बहुआयामी चिन्तन विन्दु मिलत बाड़न स ।

एह में पहिली जिकिर त भोजपुरी क्षेत्र का सामुदायिक जीवन का विकास परम्परा के सोचत उठावल ठीक होई । अध्यक्षीय भाषण में अइसन उल्लेख बा आइल बा कि भोजपुरी संस्कृति आर्य जाति के ऊ शाखा ह जवन कट्टरपंथ छोड़ के उदारपंथ अपना लेले रहे आ शरीर बनावट आ रंग भेद से ऊपर उठके सबके साथ लेके पृथ्वी का सबसे सुग्घर प्राकृतिक वातावरण में एगो जीवन ऊर्जा के सृजन कइले रहे। ई ऊर्जा इतिहास में त भोजपुरी के चाणक्य, चन्द्रगुप्त आ स्कन्धगुप्त का रूप में अन्तराष्ट्रीय छवि त देते बा वर्तमानों में अपना शरीर क्षमता, नेतृत्व क्षमता आ युक्ति चातुर्य क्षमता का बल पर

पूरा दुनियां में छवले बा। बाकिर शायद जनसंख्या का दबाव से आज एह क्षेत्र में भयंकर मनोमालिन्य आ संकीर्ण दृष्टि कवनो जतरा पर निकलते दुआर पर खड़ा होके दिशाशूल नियर तिकवत बा जवना से हरेक प्रगति प्रयास आ जनजागरण अभियान के गोड़ उखड़ जात बा। एह पर रोक लगावल जरूरी बा।

भाषा अभियान में पहिली समस्या लिपि बा। भोजपुरी का पास तमिल-तेलगु चाहे मैथिली-पंजाबी नियर आपन लिपि नइखे। लेकिन ई अफसोस के बात नइखे। अइसन बहुत भाषा बाड़ी स जवना का आपन लिपि नइखे। पश्चिमी यूरोप के कुल्हिये भाषा रोमन लिपि में लिखइला का बादो फ्रेंच, अंग्रेजी डेनिश आ जर्मन का रूप में आपन पहचान बनवले बाड़ी स। स्वयं भारते में सिन्धी भाषा का आपन लिपि नइखे। ऊ पाकिस्तान में अगर उर्दू लिपि में लिखाले त भारत में अब नागरी में। प्राचीनो काल में प्राकृत आ अपभ्रंश के साहित्य संस्कृत का संगे-संगे देवनागरिये लिपि में बा। एही से प्राकृत का साहित्य के समीक्षा संस्कृतो में भइल बा। भारत में लिपि विधान के अगर देखल जाव त ओकर कारण सिर्फ अंगुरी के नाचल आ घूमल बा। एह में गुरु-शिष्य का अनुकरण प्रथा के बहुत हाथ रहल ह। चाहे बंगला होखो भा उड़िया, उड़िया, कैथी आ गुरुमुखी ई कुल्हिये लिपि ना हई स, बलुक विशिष्ट शैली के हस्तलेख हई स। ईहे तर्क दक्षिणो भारत का लिखिनिहारी पर दिहल जा सकेला। एह में अझुरइला से नीक बा एह कम्प्यूटर आ वैज्ञानिक उपलब्धि का जमाना में एक लिपि में कार्य होखो ताकि पाठक एक लिपि माध्यम से कम से कम भारत के सँउसे साहित्य पढ़ लेव चाहे ऊ असमी बंगला पंजाबी गुजराती जइसन हिन्दी कुल चाहे आर्य भाषा में लिखल होखे भा तमिल, तेलगु जइसन सुदूर हिन्दी वर्ग के भा दविड़ शैली में।

एह अध्यक्षीय भाषणन में दूसरा विचार शब्द पर भइल बा। एगो जमाना रहे जब बड़े-बड़े विद्वान भोजपुरी लिखे बइठसु त अपना संस्कारितो मन-मस्तिष्क के ऊ गँवार आ जाहिल बना के लिखसु। ओह युग में अदिमी के इमदी आ मास्टर के महटर कहल जाय। असल में ई ऊ चिन्तन काल रहे जे अपना भाषा, भोजन आ भेष का भदेस में आपन अस्मिता खोजे निकलल रहे। एकर प्रभाव अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का पहिला अध्यक्ष डॉ० उदयनारायण तिवारी जी के भाषण तक पर लउकत बा जे रिनी, तपसिया, मानुसतन्तुविग्यान आदि शब्द स्वरूप के प्रस्तुत कइले बानीं। बाकिर पं० गणेश चौबे का अध्यक्षता तक भोजपुरी का शब्द व्यवहार के दृष्टि बहुत स्पष्ट हो जात बा। उहाँ का राहुल सांस्कृत्यायन का नाटकन में आइल शब्दन का तोर मिमोर से चर्चा आरम्भ करत कहले बानी कि "जनमानस राहुल सांकृत्यायन का भोजपुरी लेखन के त मान लिहलसि बाकिर भोजपुरी का सब्दन के (शब्दन के) तूर-मरोर के गँवारू भोजपुरी बनावे का प्रस्ताव पर ऊ सहमत ना हो सकल।" जे भोजपुरी के प्रकृति से परिचित होखे चाहत होखे ओकरा खातिर पं० गणेश चौबे के भाषण मनन करे लायक बा। वस्तुत: पं० गणेश चौबे का भाषण में भोजपुरी लेखन का ओह रूप के चर्चा बा जवन आम सहमति में आ चुकल बा, जवन डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी से लेके आचार्य पांडेय कपिल तक का भाषण में लउकत बा, जवन भोजपुरी का विविध पत्र-पत्रिका का अभिव्यक्ति में बा आ जवना में भविष्य का स्वाभाविक शब्द यात्रा के उपस्थिति लउकति बा।

भोजपुरी में अगर समस्या बा त खाली हिन्दी का व्याकरण के गुलामी के बा। आज जरूरत बा कि धीरे-धीरे शब्द पर से हिन्दी का व्याकरण विधान के उतारत जाइल जाव आ भोजपुरी का व्याकरण के ओपर लपेटत चलल जाव। हालांकि राजकाज के महाभाषा हिन्दी का अभिव्यक्ति प्रभाव के एक-बा-एक हटा दिहले भाषा दुरूह आ नीरस हो जाई बाकिर भोजपुरी के जइसे ठेठ आ भदेस से मुक्त करावे के समयलेवा कार्यक्रम रहल ह ओइसहीं एहू पर ध्यान जरूरी बा।

भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का मंच से कुछ माँग अइसनो बाड़ी स जवन हमेशा से उठावल जा रहल बाड़ी स। अइसना मांग में एगो बा भोजपुरी के साहित्य अकादमी के मान्यता दिआवल आ संविधान का आठवीं अनुसूची में संविधान का रूप में सम्मिलित करावल। ई माँग बहुत पुरान बा बाकिर अबतक सफल ना हो पावल। एकर कारण बा देश का एकता आ अखण्डता के राजनीति जवना का कारण देश में उभरे वाली आंचलिक राजनीति के बगावत मान के निर्ममतापूर्वक दबा दिहल जाला। एही मानसिकता में भोजपुरी के सांस्कृतिको अभिलाषा चकनाचूर हो रहलि बा। ई अफसोसो के बात बा आ निन्दनीयो बा।

वस्तुतः मान्यता के अभियाचना सिअररोआई का फेंकरल नियर संवेदनाहीन हो गइल बा। एकरा पर पुनर्विचार होखे के चाहीं आ नया नीति निर्धारण ज़रूरी लागत बा। कहलो हउए कि–

खुदी को कर बुलन्द इतना
कि, आकर के खुदा पूछे
बता तेरी रजा क्या है !

मातृभाषा के उपयोगवो ईहे बा। राजकाज आ वाणिज्य व्यवसाय के भाषा त बादो में सीख के धन अर्जन आ मान सम्मान प्राप्त कइल जा सकत बा बाकिर एकदम अशक्त, लोआ पोआ, पराश्रित आ संप्रेषण से अनभिज्ञ हालत में मातृभाषा एही से सीखल जाला कि ऊ भविष्य का संघर्ष आ आफत-बिपत में काम आई। जे एकरा के ना माने ओकरो उदहारण बा। अइसना आदमी का प्राण पर संकट आ चुकल बा–

आब, आब कहि बबुआ मुअलन
खटिये तर रहे पानी।

मातृभाषा हृदयिक स्पंदन के भाषा ह आ अवचेतनो मन के तत्कलिही अभिव्यक्ति ह। एहिजा एगो घटना सुनावत सही लागत बा। वाराणसी में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जमाना में कहीं से एगो विद्वान आइल जवन बहुभाषाभाषी रहे आ एलान कइ चुकल रहे कि ओकरा मातृभाषा के केहू पता ना लगा सके। ओकर मातृभाषा पता लगावे खातिर पूरा बनारस के जोर लागल। कल, छल, बल कुल्हिये अपनावल गइल बाकिर सफलता ना मिलल। आखिर में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ओह विद्वान के अपना हवेली में आमंत्रित कइलन। रात में भोजन आदि का बाद जब ऊ विद्वान आराम पाके गहरी नींद में सूति गइल त ओकरा मुंड़ी किहें जोर से एगो हाँडी पटकल गइल। जब ऊ अचकचाइ के उठल त अनचितला में अपना मातृभाषा में पूछए कि का भइल ह ! एह तरे कहल जा सकेला कि मातृभाषा संकट के भाषा ह। आदमी जब संकट में रहेला त मातृभाषा

में गोहरावेला, चिचिआला, रोवल धोवल आ चिरउरी-मिनती करेला चाहे आक्रोश व्यक्त करेला आ बदला लेला ।

मातृभाषा राजकाज के भाषा भल न बने बाकिर आन्तरिक अनुभूतियन के सहज अभिव्यक्ति हमेशा बनत रही । मातृभाषा भले अदालत के फैसला न बनो बाकिर कोर्ट का काउन्टर पर बहस आ फरियाद हमेशा बनत रही । मातृभाषा भले कवनो वीर का छाती पर टांगल तगमा पर न लउको बाकिर युद्ध का मैदान में हुंकार बनके हमेशा व्यूहबेध करत रही आ मातृभाषा भले अंकगणित आ बिज्ञान-तकनीक के कल-पूर्जा तैयार करे के भाषा न बने बाकिर घातक से घातक कवनो मशीन का घरघराहटो में एगो श्रमिक के मस्ती बनल रही ऊ कान पर अंगुरी रख के टीपात रही आ समय का जाँत-ओखर पर जँतसार नियर फूलत-मुरझात रही।

भोजपुरी मन के एगो भावना ह । एह में परम्परा से आइल अइसन शब्द समूह बाड़न स जवन गिर-गिर के बार-बार उठ जाये के अपूर्व प्रेरणा नियर बाड़न स । ई भाषा हजारन साल पहिले योगीजन के भाषा रहलि ह आ ओह युग के मनोविज्ञान एही भाषा में सोचल गइल बा। ई भाषा कबीर का युग में भक्ति आ प्रेम में ढल गइल आ ओह युग के सम्पूर्ण आर्द्र भावना एही भाषा में गावल गइल । अंग्रेजियो राज में युग का पीड़ा आ अन्याय के एह भाषा में अभिव्यक्ति के स्वरूप मिलल आ अभी आजुओ स्वतंत्रता का बाद का मत्स्य न्याय का युग में कुण्ठा आ निराशा का आत्म चिन्तन के समाधान खोजत हताश नइखे लउकति। एतने ना, जे एकरा शब्द सामर्थ्य पर शक करत बा ओकरा जाने के चाहीं कि अगर मजबूत सत्ता के साथ मिल जाय त अंग्रेजी त खाली अमेरिकी सत्ता का बल पर चन्द्रमा तक गइल, भोजपुरी सम्पूर्ण आकाश गंगा हिंड़ोर देबे के ताकति राखति बा । विज्ञान का बारीक से बारीक बारीकी के सूत्रसंवहन करे में भोजपुरी नाबर ना पड़ी!

एकरा के निरा गाल-बजहउल के बात न समझल जाय ! अगर कवनो थान के विकसवे रोक दिहल जाई त ओकर भविष्य के उत्थान पर कइसे शंका कइल जा सकत बा। भोजपुरी का संगे इहे भइल बा। देश के भाषायी राजनीति में भोजपुरी का सहज विकास के अप्राकृतिक ढंग से रोकल गइल बा। ई प्रतिबन्ध ओइसने रहल ह जइसे कवनो ललित स्वर लहरी अभी आधे निकललि कि लोलिया दिहल जाय ।

जेकरा लिपि ज्ञान का सम्हेरा कहु रे भवानी बृजकन्या क हारसुन कि दारगुन की एकमति के डोले कै मन परत होई जे सइया-सइया निनानवे, अन्ठानबे-सन्तान्नबे, छानबे-पंचानबे आ पहाड़ा-गिनती के अउरो-अउरो सामुदायिक स्वर लहरी एक दहाई पांच इकाई दस पाँच पनरह में सम्मिलित भइल होई ऊ एह विचार से सहमत भइला बिना ना रही कि अगर एही कंठस्थ कला के आगे विश्वविद्यालय तक ले गइल रहित, आ भौतिक विज्ञान आ रसायन विज्ञान का सूत्र-फार्मूला में पहिरावल गइल रहित त ज्ञान-विज्ञान के दुरूहता केतना सहजिआइल रहित। अब कहल ई बेकार बा कि ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र में लोक भाषा के अइसन ललित सहयोग पाके हिन्दिये धन्य भइल रहित बाकिर हिन्दिये के आपन विकास यात्रा एतना कुटिल बा कि ओह में सूर-तुलसी निराला-पन्त का साथ गालिब- फिराक आ रवीन्द्रनाथ टैगोर के पढ़ावल कठिन बा. ई

उमेद का कइल जाव कि लोकभाषा का आधुनिक साहित्य के हिन्दी पाठ्यक्रम मे शामिल कइके वृहत्तर हिन्दी के स्थापना कइल जाई । जे हिन्दी के राजनीति करत बा, भोजपुरी आदि भाषा का स्वाभाविक विकास के उपेक्षा करत बा, अवधी ब्रजभाषा का शताब्दियन पुरान सांस्कृतिआउत संघर्ष के दोदत बा ऊ देश का हित में नीक नइखे करत । ई समझे के पड़ी कि गंगा अपना बल पर नइखी बहत असंख्य लघुसरिता के एह में सहायोग बा । देसवो के निर्माण अइसहीं होला ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण के पढ़त खानी अइसने कुल फूल फूलात-निझात बाड़न स । इहन के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से कवनो सम्बन्ध नइखे बाकिर टांकल जरूरी लागल ह । हो सकेला प्रकृति भविष्य में ई चाहते होखे । ई एहू से तर्क संगत लागत बा कि एह वक्तव्य का विचार कुसुम पर अंकुश लगावत एगो अतृप्ति के लुलुआवन अभिव्यक्ति किहें महसूस हो रहल बा जवन बार-बार भारत का भाषायी राजनीति पर भोजपुरी में आरपार बहस के सम्भावना बनत देख रहल बा। अइसन लागत बा कि भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण के प्रकाशन भविष्य का साहित्यिक बहस आ उन्नयन अभियान के एगो रचनात्मक मोड़ देही ।

एह संकलन का प्रकाशन में हमार योगदान बस एतने बा कि आचार्य पांडेय कपिल जी का अध्यक्षीय भाषण के पढ़त आ पूर्ववर्त्ती अध्यक्षन का भाषण के मन पारत ई विचार उठल कि अगर एह विश्रृंखलिआइल सामग्री के संकलनबद्ध कइ दिहल जाय त भोजपुरी भाषा आ साहित्य का विकास यात्रा के समझे में भविष्य का अध्येता के बड़ा मदत मिली । इहे सोच के हम अध्यक्ष महोदय किहें आपन निवेदन रखलीं आ हमरा सन्तोष बा कि सम्मेलन के कार्य-समिति के हुकुम से ई काम हमके मिल गइल, नाहीं त हमसे बढ़ियाँ लिखेवाला, हमसे बढ़ियाँ सोचेवाला, हमसे बढ़ियाँ जानकारी राखे वाला भोजपुरी लेखन का क्षेत्र में भरल बाड़न । एह संकलन में जे शामिल बा ऊ भोजपुरी के आदरणीय व्यक्तित्व रहलि ह । ओह सभन के पढ़े के हमके मोका मिलल आ अपना कलम से नाँव टांके के सौभाग्य मिलल एहसे हम धन्य भइल बानीं । एही क्रम में कवनो त्रुटि खातिर अगबढ़ क्षमो प्रार्थना बा ।

प्रेमधन मार्ग, मिर्जापुर —आनन्द सन्धिदूत

दिनांक 12.1.97

भोजपुरी के अस्मिता-चिन्तन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका
पन्द्रह अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पहिला अधिवेशन

प्रयाग

(8-9 मार्च 1975)

के

अध्यक्ष

(डॉ०) उदयनारायण तिवारी

के

भाषण

देवी लोग आ भाई-बन्धु सभे,

आज हम अपने सभन के बहुत रिनी बानी कि हमरा के एह सभा के सभापति होखे के मोका आ सम्मान दिहलीं । 'भोजपुरी साहित्य परिषद्' प्रयाग का ओर में ई 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' अइसना समय में हो रहल बा जब कि देस के बहुत भाग में राजनीति के तूफान आ बवंडर उठि खड़ा भइल बा । आजु चारों ओर खाली राजनीति आ रुपये-पइसा के संकट नइखे खड़ा भइल, बलुक सबसे बड़ संकट त ई बा कि आदमी के चालि-चलन, आचार-बेवहार बहुत नीचे गिर गइल बा । कवनो गाँव-नगर अइसन नइखे जहवाँ महँगाई, मिलावट, कालाबजार आ चोरबजार के बोलबाला ना होखे । जो साँच पूछल जाय त हम कहब कि एह तरह के बात सउँसे संसार में फइल गइल बा । भोजपुरियो इलाका, खास करके पूरुबी उत्तर प्रदेश आ पच्छिमी बिहार एकरा हवा-पानी से छूटल नइखे। इतिहास एह बात के गवाह बा कि देस में जब-जब एह तरह के संकट आइल बा, ई समूचा भोजपुर इलाका चिन्ता से बेयाकुल होके बहुत-कुछ तियाग कइले बा । ई सबूत देबे के जरूरत नइखे कि इहवाँ के लोगन में देस-प्रेम के केतना लगन आ सरधा बा । सन् अठारह सौ संतावन के महाबली बीरबर कुँवर सिंह आ बहादुर सिरोमनि श्री मंगल पांड़े जी से लेके सन् 1920-21, 1930-32 आ 1942 के आन्दोलन में भोजपुरी के जेतना लोग बलिदान भइल, ओह सहीदन के एक-एक गाँव आ एक-एक नगर जुग-जुग तक ले याद करी । आजुओ हमरा पूरा-पूरा भरोसा बा कि देस के सामने कवनो तरह के संकट अइला पर ई टप्पा सबसे आगे बढ़ि के एकरा गौरव आ मरजाद के रक्षा करी ।

भोजपुरी पच्छिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश आ छोटानागपुर का लोगन के आपन मातृभाषा ह । ई भोजपुर, रोहतास, पलामू, सारन, चम्पारण, पच्छिमी पटना, मुजफ्फरपुर, पूरा गोरखपुर आ बनारस कमिश्नरी के हर जिलन में बोलल जाले । बिहार का राँची जिला में सदानी का रूप में जवन बोली बोलल जाले, ऊहो भोजपुरी से बहुत मीलत-जूलत होले । मध्य प्रदेश का रायगढ़ आ सुरगुजा जिला के पूरुबी भाग भोजपुरिये

ह। नेपालो का तराई का सात जिलन में भोजपुरी बोलल जाला। भोजपुरी एगो साहसी आ बीर लोगन के बोली ह, जेकर बोले वाला लोग भारत आ भारत के बाहरी दुनियाँ के हर क्षेत्र में मिलिहन। एही लगले हम ई बता दीं कि 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' नागपुर में जेतना बिदेसी लोग भाग लेबे खातिर पिछला जनवरी में बाहर से आइल रहस ऊ करीब-करीब सभे भोजपुरी बोले आ समुझे वाला लोग रहे। अपना देश के बड़े-बड़े शहरन में जइसे दिल्ली, कलकत्ता,बम्बई, कानपुर वगैरह में भोजपुरी लोगन के बहुत बड़ तयदात बा आ ई सभ केहू बड़ा संगठित होके रहेला। ई कुल्हिये नगरन में भोजपुरी समाज, भोजपुरी परिषद्, भोजपुरी संसद, साहित्य परिषद् अइसन नाँव के संगठन कायम हो चुकल बा। अइसने कुल्हि संगठन के झंडा के छाया तर खास-खास तिहुआर पर बटुरा के लोग ओइजा आपस में गले मीलेला, खुसी मनावेला। ईहे ना, अपना बहुत से समस्या के बारे में लोग बूझो-बिचार करेला।

हम पहिलहीं कहली हाँ कि भारत के बाहरो भोजपुरी बोले वाला बहुत बिदेसी लोग बा। हिन्दी महासागर में मोरिशस, अउरी ब्रिटिश गाइना मतिन बहुत छोट-छोट टापुअन में भोजपुरी लोग बसल बा। पूरा मोरिशस में बोले जाये वाली बोली 'क्रियोल' में भोजपुरी के बहुतायत सबद के बारे में उहाँ के रहवइया लोग खूब जानता। खास करके फ्रेंच आ भोजपुरी से मिलके ई 'क्रियोल' भाषा कहाला। मानुस-तन्तु-बिग्यान, भाषा-बिग्यान का बिचार से आजो एह टापुअन में भोजपुरी जाति का लोगन के सोभाव आ भासा के कुछ अइसन चलन मीलेला जवन कि अपना इहाँ खतम हो गइल बा। एह बातन से त ई बहुत साफ हो गइल, कि भोजपुरी बहुत दूर-दूर तक फइललि बा।

हम ऊपर जवना बाति-बेवहार आ नेति-नियम गिरला के जिकिर कइले रहली हाँ, ओपर विचार कइल जाई त मालूम हो जाई कि एकर खास कारन पढ़ाई के ढंग आ विषय वस्तु का साथ-साथ पढ़ाई के भाषा के कठिनाई बा। हमहन के सुराज मिलले आजु सताइस बरिस होता, बाकिर अब तक ले देस में एगो राष्ट्रभाषा के हर जगह नइखे मानल जात। आजु देस के सभे भाषा, अँगरेजी के बोझ से दबा गइल बाड़ी स। अँगरेजी राज के खतम भइला के बाद ई बात जरूरी रहे कि अपना तरक्की आ विकास में लागल बाहरी मुलुकन का तरह अपनो देस में पढ़ाई लिखाई के तौर-तरीका अउरी सरकारी भाषा में बदलाव आवे आ एह देश के एगो अइसन भाषा होखे जवन पूरा देस के भाषा कहाय आ सभे देस बासी एपर घमंड से आपन माथा ऊँच कर सके। बाकिर बहुत दुख के साथ कहे के परत बा कि एह ओर हमनी के कोसिस जेतना होखे के चाहत रहे ओतना ना भइल, आ ना त होता। एसिया में चीन, जापान, इन्डोनेसिया, कोरिया, स्याम, आ लंका में शिक्षा के संगे सासन के भाषा ओही देस के आपन भाषा ह। चाहे दोसर देस, ओकरा भाषा के बोले-समझे के गियान राखत होखे भा ना राखत होखे। अपना देस में बिदेसी भाषा के जरिये शिक्षा दिहला से, पढ़ाई-लिखाई महंगा त होइये गइल बा, संगे संग करोड़न बिद्यार्थियन के तेज विभाग आ बुद्धि दबि के माटी हो रहल बा। इहे कारन रहे कि महतमा गाँधी जी देस के पौरुख जगावे खातिर कई तरह के ठोस काम हिन्दी के जरिये करे में आपन दिमाग लगवले।

आजादी मिलला का बाद कानूनन हिन्दी के राजभाषा के जगह मिल गइल अरी 26 जनवरी सन् 65 से त ई पूरे तरह से आपन जगह पा गइलि। अंगरेजी के बेवहार तब तक के वास्ते मीलल बा जब तक कि देस के हर राज्य हिन्दी के सरकारी काम-काज में ना अपना ली। बाकिर ई एगो अइसन ढिलाई के बात बा कि एकरा में सचहूँ अबहीं बहुत समय लागी। भोजपुरी टप्पा त सुरुए से हिन्दी के अपना के ओकर

पूरा-पूरा गाँव आ नगर में सगरो बेवहार कइ रहल बा । ई खुशी के बात बा कि अबहीं हाले में प्रदेशन का सबसे बड़का कोर्ट (जइसे मध्य प्रदेश, बिहार,उत्तर प्रदेश आ राजस्थान वगैरह) में अब फैसलो हिन्दी में लिखाये लागल । गैर-हिन्दी प्रदेशन वालन के ई कहनाम बा कि हिन्दी भाषा भाषी लोग पहिले कुल्हि काम हिन्दी में काहे नइखन करत । एह बात पर सचहूँ हमरो आ रउरो सबके सोचे के जरूरत बा ।

उत्तर भारत में हिन्दी से मिलत-जुलत बहुते भाषा बाड़ी स जवना में हम पंजाबी, सिन्धी आ कश्मीरी वगैरह के गिन सकीला । बाकिर हिन्दी के सबसे निगिचा उत्तर भारत का अउरी भषन में हम नीचे बतावल सभे भाषा के लेतानी आ मिलान का बिचार से सबके चार वर्ग में बाँटतानीं (1) बाँगरू, ब्रज आ गढ़वाली (2) मारवाड़ी, मेवाती आ राजस्थानी (3) अवधी, छत्तीसगढ़ी आ जनपद के खड़ी बोली (4) मैथिली, मगही आ भोजपुरी । हम बथेलखंडी के अलग भाषा का रूप में ना लेके अवधिये में राखब आ ओही तरे कनउजी के भेद रहलो पर ब्रज में राखब । एहमें बनावट का खियाल से हरियानवी, ब्रज आ बुन्देलखंडी एक वर्ग में अउरी राजस्थानी, मारवाड़ी, पहाड़ी आ मालवी दोसर वर्ग के बाड़ी स । अवधी आ छत्तीसगढ़ी तिसरा वर्ग के भाषा ह । मैथिली, भोजपुरी आ मगही चउथा जगहा पर आई । करीब-करीब बहुत आदमी जवना में कुछ भाषा-विग्यान के लोग बा एह सबके हिन्दिये के बोली मानेला । साँच बात त ई बा कि भाषा आ बोली के फरक साफ-साफ अलग करे वाली कवनों रेखा नइखे । धरम आ राजनीति के सहारा आ बल पाके कवनो बोली भाषा बन जाले । कश्मीरी आ पंजाबी एही तरह के बोली हउए जवना के आज कानूनन चउदह भषन में जगहा आ मान्यता मिल गइल । भारत में हम ऊपर के बयान कइला में भाषा के बोली कहीं चाहे भाषा, एमें कवनो फरक परे वाला नइखे । कुछ लोग ई समझेला कि एह सब भाषा के हिन्दी के बोली मान लिहला से हिन्दी एगो मजबूत भाषा कहाये के अधिकार पा जाई । बाकिर ई खाली भरम कहाई । हिन्दी के तागत त एह में होई कि ओकरा से अलग-अलग कुल्हि बोलिन के तागतवर बनावे खातिर उहाँ के लोगन के कुछ करे के चाही । ओकरा के आपन मातृभाषा के रूप में बढ़ावे के चाहीं । आज संसार के भाषा के रूप में अंग्रेजी आ रूसी भाषा के एही से इज्जत बा कि इन्हन के दूसरो भाषा बोले वाला लोग अपनवले बा । रहि गइल भोजपुरी के बात, त एहिजा के लोग सूरू से हरदमें हिन्दी के पछपाती आ प्रेमी ह । जवना घरी भोजपुरी क्षेत्र में खड़ी बोली हिन्दी के मान-मर्यादा ना रहे ओह घरी इहवाँ काव्य भाषा का रूप में ब्रज के चलन रहे । बाकिर जइसहीं अठारहवीं सदी के अंत आ ओनइसवीं सदी का सूरू में सब लोग गद्य खातिर एक भाषा के जरूरत समुझल, भोजपुरी भाषा के लोग एहू काम में सबसे आगे आइल।

एह सम्बन्ध में ई बतावल जरूरी बा कि देस में जवन चारिगो बड़का गद्य के लीखे वाला विद्वान लल्लू लाल, इंशा अल्ला खाँ,मुन्शी सदासुख लाल आ पंडित सदल मिसिर के नाँव लीहल जाला । ओमें से पं० सदल मिसिर जी भोजपुरी बोलेवाला रहलन । उहाँ का बिहार में आरा के रहे वाला रहीं । उनकर गद्य एतना जोरदार होत रहे कि आज के खड़ी बोली के ऊ रीढ़ कहाई । साँच कहल जाय त हिन्दी गद्य शैली का क्षेत्र में पं० सदल मिसिर के मोल आज ले केहू ना बूझल । हमार त कहनाम ई ह कि आज के हिन्दी कलकत्ता से चलि के बनारस आ प्रयाग आइलि आ उहें धीरे-धीरे पश्चिम का ओर बढ़ि गइलि । एह बात के जनलो पर कि ओह हिन्दी के आधार एकदम

पच्छाहीं ह, तबहियों ओकें आगे बढ़ावे आ मजबूत बनावे में पूब के लोगन में भोजपुरी लोग जवन मदद कहले ह, ऊ इतिहास में सोने का अक्षर से लिखाई । भारतेन्दु बाबू से लेके पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, पं० रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य शिवपूजन सहाय आ पं० राहुल सांकृत्यायन मतिन हिन्दी के सेवा करे वाला लोगन के काम केहू ना भुला सकेला । साँच पूछीं त हिन्दी पूरा एशिया के भाषा ह । संसार में चीनी आ अंगरेजी बोले वाला लोगिन के गनती का विचार से हिन्दी तिसरा नम्बर पर बा । ई दुरभाग के बाति बा कि हमनी का राजनीति में एतना कमजोर बानीं जा कि राष्ट्रसंघ के सब भषन में एकरा के अबहीं ले जगह ना मीलल ।

ई भोजपुरी लोगन के गर्व बा कि बहुत पहिले से एह अनमोल हिन्दी भाषा के अपना पढ़े-लिखे आ शिक्षा के भाषा बनवले बा । एपर जे लोग हिन्दी आ भोजपुरी में कवनो विरोध समझेला ऊ सच्चाई के समुझला से बहुत दूर बा । एह तरह हिन्दी अउरी उत्तरी भारत के बोलिन का चरचा में एगो बाति इहो बता दिहल चाहतानीं कि हमरा देस में राजनीति के असर एतना जियादे बा कि हमनी के घियान सब बोलियन का गुन-महत्त्व पर जाते नइखे । असल में हरियानवी, ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी, मगही, मैथिली, भोजपुरी आ बिहार के अंगिका आ बज्जिका, अइसन बोली ना ह, जवना के खाली हिन्दी के बोली कह दिहला से समस्या सझुरा जाई । ऊपर बतावल चारि वर्गन का (बोली चाहे भाषा) शिक्षा-दीक्षा के भाषा हिन्दिये बा, तवनों पर एह इलाकन में हिन्दी के शिक्षा कइसे देबे के चाहीं, एह विषय पर आजु ले ना त हमहन के आ ना त सरकारे के घियान गइल । राज-सरकार त एह ममिला में मैभा वाला बेवहार करते बिया । दिल्ली में हिन्दी के बढ़ंती पर विचार करे खातिर एगो संसद के लोगन के मंडल बा जवना के एगो सदस्य श्री गंगाशरण सिंह जी बानीं। लोकसभा के बहुत सदस्य लोग ई समझेला कि जेतना जोरदार आ महत्त्व के बोली हई स, अब ऊ कुछुवे दिन के मेहमान बाड़ी । अउरी उन्हनी का जगह पर जल्दिये हिन्दी आ जाई । बांकिर अइसन भइल संभव नइखे । अँगरेजी अइसन बलवान भाषा के रहले आजुओ वेल्स अउरी आयरलैंड के लोग आपन धरती के बोली 'केल्टिक' के बेवहार करेला । जब प्रिन्स आफ वेल्स दीक्षान्त-समारोह का मोका पर वेल्स यूनिवर्सिटी में जालन त उनका लचार होके पहिले 'केल्टिक' भाषा में कुछ बोलहीं के परेला । संसार के सबसे जियादा बली भाषा अँग्रेजी जब अतना कमजोर भाषा 'केल्टिक' के ना मेटा सकलि, त ई कइसे केहू उमेद करता कि इहाँ के क्षेत्रीय बोलियन के 20-30 बरिस में ओके हिन्दी मेटा दी? एह उदाहरन से भारत सरकार आ राजसरकारन के ई कुल्हि बोलिन के असलियत के समझे के परी । एहू बोलिन के साथ प्रेम से बिचार करके परी । साथ-साथ हिन्दी के पढ़े-पढ़ावे में नया तरीका आ नया रास्ता अपनावे के परी । एकरा खातिर हमार दू गो सुझाव बा ।

भाषा के जवन चारि गो वर्ग बतवली हाँ, ओह क्षेत्र में हिन्दी पढ़ावे के जवन काम हो रहल बा, ऊ तरीका ठीक नइखे। एकरा पीछे जरूरी बा कि एह क्षेत्रन के बोली आ हिन्दी भाषा के ताल-मेल से पढ़ाई-लिखाई, कुछ खास भाषा-विग्यान के जानल-मानल विद्वान लोगन से करावे के चाहीं। एह क्षेत्र का भाषा-भाषी लोगन के हिन्दी पढ़े-पढ़ावे में जो मुश्किल परत होखे त ओकरा के हल करे खातिर प्राइमरी आ सकेन्डरी स्कूल का शिक्षकन के भाषा-शिक्षा का विचार से ओह विषय पर शिक्षा दीहल जाय । एकर

नतीजा ई होई कि लोग बहुत थोर समय में हिन्दी लीखे आ बोले सीख जाई । हमरा देस में आजुओ अनपढ़ लोगन के तयदात बहुत जेयादा बा आ जबले अइसने हाल रही तबले हमनीं का असल में ना त प्रजातंत्र के माने वाला कहा सकीले आ न त आजादी के कवनों फायदे उठा सकीला आ एहसे ई जरूरी बा कि दुसरका तरीका से सब अनपढ़ लोगन के पढ़ाई करावल जाव।

एह बारे में हमार सुझाव ई बा कि ऊपर बतवला मोताबिक चार वर्गन का क्षेत्रन में नागरी लिखावट के परचार कइल जाय आ अनपढ़ लोगन में ओकर अभ्यास ओही बोली में पढ़े वाली किताब तैयार कराके दीहल जाय। ई भागि के बात बा कि एह सब बोलिन के क्षेत्रन में बहुत विद्वान गद्य आ पद्य के लिखे वाला मवजूद बाड़न । एहू विद्वानन का किताबन के परचार-परसार से निरक्षरता कुछुवे बरिस में हटावल जा सकेले । असल में शिक्षा में ई दूनों जो साथ-साथ चलसु त एक ओर जहवाँ हिन्दी के चउतरफा परचार आ परसार हो जाई, उहवें लोग हिन्दी के थोरहीं समय में सीख लीही आ देस से जल्दिये निरच्छरता दूर भागि जाइत । एह तरे भाषा पढ़ावे के दू गो ढंग हो जाई । एगो लइकन खातिर आ दूसर बड़ लोगन खातिर । भोजपुरी एगो बीर आ बहादुर जाति के भाषा भर नइखे, बलुक एकरा में गंभीर आ ऊँच गद्य-पद्य साहित्य के रचना हो रहल बा । पिछिला 1972-73 में भोजपुरी इलाका से बाहर इहाँ प्रयाग में 'भोजपुरी कवि सम्मेलन' जवन भोलानाथ गहमरी जी करवले रहनी ऊ बहुते सफल भइल आ एहू नगर में ओकर बड़ी चर्चा रहे । अवधी आ ब्रजभाषो में अइसने सफल कवि सम्मेलन सुने में आवत रहेला । आजु एहू लोक-भाषा के कवि सम्मेलन के, दिल्ली, कलकत्ता आ बम्बई के लोग बहुत आदर आ प्रेम से सुनि रहल बा ।

ए तरे जइसन कि पहिले बतावल गइल ह, भोजपुरी के गद्य-पद्य दूनों में साहित्य बहुत सुन्दर आ धनी हो रहल बा । पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय 'अँजोर' (पटना) के सम्पादक भोजपुरी भाषा के परकासित साहित्य के एगो सूची तैयार करवले बानी । ओमें भोजपुरी में लीखल केतना काव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास,लेख, कहानी आ कई तरह के रचनन के नाँव बा। भोजपुरी खातिर ई गौरव के बात बा कि श्री स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी भोजपुरी में 'बउधायन' (बौध-लीला) महाकाव्य के रचना कइनी हाँ, जवन जल्दिये छपे वाला बा। सभके ई जानि के खुशी होई कि रामायन मतिन ग्रन्थनों के रचना भोजपुरी में भइल बा । एह तरे भोजपुरी के गद्यो के बढ़ावे आ सम्मान दिआवे में पं० गणेश चौबे, डा० विवेकी राय, चतुरी चाचा, स्व० आचार्य महेन्द्र शास्त्री आ बहुत कहानी उपन्यास लिखे वाला लोग बा जे दिन रात एह में लागल रहल । स्व० बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, पं० राहुल सांकृत्यायन आ कविवर मनोरंजन जी के लगन अउरी महान रचना खातिर हरमेसा याद कइल जाई । एह सिलसिला में हम जमशेदपुर का भोजपुरी भाषा-सेवकन के आ आरा के श्री रघुवंशनारायण सिंह के भोजपुरी सेवा खातिर साधुवाद दे तानीं । बनारस के 'भोजपुरी संसद' के सेवा आ मदत जेकर थापना में स्व० डाक्टर स्वामीनाथ सिंह जी के खास हाथ रहे, हमेशा याद कहल जाई । ऊहाँ का साँस रहते दम तक कई किताबन के छपवा-छपवा के भोजपुरी साहित्य के बढ़ावा दिहनीं आ आजु के 'भोजपुरी कहानियाँ' के जनम उनहीं के देले हई । ई कुल्हि लोगन के अलावा जे-जे सेवक लोगन के नाँव हम नइखीं ले पावत, ओहू सबके तियाग तपसिया खातिर हमनी का रिनी बानी जा।

हम सब लोगन के भोजपुरी के बढ़ंती खातिर बराबर कोसिस करत रहे के चाहीं। करीब सात-आठ करोड़ लोगन के ई भाषा, जवना के संसार के हर कोना में बोलल जात बा, साहित्य-अकादमी से अबतक मान्यता ना मीलल, एकरा के हम अपने कमजोरी समझतानीं । आजु एह सभा के खुसी बा कि 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के थापना पटना में हो चुकल बा, जवना का पहिलका अधिवेशन में रउवा सभे इहाँ इकट्ठा भइल बानीं । अब मीलि-बइठि के एकरा के आगे बढ़ावे में सबके जुटि जाये के चाहीं । एकरा खातिर सरकार से एक्को पइसा के मदत लीहल एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ठीक ना होई । काहें कि जहाँ सरकारी पइसा आई, उहाँ सम्मेलन सरकारी हो जाई आ सरकार से मदत मिलला से लोगन में गुटबन्दी हो जाई । हमनी का चाहीं कि बीसन लाख लोगन के एक-एक रुपया के सदस्य बनाईं आ ओसे मीलल धन से भोजपुरी कथा साहित्य, काव्य, नाटक, एकांकी आ बेयाकरण के सुन्दर किताब-पोथी छापल जाय । धन के कमी से भोजपुरी के बहुत से किताब अच्छा ढंग से छपि नइखी स पावत, ई बड़ा हँसी आ दुख के बात बा ।

अपने सभ हमार बात एतना देर ले मन लगा के सुनलीं, एकरा खातिर हम बहुत रिनी बानीं । आजु इहवाँ सभा करवला, सबके एक जगह जुटवला के आ भोजपुरी साहित्य सममेलन के एह नगर में मंच दिहला खातिर एकर आयोजक लोगिन के, जे बहुत तकलोफ उठावल, दिन-रात दउढ़-धूप कइल, ओह सबके हम अपना ओर से आ रउरी सभ का ओर से बहुत-बहुत धनिबाद देत बानीं।

जय हिन्द

जय हिन्दी-जय भोजपुरी

—उदयनारायण तिवारी

अखिल भारतयी भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

दोसरका अधिवेशन

पटना

(15-16 मई 1976)

के

अध्यक्ष

(आचार्य डॉ०) हजारी प्रसाद द्विवेदी

के

भाषण

बन्धुगण,

अपने सभ हमरा के बहुत बड़ाई दिहलीं जे एह सम्मेलन के सभापति बनवलीं । एह कृपा खातिर हम बहुत आभारी बानी । हमार मातृभाषा भोजपुरी जरूर बा बाकिर हम भोजपुरी के कवनो खास सेवा नइखीं कइले । हम त इहे समझलीं हाँ जे अपने सभ में उदारता बहुत बा आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनो के समान भाव से प्रेम करीले । अइसन ना होइत त हमरा नियर आदिमी के, जे सही माने में 'ना देव के ना लोक के' बा, ओकरा के काहें बोलइतीं । माननीय पांडे जी के हुकुम भइल जे आवे के होई, चुपचाप राजी हो गइलीं। मगर जब उहाँ का कहलीं जे सभापति के भाषण लिखि के ले आवे के परी त थोरिका चिन्ता भइल । बड़ बना दिहला से केहू बड़ थोरे हो जाला ? कुछ भीतरो होखे के चाहीं । कबीर दास जी साइत भोजपुरी के आदि कवि हवीं । उहाँ का कहि गइल बानी जे, 'जो रहे करवा त निकसै टोंटी'। बधना में पानी रही तबे त टोंटी से निकसी ? इहाँ एको ठोप पानी नइखे । सोचत रहलीं जे भोजपुरी त आपन मातृभाषा ह, ए में लिखल बड़ा सोझ होई । अब देखतानीं जे सोझे डांड़ि खींचल सभसे टेढ़ काम बा, टेढ़ डांड़ि खींचे में कवन मेहनत बा । रोजे जवना भाषा में बोलल जाता ओही में लिखल कठिन काम लागत बा । कवनो भाषा आ बोली में लिखे खातिर कुछ साधना चाहीं, कुछ पहिले से आदत डाले के चाहीं, कुछ मेहनत-मसक्कत क लेबे के चाहीं । ऊ सभ अपना में ना देख के मन ऊभ-चूभ हो गइल बा । अब त अपनहीं सभ के आसरा बा, सभापति बनवलीं त ओकर भारो अपनहीं सभ के सम्हारे के परी ।

भोजपुरी बहुते शक्तिशाली बोली ह । लोक साहित्य के त अइसन भंडार अउर जगह साइत नइखे। महावरा, लोकोक्ति, व्यंग्य-विनोद के त एकरा पासे खजाना बा । कुछ लोकगीतन के संगेरे के थोर-बहुत जतन भइल बा, एकाध कोसिस महावरा वगैरह के बटोरे के भी कइल गइल बा, बाकिर ई सभ काम समहुते बरोबरि बा । जतना काम भइल बा, ओतने से ई पता चले में कवनो कठिनाई नइखे रहि गइल जे शक्तिशाली भाषा

होखे खातिर जइसन गुन गरवर चाहीं, एकरा में पूरा बा । एकर बोलेवालन के तदादो बहुत अधिक बा । चार-पांच करोड़ त होइबे करी । अपना देस में, अउर बाहरो बहुत कम भाषा होइहें जेकर बोले वालन के तदाद एतना बड़ होई । बोले वालन के तदाद एतना बड़ बा जे बहुत बड़का कहाए वाली बहुत भाषा भा बोलिन से भोजपुरी कहि सकेले जे 'जवन तोहरा घरे भोज तवन हमरा घरे रोज'। भोजपुरी लोगनि में अपना बोली के अभिमानो बहुत बा। देस में रहो तऽ, विदेस में रहो तऽ, भोजपुरी घर में अपने भाषा बोली । ग्रियर्सन साहेब त लिखले बानी जे अइसन भाषा प्रेम उन्हका अउर कहीं ना मिलल । सभ बा, लेकिन भोजपुरी हमेसा देस के अखण्डता के बात सोचेला । देस के अखण्डता के खतरा होई त ऊ अपना प्रिय से प्रिय चीजो के बाधा ना देबे दी । हमेशा भोजपुरी के नजर देस का एकता पर रहेला । एह खातिर ऊ सभ तियागि सकेला । भोजपुरी के ई गुन जग-जाहिर बा । एमें कतहीं खोट ना मिली । ई बात नइखे कि ओकरा में अपना घर में बोले जाए वाली सब से मीठी बोली के अभिमान नइखे, ईहो नइखे कि ऊ अपना बोली में कविता भा गाना लिखल छोड़ देले बा, मगर ऊ कबहीं अलग हो के रहे के बात ना कइलस । हमनी के जवन सार्वदेसिक स्वीकृत भाषा हिन्दी बा ओकरा के गढ़े- सँवारे में त भोजपुरी लोगनि के सबसे बेसी जोगदान बा । सदल मिश्र आ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ले के आजु तरीक बहुत बड़-बड़ साहित्य-निर्माता भोजपुरी लोग रहलन हा । सदल मिसिर जी का बारे में त हमरा नइखे मालूम जे उहाँ का भोजपुरी में कुछ लिखले बानी कि ना, बाकी भारतेन्दु जी त निश्चित रूप से बनारसी बोली में बहुत बढ़िया कविता लिखि गइल बानी। मगर अपना घर का बोली के प्रेम अछइत उहाँ सभे सार्वदेसिक भाषा के गढ़े-सँवारे में जीव आ जान लगा दिहलीं। अपना बोली के प्रेम भी बनल रहल–सार्वदेसिक भाषा के भी ओतने, बलुक कुछ अधिके, प्रेम उहाँ सभ के रहल । बाकी कबहीं उहाँ सभ ई ना कहलीं जे अपना बोली के अलग कइ दियाउ । ओ सभका मन में सोगहग प्रेम रहल ।

'सोगहग' जानते होइबि । लइकइयाँ में हमार बड़की पितियाइनि–हमनी का उहाँ के 'बाबूजी बो' कहत रहलीं जा– उहाँ का खास भोजपुरी गाँव के बेटी रहलीं आ कथा-कहनी के त उहाँ का पासे भण्डारे रहल–एगो कथा सुनवले रहलीं । कथवा भुला गइल बा, मगर ओकर नायक एगो राजकुमार रहले, कवनो सराप से बेंग हो गइल रहले । उन्हकर हठ रहे कि हम सोगहगे लेब । बहुत बहुत फितकाल में परले बाकी सोगहग खातिर अरियाइले रहले । कुछु साल पहिले डा० शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग वैतरनी' में सोगहग शब्द मिलल त हम सोचे लगलीं कि ई 'सोगहग' कइसे आइल । खोजत-खोजत संस्कृत में एगो शब्द मिलल 'सयुगभाग'-दूनों हिस्सा समेत-पूरा । हमरा ई बुझाइल जे 'सोगहग' एही शब्द के परवर्ती रूप होई । भोजपुरी के सोगहग प्रेम, आपन पुरान अर्थ में 'सोगहग' होला । घर के बोली के प्रेम आ देस के बोली के प्रेम–प्रेम के दूनों हिस्सा मिलाके सोगहग–सयुगभाग ! भोजपुरी आदिमी पुरानी कथा के राजकुमार हऽ–सोगहग के प्रेमी । भोजपुरी बोले बालनि पर आर्थिक कमजोरी के सरापो साइत लागत बा । एही से ई लोग कुछ बेंगिया गइल बाड़न । एह लोगन में माण्डूक्य वृत्ति जरूर कहीं-ना-कहीं रह गइल बा । मगर लिहें त लिहें सोगहगे ।

'सोगहग' प्रेम कवनो बाउर चीज ना हऽ । निमने हऽ । निमन अर्थात् निर्मल, निष्कलुष ! बहुत दिन से स्वच्छ साफ बतावे खातिर ई शब्द चलल आवता। प्राकृत में 'निम्मल' चलत रहे निम्मल मरअद-माअण परिट्ठिया संखसुत्तिव्व–निर्मल-मरकत भाजन

परिस्थिता शंख शुक्तिरिव। बहुत बोलिनि से ई उठि गइल, बाकिर भोजपुरी में बनल बा । का जाने काहें । अइसन बुझाता कि ए बोली के बोले वाला निर्मलता के भुला ना सकले । मगर इहो कइसे कहीं? गाँव में एगो निमंत्रण-पत्र शुद्ध हिन्दी में मिलल । निमंत्रण देबे वाला लोग कहे के चाहत रहे कि निम्मन निम्मन आदिमी बोलावल गइल बाड़े । शुद्ध हिन्दी में लिखल लोग जे 'निम्न निम्न आदमी बुलाये गये हैं' । छोड़ींए बात के । एतना त साफे बुझाता जे शुद्ध हिन्दी ठीक से पचत नइखे । तबो जवन भोजपुरी के सहज गुन ह, ओके छोड़ के ना चाहीं । थोरे नुकसानो होखे तबो ना छोड़े के चाहीं-- धरम करत में होखे हानि, तबो न छोड़ीं धरम के बानि' । सोगहग के प्रेम, मगर निर्मल चित्त से, ई सही रास्ता लागत बा ।

तनी खुलासा कइके मतलब समुझावतानी । पुराना जमाना से एह देस में दू तरह के भाषा के प्रयोग होत आवत बा । लोकभाषा आउर अभिजात संस्कृत भाषा । कई बार लोकभाषा में बढ़िया साहित्य लिखाइल । थोरहीं बाँचल बा, बेसी त नष्ट हो गइल । बौद्ध लोगनि के, जैन लोगनि के विशाल धार्मिक साहित्य ओह जमाना का लोक प्रचलित बोली में लिखाइल । पालि के बहुते समृद्ध साहित्य मिलल बा । ऊ त हमरा बुझाला जे भोजपुरिये के पुरान रूप हऽ । फेरु प्राकृत में लिखाइल, फेरु अपभ्रंश में लिखाइल । मगर जबतक धार्मिक उपदेश, कुछ प्रेम आ नीति के कविता, कहानी, कुछ ज्ञान बगैरह तक के बात रहे तब तक मजे में काम निकलत गइल ! जब दर्शन, तर्कशास्त्र, आदि सूक्ष्म चिन्तन के जरूरत पड़ल तबे फटाफट संस्कृत में लिखाये लागल । कई बार दोहा त लिखाइल अपभ्रंश में मगर टीका लिखाइल संस्कृत में, जइसे कृष्णपाद के 'दोहा कोश' पर 'मेखला टीका'। 'संदेश रासक' अपभ्रंश के बढ़िया काव्य रहे । कवि अब्दुल रहमान त कहले जे जे ना मुरुख होखे ना पंडित होखे, उनहीं लोगनि के सामने ई बार-बार पढ़बि--

जिण मुक्खु न पंडिअ मज्झियार
तिण पुरउ पढ़िव्वइ सव्व बार ।

मगर तीन गो टीका के पता चलल बार--दूगो त छपि भी गइल बाड़ी स-- सब संस्कृत में । काहें? दू कारन से । पहिले त जइसहीं आवेगतरल सहज मनोभाव का क्षेत्र से उठि के विचार का बारीकी का क्षेत्र में पहुँचल गइल तइसहीं अनुभव कइल गइल कि शुद्ध जनभाषा ई कुल करे के राजी ना होई । अब काटलि-छाँटलि, गढ़ल-छीलल, कसावटवाली भाषा चाहीं । याने संस्कारवती भाषा होखे के चाहीं । दूसर कारण ई रहे कि लोक भाषा के क्षेत्र सीमित होला । अगर-दूर-दूर तक, विभिन्न भाषा बोले समझे वाला लोगनि तक विचार पहुँचावे के बा त सार्वदेशिक, भले कृत्रिम होई, भाषा के सहारा लेबे के पड़ी । एही से लोकभाषा के साहित्य ढेर दिन जी ना सकल । जियल ओतने, जेतना के कवनो बड़ा धार्मिक आन्दोलन के सहारा मिलल ।

आधुनिक हिन्दी पहिले त लोकभाषा का रूप में चललि । बाकिर जईसे जइसे ओह में ज्ञान-विज्ञान के उच्चतर सूक्ष्म विचार आवे लागल तइसे-तइसे ओकर लोकभाषा के मूल गुण के ह्रास होखे लागल बा । अब धीरे-धीरे ऊ उहे पद पावे लागल बा जवन पहिले संस्कृत के रहल । अबहियों ओकरा में संस्कृत नाइन कसाव नइखे आइल, मगर आ जाई । विद्वाननि आ विशेष ज्ञानिनि के हाथ में पड़ि जाए से ऊ अभिजात सार्वदेसिक भाषा के रूप ले ले जातिया । जहाँ तक ज्ञान-विज्ञान के सूक्ष्म चिन्तन मनन मूलक साहित्य के सवाल बा, हिन्दी निश्चित रूप से सार्वदेसिक भाषा के रूप लिहा बाकिर

जहाँ तक रागात्मक अभिव्यंजना के प्रश्न बा, अइसन शिकायति बहुत सुने में आवति बा जे हिन्दी जन जीवन से दूर होत जाति बा । एक तरह के बौद्धिक कसरत बढ़ोतरी पर बाइ । असल में हिन्दी के रागात्मक अभिव्यंजना उहें सफल होई जहाँ-जहाँ जन-जीवन में घुलल-मिलल भाषा, प्रतीक, बिंब, महावरा जन-भाषा से लिहल जाई । ईहो प्रवृत्ति हिन्दी में बढ़लि बा । आंचलिक कहे जाये वाली कथा कहानी में ई प्रकृत्ति कुछ अधिक उजियार लउकति बा । बहुत लोकविधा के प्रवेश भी बढ़ि रहल बा, लेकिन बेसी प्रतिष्ठा पावे वाला साहित्य आ साहित्यकार लोग धरती का ओरि ओतना नइखनि, जेतना आसमान का ओरि बाड़नि । एकर भारी प्रतिक्रिया भी हो रहलि बा । अब हरेक बोली के प्रतिभावान साहित्यकार लोग, जन-भाषा का ओरि देखे लागल बा । अब एक तरह के खिचड़ी पकावे के कारवार शुरू भइल बा, नाँव दिहल गइल बा आंचलिकता । बड़का-बड़का लोग कबे-कबे ईहो कहत बाड़े जे ए से भाषा के नास हो रहल बा । मगर कवनो असर त नइखे देखात । ई जन-भाषा के सच्चा प्रेम का ओजह से हो रहल बा । एही से काफी मजबूत लागत बा । अब त हर बोली के लोग कहे लागल बाड़े जे सही ढंग के रागात्मक अभिव्यक्ति ओही भाषा में हो सकेला जवन जन-साधारण के आपन दुख-सुख के भाषा होखे । **भिन्न-भिन्न** बोली में कविता-कहानी लिखाए लागलि बाड़ी स । अइसन बुझात बा जे ई प्रवृत्ति बढ़ोतरीए पर जाई ।

ई सब बिना कवनो कारण के नइखे होत । इतिहास विधाता का अंगुलि-निर्देश पर होइ रहल बा ।

जवना विशाल क्षेत्र के हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र कहल जाला ओमें बहुत बोली बोललि जालीं । ओमें केतना त हिन्दी का भाषाई ढाँचा से निकट बाड़ी स, केतना कुछ दूर बाड़ी स आउर कई गो त अति दूर बाड़ी । फिर कई बोली में दीर्घकाल से साहित्य रचना में आपन निजी परंपरा रहलि हा । ब्रजभाषा निकट त बाइ बाकिर ओकर साहित्य बहुत समृद्ध रहल । अवधी के त साहित्य संसार में प्रसिद्धे बा । राजस्थानी के आपन समृद्ध परंपरा बा । मैथिली त अब स्वतंत्र भाषा माने जाए लागलि । ओकर भाषाई ढाँचा दूर के बा । ओकरा दीर्घकाल से साहित्यिक परंपरा रहलि हा । भोजपुरी ना निकट के ह, आ ना बहुत दूर के । साहित्यिक परंपरा एकरो कम पुरान नइखे । हिन्दी सबके आपन मानि के चललि । कुछ दिन त कहीं कवनों आवाज ना उठल बाकिर अब बहुत जगह आवाज उठे लागल बा । जमाना अइसन जरे बुताए लायक आइ गइल बा जे कवनो कहीं पत्ता खड़कल ना कि उहाँ राजनीति पहुँचलि ना । भाषावर प्रान्त विभाजन के सिद्धान्त अलगाव के उकसावहीं में मदद कइ रहल बा । जब केहू अपना भाषा के स्वतंत्र कहेला त पहिली शंका ईहे होले कि अलग राज्य बनावे के कवनो दुरभिसंधि त ना ह । रउवाँ कतनो किरिया खाई जे हम खाली जन-जीवन के सही अभिव्यक्ति देबे खातिर ई बात कहतानी, बुद्धिमान लोग ना मनिहें । 'मनवें में चोर बा, केहू के ना जोर बा' !

ई त कवनो समझदार आदमी ना कही कि एक ठे शक्तिशाली केन्द्रीय भाषा ना होखे के चाहीं जे एतना बड़ा विशाल देश के एकता बनवले रहे । ओकरा के राष्ट्रभाषा कहीं, राजभाषा कहीं, संपर्क भाषा कहीं, कवनो फरक नइखे पड़े के। एगो सामान्य सार्वदेशिक भाषा रहल जरूरी बा । संविधान बनावे वाला लोग हिन्दी के चुनले बा । लेकिन बहुत लोग ए बात के माने के तइयार नइखनि । ऊ लोग हिन्दी नइखन चाहत। चाहत बा लोग जे अंग्रेजिए ऊ काम करो । उहे संपर्क भाषा रहो । थोड़ा सरम पहिलवां रहल हा बाकिर धीरे-धीरे अब सरम वाली बात मद्धिम परल जाति बा । अब लोग खुलि

के कहे लागल बाड़ जे हिन्दी ना, अंगरेजिए सम्पर्क भाषा रही आउर रहे के चाहीं । कठिनाई ई बा जे एह देश के जनता अभी विदेशी के ओतना गुलाम नइखे भइल । घूम फिरि के नजर जाति बा त हिन्दीए पर बड़का-बड़का लोग जे चाहो कहो, अंगरेजी देश के आत्मसम्मान के उपेक्षा कइ के कबहूँ ना चलि सकेले । चली त हिंदीए चली । हम कवनो बनाउटी बात नइखीं कहत । कुछ अंगरेजी प्रेमी लोग सोचे लागल बाड़े जे यदि हिन्दी एही परिस्थिति में रही त ओकरा के हटावल कठिन बा, काहे कि कवनो प्रान्तीय भाषा ओकरा आगे सार्वदेशिके भाषा का रूप में ना टिक सकेले । एह कारन से कोशिश ई हो रहल बा कि हिन्दी के शक्ति तूरि दिहल जाउ । ए प्रकार के विचार के प्रत्यक्ष रूप अब दिखाई देबे लागल बा । हिन्दी का अन्तर्गत आवे वाली बोलिनि में अलगाव के भाव ले आवे के कोसिस हो रहल बा । बाकिर जहाँ तक हम समुझत बानी हिन्दी भाषी कहे जाए वाला लोग ए अस्त्र से घायल ना होइहें । अलग-अलग बोलिनि में सर्जनात्मक साहित्य लिखल भी जाई आ हिन्दी के राष्ट्रभाषा रूप के सम्मान भी दिहल जाई । भोजपुरी के आदर्श 'सोगहग', बराबर स्वीकृत रही । बाकिर गलत ढंग से सोचे वाला लोगनि से सावधान त रहहीं के परी ।

ठीक बात ठीक ढंग से सोचे के चाहीं। भोजपुरी ए कारण से साहित्य भाषा ना हो सकेले कि कुछ थोड़े आदमी का मन में अइसन हुलास बा । हिंदी एह कारण से ना मुरझा जाई कि कुछ लोग चाहताड़े कि ऊ कमजोर हो जाउ । संपूर्ण देश के बहुसंख्यक जनता के जवना से हित होई आ जवना बात के समर्थन मिली,उहे होई । हम का सोचत बानी आ रउवाँ का सोचतानी एकर महत्त्व तब होई जब एह सोचला में देश के बहुसंख्यक जनता के भलाई होई आ ओकर समर्थन मिली । भोजपुरी के साहित्य के वाहन तबे बनावल जा सकेला जब ओह साहित्य से भोजपुरी बोले वाली जनता के आशा-आकांक्षा का अभिव्यक्ति में सहायता मिले, ऊ कुछ अधिक सुख-सुविधा मान-सम्मान पा सके । राष्ट्रभाषा हिन्दी से एकर कवनो विरोध नइखे । ना कबहीं भोजपुरी का सोचे के चाहीं कि ऊ हिंदी के प्रतिस्पर्द्धी हो के रही । ठेठ भोजपुरी शूरता आउर निर्भीकता के भाषा हऽ, बन्धुता आउर सौहार्द के भाषा हऽ । राष्ट्रभाषा हिन्दी भी ओतने आपनि ह जेतना भोजपुरी । दूनों आपन भाषा ह । दूनों के, देश का जनता के सेवा खातिर स्वीकार कइल गइल बा ।

कबीर, तुलसीदास, कुंवर सिंह, भारतेन्दु के भाषा छोट उद्देश्य के भाषा कभी हो सकेले? ई सब लोग पूरा देश के, भीतर बाहर से एक आ अखड करे के साधना कइले बा लोग । भोजपुरी कबहीं छोट बात में ना परल आ ना परे के चाहीं । राष्ट्रभाषा हिंदी हमहन के आपने भाषा हऽ । ओकरा के सजावे-सँवारे में भोजपुरी के रक्त आ पसीना कम नइखे लागल । दूनों में लिखीं, दूनों में पढ़ीं, दूनों एके ह । दाहिनी आँखि आ बाईं आंखि में कवनो झगड़ा बा ? ब्राह्मधर्म और छात्रधर्म में कवनो बैर बा ?-इदं ब्राह्ममिदं क्षात्रम् शापादपि शरादपि ।

संविधान में कुछ भारतीय भाषा के मान्यता दिहल बा । बाकिर ब़हुत अइसन भाषा बाड़ी स जवना के मान्यता त नइखे मिलल बाकिर उनहनि में कुछ ना-कुछ साहित्य निर्माण हो रहल बा । कुछ दिन तक साहित्य अकादमी संविधान में स्वीकृत भाषानि का साहित्य के पुरस्कार देति रहलि बाकिर एने आ के अइसन भाषा भी पुरस्कार वास्ते स्वीकार कइल गइली हा स जेकर कवनो चर्चा संविधान में नइखे । उद्देश्य रहल साहित्य निर्माण के प्रोत्साहन दिहल । कवनो भाषा राजनीतिक दृष्टि से संविधान के अंग

ना होके भी उत्तम साहित्य दे सकेला। राजशेखर कहि गइल बाड़न जे उत्तम उक्ति-विशेष काव्य कहल जाला, ओकर भाषा कोई भी हो सकेला। एह बात के आउरो बढ़ाइ के कहल जा सकेला कि रागात्मक संबंध के उजागर करे वाला सहित्य कवनो बोली में लिखल जा सकेला। एही से अब साहित्य अकादमी अइसन अनेक बोली के साहित्य के पुरस्कार दे रहलि जा जेकर मान्यता संविधान में नइखे। शुरू-शुरू में हमरा ई बात बहुत अच्छा ना मालूम भइल। ई डर बाइ जे आगे चलि के ई बात राजनीतिक उलझन पैदा करी। मगर अब त साहित्य अकादमी धड़ाधड़ बोलिनि के मान्यता देत जाति बा। अब मगर सब बोलिनि में पुरस्कार प्राप्त होखे लागल त भोजपुरी, अवधी वगैरह शक्तिशाली बोलिनि के काहे उपेक्षा होई ? हम समझतानी जे जब आउर बोलिनि के साहित्यिक मान्यता मिलि गइल त भोजपुरी के भी अवश्य मिले के चाहीं। एह भाषा के जे प्रतिभाशाली कवि, कथा-लेखक बाड़नि उनहूँ के पुरस्कार जरूर मिले के चाहीं। राष्ट्र के दसवाँ हिस्सा लोग जवना बोली के बोलत बा, आपन दुख सुख आशा आकांक्षा के अभिव्यक्ति दे रहल बा, ओकर सम्मान होखहीं के चाहीं। बाकिर ई विशुद्ध साहित्यिक प्रस्ताव हऽ। एकरा साथे राजनीतिक सौदाबाजी ना होखे के चाहीं। केहू का मन में ओइसन बात होइ त तुरन्ते मन में से ओके हटा देबे के चाहीं।

फेरु हम आप लोगनि के यादि दिलाईं जे हिंन्दी आ भोजपुरी के एक समझि के काम करे के चाहीं। दूनों के दुइ मनले झंझटि पैदा होई। विद्यापति जी कहले रहलीं जे 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा, तं तैसन जंपों अवहट्ठा'। देसिल बयन आपन घर के बोली हऽ। अवहट्ठ सार्वदेशिक भाषा हऽ। आजु का युग में ऊहे हिन्दी बा। विद्यापति जी के कहनाम रहे कि जइसन देसिल बयन ह तइसन अवहट्ठ (परवर्ती अपभ्रंश) हऽ। 'तइसन' कवनो भेदभाव ना राखे के चाहीं। विद्यापति जी दूनों में लिखले रहलीं। हमनो का उहे मानि के चले के चाहीं। मउजि आइल त 'तैसने' हिन्दी। हमन के दूनो भाषा आपने ह। एह क्षेत्र के भोजपुरी लिखे वाला साहित्यकार भी नमस्य बाड़े आ हिन्दी में लिखे वाला भी प्रणम्य बाड़े। भगवान सबकर कल्याण करसु।

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

❑

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

तिसरका अधिवेशन

सीवान

(29-30 अक्तूबर 1977)

के

अध्यक्ष

(डॉ०) भगवतशरण उपाध्याय

के

भाषण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, सीवान, के अधिवेशन के संयोजक, कार्य-समिति के सदस्य, प्रतिनिधि अउर इहाँ पधारल सभे जन-गन के हाथ जोरि के परनाम करतानी । रउआँ जवन अध्यक्ष के ई भारी पद हमरा के देके हमार जस इज्जत बढ़वली हँ ओकरा खातिर हम रउरा सब के गुनगाही बुद्धि के त नइखीं सराह सकत बाकी आप सबके उदारता के जरूर सराहत बानी । साँच पूछीं त उदारता से भी बढ़ि के एमें सराहे के बात आपके साहस के बा जे अइसन आदमी के ए पद पर पधरवलीं जे एको अच्छरि भोजपुरी में ना लिखलसि, आ बोले के त ओकर ई पहिले मोका ह । बाकी मंदिर में जब पत्थल के मूरति पधरावल जाले त ओकर ग्यान या देवताई ना देखल जाला । अरे ऊ त ओके पधरावे वाला ही ओमें देवता के प्रान-प्रतिष्ठा कइ देला अउर पत्थल के ऊ मूरति देवता होके पुजाये लागेले । त हम त अपना के ऊहे पत्थल के मूरति समझतानी । हँ, ई जरूर देखे के बा कि ए मूरति में कहाँ तक आप सब देवबुद्धि के स्थापना कइ सकल बानी । देखीं, हमार गेयान थोरे बा, बाकी हम जानतानी जे आपके धीरता ओ से जबर बा, एह से हम ईहे आप सब से अरज कर तानी कि किरिपा कइ के हमके थोरी देर सहीं- हमके, हमरा गलत-सही अटपट भासा के, हमरा 'अधजल गगरी' गेयान के, अउर सबसे ज्यादा हमरा अगराइल अकचकाइल भाग के । दूर हिमालय से बोलवला पर हमके सहहीं के परी ।

हम हिमालय का पच्छिमी छोर से आवतानीं, रिखीकेस-हरिद्वार-कनखल का परे से, देहरा का दून से, देश का पहरुआ का द्वार से । उमर भी थाकि चलल । शेर याद आवता-

> **मंजिल की सख्तियों ने डराया बहुत मगर**
> **आवारागाने शौक न माने किसी तरह !**

और चल पैड़लीं। उहाँ देहरादून में हमसे भोजपुरी बोले वाला बस एक ही आदमी बा-पंडित गया प्रसाद शुक्ल । उनसे हमार सदा भोजपुरिये में बतकही होले । घर का भीतर के बोली अंग्रेजी ह, कारन कि केरली पत्नी केवल अंगरेजिये बोले-बुझेली,

हिन्दी बोलेली त ओकर छेछा-लेदर होखे लागेला । ए से जब सुकुल जी आ जालन त जइसे बरत टूटि के पारन होखे लागेला । जीव छछात रहेला जे केहू भोजपुरी बोलेवाला मीलि जाइत । याद आवता एक बेर दखिनी फ्रांस का जात्रा पर रहलीं, इटली से पेरिस जात रहलीं । आधी रात के, जब घोर निद्रा में सूतल रहलीं तबे गाड़ी इटली के सरहद पार कइलसि । एगो बर्थ पर हम रहलीं एगो पर एगो नौजवान गोरा रहे । पासपोर्ट देखे वाला अफसर आइल । अंग्रेजी में बोलि के हम ओके आपन पासपोर्ट देखावे लगलीं । तबतक दुसरा बर्थवाला नौजवान-जवन पाछे जनलीं कि अमेरिकन ह–अकचकाइल ऊठल और कूदि के हमरा गरे लागि गइल, कहलसि कि धनि भाग कि अंग्रेजी सुने के मीलल । तीन महीना से फ्रांसीसियन का बीच में रहली हँ मगर कम्बख्त जवन अंग्रेजी जानेले स तवनो ना बोल स । आपन भासा सूनि के मन अघा गइल । ईहे हाल भइल इटली का जेनोआ नगर में । अस्पताल का सामने वाली सड़क पर जइसहीं अइलीं कि एगो नर्स दउरल आइल, कहलसि–कुछ इतालवी कुछ अंग्रेजी में- कि एगो अंग्रेज अपेंडिसाइटिज से मर रहल बा, ओकर साध बा जे हमसे मरे का वक्त केहू दू सब्द हमरा भासा के बोलि दे । हम गइलीं । जइसहीं पहुँचलीं, जैसे ओ नौजवान में नया जान आ गइल । दम ऊ हमरे गोद में तुड़लसि पर मरत-मरत कहलसि कि धनि भाग जे ए बिदेस में हमके हमरा बहिन-महतारी के जबान बोलेवाला मीलि गइल, अब हम खुसी से मुअबि, इचिको कलेस ना होई, धन्यवाद ! अमेरिका में कई साल आपन भाषा बे बोलले रहि के जब स्विटजरलैंड पहुँचलीं त बर्न नगर में भारतीय दूतावास में डाक्टर सत्यनारायण सिंह का साथे भोजपुरी में बतिया-बतिया के अघा गइलीं। त भाषा के ई सक्ति ह !

हम आप सबसे साहित्य का बिसय पर कुछ कहे के चाहतानी । भासा का संबंध में एक से एक पंडित अपने का सम्मेलन में बोलि गइल बाड़े, ओकरा संबंध में ओ लोगन से सुनलहीं होखबि, आगे भी और लोगनि से सुनबे करबि । हमके हमार अटपट 'भणिति' कहे के अनुमति दीं, ओके सुने के आदर देईं, अनुग्रह करीं, हम निहाल हो जाइबि ।

सब्दन से भासा बनेले, पर सब्द भासा ना ह । एही तरे भासा से साहित्य बनेला पर भासा साहित्य ना ह । अगर भासे साहित्य होइति त ओह अनेक अफ्रीकी देसन के भासा भी साहित्य कहइती स जहाँ भासा बा पर साहित्य नइखे । तब ऊ कवन चीजु ह भला जवना का पइठि गइला से भासा साहित्य हो जाले ? ऊ मनुष्य ह, इन्सान, लोग । सभे भासा के साहित्य मनुष्ये बनावेला, पर सब साहित्य साहित्य काहें ना हो जाला, या कवनो घटिया कवनो उत्तम कइसे हो जाला? काहें कि घोड़ा, बकरी, कुत्ता जाति नियर मनुष्य जाति त ओके बनावेला पर मनुष्य ओ में पइठे ना । जब दरद के साथ, वेदना-संवेदना के साथ मनुष्य ओमें पइठेला तब भासा साहित्य बनेले । ना त केतना हरियल आ हंस सुरहा ताल में रोज मारल जा रहल बाड़े, कहाँ वाल्मीकि जनमऽ तारे? अरे जे क्रौंच-बध से द्रवे, अइसन जन जनमे तब 'आदि कवि' के संज्ञा मिली, चरितार्थ होई । आदमी त सभे जनम लेला पर सभे आदमी इन्सान ना हो जाला । कइसे गालिब कहले–

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मोअस्सर नहीं इन्साँ होना !
और इन्सान बनल भी कवनो आसान बात ना ह–

मत सहल हमें जानो, फिरता है फ़लक बरसों
तब ख़ाक के परदे से इन्सान निकलता है !

जे भाव-जातना-संवेदना अइसन संस्कारन से सजल ना ऊ इन्सान कइसन? हीरा त करिया कोइला से बनेला पर संस्कारे से हीरा होला । संस्कारे से सोना अइसन हो जाला जे कसौटी पर कसल जा सके । इन्सान के एही सरूप के महाभारत लिखे वाला महामना व्यास चिन्हले, जब तैतीस कोटि छछात देवता का रहत, एलान कइले-

गुह्यं तदिदं ब्रह्म ब्रवीमि
न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किञ्चित्-

गूढ़ बाति कहतानी, भगवान व्यास कहताड़े, छछात ब्रह्म-बेदे कहतानी, गुनि के कहतानी, गाँठे बान्ह- मनुष्य से बढ़ि के, ओकरा ले ऊँच, एह धरती पर दूसर केहू नइखे !

एही से न 'हिन्दुस्तान हमारा' वाला इकबाल भगवान से धिक्कारि के कहले- ऐ खुदा, देख तो तूने हमें क्या दिया और जो तूने हमें दिया उसे हमने क्या बना लिया? तूने हमें पहाड़ दिये, हमने उन्हें काट-तराश कर रहने के लिए अपने घर बना लिये; तूने हमें जंगल दिये, हमने उन्हें काट-छाँट कर उपवन बना लिये; तूने हमें सूखी-पथरीली ऊसर धरती दी, हमने उसमें अन्न की बालें उगाकर लहरा दीं; तूने हमें मिट्टी दी, हमने उससे रकाबियाँ-तश्तरियाँ बना लीं; और खुदा, तूने जुल्म किया जो हमारे लिये अँधेरी रात बना दी, पर इन्सान की औलाद हम कि हमने उसे भी मंजूर किया पर बदले में हमने चिराग बना कर जला दिया, खलक को रोशन कर दिया !

अइसन इन्सान जब दर्द का साथे अपना भणिति में पइठी तब कहीं ऊ भणिति काव्य कहाये जोग होई, साहित्य कहाई । सहित्य वरना केवल भासा के चमत्कार आ शैली के रंगारंग चूनर ना ह। 'सुगना बसे पहाड़ पर हम जमुना के तीर !' दूर के वासी 'सुगना' आ जमुना तीर के वासी 'सुगनी' के मन जब मीत बनि के, एक होके रमी, तब जाके साहित्य बनी । फेड़ पर रहेवाला सुआ का हिया में, लोककथा में कहल जाला, जब केहू के हियरा बसेला, अइसन,कि एगो के जान छुअला से दूसरको तड़पे लागे, तब साहित्य बनी ।

और जियरा के तड़पला के बात आपसे का कहीं ! गाँव के गवाँरिन के बात सुनि के एक दिन हम सन्नाटा में आ गइलीं । सरहजि-ननदोई का बीच हँसी के बात सुनलीं-सरहजि जवाब में कहलसि- बतिया त साँचे कह ताड़ हो बाकी ई हमके बताव कि लड़ेले त नजरिया आ बथेला करेजवा काहें? हमरा त लागल कि हजार हाल अवर अमरु, हजार बिहारी आ मतिराम ए पर वारि जइहें ।

हिन्दी, अँगरेजी, फ्रेंच, रूसी आदि अनेक भासा के कवितन के असर हमरा ऊपर परल, पर, बचपने में जवन असर हमरा पर भोजपुरी का 'बटोहिया' के परल तवन अपरंपार बा । आजो हमरा पर ओकर असर ओतने ताजा ओतने गहिरा बा जतना बचपन में रहे । हम ओके अपना पढ़ल साहित्य का सबसे प्रभावशील कवितन में मानी लाँ । इहाँ तक कि प्रौढ़ वयसि में हम अपना एगो किताब के नामे सन् पचास में रखि दिहली- 'तीन द्वार सिंधु घहराय' !

शक्ति प्रभाव आ प्रेरणा तीनों के खानि ह ई कविता । पर जइसे एकदम निकट हो के भी, मर्म होके भी, आँखि अपना के ना देख पावे ओइसहीं निकट के कविता भइला से सायद रउग सबका ओ पर ओइसन ध्यान ना जात होई जइसन हिन्दी कवितन

पर जाला । हम त कहतानी कि जो हम विदेसी रहितीं और भोजपुरी समुझत रहितीं त अकेले 'बटोहिया' पढ़ला-सुनला का बाद हम भारत देखे खातिर आपन घर-दुआर बेंचि के चलि पड़तीं । पढ़ले तो अप सब ओके होखबे करबि। एकाध लाइनि फेर सुनीं-

सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा, से
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया !
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवलवा, से
तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया !

जवना के अंग्रेजी में 'साउंड एकोइंग सेन्स' कहल जाला , ध्वनि मात्र से जेकर अर्थ गूँज उठे, ऊ महाप्रान के जगावे वाली लाइन ई ह–

तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया !

कुछ भासनि के एकाध पंक्ति एही विधान के अनुसार हमरा यादि रहि गइल, जइसे मैथिली शरण गुप्त के–

'जाग रहा है कौन धनुधर जब कि भुवन भर सोता है?' जैसे अकेले एक ही लाइन में एगो समूचा 'एपिक' खड़ा हो गइल बा । आन्हर कवि, जे बिना लड़ाई देखले, होमर केवल ध्वनि मात्र का प्रेरणा से भोजन-युद्ध के वर्णन अपना वीर काव्य 'ईलियद' में कइलसि–

Tumult on top of tumult
And gods chasing the heels of mortals!

अर्थ कइला के कौनो जरूरत नइखे। हम कहबि, केवल ध्वनिये के बानी सुनाइबि– दुष्यन्त के, शकुन्तला का चलि गइला का बाद, अपना हिया से–

प्रथमं सारंगाक्ष्या प्रियया प्रतिबोध्यमानमपि सुखम् ।
अनुशयदुःखायेदं हतहृदयं सम्प्रति विबुद्धम् ॥

दुख के वेदना का ध्वनिये से नइखे ब्यापि जात? एपिक के सरूप देखावे खातिर ई ध्वनिये काफी बा, जैसे गोसाई जी के भरत का विसय में महाप्राण के उपयोग–

जो न होते जग जनम भरत को
सकल धरम-धुर धरनि धरत को?

'सकल धरम-धुर धरनि धरत को?' ओही 'एपिक' रूप के सरूप ह। हम पूछतानी जे हमरा देस में 'एपिक'- वीरकाव्य-महाकाव्य एतना तादाद में काहें लिखल गइले ? ग्रीक में दू गो-तीन गो, लातीनी में एगो, इतावली में एगो,अंगरेजी में दू गो, फ्रेंच में एगो, जर्मन में एगो-पर भारत के महाकाव्यन के जो गिनावे लागीं त पार ना लागी । से काहे? काहें से कि एकरा तीन ओर गहिर-गंभीर सागर घहराता, दूसरी ओर संसार के सबसे ऊँचा सबसे लमहर पर्वतमाला बा हिम के मुकुट पहिनले, गहरा नीला खुला आकाश अइसन दूसर कहाँ बा जेवना के रूप के अनंत बिस्तार से हमनी के ..... विष्णु के सँवरिया रूप सजले? एक के बाद एक ऋतु और कहाँ एतना नियम से आवेली स? भला 'सुबहे-बनारस, 'शामे-अवध,' 'शबे-मालवा' और कहाँ बा? एह सब का पृष्ठभूमि में फेर एक बेर पढ़ीं 'बटोहिया' के । हम त संजम का साथे, अत्यंत मीठ से बचाव करत, केवल कुछ ही पंक्तियन के बोलतानी–

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ
जहवाँ कुहुकि कोइलि बोले रे बटोहिया !
पवन सुगन्ध मन्द अगर चननवाँ से

कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया !
तोता-तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा, से
पपिहा के 'पी-पी' जिया साले रे बटोहिया !

ए कविता में से पंक्ति चुनल कठिन समस्या बनि जाता, कारन कि हर लाइन जानदार बा, पूरा कविते उल्लेख जोग बा । काहें ? काहं कि कवि के जियरा अपना प्रतिपाद्य से एकाकार हो गइल बा, ओमें बसि गइल बा– हिमालय में, हिन्द सागर में, गंगा जमुना मं, देस का पंछिन में, बिरहिन में । एही स्थिति से प्रभावित गुप्तकाल के कवि वत्स भट्टी अपना मन्द सौर का कविता में भारत माता के वर्णन करतारें-

चतुस्समुद्रान्त विलोल मेखलां !
सुमेरु कैलास बृहत्पयोधराम् ।
वनान्त वान्त स्फुट पुष्प हासिनीं
कुमार गुप्ते पृथिवीं प्रशासति ॥

माता के पयोधर दुनो सुमेरु आ कैलास, चारों समुन्दर घहरात करधनी, आ समूचा तन बन-परम्परा से बनल, जवना में भाँति-भाँति के फूल निरंतर खिल रहल बाड़ स, जवना का ब्याज से भारत माता मुस्का रहल बाड़ीं त याद रखीं कि जब तक कवि अपना भाषा और भाव में, अपना प्रतिपाद्य में जीही ना तब तक ओकर कविता जनगर ना हो सकी।

संसार के प्रसिद्ध दार्शनिक बट्रैंन्ड रसेल से एक बार हमार बतकही भइल । ऊ संस्कृति और साहित्य का बिसय में अपने लिखल बाति दोहरवले– कि ए सबके निर्माण तीन चीजु का संमिलन से होला– प्यार का पुकार से, गेयान का खोज से, और सकल जीवधारियन के प्रति संवेदना से । मतलब कि 'प्यार का पुकार से' साहित्य बनेला, 'गेयान का खोज से' दर्शन आ विज्ञान, आ संवेदना से दूनों का संगम से संस्कृति । तब हमरा पूछे के परल कि पच्छिमी साहित्य में 'प्यार के पुकार' त बा, 'गेयान के खोज' त खूबे बा, पर भला सहित्य में सब प्राणियन के प्रति संवेदना कहाँ बा?

हमरा इहाँ त साहित्य के पिता वाल्मीकि के आदि काव्य के जनमे संवेदना से भइल । सौ-सौ उदाहरन हमरा इतिहास में बा जेमें समरथ लोग कहले बा जे हमरा के राजपाट ना चाहीं, इहलोक-परलोक के सुख-स्वर्ग भी ना चाहीं, मुक्तिओ ना चाहीं, चाहीं हमके बस एके चीजु कि संसार के जीव मात्र दुख-दर्द से छूटि जायँ, सुखी हो जायँ । हम बतवलीं कि का वाल्मीकि, का कालिदास, सभी कवियन का नायक–नायिकन का दुख में जीव-जन्तु, तरु-पल्लो तक दुखी होखेला । जवन सुख कवि अपना खातिर चाहता ऊहे दुसरो खातिर चाहता– ओकर भौंरा फूल तोड़ता, ओके प्याला नियर बना के ओमे मधु यानी शराब भरता, फिर अपना भौंरी के पहिले पिया के आधा बाँचल जूठ अपने पियता । हथिनी पराग से सुगंधित जल पहिले अपना मुँह में ले ले तीया फेरु ऊ अपना हाथी का मुँह में उँड़ेल देत बिआ, हाथी आपन प्यार परगट करे खातिर आपन सूँड़ हथिनी का पीठ पर रखि देता । चकवा कँवल के डंडी तूरि के पहिले अपने चाखि के, कि कहीं कड़ुआ ना होखे, चकवी के खाये के देता । कामदेव बसन्त के लेके दुष्यंत का बाटिका में जाता पर शकुन्तला के निकाल देला से दुखी राजा के देखि के बसन्त के सिपाही कौनों वार करे के तैयार नइखे होत – आम बौरा गइल बाड़े स, भौंरन के ओठ पराग से भरि गइल बा, इचकी कोठ खोल देत चराचर गमकि जाई; पर ना, ऊ कोठ नइखे खोलत काहें से कि मानव-दुष्यन्त दुखी सामने बा। कुरबक जरि से पुलुई

तक कलिया गइल बा, पर एक्को कली खिल के फूल होखे के तैयार नइखे, काहें कि दुखी मानव सामने बा। सरद् ऋतु के बितते अनायासे कोयलरि के कंठ फूटि जाला और इहाँ सरद कबके बीति गइल बाकी कोइलरि कंठ में आइल बानी कंठे में [illegible] देति बा, फूटे नइखे देति,काहे कि दुखी दुष्यन्त सामने बा । अब कामदेव के हिसाब का परो, से ऊ घबड़ा के अपना तरकस से आधा खींचल बान तरकसे में उलटा लौटा देता ! त भाई सभे, इहाँ के साहित्य के परमान त ईहे ह, कि आदमी त दूसरा के हित चहबे करी, पसु पंछी, पौधा-पल्लो भी आदमी का दुख दर्द से दुखी होखे लागे । अगर मनुष्य प्रकृति से सहचार ना करी त भला ऊ 'अशरफुलमखलूकात'- सृष्टि के सबसे महान जीव कैसे कहाई ।

अब ए दृष्टि के, ए परमान के, भोजपूरी साहित्य पर दिठा के देखल जाय, तनी गंगाजी के गीति लेलीं, बिआह, जनेव के, बिरह के लेलीं, सोहर, बारहमासा लेलीं, सब भाव परधान मिली जेके सुनि के आँखि छलछला आयी । पच्छिम खड़ी बोली का इलाकन के गीति सुनले बानी- अरे अँगरेजने इंजन चलाया रे, गाड़ी चलायी रे, पानी का बंबा चलाया रे- अरे राम गीतो के दुर्गति ! इहाँ भोजपुरी के गीति सुनि के सोफियाना से सोफियाना आदमी डहरि में रुकि के सुनि के निहाल हो जाय । पर एगो बात बा, तनी कान देके सुनीं-

कालिदास कहले जे पुरान सभे ठीक नाहीं ह, और न कुल्हि नया खराबे ह । पर हम जो भोजपुरी के नई कविता पढ़तानी त लागता कि पुरनके सुघर बा । नवका लागता कि खड़ी बोली के कवितन के निचोड़ ह, छाड़न नियर । कवि लोग समझता कि भासा बदलि गइला से सब बदल गइल । और हाल बा ऊहे खड़ी बोली के निर्दिशा, दिग्भ्रान्त स्थिति । कहीं-कहीं पुरान बारहमासा के चासनी । हम कहतानी कि जेकरा पास कबीर और घाघ के धन बा उहाँ ओ लोगन के सुर काहें नइखे आवत? 'जो घर जारै आपना, चले कबीरा साथ' के ललकार या 'पंडित चुप-चुप बेसवा मइल' के बोध कहाँ बिला गइल? विश्वविद्यालय वाला कवियन से अच्छा त हमरा लागता जे प्रकृत देहाती कवि बाड़न । सुनी ले कि बनारस के एगो कजरीकार कवनो बड़कवा से एक बेर नाराज हो गइल और अइसन कजरी लिखलसि कि उनकर बाहर निकलल कठिन हो गइल । हमरा बस एके-दू डाँड़ी याद बा पर ओतने असाधारन चुटीला व्यंग बा-

खाये के चाहीं सकल पदारथ
बतियावे के गबर गबर ।

देखीं कि भोजपुरी में केतना शक्ति बा । बड़कवा के उघारि के धइ दिहलसि । काशी के 'बदमाश-दर्पण' त लामिसाल बा जवन कविता के गहराई में त पइठिये गइल बा, भोजपुरी द्वारा ओह घरी के समाज के उघारि के राख देता ।

भासा साहित्य का भासा पर कुछ कहे के चाहतानी । काहें कि साहित्य सिरजल भासा में जाला, भासे में सोचल भी जाला । रउराँ परतिया के देखि लीं; बिना भासा के सोचि ना सकीं । पहिले जबतक भासा ना रहे तब तक विचार भी ना रहे, जब भासा भइल त विचार गुनाये लागल। विचार भासा का पंख पर चढ़ि के ही मानस में परगट होला। जवना भासा में भोजपुरी कविता और कहानी लिखल जा रहल बा ऊ बनावटी लागता, बनावल, प्रकृत ना । भोजपुरी में पइठि के ओकरे हो के नइखे लिखल जात । साहित्य बनावटी बोली ना ह, ऊ पूरा संस्कृति, पूरा तहजीब ह, लोक-दसा के। सबकाँ ओमें समाये के चाहीं । कई बार त अइसन बुझाला कि खड़ी बोली का सब्दन के

भोजपुरी अवतार सामने बा, आ जइसे कृत्रिम हिन्दी सरकारी सब्दावली समझे खातिर मूल अंग्रेजी के याद करे के परेला, जइसे 'अधिशासी अभियन्ता' के माने समझे खातिर कौनो संस्कृत के कोश ना देखे के परी, अंग्रेजी मूल 'एग्जिक्यूटिव इंजिनियर' याद करे करे परी, आ जैसे रेल में पाखाना या शौचालय का जगह 'प्रसाधन' लिखल देखि के संस्कृत वाला अकचका जाई, ओकरा पर बिजुली गिरि परी, काहें से कि संस्कृत साहित्य में एकर खूब-खूब इस्तमाल 'सिङार' का अर्थ में भइल बा, बाकी ओके बनावे वाला त संस्कृत के भी परम्परा छोड़ि के अग्रंजी का 'ट्वायलेट' के अनुवाद कई दिहले ! भोजपुरी में अइसन परम्परा ना डाले के चाहीं । नया बाहर से आओ,जरूर आओ, आई ना त भासा समृद्ध कइसे होई ? पर छाड़न- छोड़न का रूप में भासा आ भाव मति आओ । स्वयं भोजपुरी सब्दन के भी उपयोग से सब्द सक्ति बढ़वला के काम बा जवन नइखे होत !

भासा में हमरा कवनो खोट नइखे । एह से केवल तत्सम सब्दन के लेके पूरी इबारत बनाके केवल क्रियापद भोजपुरी जोड़ दिहला से भासा भोजपुरी ना हो जाई बात सही बा जे भासा क्रियापद से ही बनेले, सेस सब्द कवनो होखे । पर भासा भासा होखे के चाहीं, सब्दन के जोड़ ना । जब इटली के महाकवि दाँते आपन महाकाव्य 'दिवीनो कोमेदिया' लातीनी छोड़ि के इतालवी में रचलसि त उहाँ ऊहे तत्समवाला झगड़ा खड़ा हो गइल जवन आज हिन्दी में बा और ओकरे देखादेखी भोजपुरियो में घर करि रहल बा। इटली में चार सौ साल तक ईहे समस्या 'केस्तोना दे ला लिंगुआ' नाम से चलल । आखिर शुद्धतावादी लोगनि के आपन जिद छोड़ि के जन बोली 'लोम्बार्द' स्वीकारे के परल । मगर एकर मतलब ईहो ना ह कि बिसेस मतलब के सब्द तत्सम ना लिहल जाय। पर ऊ तत्समें रूप में लिहल जाय त भला, एह से मूल के अर्थ से सिलसिला कायम रही। जइसे 'समस्या' के 'समसेया' कइ के बिगाड़ के इस्तेमाल कइला के जरूरत नइखे और न भोजपुरी सब्दन के शुद्ध करे के । ना त ऊहे बनारस 'वाराणसी' वाली बात हो जाई, गोया 'बनारस' भारत के जनता ना अंग्रेज बनवले ह स । अरे 'रे' और 'ण' के एक साथ उपयोग के इहे हाल होला । वाराणसी स्वभाव से ही 'बनारस' हो गइल ।

हमरा पास आजकल किसिम किसिम के भोजपुरी के पत्र-पत्रिका, कविता आउर कहानी-संग्रह आ रहल बाड़े स । उन्हनी के पढ़ि के एगो अवरू धारना हमरा मन में पइठल- अनेक बार स्थानीय सब्दावली के प्रयोग अधिक कइल जा रहल बा । एगो बगसर से कहानी-संग्रह आइल । निकहा-निमन संग्रह । कहानियन के बस्तु-बिसय सब मजगर, बाकी ओमें सब्दन के चुनाव-उपयोग अइसन निचाट बगसरिया-दखिनहा रहे कि समनहीं गंगा पार उजियार के रहे वाला हम आउर जहाँ-तहाँ मतलब ना समुझ पाईं, हुमचि के जब सोचीं तब समुझि आवे । हमरा डर बा जे स्थानीयता- आंचलिकता से भासा का अबूझ हो गइला से सायद ओकरा परचार के आघात पहुँची,सायद ओकर बिस्तार संकीर्ण हो जाई ।

ना त भोजपुरी के सीमा रउरा चाहे जेतना खींचीं ओकर बिस्तार साधारन नइखे । अउर ओहू से अधिक बिस्तार ओकरा परभाव के बा । रउरा हजार मैथिली कहीं मगर हमरो कहे में कवनो परहज नइखे जे विद्यापति हमरो हउअनि, हमरा बोली भोजपुरी से परभावित । सोचीं तनी-जनम अवधि हम रूप नेहारल नयन न तिरपित भेला-एमें 'भेला' 'भइले' के न फरक बा ? भला-

नव वृन्दावन नव नव तरुगत नव नव विकसित फूल
नवल वसंत नवल मलयानिल मातल नव अलि कूल

अउर 'झड़प' जी का तत्सम प्रवण 'नटराज' का रूप में का फ़रक बा? या प्राचीन साधक- भुसुकिपाद के ही लेलीं–

आज भुसुकि बंगाली भेली
चंडाली निज घरनी केली

भला भोजपुरी और एमें का अन्तर बा? खैर, ई बात हम परभाव के संबंध में कहतानी । आ परभाव छोड़ भोजपुरी के उपयोग त हो मारिशस, फीजी से पूरबी अमेरिका-सुरिनाम तक फइलल बा । नागपुर का विश्व हिन्दी सम्मेलन में जहाँ देस-देस के लोग आइल रहे और ओ लोग के हिन्दी का दायरा में लीहल गइल ऊ दायरा वास्तव में भोजपुरी के ह, जदपि हिन्दी से भोजपुरी का कवनो विरोध नइखे, जवन भोजपुरी के छेत्र ह तवन त हिन्दी के क्षेत्र हइये ह । उहाँ बिदेशी भोजपुरियन से बिचित्र संगम भइल । एगो गोरा अमेरिकन-खाँटी अमेरिकन-कविता भोजपुरी में पढ़लसि कि 'हम त भोजपुरी में कविता करीले, करबे करबि, करते रहबि!'

जहाँ तक परभाव के बाति बा त ऊ त अइसन बा कि जवन पाली-अर्ध मागधी भोजपुरी के पुरखिन कहल जाले-हालाँ कि हमार बिचार ओह संबंध में दूसर बा, कि ऊ पुरखिन तब के जन बोली ह- आ जवना में बुद्ध महाबीर उपदेस कइलनि ओही के बिरवा आज श्रीलंका में लागि के सिंहली के अश्वत्थ बनि गइल बा, और अगर पटनहिया-भोजपुरिया सिंहली सब्दन पर तनिक बिचार करे त ओके समझे लागी । अरे हम रउरा से का कहीं- रूस का दखिन में जिप्सी-बन्जारन का एगो बूढ़ से पुछलीं-भोजपुरिये में-कि 'रोम?' यानी कि तूँ 'रोम' हउअ? पाणिनि के सूत्र 'रलयोरभेदा:' के सोचि के। ऊ बूढ़ जिप्सी झट से कहलसि कि 'नेई, रोम दराज।' और रोमनिया की ओर हाथ उठा दिहलसि। फिर हम पुछलीं- तब का 'लोम?' जवाब दिहलसि कि 'नेइ, लोम फिलिस्तीन, हम त 'डोम', 'कुरइया वाला डोम'!' हम दंग कि 'डोम' त ठीक, बाकी 'कुरइया वाला'का ? तबे अपना आजी के एगो पुरान व्यंग याद परल जेही के बबुआ, तेही के दाना, तेही के कुरुई ! बस सब उजियार हो गइल । पुछलीं, दउरी-सूप-कुरूई वाला डोम-बँसफोर ? जवाब मिलल जे 'हँ, हँ, नाट- डोम।' सोचला पर याद परल कि जे के ई 'नाट' कहता ऊ रसरी पर चढ़ि के नाचे वाला 'नट' ह । अकारन नइखे जे मनु अपना स्मृति में नट, नाटक में भूमिका खेले वालन आदि के भी डोम का साथे अछूत मानले बाड़न । मतलब कि हमार भासा बड़ा जनगर बा, ओके आंचलिक मति बनावल जाउ।

और जहाँ तक तत्सम सब्दन के अनुवाद के सवाल बा ओहू में सावधान रहला के जरूरत बा । सब्दे के ना, हम त चाहब जे विश्व के और सबसे पहिले संस्कृत के साहित्य अनूदित होके भोजपुरी में आ जाय, पर सावधानी से,अर्थ के अनर्थ कइके ना । एगो घटना लखनऊ के याद आवत बा– एगो पछिमहा कवि निराला जी से बार बार कहि के अति कइ दिहले कि हम रामचरितमानस के खड़ी बोली में अनुवाद कइ रहल बानी, आदेस पाईं त सुनाईं । निराला जी कहले कि सुनाव । कवि जी सुनवले-

मूल-रघपति कीरति विमल पताका
दण्ड समान भयऊ जस जाका
अनुवाद- राम सूर्य कुल की है झंडी
लक्ष्मण उस झंडी की डंडी

अभी उनका पढ़ला के आवाज गुँजते रहे कि केहू देखल कहूँ देखबो ना कइल बाकि सूनल सभे निराला जी का थप्पड़ के आवाज तड़ाक से कवि जी का गाल पर !

हमरा जब-जब समय मीलेला तब-तब हम, लिखला के थकान मेटावे खातिर, फिल्म देखे जाईलाँ । संसार के करीब-करीब सभी भासन के फिल्म देखे के हमरा मौका मीलल बा । बाकी हिन्दी के सगरे फिल्मन में हमार मन जवन हरले बा तबन ह भोजपुरी के 'बिदेसिया'। हम एतना लिखलीं पर फिल्मन पर कबो ना लिखलीं। बाकी बिदेसिया देखला पर मन के ना रोकि सकलीं और ओपर लेख लिखलीं । और भी भोजपुरी फिल्म अपना सम्प्रेषण शक्ति में अनमोल बाड़ी स ।

एक बात आउर कहबि । मन-कान लगा के सूनि लीं- दार्शनिक से सन्त कहीं महान होला, काहें से कि दर्शन जहाँ ऊपर की ओर तर्क का जोर से बढ़ेला उहाँ सन्त बानी चारू ओर फइलि के ढाई अक्षर वाला प्रेम से छू लेले । कुल्हि दार्शनिक सहराती रहले, कुल्हि सन्त जनपदी देहाती । दार्शनिक देवभाषा में बोललनि, सन्त मानुस बोली में । एही से जहाँ शंकर ना समझल गइलनि उहाँ बुद्ध-महाबीर समझल गइलनि । आ जब ओही लोगन के आचार्य दार्शनिक भासा में लिखे लगलनि, जनपदी भासा छोड़ि दिहलन त दूनो धरम जइसे देहात से बिला गइल । गोसाईं जी, कबीर, रैदास बनल रहिहें ।

हमरा देस में कथनी अलग करनी अलग बा । लोगवा कहता कि हम पाँच बरिस में देस से छूआछूत, बाम्हन-डोम के भेद हटा देइबि । आ ऊ कइसे कि नाम का आगा से उपधिया, पाँडे, राय, सिंह, सहाय हटा के । भला हम पूछतानी कि बाल्मीकि, ब्यास, कालिदास, भवभूति, तुलसी का नाम का आगे पाँड़े लागल बा कि शर्मा-वर्मा ? तब का जाति-पाँति ना रहे? सवाल ई बा कि आपन या अपना बेटा-नाती के बिआह रउराँ दुसरा, बिसेस कर नीच कहाये वाली, जाति में करे के हिम्मत बा ? कइले बानी ? ना, त जाये दी, झूठ के पेरीं मति ।

अब अन्त में, हमार मान्य श्रोता लोग, हम बहुत बोललीं, आप बहुत सुनलीं । सुनेवाला बोले वाला से सदा महान होला, काहें कि ऊ बोलेवाला के बरदास्त कइ लेला, सहि लेला । से रउराँ हमरा के बहुत सहलीं । हम अपना सब के धीरज कभी भुलाइबि ना। हम बोललीं,आप सुनलीं, हम निहाल भइलीं, सरग के तरई छुवलीं ! धन्यवाद !

-भगवत शरण उपाध्याय

❐

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

चउथा अधिवेशन

बरहज

(14-15-16 सितम्बर 1978)

के

अध्यक्ष

(डॉ०) कृष्णदेव उपाध्याय

के

भाषण

आदरणीय स्वागत समिति के सभापति महोदय ! माननीय प्रतिनिधिगण, सम्मानित श्रोता वृन्द, बहिन अवर भाई लोगन !

रउरा सभे एह भोजपुरी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर हमरा के प्रतिष्ठित करिके जवन किरिपा कइले बानी एकरा खातिर हम अत्यन्त कृतज्ञ बानीं । जवना पद के डा० उदयनारायण तिवारी, आचार्य डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी अवरू डा० भगवत शरण उपाध्याय जइसन अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के विद्वान लोग सुशोभित कइले बा ओह आसन के अधिकारी हम अपना के बिल्कुल नइखीं समझत । एह महान् सिंहासन पर त भोजपुरी के कवनो गंभीर विद्वान् के बइठावे के चाहत रहल ह । हम त भोजपुरी लोक साहित्य के एगो साधारण शोधी छात्र अवरू अनुसन्धानकर्त्ता हवीं। भोजपुरी के प्रचार अवरू प्रसार खातिर मिशनरी भावना से काम करे वाला साधारण व्यक्ति हवीं । हमरा अइसन सामान्य सेवक के एह बड़ पद पर बइठावल कहवाँ तक समीचीन बाटे एकर औचित्य रउरे सभ समझ सकी ले ।

जब सम्मेलन के प्रधान मंत्री जी के एह पद के स्वीकार करे खातिर सन्देश पहुँचल तब हम बड़ा असमंजस में पड़ि गइनी । एक ओर त आपन अयोग्यता के ज्ञान, अवरू दोसरा ओर प्रधानमंत्री के आज्ञा के पालन । अन्त में रउरा सभे के निर्देश के आगे सिर झुका देबे के परल अवरू स्वीकृति भेजि देनीं ।

एह पद के स्वीकार कइला से भोजपुरी के सेवा करे खातिर हमरा अधिका अवसर मिली, केवल एगो एही भावना से प्रेरित होके हम रउरा सामने उपस्थित बानीं। हमरा आसा ही नाहीं बल्कि दृढ़ विश्वास बाटे कि रउरा सभे के आशीर्वाद अवरू नेह आ छोह से, अवरू सभ भाइन के सहयोग से, हम एह दुर्बह भार के अपना कमजोर कन्धा पर ढोवे में समर्थ हो सकबि ।

भाई लोगन ! एह अवसर पर भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के विस्तृत विवेचन प्रस्तुत कइल बड़ा कठिन काम बाटे । उपधिया जी अपना "भोजपुरी साहित्य के इतिहास" में एह विषय के साङ्गोपाङ्ग विवेचन कइले बाड़े। एह से हम ओह बात के पिष्ट-पेषण कइल उचित नइखीं समझत ।

हम रउरा सभे के सामने, भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के ऊपर अब तक देस में अथवा विदेस में जवन शोध कार्य हो चुकल बाटे, ओकरे संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करेके चाहत बानी । ई बात बिना संदेह के कहल जा सकेला, कि भोजपुरी पर अब तक जेतना शोधकार्य हो चुकल बाटे, ओतना हिन्दी के कवनो बोली- अवधी, ब्रज, कौरवी, राजस्थानी आदि में नइखे भइल । एह तरह से अनुसन्धान के दृष्टि से, भोजपुरी हिन्दी के उपभासा में प्रथान स्थान के अधिकारी बाटे। भोजपुरी में जतना शोध कार्य भइल बा ओकरा के दुइ भाग में बाँटि के विचार कइल जात बाटे- (१) भोजपुरी भासा अवरू (२) भोजपुरी साहित्य । शोध कर्त्ता विद्वानन में कुछ विदेशी लोग भी बाटे। उन लोगन के शोध के पता लगाइ के एहिजा प्रस्तुत कइल गइल बा । भोजपुरी भासा खातिर ई कम गौरव के बात नहखे कि एकरा विषय में हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, अवरू जर्मन भासा के अतिरिक्त सुदूर स्पेनिश भाषा में भी शोध लेख लिखल पावल जाला।

दोसर जवना बात के ओर हम रउरा लोगन के ध्यान आकर्षित करे के चाहत बानीं ऊ संसार के विभिन्न देशन में भोजपुरी भासा के प्रचार अवरू भोजपुरी लोक- संस्कृति के रक्षा बा । मारीशस, सूरीनाम, ट्रीनीडाड अवरू फीजी में भोजपुरी भासा भासी लोग बहुत बड़ी संख्या में रहेला । ऊ लोग आपन संस्कृति भी अभी तक सुरक्षित रखले बा । ई कम आश्चर्य के बात नइखे । अवरू त का? मारीशस में भोजपुरी के ओहे लोकगीत गावल जाला जवन अपना देस में प्रचलित बाटे ।

एह विवरण से पता चलि सकेला कि भोजपुरी में कितना अनुसन्धान के कार्य हो चुकल बाटे अवरू हो रहल बा ।

(क) भोजपुरी भाषा:-

(१) भोजपुरी भाषा पर शोध कार्य करे वाला सर्वप्रथम विद्वान् डा० उदयनारायण तिवारी जी बानीं। इहाँ का आजु से लगभग 40 बरिस पहिले एगो लेख लिखले रहनी जवना के मथेला रहे "भोजपुरी के एगो बोली" (ए डाइलेक्ट आफ भोजपुरी)। ई लेख सन् 1936 ई० पटना के "बिहार एण्ड ओरिसा रिसर्च सोसाइटी" के शोध-पत्रिका में छपल रहे। तिवारी जी प्रयाग विश्वविद्यालय से अपना डी० लिट्० खातिर "भोजपुरी भासा के उत्पत्ति अवरू विकास" विषय पर शोधकार्य कइनी अवरू सन् 1945 ई० में एहाँ का डी० लिट्० के उपाधि पवलीं। एह तरह से इहाँ का भोजपुरी भासा के सम्बन्ध में शोधकार्य के परम्परा के चालू कइलीं। ई ग्रन्थ मौलिक अवरू बड़ा विद्वत्ता-पूर्ण बाटे जवना में भोजपुरी भाषा के वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन कइल गइल बा । सन् 1951 ई० में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् तिवारी जी के भोजपुरी भासा के सम्बन्ध में भाषण देवे खातिर निमंत्रित कइलसि। एह अवसर पर इहाँ का जवन भाषण दिहलीं ऊ "भोजपुरी भाषा और साहित्य" के नाम से राष्ट्रभाषा परिषद् पटना से सन् 1954 में प्रकाशित हो चुकल बाटे। एह किताब में भोजपुरी व्याकरण के बड़ा साङ्गोपाङ्ग विवेचन कइल गइल बा।

डा०उदयनारायण तिवारी पहिलका विद्वान हवीं जे भोजपुरी भासा के अपना डी० लिट् के विषय बना करके शोधकार्य कइलीं। एह से इहाँ का भोजपुरी के विद्वानन् के प्रेरणा के स्रोत बानीं। इहाँ का अपना निर्देशन में अनेक शोधी छात्रन के 'गाइड' कइके भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के बड़ा सेवा करत बानी।

(२) डा० विश्वनाथ प्रसाद- इहाँ का कई बरस तक पटना विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष-पद के सुसोभित कइलीं । एकरा बाद आगरा के "के० एम० मुन्शी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान शोध संस्थान" के निर्देशक रहलीं। विश्वनाथ प्रसाद जी लन्दन विश्वद्यालय से भोजपुरी भाषा पर शोध कार्य कइले बानी। इहाँ के शोध के विषय हवे "छपरा जिले की बोली का ध्वनिशास्त्रीय अध्ययन" । एह शोध प्रबन्ध में भोजपुरी

-बोली के ध्वनिशास्त्रीय शोध प्रस्तुत कइल गइल बा । जहवाँ डा० तिवारी के शोध प्रबन्ध में भोजपुरी के व्याकरण के विस्तार के साथ विवेचन प्रस्तुत कइल बाटे, उहवाँ विश्वनाथ प्रसाद जी के थीसिस में भोजपुरी के केवल ध्वनि पर विद्वत्तापूर्ण अध्ययन बा । ई कहे के कवनों जरूरत नइखे कि एक दूनो महान विद्वानन के शोध प्रबन्ध मूलत: अंग्रेजी भाषा में लिखल गइल बा ।

(3) हरिहर प्रसाद गुप्त-गुप्तजी बहुत साल तक सरकारी शिक्षा विभाग में काम कइलीं । इहाँ का ''आजमगढ़ जिला के फूलपुर तहसील के कृषक शब्दावली'' के अध्ययन कइले बानी। एह ग्रन्थ में किसान के जीवन में जवन जवन शब्दावली के प्रयोग कइल जाला ओकर बड़ा सुन्दर बरनन कइल गइल बा। किसान भाई लोगन के रोजमर्रा के व्यवहार में आवे वाली बोली के भी शोध प्रबन्ध के विषय बनावल जा सकेला, एह ओर गुप्तजी लोगन के ध्यान आकर्षित कइले बानीं । अगर एही तरह से भोजपुरी जनपद के सब जिलन के अध्ययन होखे त बड़ा उपकार होई ।

(४) डा० नन्दकिशोर राय- इहाँ का कई साल तक ''गवर्नमेण्ट जुबिली इण्टर कॉलेज, गोरखपुर'' में प्राध्यापक के पद पर काम कइनी। राय साहब के विषय हवे ''गाजीपुर जनपद की कृषक शब्दावली का अध्ययन !'' एह शोध प्रबन्ध में इहाँ के भोजपुरी किसान भाई लोगन का जीवन से सम्बन्धित जतना भी शब्दावली हो सकेला ओकर संग्रह अवरू विवेचन बड़ा सुन्दर ढंग से कइले बानीं। अबरू त का कहीं, कहाँर लोग पालकी ढोवत, धोबी लोग कपड़ा धोवत जवना शब्दन के प्रयोग करेला ओकरे एह थीसिस में संग्रह बाटे। जवन काम ग्रियर्सन साहब अपना ''बिहार पीजेण्ट लाइफ'' नामक ग्रन्थ में कइले बाड़न कुछ-कुछ ओही ढंग के एह काम के भी समझे के चाहीं।

(५) डा० सत्यदेव तिवारी--तिवारीजी के शोध प्रबन्ध के विषय हवे ''बलिया जिले की कृषक शब्दावली का सांस्कृतिक अध्ययंन।'' ई शोध कार्य डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में भइल बाटे। एह शोध प्रबन्ध के सबसे बड़ विशेषता ई बाटे कि तिवारी जी किसान के हल, फाल, पचखा आदि जवना विसय के बरनन कइले बाड़न ओकर चित्र अथवा डाइग्राम (नकसा) भी दे देले बाड़े जवना से ओह शब्द के ठीक ठीक अरथ समझे में सहायता मिलत बा ।

(६) डा० हरदीप तिवारी--तिवारी के शोध प्रबन्ध के विषय हवे ''सारन जिले की घरेलू शब्दावली'' जवना में, भोजपुरी जनता अपना घरेलू जीवन में जवन शब्दावली के प्रयोग करेले ओकर अध्ययन कइल गइल बा । ई शोध कार्य डा० शुकदेव सिंह के निर्देशन में भइल बा अवरू बिहार विश्वविद्यालय से पी० एच० डी०के उपाधि भी मिल चुकल बाटे ।

(७) डा० महेन्द्र नाथ दूबे--दूबेजी कई साल तक हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहनीं अवरू आजुकान्हु ''के० एम० मुन्शी हिन्दी तथा भासा विज्ञान शोध संस्थान'' आगरा में भासा शास्त्रीय अध्ययन कइले बानी ।

(८) डा० सरित किशोरी श्रीवास्तव--इहाँ के शोध प्रबन्ध के विषय हवे ''वाराणसी के स्थान-नामों का भासा शास्त्रीय अध्ययन'' । एह पुस्तक में इँहां का काशी नगरी में जवन मुहल्ला, घाट, नदी, नाला, कूप, सरोवर आदि पावल जाले स, ओकर नाम के निरुक्ति प्रस्तुत कइले बानी । यूरोप के विभिन्न देसन में ''प्लेस-नेम-सोसाइटी'' स्थापित बाड़ी स, जवना के एकमात्र उद्देश्य स्थानीय नामन के निरुक्ति अवरू इतिहास के अध्ययन बा । डा० श्रीवास्तव जी काशी के स्थान-नामन के भासाशास्त्रीय अध्ययन कइके हमनी के एगो नया दिसा देखवले बानी।

(९) डा० शुकदेव सिंह--डा० सिंह आजु काल्हु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक बानी। इहाँ के ग्रन्थ के नाम हवे "भोजपुरी और हिन्दी का तुलनात्मक अध्ययन" जवना में भोजपुरी अवरू हिन्दी के व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कइल गइल बा। ई पुस्तक लेखक के कई साल के परिश्रम के फल हवे ।

(१०) पं० गणेश चौबे- चौबे जो भोजपुरी के जानल-मानल गंभीर विद्वान् हवीं। इहां का अनेक बरिस से भोजपुरी के एगो बृहत् शब्द कोस तैयार करि रहल बानी। अभी तक कवनो विद्वान् एह गुरुतर काम में हाथ लगावे के हिम्मत भी नइखे कइले। ई त चौबे जी अइसन तलस्पर्शी विद्वान् के ही काम बाटे कि इहाँ का अकेले, बिना कवनो सहायता के, अइसन महान् कार्य के सम्पादित करत बानी। प्रकाशित भइला पर भोजपुरी भासा के ई पहिलका शब्दकोष अपना ढंग के बेजोड़ होई। आसा बाटे कि ई कोष जल्दी प्रकाश में आइ के भोजपुरी के एगो बड़हन अभाव के पूर्ति करी।

एह तरह से ई बात स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहल बाटे कि भोजपुरी प्रदेश के पाँच छः जनपद के भासा शास्त्रीय अवरू लोक शब्दावली के अध्ययन शोधी विद्वानन् के द्वारा प्रस्तुत हो चुकल बाटे। एह जनपदन में वाराणसी, आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया अवरू सारन प्रधान बाटे। देवरिया अवरू गोरखपुर जनपद के बोली पर भी अध्ययन हो रहल बा । लेकिन ऊ अभी देखे में ना आइल बा।

(ख) भोजपुरी लोक साहित्य:-

भोजपुरी भाषा के ऊपर शोध कार्य कइला के साथे ही बहुत से विद्वान् लोग भोजपुरी के लोक साहित्य पर भी अनुसन्धान कइले बाड़े ।

(११) डा० कृष्णदेव उपाध्यय - सन् 1950 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय से लोक साहित्य पर आपन शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कइले जवना के शीर्षक हवे "भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन"। ई ग्रन्थ सन् 1961 ई० में वाराणसी से छपल बाटे[१]। उपाध्याय जी के बारे में कुछ अधिक लिखल हमरा खातिर अनुचित होई।

(१२) डा० सत्यव्रत सिन्हा-डा० सिन्हा के शोध ग्रन्थ के नाम हवे "भोजपुरी लोकगाथा"। ई पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग से छप चुकल बाटे [२]। इहां का डा० उदयनारायण तिवारी के निर्देशन में प्रयाग विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले बानी । सिन्हा जी भोजपुरी प्रदेश में प्रचलित लोक गाथन के संग्रह कइके बहुत विद्वत्तापूर्ण अध्ययन प्रस्तुत कइले बानी जवना में लोरकी, विजयमल, नयकवा बनजारा, सोरठी, बिहुला, आल्हा आदि गाथा प्रसिद्ध बाड़ी स । भोजपुरी लोक गाथा के सम्बन्ध में सिन्हा जी के ई पहिला शोध प्रबन्ध हवे जवना से बहुत लोगन के प्रेरणा मिलल ।

(१३) डा० अर्जुन दास केसरी- एही सिलसिला में डा० केसरी के शोधकार्य के भी चर्चा कय दिहल बहुत आवश्यक बाटे । केसरी जी बड़ा परिश्रम अवरू धीरज के साथ भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गाथा "लोरिकायन" के विभिन्न पाठन (Versions) के संग्रह अनेक लोक-गायकन से गवाइ के लिपि के कारा में बाँध लेले बानी। अभी तक "लोरिकायन" के लिपिबद्ध ना कइल जा सकल रहल हा । एह से डा० केसरी जी एह कठिन काम के सम्पादित कइके भोजपुरी भासी लोगन के बड़ा उपकार कइले बानी । "लोरिकायन" के एह संग्रह पर उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान छः हजार रुपया के पुरस्कार देइ के इहाँ के सम्मानित कइले बाटे । डा०अर्जुन दास जी केसरी "लोरिकायन"

१- हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, सन् १९६१ ।

२ - हिन्दुस्तानी एकडमी, प्रयाग ।

के एगो सांस्कृतिक अध्ययन भी अपना शोध प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत कइले बानी जवना पर काशी विद्यापीठ से इहाँ के पी० एच० डी० के उपाधि भी मिल चुकल बाटे ।

(१४) डा० श्याम मनोहर पाण्डेय-अमेरिका के "अमेरिकन इन्स्टीट्यूट आफ इण्डियन स्टडीज" के अन्तर्गत 'लोरिकायन' पर बड़ा महत्त्वपूर्ण शोध कइले बाड़न । ऊ बिहार अवरू उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोरिकायन के विभिन्न दस १० पाठन(Versions) के टेपरेकार्डिग कइले बाड़े । लोरिकायन के एक एक पाठ आठ आठ सौ टाइप कइल पृष्ठन में समाप्त भइल बा । जब ई भोजपुरी लोक-गाथा प्रकाशित होइ जाई तब एकर महत्त्व डा० चाइल्ड के "दि इगलिश एण्ड स्काटिश पापुलर बेलेड्स" से भी अधिक होई ।

(१५) डा० श्रीधर मिश्र- डा० मिश्र जी बम्बई के खालसा कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक बानी । इहाँ का भोजपुरी के लोक साहित्य के सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत कइले बानी। इहां के शोध प्रबन्ध के शीर्षक हवे "भोजपुरी लोक साहित्य सांस्कृतिक अध्ययन "[१] । एह पुस्तक में भोजपुरी लोक-गीत, लोकगाथा अवरू लोककथा में जन-जीवन के जवन चित्रण पावल जाला ओकर बड़ा गम्भीर विवेचन भइल बाटे । मिश्र जी तलस्पर्शी विद्वान् हईं एह से एह पुस्तक में इहाँ के विद्वत्ता के छाप पावल जात बा।

कई शोधी छात्र भोजपुरी के लोकगीतन के लेइ के अनुसन्धान कार्य कइले बाटे लोग जवना में नीचे लिखे लोगन के कार्य प्रशंसनीय बाटे ।

(१६) डा० हीरालाल तिवारी- डा० तिवारी के शोध प्रबन्ध के नाम हवे "काशिका जनपद के लोक गीत"। डा० श्रीकृष्ण लाल के निर्देशन में शोध कार्य कइके तिवारी जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले बानी । भोजपुरी के पश्चिमी बोली में जवन गीत पावल जाले स ओकरे अध्ययन एह शोध प्रबन्ध में कइल गइल बाटे । काशिका जनपद में भोजपुरी के पश्चिमी रूप पावल जाला । एह से काशी जनपद के लोक गीतन के अनुसन्धान आपन विशेस महत्त्व रखत बाटे ।

(१७) डा० भूदेव पाण्डेय-पाण्डेय जी " भोजपुरी के ऋतु गीतन के अध्ययन" कइले बाड़े। इनकर शोध प्रबन्ध के निर्देशक डा० कृष्णदेव उपाध्याय रहलन । उनुकरे निर्देशन में शोध कार्य कइके आगरा विश्वविद्यालय से पाण्डेय जी पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले बाड़े। यद्यपि इनकरा शोध प्रबन्ध के नाम ऋतुगीतन के अध्ययन बाटे लेकिन एह में प्रधान रूप से मिर्जापुरी 'कजली' के ही अध्ययन पावल जाला ।

(१८) डा० हरगोविन्द तिवारी-तिवारी के थीसिस के शीर्षक हवे "भोजपुरी संस्कार-गीतों का अध्ययन" । डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में ही तिवारी जी भी आपन शोध कार्य कइले बाड़न । जहवाँ पाण्डे जी भोजपुरी के ऋतुगीतन पर अपना शोध कार्य के पूरा कइले ओहिजा तिवारी के काम संस्कार गीतन पर बा । एह तरह एह दूनो लोगन के शोध कार्य एक दूसरा के पूरक कहल जा सकेला ।

(१९) श्री रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'- ओझा जी 'भोजपुरी शब्दानुशासन" ग्रन्थ के रचइता अवरू भोजपुरी जगत् के चिरपरिचित लेखक हवीं। इहाँ का "भोजपुरी लोक-कथा" के ऊपर डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में शोध कार्य कर रहल बानी । श्री परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' भी "पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक कथा के सांस्कृतिक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य में लगल बानी। आसा बाटे कि जल्दी ही आप लोग पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कर लेइबि। कुछ विद्वान् लोग भोजपुरी लोग गीतन के

१- हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, सन् १९..... ई० ।

समाज शास्त्रीय अध्ययन भी प्रस्तुत कइले बाड़े जवना में-

(२०) डा० इन्द्रदेव- के नाम प्रसिद्ध बाटे। डाक्टर साहब के शोध प्रबन्ध के मथेला हवे "भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन"। एह थीसिस पर डा० इन्द्रदेव के लखनऊ विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग से पी० एच०डी० के उपाधि मिल चुकल बाटे। ई शोध कार्य सुप्रसिद्ध मानव विज्ञान शास्त्री डा० डी० एन० मजुमदार के निर्देशन में भइल बाटे । ई बड़ा दुख के बात बा कि अइसन विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ सम्भवत: अभी तक प्रकाश में नइखे आइल । ई शोध प्रबन्ध अंगेजी में लिखल बाटे अवरू अनेक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण बा ।

भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करे वाला दोसरका विद्वान्–

(२१) डा० हरिशंकर उपाध्याय हवे। उपाध्याय जी अमेरिका के इण्डियाना विश्वविद्यालय, ब्लूमिंगटन से भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन कइले बाड़न जवना पर इनकरा के एह विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के डिग्री मिल चुकल बाटे। डा० विश्वनाथ प्रसाद के बाद डा० उपाध्याय दोसरका विद्वान् हव जेकरा के भोजपुरी पर विदेशी (अमेरिकी) विश्वविद्यालय से शोध डिग्री प्राप्त भइल बाटे ।

(२२) डा० गंगाचरण त्रिपाठी–डा० उदय नारायण तिवारी के निर्देशन में सन् 1958 में आपन शोध प्रबन्ध लिखले जवना के शीर्षक बाटे "भोजपुरी, ब्रज तथा अवधी का तुलनात्मक अध्ययन"। एह थीसिस पर त्रिपाठीजी के प्रयाग विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० उपाधि मिल चुकल बा । भोजपुरी, ब्रज अवरू अवधी भासा में उपलब्ध लोक गीतन के एह शोध में बड़ा ही गम्भीरता पूर्ण विवेचन कइल गइल बा। भोजपुरी लोक गीतन के तुलनात्मक अध्ययन संबंधी ई पहिलका प्रयास हवे।

(२३) डा० किरन मराली–डा० मराली के शोध प्रबन्ध के मथेला हवे "भोजपुरी तथा अवधी लोकगीतन में रामकथा"। एह थीसिस में मराली जी भोजपुरी अवरू अवधी में रामकथा के जवन स्वरूप मिलेला ओकर तुलनात्मक अध्ययन कइले बाड़ी। डा० पाण्डेय के बाद डा० मराली के ई दूसरका अध्ययन हवे जवना में तुलनात्मक दृष्टि से विचार कइल बाटे । आजु काल्हु मराली जा मदन मोहन मालवीय महाविद्यालय भाटपाररानी, जिला देवरिया में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक बाड़ी ।

(२४) डा० अमर बहादुर सिंह के शोध के विषय हवे " भोजपुरी ओर अवधी सीमा बोलियों का अध्ययन"। एह शोध प्रबन्ध पर डी० फिल० के उपाधि सन् 1960 ई० में में इनकरा मिल चुकल बा ।

(२५) डा० वकील सिंह––श्री सोमेश्वर महाविद्यालय, अरेराज, चम्पारन जिला में प्राध्यापक हवीं। इहाँ का बिहार विश्वविद्यालय के अन्तर्गत "चम्पारन की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन" पर डाक्टर कामेश्वर शर्मा का निर्देशन में शोध कइके पी० एच० डी० पवले बानी।

(२६) डा० महन्त मिश्र के शोध के विषय हवे "भोजपुरी का क्रिया पद"। ई अनुसन्धान पटना विश्वविद्यालय से भइल बाटे । भोजपुरी क्रिया पदन पर संभवत: ई पहिलका शोध प्रबन्ध हवे ।

(२७) डा० चन्द्रसेन कुमार जैन-उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हवन । सन् 1975 ई० में "ओड़िया और भोजपुरी प्रत्ययों का तुलनात्मक अध्ययन" पर उत्कल विश्वविद्यालय से इहाँ के पी० एच० डी० के उपाधि मिल चुकल बाटे ।

(२८) विदेशी विद्वानन में भोजपुरी भाषा पर काम करे वालन में जान अरब किलवड़ा प्रसिद्ध बाड़े। ई बिदेसन में जहवाँ जहवाँ भोजपुरी लोग बसल बा ओहिजा जाइ कं ऊ लोग के बोली के नमूना एकत्रित कइले बाड़न । ई शोध के काम केतना व्ययसाध्य, श्रमसाध्य अवरू समयसाध्य बा एकर अनुमान सहज में ही कइल जा सकेला ।

(२९) श्री रामेश्वर ओरी-मारिसस देस के निवासी रहले हा। ई अपना देस के भोजपुरी के स्वरूप पर संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से विद्यावारिधि (पी०एच०डी०) के उपाधि पवले बाड़न ।

लोकोक्तियाँ:-

भोजपुरी लोकोक्तियन पर तीन चार विद्वान शोध कार्य कइले बाड़न जवना में:-

(३०) डा० सत्यदेव ओझा अग्रणी बाड़े। डा० ओझा के विषय "भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन" हवे। ओझा जी हजारन लोकोक्तियन के संग्रह कइके एकर अध्ययन प्रस्तुत कइले बाड़न । एह विषय में ई सर्वप्रथम प्रयास भइला के बावजूद भी एह प्रबन्ध के आपन महत्व बाटे । अभी तक ओझा जो के ई प्रबन्ध प्रकाश में नइखे आ सकल इहे दु:ख बाटे।

(३१) डा० शशिशेखर तिवारी-डा० तिवारी भोजपुरी साहित्य के एगो विधा भोजपुरी लोकोक्तियन पर अनुसन्धान कइले बाड़न जवन "भोजपुरी लोकोक्तियाँ" के नाम से छप भी चुकल बाटे ।[1] एह पुस्तक के वक्तव्य में डा० कुमार विमल लिखले बाड़े कि "डा० शशिशेखर तिवारी ने प्रस्तुत ग्रन्थ में लगभग पाँच हजार भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन कर उनका भाषावैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया है"। एही कथन से एह ग्रंथ के कुछ महत्त्व समझल जा सकेला । वास्तव में एह ग्रन्थ में भोजपुरी प्रदेश के सांस्कृतिक अध्ययन संक्षेप में प्रस्तुत कइल गइल बाटे । परिशिष्ट में लगभग १५०० लोकोक्तियन के संग्रह भी दिहल गइल बा जवन स्वयं में बड़ा महत्त्वपूर्ण कहल जा सकेला ।

(३२)डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'-जे चतुरी चाचा के नाम से अधिक प्रसिद्ध बाड़न, भोजपुरी लोकोक्तियन पर अनुसन्धान कइले बाड़न । इनकरा एम०ए० के थीसिस के नाम हवे "भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहाबरे" । एह पुस्तक में तिवारी जी लोकोक्तियन के वर्गीकरण कइके सुन्दर विवेचन कइले बाड़न । संभवत: "भोजपुरी मुहावरन" पर तिवारी जी के शोध प्रयास सबसे पहिला हवे । एम० ए० के थीसिस होत भी ई ग्रन्थ कवनो पी०एच० डी० के शोध प्रबन्ध से कम नइखे। भोजपुरी गद्य के क्षेत्र में तिवारी के बड़ा नाम बाटे जवना के वर्णन दोसरा अवसर पर कइल जाई ।

(३३) श्री शत्रुघ्न पाण्डेय-पाण्डेय जी बलिया में लक्ष्मीराज देवी इण्टर कालेज में उपाचार्य बाड़े । ई "भोजपुरी के सन्त कवियन" पर आपन शोध प्रस्तुत करे में लागन बाड़न । भोजपुरी प्रदेश में अनेक सन्त, महात्मा अवरू साधु पैदा भइलन जेकर 'बानी' अभी तक प्रकाश में नइखे आइल । पाण्डेय जी अइसन सन्तन के कविता के अध्ययन कइके काशी विद्यापीठ, वाराणसी से आपन थीसिस प्रस्तुत करि रहल बाड़न।

भोजपुरी लोक नाट्य:-एह विषय पर भी शोध कार्य हो चुकल बाटे ।

(३४) डा० भरत सिंह- डा० सिंह के शोध के शीर्षक हवे 'भोजपुरी लोक नाट्य'। ई शोध डा०दशरथ ओझा के निर्देशन में भइल बाटे जवने पर आगरा विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० मिल चुकल बाटे । भरत सिंह जी अपना शोध में भोजपुरी के लोक

१: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना; १९७०

नाट्यन के अतिरिक्त आधुनिक नाटकन के भी सम्मिलित कइ लं लं बाड़े जवन वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नइखे ।

(३५) **श्री आद्या प्रसाद द्विवेदी**-द्विवेदी जी बलिया के सतीशचन्द्र डिग्री कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक बाड़न। ई भोजपुरी के लोक नाट्यन के अपना अनुसन्धान के विषय बनवले बाड़े। इनकरा शोध के बिसेसता ई बाटे कि गोंड़ऊ, चमरऊ, कहरवा, धोबिया आदि लोक नाटक़न के स्वयं देखि के ई ओकर विवेचन कइले बाड़न । भिखारी ठाकुर के बिदेसिया नाटक के बड़ा सुन्दर अवरू विस्तृत वर्णन बाटे।

(३६) डा० प्रियम्बदा गुप्त-प्रियम्बदा जी डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पी०एच०डी० प्राप्त कइले बाड़ी । इनकर शोध के विषय हवे '' लोक जीवन में लोक विश्वासों तथा अन्ध परम्पराओं का अध्ययन''। ई अपना विषय के पहिलका शोध प्रबन्ध हवे । भोजपुरी जन जीवन में प्रचलित विश्वासन के एह में गंभीर अध्ययन कइल बाटे ।

(ग) विदेशी लोगन के द्वारा भोजपुरी में अनुसन्धान कार्य:-

भारतीय विद्वांनन के अतिरिक्त कुछ विदेशी शोधी छात्र भी भोजपुरी लोक-साहित्य पर अनुसन्धान कार्य कइले बाड़न जवना के संक्षिप्त विवरण एहिजा प्रस्तुत कइल जात बाटे।

(३७) डा० जितका हरटीग-डा० जितका एगो चेकी महिला हवी जे विआह के कारन अब स्विस हो गइल बाड़ी। चेकोस्लोवाकिया के प्राग जवना के चेकी लोग प्राहा कहेला विश्वविद्यालय में ई हिन्दी अवरू भोजुपरी के अध्ययन कइके भारत में भोजपुरी लोक गीतन पर शोध कार्य करे खातिर आइल रहली । कई महीना तक भोजपुरी प्रदेश में भ्रमण कइके ई लोक गीतन के संकलन कइली अवरू ओही आधार पर आपन शोध प्रबन्ध लिखली। इनका थीसिस के नाम हवे ''फोक साङ्गस आफ बलिया डिस्ट्रिक्ट'' अर्थात् बलिया जनपद के लोक गीत । एह शोध प्रबन्ध पर स्विटजरलैण्ड के बर्न विश्वविद्यालय से इनकरा के पी० एच०डी० डिग्री मिल चुकल बा। एह प्रकाशित ग्रन्थ में डा० जितका भोजपुरी लोक गीतन के रोमन अक्षरन में लिखि के अंग्रजी में अनुवाद कइले बाड़ी''।[1]

मूल रूप में ई शोध प्रबन्ध जर्मन भासा में लिखल गइल रहे लेकिन ओकर समधिक प्रचार के दृष्टि से डा० जितका अंग्रेजी में अनुवाद कइके छपवले बाड़ी। जितका के भोजपुरी भाषा के ज्ञान बहुत अच्छा बाटे जवना के पता पुस्तक में लिखल टिप्पणी से चलत बाटे। कहाँ स्टिजरलैण्ड अवरू कहवाँ भोजपुरी प्रदेश के बलिया जनपद, लेकिन भोजपुरी के माधुरी एह विदेशी महिला के भी अपना ओर खींच लिहलसि।

(३८) मिसेज कैथेराइन-कैथेराइन फ्रान्सीसी महिला हवी। पहिले ई पूना विश्वविद्यालय में फ्रेन्च भासा के प्राध्यापक रहली । डा० कृष्णदेव उपाध्याय के द्वारा सम्पादित भोजपुरी लोक गीतक भाग १ से २०० गीतन के लेइ के ई फ्रेन्च भासा में ओकर अनुवाद कइले बाड़ी । भोजपुरी गीतन के अनुवाद अवरू टिप्पणी (नोट्स) लिखि के ई पेरिस विश्वविद्यालय से आपन थीसिस प्रस्तुत कइले बाड़ी । उनकर निर्देशक रहली हा ड़ा० बार्दाबिल जे लोक साहित्य के जानल मानल विदुषी हवी ।

१- स्विटजरलैंड के एगो संस्था से प्रकाशित ।

(३९) श्री ओ० हेनरी-ई एगो अमेरिकी शोधी छात्र रहले जे भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन कइले बाड़े। बलिया अवरू गाजीपुर के कइगो गाँवन में रहिके ई भोजपुरी समाज के बड़ा नजदीक से अध्ययन कइले । अनेक त्यौहारन के अवसर के फोटो लेके अवरू लोक गीतन के टेप रिकार्ड कइके ई अमेरिका ले गइल बाड़न।

(४०) मिस सेन्द्रा फैगन-कुमारी फैगन आस्ट्रेलिया देश के मेलबोर्न नगर के निवासी हई । ई अपना देश के मोनाश विश्वविद्यालय से संगीत शास्त्र में डिग्री लेके भारत में भोजपुरी लोक संगीत पर शोध करे खातिर आइल बाड़ी । आजु कान्हु ई भोजपुरी के कुछ लोक गीतन के अंग्रेजी भाषा में पद्यानुवाद करे में लागल बाड़ी। आसा बाटे कि भोजपुरी गीतन के संगीत पक्ष पर इनकर शोध प्रयास सफल होई ।

(४१)एह समय वाराणसी में बहुत से विदेशी छात्र विशेषकर अमेरिका से आइल बाटे लोग जवना में कुमारी लिण्डाहेस के नाम प्रसिद्ध बा । ई रामलीला पर शोध कार्य कर रहल बाड़ी । एह साल कुआर में जवन दसहरा बीतल हा ओह समय ई रोज राति खा रामलीला देखे खातिर रामनगर जात रहली हा । एही घटना से उनुकर रामलीला के प्रति प्रेम के पता चलत बाटे । एगो दोसर अमेरिकी छात्र भोजपुरी लोक-नाट्य पर शोध करत रहले ह । ऊ आपन अनुसन्धान कार्य खतम कइके अमेरिका लवटि गइले ।

ई बात जानि के बड़ा खुसी होत बाटे कि भोजपुरी भासा के माधुरी से प्रभावित होके अनेक विदेशी छात्र लोग एह क्षेत्र में शोध कार्य करि रहल बाड़न । लेकिन ई बड़ा दुःख के बात बाटे कि ई विदेशी लोग अतना काम हमनी के भासा पर करि रहल बाड़न लेकिन हमनी का हाथ पर हाथ रखिके बइठल बानी जा।

(घ) बिदेसन में भोजपुरी के प्रचार अवरू प्रसार:-

भोजपुरी भासा के प्रचार एह देस के अलावा संसार के अनेक देसन में भी पावल जाला । आजु से सौ डेढ़ सौ बरिस पहिले, जवन भोजपुरी भाई लोग ब्रिटिश सरकार के जाल में फंसि के बिदेस गइलन ऊ लोग अपना साथे आपन 'मतारी भासा' भी ले गइल । ई कुछ कम अचरज के बात नइखे कि आजु सैकड़न साल बीति गइला के बाद भी ऊ लोग आपन भासा के जोगाइ के रखले बाटे अवरू अपना संस्कृति के भी अभी नइखे छोड़ले लोग ।

आजु संसार के अनेक देसन में भोजपुरी के भासा भासी लोग पावल जाला । मारिशस, फीजी, ट्रीनीडाड़, सूरीनाम, ब्रिटिश गाइना, केनिया, युगाण्डा, सिंगापुर, बर्मा, नेपाल आदि अनेक देसन में भोजपुरी भाई लोग लाखन के संख्या में बसि गइल बा लोग । अतने नाहीं, ओह देस के राजनीति में ई लोगन के प्रमुख हाथ भी बाटे । मारिशस के वर्त्तमान प्रधान मन्त्री डा० सर शिवसागर रामगुलाम हमनी के ही भाई हवन अवरू ब्रिटिश गाइना के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री डा० छेदी जगन एही भोजपुरी धरती के ही रतन हवे । आजु काल्हु भी डा० जगन के अपना देस के राजनीति में एगो प्रधान स्थान बाटे । हम सब भोजपुरी भाई लोगन खातिर ई कतना गौरव अवरू अभिमान के बात बाटे कि आजु से कुछ साल पहिले मारिशस अवरू ब्रिटिश गाइना ई दु गो देसन के प्रधान मन्त्री के महान पद के भोजपुरी भाई लोग सुसोभित करत रहे अवरू आजु भी मारिशस के प्रधानमन्त्री के पद के सोभा एगो अपने भाई बढ़ा रहल बाड़े ।

मारिशस देस में आधा से अधिक जनसंख्या भारतीय लोगन के बाटे । ओहिजा भारत के विभिन्न प्रान्तन के लोग जाइ के बसल बा । लेकिन सभी लोग भोजपुरी भासा हो बोलेला । विश्व हिन्दी सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन में जे लोग पूर्वी उत्तर प्रदेश

से प्रतिनिधि होइ के गइल रहे, ओह लोगन से पता चलल कि ओह देस में भोजपुरी भासा के अखण्ड साम्राज्य बाटे । यद्यपि ओह देस के राजभासा फ्रेन्च हवे, अवरू कुछ लोग स्थानीय भासा क्रियोल भी बोलेला, लेकिन अधिकांस लोग अपना घरेलू अवरू दैनिक व्यवहार में भोजपुरी के ही प्रयोग करेला । हम अधिका का कहीं, आजु तक ओहिजा भोजपुरी के लोक गीत प्रचलित बाटे । अवरू लड़िका के जनम आ बिआह अइसन मांगलिक अवसर पर गीत गावल जाला ।

गाँव के लोग मारिशस के 'मरिचि' देस कहेला । ई बात त परसिधे बा कि एहिजा के लोग 'गिरिमिटिया प्रथा' के अन्तर्गत ओह देस में गइल रहे । धन अवरू सोना के लालच देइ के सरकारी एजेन्ट, जवना के गिरिमिटिया कहल जात रहे, सीधा-सादा लोगन के फँसाइ के अहिजा ले ज़ास । एह बात के प्रतिध्वनि मारिशस के एगो लोक गीत में पावल जाला।

"सोनवा के लालच से हम गइनी मरिचि देसवाँ
कि माटी हो गइल सोना अइसन देहि ।"

एह गीत के पंक्ति में भोजपुरी भाई लोगन के मरिचि देस के यात्रा के इतिहास छिपल बाटे ।

जे भोजपुरी लोग मारिशस गइल, ऊ लोगन के बड़ा कष्ट उठावे के परल । दिन रात ऊखी के खेत में काम करे के पड़त रहे । खेत के कोड़ऽ, जोतऽ खाद दऽ अवरू गोंडऽ रात दिन इहे काम रहे। अगर कवनो गलती होइ जाइ, त अंग्रेज जमींदार के कोड़ा सहे के पड़त रहे । अतवार के दिन भी छुट्टी ना रहे । रोज कोड़ा के पिटाई अवरू बेंत के मार । इहे दिनचर्या रहे। मारिशस देस में प्रचलित एगो लोक गीत में भोजपुरी भाइन के दुरदसा के बड़ा सजीव अवरू दर्दनाक चित्रण कइल बाटे। गीत सूनीं–

"अंगाजे[1] रहल भइया, अंगाजे रहल भइया ।
एक महीनवा में पाँच गो रुपइया हो ।।१।।
खाये के मोटका चाउर, रहल खूबे लाल ।
कोको[2] के तेल आउर खेंसारी के दाल ।।२।।
ओढ़े के गोनो[3] अवरू सूते क चटइया हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल हो ।।३।।
सेमेनवा[4] भर रहलीं साहेबवा के गुलाम हो ।
दिमास[5] के दिनवा मदमवा[6] के गुलाम हो ।।४।।
पूजा पाठ छोड़ि के तूँ कोरवे[7] दे दे भइया हो ।
कन्धा पर कुदारी लेके लापेल[8] तुहूँ जइब हो ।।५।।
दरिया[9] देविदे[10] करिके फिमिया[11] बिछाइब हो ।
कपार पर बाल्टी लेके लांग्रे[12] ढोइब भइया हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।।६।।
लांग्रे नहीं ढोइब त, तू मारू[13] कहइब हो ।
साहेबवा के लठिया से मार तुहूँ खइब हो ।।७।।
एक दिन के बदले दुइ दिन मारू होइब हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।।८।।

---

१. इन्गेज अर्थात् शर्तबन्द कुली । २. नारियल । ३. बोरा (गनी बैग) । ४. सप्ताह । ५. रविवार । ६. मैडम (श्रीमती अर्थात् मालकिन) । ७. डयूटी । ८. उपस्थिति हाजिरी । १२. विष्ठा । १३. अनुपस्थित ।

मजदूर के दु:खवा के जब सुनलन हाल हो ।
मोरिस[14] में अइसन दोक्तेर[15] मनी लाल हो ।।९।।
अउर गुलामी के जंजीर तूरके[16] गइलन हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।।१०।।

एह गीत से दूइ बातन के स्पष्ट पता चलत बाटे- (१) प्रारम्भ में मारिशस में गइल भाइन के दुरदसा अवरू (२) भोजपुरी भासा के स्वरूप । मारिशस के भोजपुरी में कितना परिवर्तन हो गइल बाटे । एकर भी पता चलत बा। ऊपर के गीत में अंगेजी, फ्रेन्च अवरू क्रियोल भासा के शब्दन के भी प्रयोग पावल जात बा । एह से ए गीत के भासाशास्त्रीय दृष्टि से भी बड़ा महत्त्व बाटे ।

सूरीनाम दक्षिणी अमेरिका में स्थित एगो छोट देस हवे । एहिजा भी भोजपुरी बोले वाला लोग अधिक संख्या में पावल जाला । कईगो विद्वान लोग जे सरनामी, अब सूरीनाम के एही नाम से पुकारल जात बाटे, भोजपुरी के अध्ययन करि रहल बाड़न । सूरीनाम के निवासी एगो भोजपुरी भाई जेकर नाम श्री मोती राम माढ़े हवे, हालैण्ड देस के विश्वविद्यलय में ''सरनामी भोजपुरी अवरू डच भासा के व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर आपन शोध कार्य करि रहल बाड़न । ऊ दुइ बार भारत भी आइल रहलन । अपना देस में प्रचलित लोक गीतन के भी सुनवलन जवना में से एगो गीत रउरा सभे के मनोरंजन खातिर हम सुना रहल बानीं। सूरीनाम के भोजपुरी लोकगीत-

''सुनऽ सनुऽ सरनाम के बासी, चार जुगन के एक कहानी ।
रास्ता में आरकाटी मिलि गइल, बेचि के ले दिहलसि दाम ।
वादा के सरकार कहलसि देस खुसी के जावऽ ।
काटि के गिरमिट पाँच बरिस के, तोहरा के मिलि इनाम ।।
जहाज के अन्दर कई महीना, नया मुसीबत कटलीं ।
सात समुन्दर, काला पानी, बड़ा कष्ट से गइलीं ।।
मक्खी फसल सहद में आके, हो गइल पूरा गुलाम ।
खेत में मेहनति दिन रात कइलीं, निनिया भइल हराम ।।''

एही तरह से फीजी, ट्रीनीडाड अवरू ब्रिटिश गाइना आदि देसन में प्रचलित भोजपुरी भासा के स्वरूप के उदाहरण दिहल जा सकेला। ''विदेसन में भोजपुरी भासा के स्वरूप'' एह विषय पर बड़ा सुन्दर अनुसन्धान हो सकेला । आसा बाटे कि केहू विद्वान एकरा के आपन शोध के आधार बनाई ।

मारिशस अवरू सूरीनाम देसन में व्यवहृत भोजपुरीं लोक गीतन के उदाहरण रउरा सभ के सामने प्रस्तुत कइला में हमार केवल एके उद्देश्य बाटे कि सब भोजपुरी भाई लोग एह बात के जाने कि हमार भासा संसार के कतना देसन में बोलल जाले अवरू हमार लोक संस्कृति ओह देसन में कतना अक्षुण्ण रूप से आजु भी सुरक्षित बाटे ।

भोजपुरी अकादमी के स्थापना

ई जानि के रउरा सभे के बड़ा प्रसन्नता होई कि बिहार के राज्य सरकार पटना में भोजपुरी अकादमी के स्थापना कइलसि ह । एह काम खातिर बिहार सरकार के जतना प्रशंसा कइल जाव सब थोड़ा बा । एह से भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के अभिवृद्धि आ उन्नति में बहुत सहायता मिली । एह सम्मेलन के ओर से हम बिहार के मुख्यमन्त्री जी के बहुत आभार स्वीकार करत बानी । भोजपुरी केवल बिहार के भासा ना हवे बल्कि उत्तर प्रदेश के नव गो जनपद के निवासी लोगन के भी मातृ भासा हवे, अवरू ई मध्य

१४. मारीशस । १५. डाक्टर-। १६. नुड़के बन्धन काट के ।

प्रदेश में भी बोलल जाले । एह से अकादमी के कार्य समिति में अवरू साधारण सदस्य समिति में सभी जनपद के प्रतिनिधित्व होखे के चाहीं । ई बहुत जरूरी बाटे । बिहार सरकार अवरू अकादमी के वर्तमान अधिकारी लोग एह बात पर धेयान दिही लोग अइसन आसा बाटे ।

कुछ सुझाव--भोजपुरी भासा अवरू साहित्य खातिर आप सभ विद्वानन के सामने कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहल बानी । आसा बा कि रउरा सभे एह पर जरूर धेयान देबि।

१-अखिल विश्व भोजपुरी भासा भासी सम्मेलन :-

रउरा सामने हम निवेदन करि चुकल बानी कि संसार के अनेक देसन में भोजपुरी बोले वाला लोग बसल बा । एह सभ भाई लोगन के एक जगह पर एक मंच पर, एकत्रित कइला के जरूरत बाटे । एह से एगो अखिल विश्व भोजपुरी सम्मेलन कइला के आवश्यकता मालूम पड़त बाटे जहवाँ सभ भाई लोग मिलि सकसु । एह सम्मेलन से ई पता चली कि संसार में भोजपुरी भासा के प्रचार कहवाँ कहवाँ बाटे अवरू हमार लोक संस्कृति ओहिजा कवना रूप में सुरक्षित बा। हम जानत बानीं कि ई काम बड़ा कठिन बाटे । एकरा खातिर समय, श्रम, शक्ति अवरू धनराशि खर्चा करे के पड़ी । लेकिन संसार में कवनो काम असम्भव नइखे । अइसन सुने में आइल हा कि पटना में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के आयोजन निकट भविष्य में होखे वाला बाटे । ऊ दिन भोजपुरी भासा भासी लोगन खातिर बड़ा मांगलिक अवरू 'सुवर्ण दिवस' होई जवना दिन अनेक देसन के लोग एक मंच पर एकत्रित होकर भोजपुरी में आपन विचार के आदान प्रदान करी लोग । हम ओह मंगलमय दिवस के हृदय से कामना करत बानी ।

(२) विश्वविद्यालय में भोजपुरी के मान्यता--भोजपुरी के उन्नति खातिर ई बात बहुत जरूरी बाटे कि भोजपुरी प्रदेश में स्थित विश्वविद्यालय द्वारा भोजपुरी के मान्यता दिहल जाव । ई बहुत प्रसन्नता के बात बाटे कि बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में भोजपुरी विभाग के स्थापना हो गइल बा अवरू ओहिजा इण्टर आ बी० ए० में भोजपुरी के पढ़ाई भी प्रारम्भ बा । आसा बाटे कि एम० ए० में भी जल्दीए पढ़ाई शुरू हो जाई। पटना, गया, राँची, प्रयाग, वाराणसी अवरू गोरखपुर विश्वविद्यालय में भी भोजपुरी के विभाग स्थापित होखे के चाहीं जेह से छात्र लोग विश्वविद्यालय के स्तर तक भोजपुरी के अध्ययन करि सके ।

(३) भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना--भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के सर्वाङ्गीण समुन्नति खातिर भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना अत्यन्त आवश्यक बाटे । भोजपुरी प्रदेश में बहुत से धन कुबेर बाड़न जे चाहसु त अकेले ही एह विश्वविद्यालय के स्थापना के साकार कर सकेलन । हमार सुझाव बा कि अइसन विश्वविद्यालय के स्थापना देवरिया अथवा आरा में कइल जा सकेला । देवरिया जनपद में अनेक 'राजा' लोग बाड़न जे अपना उदारता के परिचय देइ के अक्षय कीर्ति कमा सकेला । अइसहीं आरा में ई काम धनी लोगन के किरिपा से सम्भावना के परिधि भीतर ले आवल जा सकेला ।

(४) भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन---भोजपुरी में सन्त साहित्य के अगाध भण्डार भरल बाटे । भोजपुरी के सन्त कवि लोगन के रचना उनुकरा मठ के बेठन में बांधल पड़ल बा । आजु तक एह ग्रन्थन के प्रकासन ना हो सकल । जवना से भोजपुरी के अमूल्य साहित्य अभी तक प्रकास में नइखे आ सकल । एह से ई काम बहुत जरूरी बाटे कि एह अनमोल पुस्तकन के छापि के प्रकाशित कइल जाउ । भोजपुरी अकादमी

एह काम क आसानी से करि सकेले ।

भोजपुरी में अनेक नवयुवक कवि अवरू लेखक लोग बाटे जे अपना रचना के प्रकासन के अभाव में अधखिली कली नियर बिना विकासे पवले मुरझा जात बा लोग। एह से एह लेखकन के भी रचना के प्रकाशित करे के चाहीं।

प्रकासन के सम्बन्ध में भोजपुरी अकादमी अवरू सम्मेलन के नीति बहुत उदार होखे के चाहीं । हमरा कहे के मतलब ई बा जे लोग 'भोजपुरी में' अथवा 'भोजपुरी पर' लिखे ऊ दूनो प्रकार के रचना छापे के चाहीं। अगर केहू विद्वान भोजपुरी के व्याकरण, इतिहास अथवा शब्दकोष हिन्दी में लिखत बाटे ओकरो पुस्तक प्रकाशित करे के चाहीं। इतने नाहीं, अगर अंग्रेजी अथवा जर्मन भासा में भी भोजपुरी सम्बन्धी रचना मिले त ओकरो स्वागत करे के चाहीं । भोजपुरी भासा, साहित्य अवरू संस्कृति पर कवनो भासा देसी अथवा विदेसी में लिखल ग्रंथ स्वागत अवरू प्रकाशन के पात्र बाटे।

(५) रेडियो स्टेशन के स्थापना-भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के सम्यक् प्रचार खातिर भोजपुरी प्रदेश में एगो रेडियो स्टेशन के स्थापना वांछित ही नइखे, बल्कि अनिवार्य भी बाटे । कवनो भासा के प्रचार खातिर सिनेमा अवरू रेडियो ई दूनों आधुनिकतम साधन हवे । भोजपुरी में आजु तक एक दर्जन से भी अधिक फिल्म बनि चुकल बाड़ी स, जवना से भोजपुरी के धुंआधार प्रचार हो रहल बाटे । कलकत्ता अवरू बम्बई अइसन महानगरो में भी भोजपुरी फिल्म धूम मचा देले बा । कइगो फिल्म निर्माण के अवस्था में बाटे जवना के 'शूटिंग' वाराणसी, आरा अवरू पटना में हो चुकल बा। एह तरे भोजपुरी के फिल्म पक्ष बहुत सशक्त बाटे।

लेकिन रेडियो के द्वारा भोजपुरी के जइसन प्रचार होखे के चाहीं ओइसन नइखे होत । हम मानत बानी कि वाराणसी, इलाहाबाद, गोरखपुर अवरू पटना रेडियो स्टेशन से भोजपुरी लोक गीत अवरू वार्ता के प्रसारण होखेला, लेकिन अतना ही पर्याप्त नइखे । भोजपुरी अइसन महान भासा के प्रचार खातिर एगो पृथक रेडियो स्टेशन के आवश्यकता बाटे जवना के स्थापना देवरिया, गाजीपुर, बलिया, छपरा आ आरा आदि कवनो स्थान में कइल जा सकेला । भोजपुरी के एगो फुल फ्लेज्ड रेडियो स्टेशन के बिना काम ना चलि सकेला ।

भोजपुरी प्रदेश के महत्त्व

भारत में प्राचीन काल से ही भोजपुरी प्रदेश के बड़ा महत्त्व चलि आइल रहल बा। ऋग्वेद में जवन 'भोजाः' शब्द आइल बा ऊ भोजपुरी लोगन के वाचक ह कि ना एह में विवाद हो सकेला लेकिन षोडश महाजनपद के काल में कोशल, कौशाम्बी अवरू मगध आदि जनपद एही प्रदेश के सीमा में रहे । एही प्रदेश में भगवान बुद्ध अवरू महावीर जइसन क्रांतिकारी सुधारक पैदा भइलन जेकर कीर्ति से भारतीय इतिहास भरल पड़ल बाटे । एही देवरिया जनपद के कुशीनगर स्थान में तथागत निर्वाण प्राप्त कइले अवरू गोरखपुर जिला में अवतार लिहलन । भगवान महावीर अवरू जैन धर्म के अनेक तीर्थंकर लोगन के जनम एही प्रदेश में भइल बाटे । सच पूछीं त भारतीय इतिहास में जैन अवरू बौद्ध धर्म के रूप में क्रांति के आवाज एहिजे से बुलन्द भइल । गाजीपुर जिला के सैदपुर भितरी नामक स्थान में परम प्रतापी गुप्त वंश के राजा स्कन्दगुप्त विदेशी आततायी हूण लोगन के पराजित कइले । ई पराक्रमी वीर जमीन पर सूति के राति बितवलन अवरू युद्ध में पृथ्वी के भी कम्पायमान करि देलन । शिला लेख में लिखल बाटे कि-

''हूणैर्यस्य समागतस्य समरे, दोर्भ्यां धरा कम्पिता''।

गोरखपुर में गोरखनाथ जी के समाधि बाटे जे नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तन करिकं पाखण्ड, ढोंग अवरू अनीति के नष्ट कइलन ।

वाराणसी में अपना धर्म के मान्यता प्राप्त करे खातिर के ना आइल । शाक्य सिंह अइले, भगवान शंकर अवरू बल्लभाचार्य भी अइले। भोजपुरी के प्रथम कवि महात्मा कबीर के त ई जन्मभूमिए हवे। कवनो जमाना रहे जब भोजपुरिया जवान शेरशाह के नेतृत्व में दिल्ली तक पहुँच के सिंहासन पर आपन प्रभाव जमा लेलन । आधुनिक युग में भी स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति भारतरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद एही भोजपुरी धरती के रतन रहलन अवरू आजु भी बाबू जगजीवन राम जी भारत के रक्षा मन्त्री के रूप में एह देश के रक्षा के भार सँभरले बानी । विद्वान, पण्डित, कवि अवरू कलाकारन के त ई भूमि जनमस्थली ह । कहाँ तक गिनती गिनाई । एह भोजपुरी भूमि के चप्पा चप्पा में क्रांति के बीज बिखरल पड़ल बाटे । 'कश्यप जी' अपना एगो कविता में लिखले बाड़न कि-

"फक्कड़ कबीर के बोली में बोलेवाला, ई भोजपुर आग के पुतला हऽ। चौदहो जिला सब गरजि उठे जब एक बार, तब एकरा आगे सउँसे पृथिवी कुछ ना ह ।"

ठीक । ई बात बिल्कुल ठीक बाटे । जब हमनी का सब भाई मिलि के खड़ा हो जाइबि जा, तब कवनो काम कठिन नइखे । गोसाईंजी कहले बाड़न "का चुप साधि रहे बलवाना"। अब बइठला के मौका नइखे । काम करे के चाहीं अवरू एह उपनिषद के मन्त्र के ध्यान में रखे के चाहीं-

"उत्तिष्ठ, जाग्रत, प्राप्यवरान्निबोधत।"
उठीं, जागीं, अवरू अब काम में लागि जाई ।।
जय भोजपुरी ! जय हिन्दी !!

–कृष्णदेव उपाध्याय

❑

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
पाँचवाँ अधिवेशन
मोतीहारी
(14-15-16 मार्च, 1990)
के
अध्यक्ष
(आचार्य) देवेन्द्रनाथ शर्मा
के
भाषण

भोजपुरीभाषी बन्धुगण,

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष का आसन पर अपने लोगन हमरा के बइठा देहलीं । हमहूँ बिना संकोच बइठ गइलीं। हम संकोच करीं कि फायदा देखीं ? हमरा मुफ्त में मान मिलल; बिना कवनो योग्यता आ भोजपुरी का सेवा के अध्यक्ष के आसन मिलल । मुफ्त के मान आ माल के ना चाहे । खास करके आज का युग में ? हम समझ नइखीं पावत कि एह मान खातिर हम अपना भाग के सराहीं कि अपने लोगन का प्रेम के । जे भाग में रहेला ऊ घूमफिर के मिल जाला; आदमी ओकर पात्र होय भा ना होय । अपना देश में अब पात्र के विचार आ खोज भी कमे होता; केहू के कहीं बइठा देहल जाता । समाज में समता के माँग बा, एह से पात्र-अपात्र, योग्य-अयोग्य, भला-बुरा, होशियार-गँवार के भेद-भाव छोंड़ के सबका के एक नजर से देखे के परिपाटी बढ़ रहल बा । बुझाता कि हमरा भाग से इहे नजर हमरो पर पड़ गइल ह ना त एह मान-सम्मान लायक हम बानी ना । भोजपुरी के बनावे-सँवारे के कांम ब्रहुत निष्ठा से कुछ धुनी-गुनी लोग कइले बा, कर रहल बा । एह आसन पर ओह लोग का बइठला से गुण के आदर होइत, आसन के भी शोभा बढ़ित । हमार योग्यता त अतने बा कि भोजपुरी हमार मातृभाषा ह । ई मातृभाषे के महिमा ह कि एक अदना आदमी विद्वान्, कवि, कलाकार लोग का बीच में आदर के पात्र बन गइल । हम अइसन महिमा-मंडित मातृभाषा के प्रणाम करतानी, साथ ही अपने लोगन के भी, जे ''कीटोऽपि सुमनः संगाद् आरोहति सतां शिरः'' के कहावत चरितार्थ कर देली हँ ।

भोजपुरी के दिनदिन विकास-प्रसार हो रहल बा; उत्तम से उत्तम कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध रचा रहल बा, कइगो पत्रिका निकल रहल बा । ई ब्रड़ा खुशी आ संतोष के बात बा । भोजपुरी साहित्य के प्रगति जतना तेजी से आ जतना बढ़िया से हो रहल बा ऊ भोजपुरीभाषी लोग खातिर गर्व आ गौरव के चीज बा । हमरा सामने बहुत रचना आइल जे कवनो भाषा का साहित्य से टक्कर ले सकता । प्रगति का एह गति के कायम रखे के जरूरत बा । लेकिन जब कवनो चीज के दायरा बढ़ेला त ओकर ठीक से देखरेख आ सँगिरहो जरूरी होला । भोजपुरी बहुत दूर में फइलल भाषा बा । कहावत

ह कि "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी"। जब आठ कोस पर बानी अर्थात् भाषा में अन्तर हो जाला त जवना भाषा के विस्तार लगभग पचास हजार वर्गमील में बा, ओह में आठ कोस वाला सिद्धांत का मुताबिक काफी अंतर भइल अनिवार्य बा। आरा, छपरा, मोतिहारी में जे भोजपुरी बोलल जाला ओह में भी अंतर बा लेकिन बनारस, जौनपुर, आमगढ़ जात-जात ऊ अंतर बड़ा साफ देखाई देबे लागेला। एह अंतर के जतना कम और सीमित राखल जा सके ओतने अच्छा होई। बोले के अंतर त कम ना होई लेकिन लिखे के अंतर कम हो सकता, होखे के चाहीं। भाषा के स्थिरता आ सुबोध ता खातिर ओकर एकरूपता बहुत जरूरी ह। एह दृष्टि से भोजपुरी का वर्तनी (स्पेलिंग) में एकरूपता ले आवे के प्रयास होखे के चाहीं। अबहीं त हाल ई बा कि जेकरा जइसे भावता ऊ ओइसहीं लिख रहल बा। ई भाषण लिखे का समय हमरा मन में बहुते शब्दन के रूप के लेके संदेह पैदा होत रहल; कवनो नियम चाहे आदर्श सामने ना रहला से हमरा काफी असुविधा भइल आ जे लिखलीं ओकरा के ले के पूरा इतमीनान अबहियों नइखे। संदेहन के थोड़ा-बहुत समाधान हम अपने कर ले लीं बाकिर ओकरा से संतोष ना भइल, मन ना मानल। साँच पूछीं त ई काम एक आदमी का बस के हइयो नइखे; एकरा खातिर सामूहिक प्रयास के जरूरत बा। भोजपुरी के जतना बोली बा ओकर प्रतिनिधि लेखक, संपादक आ भाषाविज्ञान के कुछ विद्वान् मिल के एकरा ऊपर विचार-विमर्श करस; आ जे निर्णय होय ओकर ठीक से पालन कइल जाय, तबहीं ई कठिनाई दूर होई। हरेक आदमी अगर मनमानी करी त भाषा मेल से अधिक भेद के कारण बन जाई। भाषा के सवाल बड़ा नाजुक ह। ओह पर गंभीरता से विचार करेके चाहीं। अँगरेजी के बर्तनी बड़ा गड़बड़ आ दोषपूर्ण बा, ई सब केहू जानता, मगर ओकरा में एगो बड़ा भारी गुण बा कि ऊ एकरूप बा। चाहे जहाँ जाई स्पेलिंग एके मिली। लंडन, एडिनबरा, प्लिमथ आ शेफील्ड का अँगरेजी के उच्चारण में बहुत अंतर बा। इंगलैंड आ अमेरिका का अँगरेजी के उच्चारण में जे अंतर बा ओकरा बारे में त कुछ कहले बेकार बा। बोले में अतना अंतर भइला पर भी लिखे में प्रायः कवनो अंतर नइखे आ जे बड़लो बा से नाममात्र के। कहे के मतलब ई कि अँगरेजी लिखाता एके वर्तनी में; स्थान-भेद से ओकरा उच्चारण में अंतर चाहे जतना हो जाय। लिपि आ भाषा में अंतर रहबे करेला; कवनो भाषा जइसे बोलल जाला ओइसहीं लिखाय ना। बोले के सब बारीकी लिखे में आइए नइखे सकत। दोसर बात ई कि लिपि स्थायी होला; भाषा कुछ ना कुछ लगातार बदलत रहेला। अँगरेजी के हजारन शब्दन के जे उच्चारण आज से कुछ सौ साल पहिले रहे ऊ आज ना रह गइल बा तबहूँ लिखाता ओही रूप में जवना रूप में तब लिखात रहे। एही से तब के साहित्य पढ़े में आज के पाठक का भी कठिनाई नइखे। अगर हर सौ साल या सौ कोस पर बर्तनी बदल जाय त लिखित साहित्य समझल असंभव हो जाई।

लिपि का सवाल पर हम जे अतना जोर दे रहल बानी ओकर एक आउर कारण बा। भोजपुरी के शिक्षा के माध्यम बनावे के माँग चल बा। ई माँग पूरा होखहीं के बा। तब जरूरत होई किताब के। किताबन में दस तरह के वर्तनी चलावल ना उचित बा, ना संभव। अगर मनमानी बर्तनी चलत रहल त समूचा भोजपुरी क्षेत्र में मान्यता प्राप्त करे वाली किताब कइसे तैयार होई? आज कहीं-कहीं भोजपुरी के जे वर्तनी देखे में आवता ओकर मारल लड़िका जिन्दगी में कबहूँ हिंदी शुद्ध ना लिख सकिहें। शब्दन के अतना ममोर-चमोर देहल जाता कि ऊ पहचाने में नइखे आवत। अगर हर आदमी

पाणिनि बने लागी त भाषा छिन्न-भिन्न हो जाई । तत्सम से जे तद्भव रूप बनेला ओकर कुछ नियम बा, आ नियम के इतिहास बा जवन सैकड़न साल से काम कर रहल बा। ओकरा पर ध्यान ना देला से भाषा में अराजकता आई आ अराजकता कवनो क्षेत्र में अच्छा ना ह ।

एह प्रसंग में अपने सभन का विचार खातिर हम एगो सुझाव राखे के चाहतानी। हिन्दी में तत्सम, तद्भव, देशज आ विदेशी, चार तरह के शब्द प्रचलित बा । तत्सम के रूप उहे चलेला जे संस्कृत में रहल बा। का भोजपुरी खातिर भी एही नीति के अपनावल अच्छा ना होई ? एकरा से लाभ ई होई कि ऊ रूप हिन्दी आ संस्कृत दुनू भाषा खातिर एके रही । शब्द के जवना रूप के बचपन में अभ्यास हो जाला ऊ जल्दी बदले ना, बल्कि हमेशा कायम रह जाला। तत्सम रूप अपनवला से शब्द के वर्तनी बार-बार बदले के आ सीखे के जरूरत ना पड़ी । दोसर ई कि लिखित भोजपुरी हिन्दी आ संस्कृत का अधिक से अधिक नियरा रही । एह से हिन्दी चाहे संस्कृत सीखल भी आसान होई । भोजपुरी में शब्दन के अधिक ऐंठ देला से हिन्दी-संस्कृत सीखे में लड़िकन के कठिनाई बढ़ जाई आ आगे चल के उलझन होखे लागी । हमनी का अपना के केन्द्र में ना राख के आगे आवेवाला पीढ़ी के केन्द्र में राख के भाषा-संबंधी नीति पर विचार करीं त मुनासिब होई । एकर बहुत अच्छा रास्ता तुलसीदासजी बना गइल बानी । उहाँ का संस्कृत छोड़ के लोकभाषा में 'रामचरितमानस' लिखलीं लेकिन तत्सम शब्द के प्रयोग में कोताही ना कइलीं आ ओकरा के समझे में अपढ़ जनता का भी दिक्कत ना भइल । ई रास्ता बड़ा साफ आ सुन्दर बा; साँच पूछीं त राजमार्ग बा। ओह राजमार्ग पर चलला से कबहूँ आ कतहूँ लड़खड़ाए के मौका ना आई । ई सुझाव उच्चारण का दृष्टि से भी महत्त्व के बा। प्राय: बिहार के हिन्दी उच्चारण के बिहार का बाहर आलोचना होला । पुस्तकन में तत्सम रूप छपला पर अगर उच्चारण में त्रुटि रह जाता तब ममोराइल-चमोराइल शब्दन के जे संस्कार मन में बइठ जाई ओकर उच्चारण कइसन होई, एकर अनुमान बहुत कठिन नइखे । अगर क्रिया आ कर्म के किरिया आ करम लिखाए लागल त सचमुच ओकर किरिया-करम हो जाई । भाषा के प्रकृति बहुत नाजुक चीज ह । ओकरा में हरसट्ठे हेरफेर ना होखे के चाहीं ।

दोसरा समस्या बा शिक्षा के । धीरे-धीरे आवाज उठ रहल बा कि शिक्षा के माध्यम भी भोजपुरी होखे के चाहीं । सवाल बा कि कहाँ तक, कवना रूप में ? हिन्दी साहित्य के निर्माण में भोजपुरी क्षेत्र के बहुत बड़ा योगदान बा। जे विद्वान् आ मनीषी लोग हिन्दी में लिखल ओह लोग के बुद्धि-विवेक कम ना रहे,अपना मातृभाषा के प्रेमो अबर-दुबर ना रहे । ऊ लोग राष्ट्रहित आउर आत्महित दूनू के जोड़ के चलल । हमनी का भी कुछ करे का पहिले अच्छी तरह से सोच-विचार लेबे के चाहीं । अपने लोगन का सोचतानी, ई हमरा मालूम नइखे लेकिन हम जे सोचतानी ओकरा के अपने सभन का सामने राखे के चाहतानी । शिक्षा का माध्यम का रूप में भोजपुरी प्राथमिक कक्षा तक चल सकता; ओकरा आगे चलावे का बारे में ठीक से सोच लेहल अच्छा होई । देखल जाय त आज भी प्राथमिक कक्षा के पढ़ाई भोजपुरीए में होता । किताब सिर्फ हिंदी में रहेला बाकिर मास्टर लोग बोलेला, पढ़ावेला भोजपुरीए में । हमरा याद बा कि अगर कभी स्कूल में मुँह से हिन्दी निकल जात रहे त डाँट का साथे इहो सुनके पड़त रहे कि "आरबी छाँट तार" । लड़िकन के हिन्दी में बोलल बहुत शिक्षक लोग अशिष्टता मानत रहे । कहे के मतलब ई कि किताबे भर हिन्दी में होत रहे; पढाई के माध्यम भोजपुरीए

रहे । आज ओकरा से बेशी अतने करे के बा कि प्राथमिक कक्षा के किताब भी भोजपुरी में हो जाय । प्राथमिक कक्षा का बाद से आजे लेखा हिन्दी माध्यम रहे के चाहीं । ऊपर का क्लासन में बी० ए०, एम० ए० तक भोजपुरी साहित्य एक विषय का रूप में राखल जा सकता जइसे आज भी कई भाषन के साहित्य रहता । ई सिर्फ हमार सुझाव बा, निर्णय त भोजपुरी के विद्वान् लोग का करे के बा ।

एक तीसर समस्या, जवना पर हम कुछ कहे के चाहतानी, बा साहित्य-निर्माण के । साहित्य-निर्माण के रूप का होखे के चाहीं, दिशा का होखे के चाहीं, एह विषय में भी पूर्वज लोग रास्ता देखा गइल बा । आजे अइसन ओह घरी बहुत क्षेत्रीय भाषा रहे । भारत अइसन विशाल देश में बहुत क्षेत्रीय भाषा भइल कवनो अचरज के बात नइखे । क्षेत्रीय भाषा एक से एक विद्वानन के मातृभाषा रहे आ ओह लोग का भी अपना मातृभाषा से प्रेम रहले होई । दार्शनिकन में शंकराचार्य के मातृभाषा मलयालम रहे रामानुजाचार्य के तमिल, मर्ध्यवाचार्य के कन्नड़, वल्लभाचार्य के तेलगु । एही तरह से गणित, आयुर्वेद, अलंकारशास्त्र आदि के भी विद्वान् भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्र में रहे लोग जेकर मातृभाषा उहाँ-उहाँ के भाषा रहे । एह लोग का सामने जब ज्ञान-विज्ञान के पुस्तक लिखे के अवसर आइल त ई लोग अपना-अपना मातृभाषा में ना लिख के संस्कृत में लिखल जे ओह घरी के राष्ट्रभाषा रहे । अगर शंकराचार्य जी आपन वेदांतभाष्य मलयालम में लिखले रहितीं त ओह से कतना आदमी का लाभ होइत ? मगर संस्कृत में लिखला से ओह ज्ञान-गंगा में पूरा देश डुबकी लगा के निहाल हो गइल । मतलब कि ज्ञान-विज्ञान के भाषा संस्कृत रहल जेह से पूरा देश खातिर ऊ सुलभ भइल । एकरा साथे कविता, नाटक, कहानी वगैरह में लोग अपना-अपना क्षेत्रीय भाषा के भी प्रयोग कइल । कविशिरोमणि कालिदास तक ले अपना नाटकन में संस्कृत का साथे प्राकृत के प्रयोग कइले जे ओ घरी के लोकभाषा रहे । नाम गिनावे में बहुते नाम गिनावे के पड़ी । कहे के अभिप्राय बा कि जहाँ गंभीर विषय के विवेचन हमेशा संस्कृत में होत रहे, उहाँ ललित साहित्य के रचना संस्कृत का साथे-साथे लोकभाषा में भी होत रहे । ई हिसाब बड़ा साफ, व्यावहारिक आ उपयोगी बा । एकर अनुसरण आज भी उचित होई। डाक्टरी, इंजिनियरी, कानून, विज्ञान वगैरह के उच्च कक्षा में पढ़ावे लायक किताब अबहीं हिन्दी में भी तैयार ना हो सकल ह जब कि करोड़न रुपया खर्च हो चुकल आ पिछला पचास-साठ साल से लगातार काम हो रहल बा । तब अइसन हालत में भोजपुरी में एह विषयन के ले आवे में कतना समय लागी ? आ लागला पर भी ओकरा से फायदा का होई? एह से हमार ख्याल ई बा कि ज्ञान-विज्ञान खातिर हिन्दी के राखे के चाहीं आ ललित साहित्य – कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध – खातिर भोजपुरी के प्रयोग करे के चाहीं । जब हम कहतानी कि ज्ञान-विज्ञान हिन्दीए में राखल अच्छा होई त हमार मतलब बा उच्च ज्ञान-विज्ञान से । गाँव-देहात का काम में आवे वाला सहित्य– जइसे खेतीपाती, बागवानी, सिंचाई, स्वास्थ्य, सफाई वगैरह के सूचना–भोजपुरीए में रहे के चाहीं जेह से कम पढ़ल लोग भी ओकरा से पूरा फायदा उठा सके ।

साहित्य-निर्माण के चर्चा उठला पर एक बात अउरो कहे के चाहतानी । स्वतंत्रता-प्राप्ति का बाद सरकारी सहायता पर निर्भर करेके प्रवृत्ति बहुत बढ़ गइल । सरकार के पल्ला बिना पकड़ले कवनो काम करे के कोई चाहते नइखे । ई लक्षण प्रगति के बाधक ह । सरकारी सहायता से, सरकारी आश्रय में, सरकारी संकेत पर जवना साहित्य के निर्माण होई ऊ कभी स्वस्थ, सबल आ प्रेरक ना हो सकता । शासन-तंत्र

का चक्की में पड़ला पर जानदार से जानदार चीज बेजान हो जाला । शासन-तंत्र से बढ़ के प्रतिभा के रस सोखेवाला कवनो दोसर चीज ना ह । गोस्वामी तुलसीदास आ महाकवि केशवदास के उदाहरण एकर बहुत अच्दा प्रमाण बा । स्वतंत्र रहला से तुलसीदासजी के प्रतिभा आकाश चूमे लागल, भारत के एक छोर से दोसरा छोर तक छा गइल, अइसन ओज आ तेज जगलस कि लड़खड़ात समाज तन के खड़ा हो गइल । दोसरा ओर राजदरबार का छाया में केशवदास के प्रतिभा के विकास रुक गइल; ओकरा से ना केहू के लोक बनल, ना परलोक । कथवा त एके बा बाकिर 'रामचरितमानस' में राम भगवान बन गइले आ 'रामचंद्रिका' में प्रभावहीन नायक भर रह गइले । भाषा आ सहित्य के विकास सरकारी छाया में दब जाला । एह से जरूरत बा कि स्वतंत्र रूप से, उत्साह से, भोजपुरी साहित्य के विकास के संगठित प्रयास होय । भोजपुरी समाज में आउर कुछ के कमी भले होखे,बल या उत्साह के त कमी कभी ना रहल । जरूरत बा थोड़ा संगठन के । सरकारी तंत्र में हिन्दी के जे गति बा ओकरा से शिक्षा लेबे के चाहीं । संचिका बड़ा सार्थक शब्द चलल । संचिका के कामे ह सँच के राखल । ओह में से कुछ निकल जाए त संचिका-नावें गलत हो जाई । हिन्दी का तैंतीस बरिस संचिका में कसमसात हो गइल लेकिन अभी तक निकल ना सकल । बिहार में त कुछ निकलबो कइल मगर दिल्ली के हाल मत पूछीं । उहाँ हिन्दी लिखल त दूर, लोग का बोले में भी लाज लागेला ।

भाषा आ साहित्य के प्राण-शक्ति लोकजीवन से मिलेला । लोकजीवन से कट गइला पर ऊ निर्जीव हो जाला । भोजपुरी में लोकसाहित्य एही से जादे बा कि ऊ लोकजीवन में हमेशा रमल रहल, ओकरा से कबहुओं अलगा ना भइल । भोजपुरी भाषा आ भोजपुरीभापी के पौरुष के भी कारण इहे रहल बा । हमरा विचार से एकरा के पुष्ट करे खातिर हर जिला में एक सांस्कृतिक केन्द्र के स्थापना अच्छा होई जवना में लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनाट्य, लोकनृत्य के आयोजन समय-समय पर होत रहे । एह से संगठन में सहायता मिली, अपना संस्कृति के प्रेम बढ़ी, साथे-साथे ऊ शहर आ गाँव के बढ़त खाई पाटे के भी काम करी । अब त देहात के लड़िका भी भैंस चरावत, घास गर्हत 'रामचरितमानस' के चौपाई का बदला में प्रेम के रुबाई गुनगुनात बाड़े सँ । सिनेमा के गीत वातावरण में गूँज रहल बा । ओकरा बुरा प्रभाव से नयका बिरवन के बचावे खातिर भी सांस्कृतिक केन्द्र के स्थापना जरूरी बा, ना त भोजपुरी के तेज मद्धिम पड़ जाई । तेजस्वी के तेजे ना रहल त रहल का ?

एगो बात कई बेर सुने के मिलेला । एह से ओकरा बारे में भी दू शब्द कहे के चाहतानी । कुछ लोग कहेला कि भोजपुरी में साहित्य नइखे । एह पहलू के ठीक से समझे के जरूरत बा काहे कि एकरा के ले के नीमन-नीमन लोग का भी भरम हो जाला । पहिला बात त ई कि भोजपुरी में साहित्य के कमी बा, ई कहल गलत बा । भोजपुरी के लोक-साहित्य कवनो भाषा का लोक-साहित्य से उनइस नइखे; बीस भी कहल जा सकता । लोक- साहित्य छोड़ के अगर शिष्ट साहित्य पर ध्यान दीं त उहो दब नइखे । हिन्दी साहित्य में कबीरदास, दरियादास वगैरह निर्गुणिया संत कवि जवना भक्ति के प्रचार कइले ऊ अधिकतर भोजपुरीए में बा । ई साहित्य कुछ त संगृहीत भइल बा, छपल बा, कुछ अभी बिखरले बा । निर्गुणिया संत लोग के रमता स्वभाव आ घुमक्कड़ प्रकृति का वजह से ओह लोग का बानी में कई बोली के फेंट-फाट हो गइल बा मगर जइसे कतनो पानी मिलावला पर दूध दूधे कहाला, पानी ना कहाय, ओइसहीं

कबीर आदि संत-कवि लोग का रचना में दोसर-दोसर बोली के पुट पड़ गइला सं ओकर नाम भोजपुरी छोड़ के दोसर ना हो जाई । कहे के अर्थ कि भोजपुरी साहित्य के इतिहास पाँच-छव सौ वर्ष पुरान बा । ई त प्राचीन युग के बात भइल । वर्त्तमान युग में त बहुत साहित्य लिखा रहल बा जवन गुण आ मात्रा, दूनू दृष्टि से बड़ा सुंदर आ महत्त्वपूर्ण बा । एह प्रसंग में एगो तीसर बात ध्यान में रखे लायक ई भी बा कि प्राचीन युग से ले के आधुनिक युग तक जब-जब देश के स्वाधीनता आ संस्कृति पर संकट आइल त भोजपुरीभाषी लोग कलम आ तलवार में तलवारे पकड़ल जरूरी समझलस । कलम ओह लोग का हाथ के शोभा बढ़ावे लागल जेकरा तलवार पकड़े के ताकत चाहे इच्छा ना रहे । संकट का समय में कलम घिसल जाव कि तलवार का वार से संकट भगावल जाव ? आज भी पुलिस आ फौज में जेतना भोजपुरी लोग बा ओतना दोसर लोग नइखे । एगो चउथ बात भी याद राखल जरूरी बा। भोजपुरी क्षेत्र के ई सहज विशेषता ह कि ऊ क्षेत्रीयता का संकीर्णता में कभी ना पड़ल; ऊ देश के, राष्ट्रके पहिले देखलस, बाकी सब कुछ के बाद में । हिन्दी साहित्य के विकास में भोजपुरीभाषी लेखक लोग के अद्भुत देन बा । ओह लोग के आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माता भी कहल जाय त गलत ना होई । सबसे पहिले भारतेंदु हरिश्चन्द्र के या उनका मंडल के लेखक लोग के लेहल जाय जेह में अधिकतर लोग भोजपुरीभाषीए रहे । 'चन्द्रकांता संतति' के यशस्वी लेखक देवकीनंदन खत्री भोजपुरीभाषी रहस । पुरनिया लोग जानता कि बहुत लोग चंद्रकांते पढ़े खातिर देवनागरी लिपि सिखलस । छायावाद के स्तंभ, हिन्दी के सबसे बड़ नाटककार जयशंकर प्रसाद, महान् उपन्यासकार प्रेमचंद, आलोचक-शिरोमणि रामचंद्र शुक्ल, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक श्यामसुंदर दास, संपादक-मूर्घन्य शिवपूजन सहाय, बहुमुखी प्रतिभा के धनी हजारीप्रसाद द्विवेदी, ई सब लोग भोजपुरीए बोले वाला रहे । अगर ई लोग चाहित त भोजपुरी में लिख सकत रहे, हिन्दी का तुलना में भोजपुरी एह लोग खातिर आसान भी होइत । लेकिन एह लोग का सामने सिर्फ आपन क्षेत्र ना बल्कि देश रहे, राष्ट्र रहे आ ई लोग आपन शक्ति राष्ट्रभाषा आ राष्ट्रीयता का विकास में लगवलस । भोजपुरी साहित्य पर कमी के जे आरोप बा ऊ दू कारण से : एक त ई कि आरोप लगावेवाला लोग का सही जानकारी नइखे; दोसर ई कि भोजपुरीभाषी लोग का आपन ढोल पीटे के ढंग भी नइखे । आजकल त लोग ओकरे बात सुनता जे ढोल पीटता । चुपचाप कइल काम के कमे लोग देखे, सुने आ जाने के कोशिश करता ।

ललित साहित्य का अलावे भोजपुरी में कोश-निर्माण वगैरह के काम भी हो रहल बा लेकिन छिटपुट रूप से । कोश-निर्माण समय लेबे वाला काम ह, आ खर्चीला भी। ऊ रोज-रोज बनेवाला चीज भी ना ह । कोश बने में समय लागेला त ओकर आयु भी बहुत लंबा होला । एह से ई काम व्यवस्थित आ सुनियोजित ढंग से होखे के चाहीं, ना त बेकार के आवृत्ति होई, काम भी खूब गंभीर ना होई । कोश कई तरह के होला । सामान्य कोश त जरूरी हइले ह बाकिर ओकरा साथे कहावत-कोश, मुहावरा-कोश, कथा-कोश वगैरह भी बहुत जरूरी ह । एही तरह भोजपुरी के व्याकरण भी आवश्यक बा । व्याकरण कई स्तर के होखे के चाहीं; प्रारंभिक स्तर खातिर संक्षिप्त आ उच्चतर स्तर खातिर विस्तृत । व्याकरण आ संदर्भ-ग्रंथ भाषा के रीढ़ ह । एकरा से भाषा के सामर्थ्य के पता लागेला । कवनो गंभीर काम हलका-फुलका ढंग से ना होय । भाषा बनेला साधना से, परिश्रम से, लगन से । भोजपुरीभाषी लोग जतना साधना, परिश्रम आ

लगन से काम करी, भाषा ओतने निखरी, चमकी । अगर अलग-अलग संस्था काम बाँट ले त जे चीज तैयार होई ऊ नीमन आ स्थायी महत्त्व के होई ।

अबतक भोजपुरी के निर्माण का बारे में हम कुछ निवेदन कइली हँ । अंत में प्रचार का बारे में भी कुछ कहे के चाहतानी । जमाना प्रचार के बा । काम त लगन से होखहीं के चाहीं मगर ओकर जानकारी करावल भी आजकल ओतने जरूरी बा ना त एक-से-एक सुन्दर चीज कोना में पड़ल रह जाला आ ओकरा ऊपर केहू के ध्यान ना जाय । भोजपुरी के जे पत्रिका निकलत बाड़ी सँ ओकनिन में जहाँ-जहाँ भोजपुरी के जे काम होता ओकर विवरण रहे के चाहीं जेह से मालूम होत रहे कि कहाँ का हो रहल बा । ओकरा से संगठन आ समन्वय में सहायता मिली । दोसर ई कि भोजपुरी लेखक लोग के प्रोत्साहन खातिर साहित्य अकादमी अइसन संस्था में भोजपुरी के मान्यता प्रांप्त करावे के भी प्रयास होखे के चाहीं । कवनो चीज के महत्त्व आ मर्यादा के मूल्यांकन. आपेक्षिक दृष्टि से होला । भोजपुरी के ई पक्ष भी उपेक्षित ना रहे के चाहीं । भोजपुरी सही मानी में अंतरराष्ट्रीय भाषा ह । भारत का बाहर फीजी, मोरिशस, ट्रीनीडाड, गायना, सूरिनाम आदि देशन में भोजपुरीभाषी लोग लाखन का संस्था में बा । अइसन भाषा के मान्यता अपने देश में ना होय ई चिंता के बात बा ।

अपने सभन हमार अतना सम्मान कइलीं आ अतना प्रेम से बात सुनलीं, एकरा खातिर का कहीं? 'धन्यवाद' त विलायती सभ्यता के छाया ह । ओकरा से भोजपुरी हृदय के भाव ठीक से प्रगट ना होई । साँच कहीं त अपने सभन का छोह से हमार रोआँ-रोआँ पुलकित बा । वेद का एक मंत्र से हम आपन बात समाप्त करे के चाहतानी– संगच्छध्वं, संवदध्वं, संवो मनांसि जानताम्– सँगे चलीं सँ, सँगे बोलीं सँ, सँगे सोची सँ ।

जय हिन्दी : जय भोजपुरी ।

–देवेन्द्रनाथ शर्मा

❐

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

छठवाँ अधिवेशन

जमशेदपुर

(6-7 जून 1981)

के

अध्यक्ष

(डॉ०) रामविचार पाण्डेय

के

भाषण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के छठवाँ अधिवेशन के संयोजक, प्रवर समिति आ कार्य समिति के सदस्यगण, दूर-दूर से आइल प्रतिनिधिगण, स्वागत समिति के अध्यक्ष जी, मंत्री जी, सदस्यगण आ बिहार एसोसिएशन जमशेदपुर के अध्यक्ष जी, मंत्री जी, आ सदस्यगण आउर इहाँ भोजपुरी मातृभाषा के सेवा में आइल बहिना लोगन आ भाई ब !

रउरा सब ई जे आज हमरा के सनमान दिहलीं, आदर दिहलीं, आ ई जे ऊँच आसन दिहलीं, ओकरा खातिर हम बहुत आभारी बानी । भोजपुरी भाषा का ह, ई कवना परिवार के भाषा ह, कवना प्राकृत परिवार से निकलल बा, ई कइसन वीर स्वभाव, कर्मठ देश प्रेमी आ मात्र प्रेमी लोगन के मातृभाषा ह, ई त रउरा सब जानते बानी । ए के केतना लोग बोले लन, भारत का अलावें संसार का आउर आउर देशन में कहाँ-कहाँ बोलल जाले, अपना मातृभाषा में संस्कृति खातिर त्याग आ बलिदान के कइसन भावना बा आ एकरा में केतना साहित्य लिखा गइल बा आ लिखा रहल बा, ई बात रउरा सबके मालूमे बा ।

ए आसन पर महान महान विद्वान जइसे डा० उदय नारायण तिवारी, स्व० डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० भगवत शरण उपाध्याय, डा० कृष्ण देव उपाध्याय, आ आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा निअर आगात आगात विद्वानो के रउआ बइठा चुकल बानी । ऊ लोग रउरा सब के भोजपुरी भाषा के बारे में जवन गियान दे चुकल बा ओकरा के दोहरवला के जरूरत हम नइखीं समझत । हम आज रउरा सब का सेवा में भोजपुरी भाषा पर एगो दोसरा दृष्टि से नजर राखब । आज ले रउरा सभे ए भाषा पर विद्वान लोगन के वैज्ञानिक विवेचन सुनले बानीं । आज हम रउरा सबका सोझा भोजपुरी पर व्यावहारिक नजर से विचार रखि रहल बानी ।

वैज्ञानिक दृष्टि से जे विचार भइल बा ऊ रउरा सभे जानते बानी कि संसार में दू हजार ले मुख्य भाषा, दू हजार ले उप-भाषा आ दसन हजार ले डाइलेक्ट भाषा बाड़ी स । ई कुल्हि वैज्ञानिक विवेचन ह । आजु हम भाषा के व्यावहारिक पक्ष पर कुछ कहे आइल बानी । व्यवहार का दृष्टि से भाषा दू तरह के होले । एगो कुर्सी के भाषा आ

एगो मातृ के भाषा । दोसरा शब्दन में एगो राजा के भाषा आ एगो परजा के भाषा । आजु का शब्दन में एगो शासक के भाषा आ एगो शासित के भाषा । हमनी के भोजपुरी भाषा मातृ के भाषा ह, परजा के भाषा ह, शासित के भाषा ह । ई कबे कुर्सी के भाषा ना भइल । जवन भी भाषा कुर्सी पर रहेले आ नीचे वाले माटी के भाषा पर कुछ त रोब से कुछ अपना सहूलियत खातिर आ कुछ आउर कुर्सी पर बहुत दिन रहे खातिर माटी के भाषा पर आपन परभाव जमा देले । मातृ के भाषा भी कुछ डर, कुछ जी-हजूरी में आ कुछ आपन जान बचावे खातिर कुर्सी के भाषा के बड़प्पन सँकार लेले । अपना जनम का स्वभाव का कारण अपना के एकदम बदल ना देले बल्कि कुर्सी वाली भाषा का कुछ सबदन के अपना में ले लेले । आ ओके अपना के अइसन बना देले कि कुछ समय के बाद ऊ शब्द मटिये के भाषा के शब्द बन जाले स ।

भोजपुरी माटी के भाषा पर अपना प्राकृत भाषा के प्रभाव रहे । पहिले एकरा कुर्सी पर संस्कृत भाषा आइल । इहाँ के जेतना प्राकृत भाषा रहली स ओकनी का शब्दन के लेके संस्कृत भाषा एगो बहुत-बहुत सुन्दर रूप में संस्कारित कुर्सी के भाषा हो गइल । ओकरा खिलाफ एही बिहार में जैन धर्म आ बौद्ध धर्म के क्रान्ति भइली स । एह दूनो क्रान्तियन के करते पाली भाषा, जे ओह घरी के माटी के भाषा रहे, सोझा आइल । इहाँ तक भइल कि बौद्धधर्म का साथे-साथे पाली के भी प्रचार भइल आ बहुत-सा ग्रंथ पाली में लिखल गइले स । डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी नियर विद्वान के कहनाम इहाँ तक ह कि पुरान वाली भाषा भोजपुरी के एगो रूप बुझाता । संस्कृत भाषा के लेके झगरा झंझट चलते रहे । एने मध्य एशिया के लोगन के, अलग-अलग भाषा बोले वाला लोगन के, भारत पर चढ़ाई भइल आ ओकरा वजह से संस्कृत पर तुर्की, फारसी, अरबी, यूनानी आ बलूची भाषा के चढ़ाई हो गइल । ओह लोगन में सबसे मशहूर अकबर बादशाह भइले । उनकरा समय में संस्कृत राजभाषा के रूप में चलत रहे । उनकर फौज भी बहुत बड़हन रहे । ओतना बड़ा उनकरा लश्कर में अफगान, पठान, बलूची, ईरानी, तुर्की के लोग, पंजाबी, सिन्धी, काश्मीरी अउर बहुत बड़ संख्या में राजपूत लोग रहे । एह सब लोगन के एगो भाषा पढ़ावे के भी विचार रहे, जेसे ई लोग आपुस में बतिया बोल सके । एह काम खातिर ऊ अमीर खुसरो नाम के एगो बहुत बड़ विद्वान के रखले । अमीर खुसरो एह बात के कोरसिस कइले कि कुल भाषा मिला के एगो भाषा बनावल जाव आ ओह भाषा के नाम ऊ उर्दू रखले। संस्कृत का सँगे उर्दू के मिलाके ऊ बहुत-सा छन्द लिखले। नमूना का तौर पर एगो छन्द देखीं-

एकस्मिन् दिवसेऽवसान समये
भैया खड़ा बाग में ।
काचित लोल कुरंग साव नयना
गुल तोड़ती थी खड़ी ।
लीला लोल कटाक्ष पात निकरैः
घायल किया था मुझे ।
शोचामि निशि वासरः सुविकलः
तू यार कैसे मिले ।

अमीर खुसरो एगो अइसन कोश तैयार करे के कोरसिस कइले जेसे ओह घरी के प्रचलित भाषा सभन का शब्दन के मिलावल जा सके । जइसे-

खालिक बारी सिरिजन हार
वाहिद एक विदा कर तार ।

अकबर का जमाना तक ले ई सिलसिला चलल । बाकिर उनकरा बाद, जहाँगीर के राज-काल में, फारसी जोर पकड़लस । ओह घरी छापाखाना त रहे ना । कागज के भी अभाव रहे । बाँसी कागज आ भोजपत्र पर कुछ लिखाय। जहाँगीर एगो पर्ची छपवले आ बतवले कि

शुद्धो सहीति, विख्यात ? अशुद्धो गलती स्मिथ: ?

·लेकिन संस्कृत उर्दू फारसी भाषा सभन के मिलाके एगो भाषा तैयार करे के काम बढ़ ना सकल । जहाँगीर के झुकाव फारसी के ओर रहे । भोजपुरी इलाका में भगवान बुद्ध का प्रचार का कारन संस्कृत के बहुत-कुछ धक्का लाग चुकल रहे । भोजपुरी लोगन में आ फारसी लोगन के प्रचार खातिर शाहाबाद (वर्त्तमान भोजपुर जिला) का भोजपुर गाँव में आ आजमगढ़ में मिरदासपुर गाँव का सटल एक-एक गो कालेज खोलल गइले स, जवन आज ले मौजूद बाड़े स । पाली आ अरबी का दुतरफा हमला से संस्कृत शब्दन के ढेर नोकसान भइल । जहाँगीर के समय में उनका बीमार लइकी के एगो अंग्रेज डाक्टर अंग्रेजी दवा से ठीक कर देलस । ओही का इनाम में अंग्रेज लोग जहाँगीर से भारत में रोजगार करे खातिर सनद पा गइल । तब से कइसे अंग्रेजी कुर्सी के भाषा हो गइल आ पलासी के लड़ाई आ बक्सर के लड़ाई भइल, बनारस के राजा चेत सिंह के लूटल गइल, अवध के बेगम के लूटल गइल, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे आ बहादुर शाह के खतम कइल गइल । पंजाब के राजा रणजीत सिंह के हरा के पंजाब पर कब्जा कइल गइल । ऊ कुल्हि रउरा सबका मालूम बा आ ऊ एकर विषय नइखे। फारसी आ अरबी के धकिया के अंग्रेजी कुर्सी के भाषा हो गइल । ओही समय में फ्रान्सीसी, पुर्तगाली,आ जर्मन लोग भी एह देश में आइल । ओह लोग के भाषा के कुछ-कुछ शब्द भारत का अउरी-अउरी भाषा के सँगे-सँगे भोजपुरीयो में आ गइल । ई थोड़की सा इतिहास रउरा सबका सोझा दे तानी, जे रउरा सबको ई बुझा जाय कि भोजपुरी भाषा के खटिया के बिनावट छगो भाषा सबन का बाध से बिनाइल बा। आ ऊ कुल्हि मिलि के नीचे-ऊपर, अगल-बगल, दाहिने-बाये, अइसन बिना गइल बा कि कवनो के सुतारी काट के निकलला से खटिया भसि जाई आ चरमरा के टूटि जाई । उदाहरण का तौर पर नीचे कुछ शब्द नमूना के तौर पर दिहल जाता जवन भोजपुरियो के शब्द हवे स । काहे कि संसार के नामी भाषा दोसरा-दोसरा शब्दके लेके बाड़ी सऽ। शब्द ब्रह्म हऽ, ऊ सर्व व्यापक हऽ। ब्रहम के केहू बान्हि के ना राखि सके । अब नीचे कुछ शब्द दिहल जाता ।

भाषा	शब्द
(अ) वैदिक संस्कृत:	गडूआ
[मूल वैदिक शब्द :	कदूक (सोमपान) कूडडअ गडू, गाडू, गडूआ]
(ब) संस्कृत:	जल पूजा आरती वगैरह ।
(२) पाली:	गोविग से गोइठा ।
(३) तुर्की:	सन्दूक से सनूख । बन्दूक से बनूक ।
(४) अरबी:	किताब, मिला ।
(५) फारसी:	तोसक, तकिया, नाजायज, जायज वगैरह ।
(६) अंग्रेजी:	कोटा, टिकट, स्टाम्प, मीटर, लीटर वगैरह ।

ऊपर जवना भाषा सभन के नाम दिहल गइल बा ओही सब भाव के तत्सम शब्द ढेर बाड़े स, जवन रउरा सब का मालूम बा । मागधी के पार पाटी से बन्हल भोजपुरी के खटिया ऊपर गिनावल हवे । ऊ भाषा सभन का छबधिया से एतना गझिन

बिनाइल बा कि ऊ अपने में दृढ़ आ बहुत बरिआर बा ।

लिपि आ भाषा के आन्दोलनः-

मोटा मोटी सइ बरिस से उपरे होता कि एह देश का राष्ट्रीय भाषा के सवाल पैदा हो गइल । कुछ लोग चाहत रहे कि एह देश के राष्ट्रीय भाषा के नाँव हिन्दुस्तानी रखाव आउर देवनागरी आ फारसी दूनो लिपियन में लिखाव । भाषा अरबी, फारसी, संस्कृत, देशी सब आ विदेशी शब्दन से मिलि के चलत रहे, उहे चलो । कचहरी आ सरकारी कागजात में फारसी लिपि चलत रहे । फारसी लिपि का बदला में नागरी लिपि चलावे खातिर काशी से हरिश्चन्द्र जी आ उनकर कुछ साथी लोगन बहुत प्रयास कइल । ओकरा बाद काशी नागरी प्रचारिणी सभा के स्थापना भइल । ओह लोगन का बहुत परिश्रम आ आन्दोलन से कचहरी में देवनागरी लिपि के प्रचलन भइल, जवन आज तक चलत बा ।

हिन्दी आन्दोलनः-

कई सौ बरिस के बाद जब ई देश विदेशी लोगन का गुलामी से छुटकारा पवलस, त देश भक्त लोगन का मन में एगो आन्दोलन उठल कि अपना देश में आ केन्द्र में भी एगो भाषा होखे के चाहीं जवन सर्वमान्य होखे । एह देश के संकट के समय भी देश के एकता के बनवले राखे खातिर चवरासी सिद्ध लोग आउर अनेकन भक्त लोग जइसे बंगाल से चैतन्य महाप्रभु, मिथिला के कवि कोकिल विद्यापति, भोजपुरी के आदि कवि कबीर दास, तुलसी दास, मीराबाई, सन्त तुकाराम, समर्थ स्वामी रामदास देश में एकता के एगो अलख जगवले रहले। ओह घरी पश्चिमी बोली, पूर्वी बोली, राजस्थानी, मराठी वगैरह नाम से जानल जात रहली स, आ जवना भाषा के सूफी सन्त कवियन के बानी कहल जात रहे । ओ कुल्हिन के मिला के एगो भाषा बनावल गइल·जवना के नाव धइल गइल 'हिन्दी'। भारत का पार्लियामेंट में देवनागरी लिपि में लिखल हिन्दी भारत के राष्ट्रभाषा स्वीकार कइल गइल आ ऊ अंगरेजी के स्थान लेबे खातिर आगा बढ़ल । देश खातिर ई एगो बहुत बड़ गौरव के बात भइल कि हिन्दी भारत के राष्ट्रभाषा स्वीकार कइल गइल । बहुत लोग ई कहता कि हिन्दी के गति बड़ सुस्त बा । हमरा जाने में ऊ लोग हिन्दी के ठीक आकलन नइखे क सकल । ऊ दिन दूर नइखे जब हिन्दी भारत के एगो बहुत बड़ समृद्धिशालनी राष्ट्रभाषा होई । बल्कि संसार के धनी भाषा सभन में एक नाँव गिनाई । हमनी का भोजपुरी भाषा भाषी लोग हिन्दी का हर प्रकार का उन्नति के कामना राखीले जा, आ हमनी के बहुत विद्वान लोग बाड़े जे हिन्दी के सेवा कइल लोग आ सेवा करिहें ।

भोजपुरी के दुर्भाग्यः-

अउरी-अउरी प्रदेश के भाषा जे अपना-अपना प्रदेश में राजभाषा के रूप स्वीकार कइ लिहल गइली सऽ। उनहीं का सँगे एगो सहूलियत रहे । बंगाली, उड़िया, आसामी, गुजराती, मराठी, तेलुगु वगैरह भाषा के सँगे एगो खास सहूलियत रहे कि ओह भाषा के बोले वाला लोग एक एरिया में रहे आ बाटे। भोजपुरी का सँगे पहिले से ई दुर्भाग्य रहे आ बाटे कि भोजपुरी बोले वाला लोग एक एरिया में नइखन एह से एह देश में भोजपुरी प्रान्त ना बन सकल आ भोजपुरी के मान्यता ना मिल सकल । भोजपुरिया लोग उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार आ नेपाल में बँट गइल बा । एगो बहुत बड़ संख्या में भोजपुरी बोले वाला लोगन का बिदेस रहला से एके मान्यता ना मिलि सकल आ संविधान के आठवीं अनुसूची में एकर मान्यता अबहीं ले ना मिलल । तबो संत साहित्य आ सखी सम्प्रदाय में भोजपुरी के बहुत अधिक साहित्य लिखाइल बा । ओकरा बाद.

स्वतंत्रता के लड़ाई के समय में भी भोजपुरी कविता लिखाये लगल रहली स । मनोरंजन बाबू के 'फिरंगिया' त अइसन जोम बन्हलस कि अइसन कवनो सभा ना होखे जवना में 'फिरंगिया' पहिले ना गवाव । ओही स्वतंत्रता के लड़ाई के समय में भोजपुरी शेर चित्तू पाण्डे के भोजपुरी के व्याख्यान जनता में लहर दउड़ा दे । आ ई मालूम भइल कि भोजपुरी लोगन में अपना मातृभाषा के प्रति केतना श्रद्धा बा । ई देखि के छिटपुट कविता लिखायें लगली स । धीरे-धीरे भोजपुरी रेडियो पर भी गइल । आ एह प्रकार से भोजपुरी के प्रचार बढ़ल । आ आजु केतना बढ़ि गइल बा, ई रउरा से कहे के जरूरत नइखे । हिन्दी आ भोजपुरी के प्रकाण्ड विद्वान आ देश-विदेशन में लोक-संस्कृति का वास्ते प्रसिद्ध विद्वान डा० कृष्णदेव उपाध्याय जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का चउथका अधिवेशन में अपना अध्यक्षीय भासन में कहले कि "भोजपुरी भाषा खातिर ई कम गौरव के बात नइखे कि एकरा विषय में हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेन्च आ जर्मन भाषा का अतिरिक्त सुदूर स्वेडिश भाषा में भी शोध लेख लिखल पावल जाला ।"

एह से ई पता चल सकेला कि भोजपुरी में केतना अनुसंधान के कार्य हो चुकल बा अवरू हो रहल बा । सचमुच ई बात हिन्दी के कवनो बोली अथवा भारत के कवनो भाषा खातिर गौरव अवरू अभिमान के विषय बा ।

मानक भोजपुरी:-

आजु काल्हि एगो इहो सवाल पैदा भइल बा कि भोजपुरी के एगो अइसन रूप लिखाव जवन सबका मान्य होखे । ई बात कवनो भाषा में कमेटी बना के कबहीं भइल नइखे । भोजपुरियो में ई हो ना सकेला । शुरू-शुरू में जब भोजपुरी में गद्य लिखाये लागल आ लेखक लोग शब्द के तूरि तार के लिखे लागल त हमरो ई नीक ना लागल । एकर सिकाइत हम महापंडित राहुल जी से कइलीं, त उहाँ के हमरा से कहलीं कि पाँड़े जी एमे घबड़इला के बात नइखे । कोई बोली भाषा के रूप धारन करे लागेले त पहिले अइसहीं होला जइसे भोजपुरी में हो रहल बा । लिखात-लिखात अपनहीं ओकर एगो सुन्नर नीमन आ सुधर रूप तैयार हो जाला । अबहियें लेखक लोगन पर अंगुरी उठइला के जरूरत नइखे, नाहीं त कोहँड़वा के बतियवा के हाल हो जाई । एह बारे में मनोरंजन बाबू से भी बतियवले रहलीं हाँ । उँहों के कहलीं कि एकरा बारे में छेड़-छाड़ कइला के काम नइखे । सड़क भी ठीक, सरक भी ठीक । केहू-केहू इहो सिकायत करेला कि अइसन शब्द लिखल पावल जा ताड़े स जवन लेखक लोग अपना-अपना इलाका के शब्दन के दूके अइसन बना दे तो दोसरा इलाका के लोगन के समझ में आवते नइखे । एह बारे में लेखक लोगन के कवनो दोष नइखे । जब कवनो जग नधाला त जेकरा घरे जवन सामान रहेला ले आके हाजिर करेला । ई ओही यज्ञ नियर बा । एक ही चीज खातिर भोजपुरी का अलग-अलग जिलन में अलग-अलग शब्द बाड़े। ओह के संग्रह कइ के सबका सोझा ले आवे के चाहीं । आ ओनहीं के ठीक प्रयोग करत-करत भाषा में खुदे एकरूपता आ जाई जवन कि डा० उदय नारायण तिवारी लिखले बानी कि भाषा शब्द से ना बनेले, भाषा के रूप क्रिया से जाहिर होला-जइसे-

बंगला:- आमार घरे नाना कमेर जिनिस आछे ।
भोजपुरी:-हमरा घरे नाना रकम के जिनिस बा ।
उड़िया:-पश्चिम दिगेर बुडिल रवि । आटा कि सुन्दर लोहित छवि ।
भोजपुरी:- पश्चिम दिसे में बुड़ले रवि एकइसन सुन्दर लोहित छवि ।

जइसन भोजपुरी एह समय लिखा रहल बा ऊ ठीक हो रहल बा । जे लोग

अपना मातृभाषा के सेवा करे खातिर आगा आ रहल बा ओह लोगन में संस्कृत के विद्वान लोग भी बा आ ई बात स्वाभाविक बा कि ऊ लोग संस्कृत शब्दन के बहुलता वाली भोजपुरी लिखबे करी। ओह में का हरज बा। जइसन कि हम देखला चुकल बानी कि अमीर खुसरो संस्कृत आ उर्दू के मिला के श्लोक लिखले त केहू भोजपुरी कवि:-

ललित लवंगलता परिशीलन, कोमल मलय समीरे
धेनु चरावत कान्हा घूमस नित जमुना का तीरे।
अति सौन्दर्य युता वृंजबाला तत्रागत्य सुकंठा:
गावस,गीत मोर नाचस वंसीधुनि बेधत हीरे।

एक दिन हम अपना डिस्पेंसरी में बइठल रहलीं। भगवान हमरा रोटी का जोगाड़ खातिर ३,४ गो मरीज लोगन के भेजले रहले, आ दू जाना साहित्य प्रेमी जन बइठल रहे लोग। ओही घरी एक जाना भाँट चहुँपले। ऊ कहले-

बड़ी भूखी लागल बा बाबा।
भोजन कुछ करवाईं।
रामविचार के नाम के सार्थक
रउरा आज बनाईं॥

हम कहनी कि भाँट जी कुछ नया सुझाव, तुकबंदी से काम ना चली। अच्दा त सुनी। हम रउरा के भोजपुरी में श्लोक सुनाव तानी-

हरफार कुदारंच
लेके परती के कोरन्म
करिया अच्छर भइँस बराबर
ई बबुआ के लच्छनम्
बटबसोटि अस सोटा लेले
खमर खमर ख जुआवनम्
नाके पोंटा दात चिउड़ले
ई बबुआी के लच्छनम्।

हम कविजी के पाँच गो रुपया दिहनीं आ कहनीं कि हई लीं तीन रुपया में होटल में खाना खा लेहब आ दू रुपया इनाम। ऊ ठठा के हँसले आ कहले महाराज जी तीन गो रुपया के भोजन होटल में कइला से हमार काम चली? एक रुपया के चटक सोहारी तनी रामरस आ एगो जहर। दिन-राति कटि जाई भूखि के पहरा। जे जे बइठल रहे सभे एक स्वर में कहल डाक्टर साहेब ई त गजबे बा, भोजपुरी में अब श्लोक लिखाये लागल। आ हमार मन पाइ गइल मनोरंजन बाबू के कविता के लाइन-

अब दिन बीति गइल हुजूरन के।
मजदूरन के दिनि आइल।

मनोरंजन बाबू के प्रसंग आ गइला पर उनका जीवन में भोजपुरी के जे एगो कला लउकलि ऊ अपना ढंग के एगो अजब चीज भइल। मनोरंजन बाबू राजेन्द्र कालेज, छपरा के प्रिन्सिपल रहले। कालेज में जयशंकर प्रसाद के जयन्ती मनावे के विचार भइल। आ सब केहू सोचल कि ओकरा मुख्य अतिथि के रूप में कवनो बड़ नेता के बोलावल जाय। छपरे के एगो बड़ आदमी बिहार एसेम्बली में कांग्रेस में एम० एल० ए० लोगन के हित रहले। उनहीं के प्रधान अतिथि के रूप में बोलावे के निर्णय भइल। ठीक समय पर जलसा शुरू भइल। मुख्य अतिथि के आसन दिआइल। जयशंकर प्रसाद

जी का बारे में बहुत वक्ता लोग बहुत बात कहल । अन्त में मुख्य अतिथि से निवेदन भइल कि उहाँ के जयशंकर प्रसाद जी का बारे कुछ कहीं । उहाँ के उठलीं आ कहलीं-राजेन्द्र कालेज के प्रिसिंपल महोदय, प्रोफेसर गण तथा छात्रबृन्द ! आपलोगों ने मुझको जो यह सन्मान दिया है, उसके लिए मैं आपका बहुत आभार मानता हूँ । जयशंकर प्रसाद जी हिन्दी के एक बहुत बड़े सेवक थे । उनकी लिखी हुई सभी पुस्तकों में 'प्रिय प्रवास' मुझे बहुत अच्छी लगी । मैं आपको राय दूंगा कि आप उसे पढ़िये । मेरे पास समय बहुत कम है । एक विशेष काम से जाना है । अत: आपलोग मुझे जाने दें ।'

मनोरंजन बाबू धन्यवाद देबे उठले आ कहलें कि विद्वान वक्ता जी हमनी पर बड़ी कृपा कइलीं हँ । हंम इहाँ के एगो छोटके कविता में इहाँ के धन्यवाद दे तानी । ऊ कहले-

जी०जी० एम० पी०
एल० एल० पी० पी०
ई हम खूबे जानत बानी।
कि जयशंकर के 'प्रिय प्रवास' के रउरा खूबे पढ़ले बानी ।

सभा विसर्जित हो गइल । मुख्य अतिथि जी विदा हो गइलें त लोग मनोरंजन बाबू से पूछल कि जी० जी० एम० पी० आ एल० एल० पी० पी० के माने का ? मनोरंजन बाबू जवाब दिहले जी० जी० एम० पी० के अर्थ ह घींच-घाँच के मिडिल पास आ एल० एल० पी० पी० के अर्थ हवे कि लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर । अगर कवनो भोजपुरिया में अइसन कला होखे त ऊ मनोरंजन बाबू नियर कविता कइ सकेला ।

हम बतला चुकल बानी जे भोजपुरी में फारसी आ उंर्दू के बहुंत-सा शब्द आ गइल बाड़े ल केहू चाहे त ओइसनो भोजपुरी लिखि सकेला।

जइसे:-

राम- देखिह त सामा, दीनानाथ का घरे हल्ला भइल बा का ?

सामा:-

अरे ऊ मरद मेहरारू कें झगड़ा ह । ओसे हामा सूमा का का मतलब ।

एह में झगरा मरद मेहरारू, हामा (हम) सूमा (तुम) मतलब- ई शब्द फारसी के हउअनि स । बाकिर अब कुल्हि भोजपुरिये के हो गइल बाड़े स ।

केहु लेखक पूरा-के-पूरा अपना मागधी कला से चुनि के सब्दन के सजा के भोजपुरी लिखि सकेला, जइसे-

हीरा:- का हो करीमन तोहरा टेल्हा राम के कते सिटकट बइठल ।

करीमन:-अरे भाई उनकर कहाँ टेघ लागी ।

एक ठगरी किछि आइल गइले ओमे से उधिआइल अइले। उन्हुका के पास एक छीपा जेवनार चाही एमे ओमे ल क इ हल फिर त तोड़ा आ मेवकिया आ मारे के मुड़्कि अवले फीर ताड़ें ।

जो केहु लेखक चाहे त अंगरेजी भोजपुरी लिख सकेले । जइसे बाजारे जा ताड़ऽ त एगो साइकिल के स्पेशल सीट, दूगो डनलप के टायर, दूगो डनलप के ट्यूब आ दूगो हौर्न लेले अइह (मानक भोजपुरी ऊहे होई जे भोजपुरी में आ गइल छवो भाषा का सब्दन के लेके अपना क्रियापद में बान्हि के लिखल जाय ।

भोजपुरी आन्दोलन

आज से पचास-साठ साल पहिले जे भोजपुरी प्रेमी लोग भोजपुरी में लिखल ऊ एह भाषा का मिठास से प्रभावित होके । तेग अली के 'बदमाश दर्पण', बिश्राम के बिरहा, देहाती जी के 'देहाती दुलकी', दूधनाथ उपाध्यय के 'गो विलाप [illegible]वली' भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' ओगैरह लिखइली स, भोजपुरी का मिठास के आनन्द लेबे खातिर आ दोसरा लोगन के देबे खातिर ।

गाँधी जी कहल करस-"मैं चाहता हूँ कि अंग्रेज भारत से न भी जावे, मगर अंग्रेजियत तो चली जावे।" आजादी मिलला के बाद ठीक ओकरा उल्टा भइल । अंग्रेज त चलि गइले, बाकी अंग्रेजियत के हवा एह देश में आन्हीं नियर बहे लागल आ आज त ई दशा बा कि जहाँ अंग्रेजियत मे गंध नइखे ऊ आदमी असभ्य कहाता ।

पं० जवाहर लाल जी एक हाला कहले रहनीं-'फिर विदेशी आक्रमण से हमारी कमर तो झुक गयी, मगर हमारी गर्दन नहीं झुकी ।'

आज भोजपुरी बोलेवाला लोग के इहे हाल हो गइल बा । हमनी के पहिरावा, रहन-सहन, भोजन करे के नियम, ओगैरह बहुत-कुछ बदल गइल बा । बाकिर अबहीं हमनी के गर्दन नइखे झुकल । हमनी भोजपुरी संस्कृति के रइछा हो रहल बा, भोजपुरी भाषा का रइछा का कारन । जहिए भोजपुरी भाषा के पतन हो जाई तहिए भोजपुरी संस्कृति के विनास । ई बात रउरा सब के समुझावे के नइखे। इतिहास एकर गवाह बा कि जवन जवन संस्कृति नष्ट भइली स, ओकनी के पालन करेवाली भाषा का नष्ट भइला के कारन । स्व० महेन्द्र शास्त्री, स्व० मनोरंजन बाबू, स्व० दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ', स्व० रघुवंश नारायण सिंह एवं स्वामी नाथ सिंह नियर लोग भोजपुरी संस्कृति के प्रान बचावे खातिर भोजपुरी के भाषा रूप में स्थापना बदे आन्दोलन शुरू कइल लोग । एह काम में पं० गणेश चौबे आ दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के बहुत बड़ योग बा ।

एह आन्दोलन के पहिला क्रम खड़ा भइल महषि विश्वामित्र का स्थान बक्सर से । स्वर्गीय खाकी बाबा के आशिर्वाद लेके डा० कमला प्र० मिश्र 'विप्र' भोजपुरी साहित्य मण्डल के स्थापना कइले । देखा-देखी एक नीमना काम के साथ भोजपुरी इलाका में कई जगह भोजपुरी साहित्य मण्डल के स्थापना भइल । बाहर में पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद्, बम्बई भोजपुरी समाज, लखनऊ भोजपुरी समाज, भोपाल भोजपुरी समाज आदि के स्थापना भइल। सैकड़न कमल उठि गइली स भोजपुरी के साहित्य मण्डल के भरे खातिर । आ आजु भोजपुरी साहित्य आ भोजपुरी संगठन के जवन उज्ज्वल रूप खड़ा बा ऊ सबका सामने जाहिर बा । सब भोजपुरी भाइन का उत्साह से मातृभाषा के प्रति श्रद्धा अउर प्रेम का रूप में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संगठन भइल बा । ई केहू का खिलाफ नइखे, बलुक अपना अस्तित्व का रक्षा में कइल गइल बा । ए बात खातिर हम अपने सभन से कहे के चाहत बानी कि मागधी परिवार के आउर-आउर भाषा सब बाड़ी स जइसे बंगला, असमिया, उड़िया, मैथिली । सबसे सम्बन्ध बढ़ा के एगो पारिवारिक बढ़ाव के मामिला, प्रेम आ मिलन के वातावरण, तैयार करे के बा । अगल-बगल में जे जनजाति के लोग बा ओह भाई सबके पास हमनी के पड़ोसी बानी स । उन्हनी सब से भी मित्रता बढ़ावे के चाहीं आ एह काम के वास्ते भोजपुरी-उड़िया-शिक्षा, भोजपुरी-बंगला-शिक्षा, भोजपुरी-मैथिली-शिक्षा आ भोजपुरी-असमिया-शिक्षा' नियर पुस्तक लिखाये के चाहीं । अंगिका, बज्जिका, मगही के बढ़ावे के चाहीं । जे लोग सोचऽ ता कि भोजपुरी के आन्दोलन कवनो भाषा का

खिलाफ वा, ओह लोगन से हम निहोरा करबि कि हमन के सिद्धान्त ई बा कि-

तोता तोती बोले रामा बोले भेंगराजवा से
पपिहा के पी पी हिया साले रे बटोहिया ।

जवन भोजपुरिया लोगन के करेज के किकोर लेले रहे देश के चिरइन तक के बोली, ऊ लोग एह देश का कवनो भाई का बोली चाहे भाषा का खिलाफ त नाहिएँ मांची । संसार का कवनो भाषा के भी, हमनी का शारदा के रूप में मानीले, आ माता शारदा से द्वेष आ घृणा कइसन ।

भोजपुरी के मान्यता

अब सबले जरूरी हो गइल बा भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में मान्यता मिलल । जब तक एकर मान्यता ना मिली, तब तक आगा के उन्नति रुकि जाई । लेखक लोगन के उत्साह कम होखे लागी । भोजपुरी के मान्यता दियवावल हमनी के एह घरी परम कर्त्तव्य बा आ ऊ हमनी के अधिकार हऽ । एह भोजपुरी सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन के समय भोजपुरी के मान्यता के सवाल मुख्य अतिथि माननीय श्री जगजीवन बाबू का सोझा उठावल गइल त उहाँ के मुख्य अतिथि पद से कहले रहलीं कि अधिकार मँगला से ना मिलेला, ऊ त अपना ताकतवे से लेबे के होला ।

एह घरी केन्द्र सरकार के ध्यान लोकभाषा के उन्नति का ओर गइल बा । ई निर्विवाद बात बाटे । गाँव के उन्नति खातिर लोकभाषा सभन के उन्नति करहीं के परी आ ओकनी के मान्यता देबे के होई । हमरा बुझाता कि एह घरी के हवा-पानी ठीक बा आ मान्यता आसानी से मिलि जाई । एह काम वास्त एगो कमेटी बनावे के चाहीं, जे एही अधिवेशन में बना लिहल जाय आ ऊ मान्यता के उपाय करी । जो दुर्भाग्य से अइसने हालत आ जाई कि कुछ त्याग आ वलिदान के जरूरत परे त ओह खातिर हमनी के तैयार रहे के परी । हृदय में प्रबल इच्छा जगवाए के तइयार होखे के बा । ऐ अन्वर दिल गर तू चाहे हर चीज मुकाबिल आ जाए । दो कदम चले तेरे आगे, दौड़ी हुई मंजिल आ जाए। आता है तूफाँ आने दो, कश्ती का खुदा खुदाए। आज जो मुकाबिल में उन्हीं लहरों में कोई बहता हुआ साहिल आ जाये ।'' मंजिल के दुअरा पर बोलावे खातिर त पहिले अपने डेग आगा धरे के परी । आ रउरा सभसे हथजोरी आ चिरउरी बा कि अपने सभ एकरा बदे एकजुट होके तैयार हो जाई ।

जय भोजपुरिया ! जय भोजपुरी !!

-रामविचार पाण्डेय

❐

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

सातवाँ अधिवेशन

अमनौर

(29-30-31 अक्तूबर 1982)

के

अध्यक्ष

(श्री०) ईश्वर चन्द्र सिनहा

के

भाषण

आदरणीय स्वागत समिति के अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधिगण, भोजपुरी प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल सभ बहिन भाई लोग !

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का एह सातवाँ अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर हमरा के बइठा के रउआं सभ जवन आदर दिहलीं ओकरा बदे हम केतना आभार प्रगट करीं, नइखे बुझात । बहुत कठिन होला अइसना आदर का चकाचौंध से अपना के उबारल । बाकी हम सजग बानी, हम जानत बानी कि रउआं आदर देके हमार बोझ बढ़ावत जात बानी । हम साहित्यकार त हईं ना, अलबत्ते भोजपुरी साहित्य के विनम्र सेवक आ स्नेही जरूर हईं । अपना पत्रकार- जीवन में जब, जइसे आ जेतना मौका मिलल भोजपुरी खातिर लड़लीं अ नया-नया लोगन के मैदान में ले आवे ख़ातिर कवनो कसर उठा ना रखलीं । ओही लहर में डाक्टर स्वामीनाथ सिंह अइसन लेलकरलन कि एक झोंक में कुछ कथा साहित्यो के कामों हो गइल आ चारू ओरि चर्चा होखे लागलि । तब जनलीं कि शायद कुछ काम लायक हो गइल । बाकी एतने पर हम ई कइसे मानि लीं कि हम साहित्यकार हईं ? या हम भोजपुरी के विद्वान हईं ? अब अइसना स्थिति में हमरा सोझा ई सवाल ठाढ़ होत बा कि अइसना महत्वपूर्ण पद पर, जवना पर शुरुए से भाषा-वैज्ञानिक, भाषाशास्त्री, ख्यातिप्राप्त विद्वान, आलोचक, कवि आ रचनाकार के प्रतिष्ठित करे के महान गौरवशाली परम्परा बा, सात बरिस बाद हमरा नियर समर्पित पत्रकार के काहे बइठावल गइल ह ? ई निर्णय अचानक-अनायास त भइल ना होई ? एक से एक सूझ-बूझ वाला लोग एह भोजपुरी सहित्य-सम्मेलन में भरल बाड़न । तब का कउनो खास बाति एह साल उपतीन भइलि बा ? कुछ हमहूँ सोचत बानीं । आखिर रउएं सभेका बीच के त हुईं ! भोजपुरी-साहित्य का बढंती में एह सम्मेलन के जवन भूमिका रहलि बा ओकर हम सोझा साखी बानी ! बहुत कुछ बाहर भीतर के उपलब्धि बा जवना के सर्वेक्षण के जरूरत बा । समय-समय पर सर्वेक्षण आ मूल्यांकन होत रहला से नीक परेला आ भुलाये-भटके के डर ना रहेला । जवना मनसा से ई भोजपुरी आन्दोलन आजादी मिलला का बाद ठाढ़ भइल ओकरा पूरन होखे में अबहीं लमहरि डहरि तय करे के बा । जेतना मंजिल तय हो चुकलि बा ओके संतोषजनक मानि के ना

त अगराये के बा आ ना त कवनो वजह से निराश होखे के बा । अइसनां बहुत कुछ हालत जरूर बा कि एह आन्दोलन में जुड़ल लोग निराश हो सकेला या ओकरा भीतर घनघोर उदासीनता आ सकेला । एह स्थितियिन पर ध्यान जाये के चाहीं। अइसन लागत बा कि चुपेचुपे, बेकहले– सुनले भोजपुरी सहित्य सम्मेलन के सर्वेक्षण-मूल्यांकन वर्ष मनावही खातिर एगो भोजपुरी का पायक पत्रकार के एह ऊंच कुर्सी पर रउआ सभ बइठवले बानी । तब तनी एकरो चर्चा हो जाये के चाहीं ।

देखीं सभें, सगरे महत्त्वपूर्ण संस्थन का जिनिगी में अइसन एगो वक्त आवेला कि ओकरा प्रेमिन के उत्साह आ जोश जनाला कि घटि गइल बा । जनाला कि पहिले नियर भारी-भारी समारोह काहे नइखे होत, हुल्लहपाड़ आ शोरगुल काहे नइखे होत आ प्रचार-प्रसार खातिर भारी-भारी भीड़ के काहे नइखे आकर्षित करेवाला जतन होत? भीतर से क्षोभ नियर उठे ला कि अतना संस्था-नेहिन का आछत काहे आन्दोलन ठण्ढा पड़ल जात बा ? काहे संगठन छितिराये लागल बा ? काहे तेज कदम बढ़ाके मंजिल के छू नइखे लिहल जात ? बुझात बा न कि ई अफसोस लायक स्थिति बा ? बाकी तनी गहिरे जा के सोची। एह प्रकार के क्षोभ आ चिन्ता के लहरि भीतर से उठति बा त का ई एह बात के सबूत नइखे कि ओह संस्था के सोरि व्यापक रूप से व्यक्ति का भीतर गहिराई में पइठि गइलि बा ? शुरू-शुरू में समारोह, प्रचार आ भीड़-भाड़ भरल हल्ला-गुल्ला एही खातिर त होला कि लोगन का भीतर नया विचार जागो आ संस्था के भाव पनपो ? जब ऊ विचार-भाव जागि के सोरिया गइल तब जरूरत हल्ला-गुल्ला के ओतना ना होले जेतना सधल ढंग से दिशा देबे के । भोजपुरी का आन्दोलनो के इहे हालि बा । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के शुरुआत त अइसन भइलि कि जवना क़े एगो भोजपुरी मुहावरा में कहि सकल जाला कि जइसे आकाश माँड़ो पाताल खंभा । बाकी धीरे-धीरे ऊ बाहरी समारोही उछाल-पछाल आ गहमा गहमी भरल प्रचार-चक्र-प्रवर्त्तन हलुकात गइल । मोटा मोटी ई सोचि लेबे के ई जबरदस्त कारण बा कि भोजपुरी आन्दोलन में गिरावट आ गइलि बा आ ऊ बिखराव का दलदल में फँसि गइल बा । बाकी का साँचो अइसने स्थिति बा ?

बाहर से लागत अइसने बा कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के धारि मन्द परि गइलि बा आ भोजपुरी का आन्दोलन में गतिरोध आ गइल बा। बाकी भीतर से जेतना काम हो रहल बा ओके देखत कुछ अउरे नतीजा निकली। साँच पूछीं त कुल्हि आन्दोलन आ प्रचार का पीछे भावना त ठोस कामे के होले आ ऊ रचनात्मक काम जब तेजी से होखे लागल त माने के चाहीं कि बाहर के धारि भीतर मुड़ि गइलि बा । प्रचार जब ठोस काम में बदलि जाला तब एकरा के शुभ लक्षण माने के चाहीं । भोजपुरी में ठोस काम के माने पुस्तक आ पत्र-पत्रिका के प्रकाशन बा । एही स्थायी सम्पदा के लेके ई भाषा केहू का सोझा खड़ा हो सकेले । जब एकर आन्दोलन शुरू भइल त लगभग ई भाषा खाली हाथ रहे बाकी महत्त्वाकांक्षा अतना बढ़ल रहे कि मांग विश्वविद्यालय तक का पाठ्यक्रम में चोंहपे के भइलि । फेरु जल्दिये साहित्य अकादमी का मान्यता खातिर आवाज उठे लागलि । आंशिक रूपे में सही विश्वविद्यालय तक का पाठ्यक्रम वाली मंजिल के त भोजपुरी भेंटि लीहलसि । बाकी मान्यता वाला सवाल अबहीं लटकल बा । एह बीच ओकरा खातिर अपना शक्ति सम्बर्धन में लागल-लागल बिहार में एगो भोजपुरी अकादमी वाला लक्ष्य पूरा भइल । उत्तरी प्रदेश में एकर स्थापना नजदीके जनात बा । भोजपुरी अकादमी पटना तिसरका वार्षिकोत्सव पर जवन सालाना बिवरन छपल बा ओकरा के देखत लागत बा कि भोजपुरी में ठोस आ मानक साहित्य

के बढ़ती तेजी से हो रहलि बा। भोजपुरी में व्याकरण आ कोष पर काम हो रहल बा। मौलिक प्रकाशन का साथे-साथे अनुवाद आ अनुसंधान खातिर लोग प्रयत्नशील बाड़े। विविध विधन के ढेर-ढेर किताबि छपि रहलि बाड़ी स। महाकाव्य, प्रबन्धकाव्य, उपन्यास, कहानी आ समीक्षा वगैरह के भारी भारी योजना चलि रहलि बाड़ी स। साहित्यकारन के पुरस्कार दिया रहल बा। व्यापक स्तर पर विद्वान् आ साहित्यप्रेमिन के आकर्षित कइल जा रहल बा। भोजपुरी अकादमी आ एहतरह का दूसरा-दूसरा भोजपुरी-संस्थान का उपलब्धियन के व्यापक रूप से भोजपुरी आन्दोलन से काटि के ना आँकल जा सकला। एक चिराग से बहुत-बहुत चिराग जरि जालन स। सन् १९७५ में पवित्र त्रिवेणी तट पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का रूप में जवन संगठित चिराग जरल ओकर टहक अँजोर आजु नाना प्रकार का आन्हीं बतास से लड़िके नाना प्रकार से खूब फइलि गइल बा। एगो शक्तिशाली विचार, एगो शक्तिशाली संस्था के कार्य कलाप आ एगो महापुरुष के प्रभाव कहाँ-कहाँ, केतना-केतना ज्ञात-अज्ञात रूप में फइलि के कवनो देश-जाति का कवनो भाषा-साहित्य के भाग्य-निर्माण करेला, के पूरा-पूरा लेखा-जोखा बता सकेला ? इहे हालि भोजपुरी साहित्य-सममेलन के बा। एकरा अन्तर्मुख गति, प्रेरक दिशा आ अलक्षित लख्य-भेदन का प्रक्रिया पर ध्यान जाये के चाहीं। एकर मतलब ई ना हो सकेला कि एकरा गतिविधि पर पूर्ण सन्तुष्ट ही के खुश हो लिहल जाव। मतलब सिर्फ एतने कि पूर्ण असन्तुष्ट होके निराश होखे के आवश्यकता नइखे। नयी-नयी स्थितियन का मोताबिक एह संस्था में नया-नया प्रगतिशील मोड़ आवे के चाहीं।

एह सम्मेलन के पहिला अधिवेशन जवन 8-9 मार्च, सन् 1975 के प्रयाग में भइल ओमें अध्यक्ष डा० उदयनारायण तिवारी भोजपुरी क्षेत्र आ भाषा के महत्ता बतवला का बाद जोर देके कहलीं कि "अब मीलि-बइठि के एकरा के आगे बढ़ावे में सबके जुटि जाये के चाहीं।" एह आह्वान का साथे साथ भाषा का चारू वर्ग-क्षेत्रन में नागरी लिखावट के प्रचार आ जनभाषा में पोथी तैयार करे के व्यावहारिक सुझाव देले रहलीं। भोजपुरी का प्रगति खातिर सरकारी पइसा के मदद के उहाँ का उपेक्षाजोग घोषित कइले रहलीं। ओहघरी का जरूरत का मोताबिक अपना पैर पर ठाढ़ होके व्यावहारिक ढंग से ठोस प्रचार में जुटे के सुझाव बहुत कीमती रहे बाकी भोजपुरी का पुरहर विकास में जवन असली रोड़ा बा ओकरा ओर ध्यान गइल जरूरी रहे। ई रोड़ा बा साहित्य अकादमी का ओर से भोजपुरी के मान्यता ना मिलल। बहुत पीड़ा का साथे 'सोगहग' भाषा भोजपुरी का संदर्भ के उठावत दूसरका अधिवेशन (पटना, १५ मार्च, ७६) में अध्यक्ष डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी कहलीं कि "रागात्मक सम्बन्ध के उजागर करे वाला साहित्य कवनो बोली में लिखल जा सकेला। एही से अब साहित्य अकादमी अइसन अनेक बोली के साहित्य के पुरस्कार दे रहलि बा जेकर मान्यता संविधान में नइखे। शुरू-शुरू में हमरा ई बाति अच्छा ना मालूम भइल। ई डर बाड़ जे आगे चलिके ई बात राजनीतिक उलझन पैदा करी। मगर अब त साहित्य अकादमी धड़ाधड़ बोलियन के मान्यता देत जाति बा। अब सब बोलियन में पुरस्कार प्राप्त होखे लागल त भोजपुरी अवधी वगैरह शक्तिशाली बोलिन के काहे उपेक्षा होई ? हम समझत बानी जे अब आउर बोलिन के साहित्यिक मान्यता मिलि गइल त भोजपुरी के अवश्य मिले के चाहीं। एह भाषा के जे प्रतिभाशाली कवि, लेखक बाड़न उनहूँ के पुरस्कार जरूर मिले के चाहीं। राष्ट्र के दसवाँ हिस्सा लोग जवना बोली के बोलत बा, आपन दुःख-सुख, आशा आकांक्षा के अभिव्यक्ति दे रहल बा, ओकर सम्मान होखहीं के चाहीं।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का शब्दन में बहुत पीड़ा रहे । उम्मेद रहे कि अइसन विद्वान के अइसन मार्मिक अपील के सरकार अनसुना ना करी, बाकी हम देखत बानी कि १९८१ तक हमनी का इहे रटना रटे के परि गइल । पिछला छठवाँ अधिवेशन के अध्यक्ष डा० रामविचार पाण्डेय अपना भाषण में इहाँ तक कहि गइलन कि "अब सबले जरूरी हो गइल बा भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में मान्यता मिलल । जब तक एकर मान्यता ना मिली तब तक आगा के उन्नति रुकि जाई । लेखक लोगन के उत्साह कम होखे लागी । भोजपुरी के मान्यता दियवावल हमनी के एह घरी परम कर्त्तव्य बा आ ऊ हमनी के अधिकार ह ।" रामविचार पाण्डेय एह प्रसंग में श्री जगजीवन बाबू के कहनाम के चर्चा कइलन कि अधिकार मंगला से ना मिले ला, ऊ त अपना ताकत से लेबे के होला । अब हम रउआँ समें के ध्यान एह ओर आकर्षित कइल चाहत बानी कि कवनो भाषा के असली ताकत का होले ? जाहिर बा कि उच्च कोटि के ठोस, गंभीर, स्तरीय आ जीवन का विविध कोनन के उजागर करत प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत ऊ जनजीवन के प्रेरित अनुरंजित करेवाला मौलिक साहित्ये होला जवन कवनो भाषा के असली ताकत होला । ई साहित्य अकेले बाहर आ भीतर दूनों तरह के शक्ति होला । इहे कवनो भाषा के, जवन बोली का रूप में कोना-अँतरा में परलि बा, मानक भाषा बना के उछालि देला । मैथिली, ब्रज आ अवधी भाषा एकर उदाहरण बा । हालत ई बा कि भोजपुरी का मोकाबिला में ब्रज आ अवधी रुद्ध आ अधूरी भाषा बाड़ी स । काहे कि ओह में गद्य साहित्य नइखे । गद्य रचना बिना कवनो भाषा जीवन्त ना हो सकेले । एही कारण से गद्य के कवियन के कसौटी कहल गइल । सौभाग्य बा कि भोजपुरी एह कसौटी पर अबले खरा उतरति जात बा आ पूर्ण शक्तिशाली जीवन्त भाषा के लक्षण ओकरा में धीरे-धीरे उभरत जात बा। अइसना 'कड़ेर' भाषा के मान्यता के रोकि सकेला ? बाकी हमन के कुल्हिये ध्यान एह मान्यता का ओरि ना जा के एकरा साहित्यिक श्रीवृद्धि का ओर जाये के चाहीं । 'बउधायन' 'कौशिकायन' आ 'कालजयी कुंअर सिंह' जइसन महाकाव्य के परम्परा आगे बढ़ति गइलि आ साथे-साथ 'फुलसुंधी' 'भोर मुसुकाइल', आ 'रावन उवाच' जइसन उपन्यास रचना के परम्परा तेजी से आगे बढ़ति गइलि । त एह रचनाधारा से जवन ताकत पैदा होई ओकरा आगे मान्यता दानी अपनहीं झुकि के चरन चूमि लीहनि ।

स्वातंत्र्योत्तर कालावधि में अर्थात् सन् ५० का बाद जबसे भोजपुरी साहित्य का इतिहास के आधुनिक प्रगतिवाला इतिहास शुरू होत बा, अइसन लागत बा कि एकरा उत्कर्ष का पेट में तीनि गो छटपटाहटि शुरुए से बेमारी नियर लागि जाति बाड़ी स-

१. भोजपुरी भाषा के सरकारी मान्यता
२. भोजपुरी भाषा के एकरूप प्रयोग
३. संस्कृतनिष्ठ बनाम ठेठ प्रयोग

एह तीनो में सरकारी मान्यतावाली चर्चा ऊपर हो चुकलि बा आ निष्कर्ष ई निकलल बा कि एकरा विषय में चिन्तित आ जागरूक रहल त ठीक बा बाकी बहुत अधिक चिन्तित आ निराश भइला के जरूरत नइखे । जरूरत बा अपना कुल्हिये शक्ति के संचित कइके एकरा ठोस साहित्य का निर्माण में लगावे के। भोजपुरी का जन्मकुण्डली में कादो इहे लिखल बा कि केहू मानो भा मति मानो, जानो भा मति जानों, ई अपना भागि का बरिआई से, अपना आगि का आंचि से, आ रागि का आकर्षण से जुग-जुग ले जइसे दहचंद बनल चलि आइलि बा ओइसहीं भविष्य में आपन रास्ता बनावत चलि जाई । भाषा का रूप में एकर प्रयोग कबसे शुरू भइल, एकर चर्चा डा०

भोलानाथ तिवारी भोजपुरी अकादमी पटना का तिसरका वार्षिकोत्सव समारोह (२ मई, ८२) का अध्यक्षीय भाषण में कइले बाड़न । उनकर खोज बा कि "एकर नाँव मुगल शासन का अंतिम काल से 'भोजपुरिया' मिलेला । सन् 1989 में लिखल 'शेर मुताखरीन' में ई शब्द आइल बा । ओह वाक्य के भोजपुरी अनुवाद होई, 'एगो सिपाही भोजपुरिया में कहलसि कि एतना शोर मत मचाव।' डा० तिवारी का कहनाम का मोताबिक सन् 1868 में प्रसिद्ध भाषाशास्त्री जान बीम्स पहिले-पहिले एह बोली खातिर 'भोजपुरी' शब्द के प्रयोग कइले । एकर अर्थ ई भइल कि प्राचीनकाल का सरहपा से लेके गुरु गोरखनाथ तक का सिद्ध साहित्य में, कबीरदास ले लेके भीखा गुलाल तक का सन्त साहित्य में आ लोक साहित्य में सोहर, फगुआ आ संस्कारगीतन आदि से लेके सोहनी-रोपनी का गीतन में जवन बेनाम भोजपुरी भाषा चुपचाप आपन झंडा बुलंद कइले चलि आवति रहे ओकर उन्नीसवीं शताब्दी का अन्तिम चरण में विधिवत् नाँव धरा गइल आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बीम्स साहेब का पोथी 'रायल एशियाटिक सोसाइटी' का जर्नल भाग तीन में उद्‌घाटन हो गइल । सिर्फ बीम्स साहब ना, जार्ज ग्रियर्सन, विलियम क्रुक, ह्यूज फ्रेजर, आ ए० जी० शिरेफ वगैरह विदेश के अंग्रेजी विद्वान लोग एह भाषा के खूब उठवले बाड़न । ग्रियर्सन साहब त एकरा पर एकदम लट्टू हो गइल रहलन । आल्हा, विजयमल आ गोपीचन्द का गीतन के भोजपुरी का अमर साहित्य का रूप में अपना कपार पर बइठा लेले बाड़न । बाकी अंग्रेजी राज का एह विद्वानन के मान्यता के ई अर्थ ना रहे कि अंग्रेजी सरकार एकरा के कवनो तरह के मान्यता देले रहलि । जइसे अंग्रेजी सरकार ओइसहीं सुराज का बाद कांग्रेसी सरकारं एकरा के लम्मे-लम्मा से देखि के भड़कति रहे । मान्यता के त बाति अलगा बा । बाकी भोजपुरी के एगो कहाउति हवे कि अथरा तर चनरमा कबले छिपिहें ? परगट होइये जइहें । अइसहीं भोजपुरी में जब अइसन प्राणशक्ति बा, ऊ सीधे वैदिक भाषा का विकास-रूप में, पूर्ण वैज्ञानिक भाषा का रूप में निखरलि भाषा बा, त ओके मान्यता ना मिलला के सवाल नइखे ।

अब रहल दूसरका सवाल भोजपुरी भाषा का मानक रूप वाला। एह में दू राय ना हो सकेले कि भोजपुरी भाषा के अनेक क्षेत्रीय रूप बा । पटना, बनारस, गाजीपुर, बलिया आ छपरा वगैरह में कहां के भोजपुरी मानक मानल जाव जवना में साहित्य लिखाव ? आ कवना क्षेत्र का बोलचाल का व्यवहार में आवे वाली भोजपुरी के लिखे वाली साहित्यिक भाषा बनावल जाव ? अबहीं त हालत ई बा कि भोजपुरी का केवनो पत्रिका के उठावल जाव, ओह में छपल लेखन में भाषा के विविध रूप साफ़-साफ लउके लागी आ अइसन सवाल मन में उठी कि केतना तरह के भोजपुरी बा ? अतना बिलगाव का आछत कइसे कवनो भाषा साहित्यिक माध्यम बनी ? कइसे ओकर व्याकरण बनी ? कइसे ओकर वैज्ञानिक रूप निखरी ? फेरू अइसनों जनाई कि एह सवालन के जवाब बहुत कठिन बा बाकि तनिक गहराई से सोचला पर बहुत सहजे में एकर समाधान मिलि जाई । पहिली बात ई कि तमाम दुनिया का भाषा का इतिहास बतावेला कि ओकरा व्यवहार में आवे वाला क्षेत्रीय भाषारूप अलग ढंग के होला आ साहित्यिक रूप अलग ढंग के होला । ई साहित्यिक रूप तनिक देर से भाषा का घिसत-घिसत जाके निखरेला। मेरठ का आसपास खड़ी बोली जवना रूप में बोललि जाले का ठीक-ठीक ऊहे रूप बा जवन साहित्य का रूप में प्रयुक्त होखे वाली खड़ी बोली के बा ? उच्चारण आ ध्वनि में कतना-कतना अन्तर हो जाई । ब्रजभाषा-अवधी के इहे हालि बा । एह कारण से भोजपुरी के क्षेत्रीय अनेकरूपता, कवनो चिन्ता के विषय नइखे । ओकर रूप जइसे-जइसे साहित्य लिखात जाई ओइसे-ओइसे कवनो रंग-ढंग निखरत जाई ।

कुछ दिन पहिले ई विवाद होखे कि सम्बन्ध कारक के विभक्ति में 'क' लिखाई कि 'के' वाला रूप ? दूनो गोल तगड़ा रहे बाकि धीरे-धीरे प्रयोग में 'के' वाला रूप बढ़ल जात बा । आ इहाँ तक कि 'क' के पक्षधर लोग अब 'के' पर उतरि आइल बा । इहे हालि लेकिन का अर्थ में प्रयोग होखे वाला शब्द-रूप के बा । ''बाकी'' आ 'बाकि' में भउरा रहे । फेरू धीरे-धीरे 'बाकि' के प्रयोग बढ़त जात बा । अइसहीं प्रवाह से मानक प्रयोग अपनहीं निखरत जाई । अकेले छपरा क्षेत्र के भोजपुरी बा जवना का क्रिया में लिंगभेद ना होखे ला। बाकि लिखित साहित्य का प्रयोग-प्रवाह में अइसन जनात बा कि उहाँ का भोजपुरी साहित्यो में धीरे-धीरे लिंगभेद उभरे के प्रक्रिया शुरू बा । असल में समर्थ साहित्यकार आ साहित्य का पाछा-पाछा भाषा के प्रयोग चलेला । भाषा बनावल चाहे गढ़ल ना जा सकेला । अइसन प्रयास होइबो करी त ऊ हास्यास्पद होई । एह से फिलहाल एकरा बारे में चिन्ता कइला के कवनो जरूरत नइखे । अनेकता में एकता जइसे एह भारत देश के विशेषता ह, ओसइहीं ओकरा विशाल-विशाल क्षेत्रन में बोले जायेवाली भाषन के ई गुण होला । एह बारे में सबसे सुविधाजनक ई स्थिति बा कि क्षेत्रीय विविधता जवन भोजपुरी का दोष का रूप में समझलि जाति बा काहे ना ओके ओकरा गुण का रूप में ग्रहण कइल जाव ? अइसन मानसिकता बना के जब मानक साहित्य सृजन का ओर भोजपुरी सेवक लोग आगे बढ़ी तबे ऊ स्थिति आई कि अनजाने अनायास भोजपुरी के एगो मानक रूप निखरि के ऊपर आ जाई । ओकरा विषय में खींच-तान जबले होत रही तबले सहजता ना आई आ ना ओकर स्तरीय भा वैज्ञानिक साहित्यिक भाषारूप के विकास होई । कवनो भाषा के परिनिष्ठित रूप निखरे में शताब्दी के शताब्दी खपि जाली स । अबहीं त भोजपुरी भाषा में गद्य साहित्य के रचना होत आधियो शताब्दी ना बीतलि ।

अब बचल तिसरका संस्कृत शब्दावली के ग्रहण आ एकदम ठेठ प्रयोगवाला सवाल । हमके एगो भोजपुरी-प्रेमी का मुँह से ई सुनि के बेहद हैरानी भइलि कि संस्कृत का तत्सम शब्दन के प्रयोग चलत रही तब तक ऊ भोजपुरी कइसे होई ? का तब ऊ हिन्दी ना हो जाई ? अब हमके अइसन जनाइल जइसे ई सज्जन भोजपुरी के एकदम ठेठ गँवारू भाषा बूझि लेले बाड़न । अइसने टिप्पणी एक जगह डा० हजारी प्रसाद द्विवेदियो कइले बाड़न । एहमें कवनो सुबहा नइखे कि भोजपुरी भाषा के आपन एगो मौलिक शब्द भंडार बा जवन ओकर निजी बा आ ओकरा के ऊ ना छोड़ि सकेले । असल में ओकर ऊहे मूल थाती होले । बाकि असइने मूल थाती त ब्रज, अवधी आ मैथिली वगैरह का पासे बा, आ ओकरा के सहेजि-बटोरि के रखला का बाद का ई भाषा संस्कृत का तत्सम शब्दन के धकिया देले बाड़ी स ! अइसन त सोचले उलटा सोच हो जाई कि संस्कृत का शब्दावली आ दूसरा दूसरा भाषा का शब्दावली में विरोध बा । कवनो बोली के निजी देशज शब्द अगर ओकर मूल थाती बा त संस्कृत शब्दावली त तमाम-तमाम बोलियन सहित सगरी आर्यभाषा के महाथाती बा जवना का सम्पर्क से सीमित प्रभाव आ माध्यम वाली कवनो बोली धीरे-धीरे भाषा का सिंहासन पर बइठि जाई । संस्कृत का तत्सम शब्दन के बहिष्कार कइके का हम भोजपुरी के बोली के बोलिये रहि जाये दीहल चाहत बानी ? एह बारे में हिन्दी साहित्य का इतिहास से कुछ सीख लेबे के चाहीं । अवधी भाषा के प्रयोग दू तरह के उहाँ भइल बा। एगो तुलसी जइसन आ एगो जायसी जइसन । पद्मावत में ठेठ अवधी के प्रयोग बा आ रामचरितमानस में मिलल-जुलल प्रयोग बा । प्रसंग आ पात्र का मोताबिक भाषा रंग बदलति बा । कहीं लिखात बा कि 'हँसबि ठठाइ फुलाइबि गालू' जइसन त कतहीं उचरत बा 'सोहमस्मि इति वृत्ति अखंड' जइसन ।

झोंपड़ी, राजमहल आ विद्वत् सभा सभ कर शब्दचित्र एके नियर कइसे होई ? एही समन्वय के लेके त तुलसी आ उनकरा मानस के अतना प्रचार भइल ? जायसी बेचारू त आचार्य शुक्ल का समय में जाके उपरइलन हवन । भारतीय जनता का चित्तवृत्ति का बनावट में संस्कृत शब्दावली आधारभूत तत्व हवे । ओकरा के छोड़ले चीज बहुत हलुका जाई । सूरदास ना छोड़लन आ विद्यापतियो ना छोड़लन त भोजपुरिया लोग काहें छोड़ी। किस्सा कहानी आ कविता में काम चलियो जाई त निबन्ध, समीक्षा आ शोध आदि में कइसे निस्तार होई ? जइसन आंचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार बा, भोजपुरी के 'सरल' भाषा ना बना के 'सहज' रूप में विकसित होखे दीहल जाव । ओकर सहज रूप इहे बा कि प्रसंग, प्रयोग, अवसर आ प्रभाव का दृष्टि से ओकर जवन आपन प्रवाह बा ओके तोड़ल-मरोड़ल ना जाव । सहज प्रवाह में निखरलि भाषा जीवन्त होले । फेरु गम्भीर साहित्यिक माध्यम होखे खातिर ओकर मात्र बोल-चाल वाला ठेठ रूप से कहाँ तक काम चली ?

अन्त में वस्तु आ स्थिति का साथे का कुछ सवालन के संक्षिप्त सर्वेक्षण बाद ई निवेदन बा कि कवनो देश-जाति का नियति नियर कवनो भाषा के भी नियति होले। ओकरा कुछ करे के होला, कुछु उपराजे के होला । ओह नियति का बारेमें कुछऊ पूर्व अनुमान ना हो सकेला । भोजपुरी के विकास जवन अतना तेजी से हो रहल बा, जवना के विवेकी राय विकास ना कहि के उछाल कहत बाड़न ओकर कुछ गम्भीर अर्थ बा । का दो ई क्रांति-क्षेत्र के भाषा अपना भीतर कवनो भारी क्रांति के सम्भावना बीज छिपवले आगे बढ़ि रहली बा । अब हमनी के ई पुनीत कर्त्तव्य बा कि एकरा के विवादहीन स्थिति में बढ़े दीहल जाव । एकरा के आपन रास्ता बनावे दीहल जाव । एह भाषा का हिन्दी-संस्कृत केहू से विरोध भला कइसे हो सकेला ? आत्मा के विरोध परमात्मा से कइसे हो सकेला ? बस चाहे आदमी के जीवन होखे चाहे भाषा आ साहित्य के, समत्तर समरसता के जरूरत बा । एही समरस स्थिति में उत्कृष्ट रचना होले । आजु नाना प्रकार का राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय कारणन से एह समरस स्थिति में बेहद तनाव आ बाधा आ गइलि बा । संत्रास आ अनिश्चितता छा गइल बा । बाकि भाषा के असली समरस स्थिति उहे ह कि एहू कुल्हि के पचा के समकालीन जीवन के सही-सही अभिव्यक्ति देले । भोजपुरी तनी गांव घर से, गली-पनघट से आ क्षेत्रीय घेरा से निकलि के सांसि लेउ । ओकर सांसि में राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय युगीन जीवन के सांसि मिलि जाव आ बहुत व्यापक स्तर पर एकर गंभीर रचनात्मक उठान देश-विदेश का बुद्धिजीविन के प्रभावित आ आकर्षित करो। बस, अधिका का कहीं ?

जय भोजपुरी !

–ईश्वंर चन्द्र सिनहा

❐

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

आठवाँ अधिवेशन

बिलासपुर

(30-31 दिसम्बर 1984)

के

अध्यक्ष

(डॉ०) विवेकी राय

के

भाषण

आदरणीय स्वागत समिति के अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधिगण, भोजपुरी प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल सभ बहिन भाई लोग !

सबसे पहिले आभार । सचहूँ हम बहुत-बहुत आभारी बानी । एह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का आठवाँ अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर आप सभ हमके बइठा दीहलीं । भीतर भारी संकोच बा । सवाल बार-बार मन के कोंचि रहल बा, एह पद का अनुरूप का कवनो सार्थक सेवा हमरा से हो पाई ? पद का गरिमा के निरबाह होई ? बहुत कठिन बा जवाब । हमरा खातिर आसान ई बा कि निरबाह के भार रउआँ सभ के सउँपि दीं । अब उबारि लीं भा बुड़ा दीं। भोजपुरी के नइया सचहूँ मजधार में बा । किनारा निगिचे लउकत बा । बाकी भेंटात नइखे । कइसे कहीं कि जोर कम लागत बा । ई बिलासपुर अधिवेशन एगो ऐतिहासिक जोर-बल हो गइल । भोजपुरी प्रदेश का बाहर इहाँ ई जवन सात्विक सनेह आ भावभरल लगाव लउकत बा ऊ बहुत उत्साह बढ़ा रहल बा । साँच त ई बा कि ई उत्साहे भोजपुरी भाषा का पास पूँजी बा जवन ओकरा के अतना तेजी से बढ़ा रहल बा । पिछला चारि-पाँचि बरिस का भीतर भोजपुरी में जेतना मूल्यवान रचनात्मक साहित्य तइयार हो गइल बा ऊ कवनो भाषा के समृद्ध आ प्रतिष्ठित भाषा बनावे खातिर पर्याप्त बा ।

आप सभ का सोझा हम पहिले एही विषय के चर्चा कइल चाहत बानी । भोजपुरी के महत्ता के गीति आ मान्यता ना मिलला के रोवल त पुरान बाति हो गइल । जवन सर्वमान्य तथ्य होला ओकरा खातिर का सबूत जुटावे के बा ? भोजपुरी के साहित्यकार बिना सरकारी मान्यता मिलले, ओकरा वर्त्तमान के खून-पसेना एक कइ के सँवारि रहल बाड़न । भविष्य खुद आपन चिन्ता कइ लेई । कवनो भाषा के सबसे पहिली मान्यता ओकरा साहित्यकारन से मिले ले। भोजपुरी के सेवक, कवि, कथाकार, नाटककार, निबन्ध लेखक, समीक्षक आ पत्रकार तमाम-तमाम तरह का बांधा के अँगेजि के ओकरा भंडार के भरि रहल बाड़न । बोली का घेरा के तूरि के भाषा का, साहित्यिक भाषा का आसन पर आसीन भइल आसान काम ना रहे । अपना आन्तरिक शक्ति का

बल पर ई भाषा एह गौरव के पवले बा । कवनो भाषा के केहू बनावेला ना, ऊ अपने से बनि जाली स । भोजपुरीयो अपना भागि के अपनहीं बनवले बा । कवनो अइसन छोट-मोट कमी जवना से अब तलक ले तनिक संकोच होत रहल ह, ऊ हो एह साल दूर हो रहल बा । ऊ कमी बस इहे रहलि ह कि देखे खायक कवनो गौरव के एगो कवनो बहुत बहुत ऊंचा शिखर ना रहल ह । अइसन शिखर जवन 'रामचरित मानस', 'सूरसागर' भा 'कामायनी' नियर दूरे से धाहे लागे ।

आप सभी के जानकारी होखे के चाहीं कि बिहार सरकार के भोजपुरी अकादमी दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती, जेकरा के भोजपुरी साहित्य के प्रथम कहानी-लेखक होखे के गौरव मिलल बा, के महाकाव्य 'बउधायन' के प्रकाशित कइ दीहलसि। एकर प्रकाशन भोजपुरी साहित्य का इतिहास में एगो घटना बा । आ ई एगो मानक मील के निर्णायक पत्थर बा । भोजपुरी त का, सम्पूर्ण भारतीय महान महाकाव्यन का परम्परा में ई रचना एगो ध्यानाकर्षक कड़ी हो गइलि बा । एह विशाल ग्रन्थ में कुल एकतीस सर्ग बा जवना में चालीस हजार से अधिक रसगर-दमगर पंक्ति खपलि बाड़ी स । कविता का लपेट में तथागत के जवन करुणा-मैत्री के विचारोत्तेजक सन्देश मिलि रहल बा ऊ एह उखड़ टूटन आ विध्वंस का युग में केतना मूल्यवान बा ? ओह प्रज्ञा पुरुष का चरित्रांकन का संगे-संगे भारत, चीन, जापान, तिब्बत आ वृहत्तर भारत के तत्कालीन इतिहास, दार्शनिक संघर्ष, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, ऊ सब अइसन जोरदार शिल्प में प्रस्तुत भइल बा कि एकदम आकर्षित कइ लेत बा । अब एह अन्तरराष्ट्रीय भाषा भोजपुरी का गौरवशिखर के देखि के केहू निर्णय करो कि भोजपुरी बोली ह कि भाषा ह ? भारतीय साहित्य में इहो गौरव भोजपुरिये के मिलल कि बुद्ध भगवान का जीवन पर पहिलका महाकाव्य एतना व्यापक पृष्ठभूमि पर लिखाइल। विचित्रता ई कि ई काम भइल एगो संन्यासी का हाथे । जेकरा कलम के कमाल देखिके डा० उदयनारायण तिवारी 'भोजपुरी के इलियड' के उपाधि दे दीहलन ।

आप सभे का सोझा हम चाहत बानी कि भोजपुरी का गौरव-शिखरन के ई चर्चा कुछ और क्षण तक चलो । एगो किस्सा ह कि कहला बिना हक-पद रोवेला । भोजपुरी के हक मारल जा रहल बा । हो सकेला कि जनजाने में ई अन्याय होत होखे । हमार निवेदन बा कि अब त आंखि खुले । भारत का कुल आबादी का दसवाँ भाग के लोग जवना भाषा के बोलत बाड़न, ज़वना भाषा के जीअत बाड़न ओकर उपेक्षा काहे ? ओकरा में का नइखे जवन कवनो स्थापित भा समृद्ध भाषा में होखे के चाहीं । दस-बारह बरिस भइल एह भाषा के शब्दकोश भोजपुरी-संसद वाराणसी से छपल । अब त कई-कई गो शब्दकोश प्रकाशित हो गइले स। सबसे ताजा बा 'भोजपुरी शब्दसागर' । शास्त्री सर्वेन्दपति त्रिपाठी का एह छह सौ से ऊपर पृष्ठन वाला कोश में बीस हजार से अधिक भोजपुरी शब्दन के अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से सम्मिलित कइल गइल बा । एह 'भोजपुरी शब्दसागर' का संगे संगे 'भोजपुरी शब्दानुशासन' के चर्चा कइल जरूरी बा। डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' एह मानक व्याकरण के तइयार करे में बहुत श्रम कइले बाड़न । ओइसे एह बारे में एगो बहुत मजिगर जानकारी आप सभ के हम दे रहल बानी । भोजपुरी का शक्ति आ महत्ता के कुछ अनुमान एह बाति से लागि सकेला ।

हिन्दी में अबहीं तलक ले कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण ना निकलल रहे कि एमे भोजपुरी के व्याकरण सन् १९१५ ई० में तैयार हो गइल रहे । पं० शिवदास ओझा

का एह ऐतिहासिक व्याकरण के भोजपुरी अकादमी अब बहुत भव्य रूप में छापि देले बा। शब्दकोश आ व्याकरण का साहित्य का संगे-संगे अइसन जनात बा कि भोजपुरी संस्कृति आ जीवन का समग्र रूप के पचा के, ओकरा जबर्दस्त आन्दोलन नियर ई भोजपुरी साहित्य आगे बढ़ि रहल बा । 'भोजपुरी व्रत कथा', 'भोजपुरी संस्कार गीत', भोजपुरी नीति कथा', आ 'भोजपुरी होरी गीत' आदि नाँव के ग्रन्थ त एह बात के प्रमाण बटले बाड़न स, भोजपुरी लघु उपन्यास आ भोजपुरी लघु कथा के लहरि साल भर से आइलि बा । साहित्य का संगे-संगे अपना संस्कृति के सहेज-बटोर के चलत भोजपुरी साहित्य का डेग-डेग में बहुत गंभीरता बा । एह गंभीरता के अनुमान एह बाति से हो जाई कि भोजपुरी शौर्य के प्रतिमान बाबू कुंअर सिंह पर पांचि गो महाकाव्य एह भाषा में प्रस्तुत हो गइल बाड़न स । सबसे ताजा बा डा० सर्वदेव तिवारी राकेश के ग्रन्थ 'कालजयी कुंअर सिंह' । एह महाकाव्य का साढ़े तीन सौ पृष्ठन में पनरह गो सर्ग बा।

एह महाकाव्य के चर्चा करत एगो भोजपुरी के खण्ड काव्य 'निरधन के घनश्याम' याद आ जात बा । अपना 'किरनमयी' महाकाव्य का बाद एह खण्ड काव्य में कवि रामवचन शास्त्री अंजोर एगो बहुत ध्यानाकर्षक प्रयोग कइले बाड़न। वस्तु रूप में कृष्ण का आधुनिक लोकवादी रूप के त निखरलहीं बाड़न, ऊ भोजपुरी भाषा में दोहा, चौपाई, सोरठा, चोबोला, सवैया, वीर छन्द, आल्हा छन्द आ मुक्त छन्द वगैरह के प्रयोग कइके एगो सहज शिल्प- चमत्कार उपस्थित कइ देले बाड़न । ध्यानाकर्षक आ सहज शक्तिमान शिल्प का दृष्टि से भोजपुरी में कवि अविनाश चन्द्र विद्यार्थी का प्रबन्ध काव्यन के स्मरण कइल जाला । बाकी हमरा पास कहाँ मोका बा पूरी तरह से एह विशाल होत जात भोजपुरी -साहित्य का संसार में आपके घुमावे के ? हम त बस नया-नया उठल कुछ शिखरन का ओर जल्दी-जल्दी इशारा भर करत चलत बानीं । फेरु इशारो कतना करीं ? जवनी घरी बइठि के ई भाषण तइयार कइ रहल बानी हमरा टेबुल पर नन्दकिशोर मतवाला, अरुण भोजपुरी, सीताराम पाण्डेय प्रशान्त, रघुनाथ प्रसाद गुस्ताख, विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, महेन्द्र गोस्वामी, मोती बी० ए०, केदार पाण्डेय प्रशान्त, योगेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रिंसिपल श्रीधर दूबे, कुबेरनाथ विचित्र, मैनावती जी, जुगानी भाई, अवध बिहारी कबी, रामनारायण उपाध्याय, श्रीनिवास मिश्र, विश्वरंजन, कैलाश कमरपुरी, विश्वनाथ प्रसाद शैदा, ब्रजभूषण मिश्र, विपिन बिहारी चौधरी, राजबल्लभ प्रसाद सेवक आ रामबिहारी ओझा रमेश जइसन भोजपुरी के समर्पित रचनाकारन से पचास से ऊपर एकदम टटका साहित्य,कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, लघुकथा, नाटक आ निबन्ध आदि का रूप में आदर का साथ समीक्षार्थ रखल बा ।

मन हैरान ही जात बा भोजपुरी का रचनाकारन के अइसन उत्साह देखिके । बिक्री का साधन आ संभावना का कपार पर लात धइके, व्यवासायिक दृष्टि का चश्मा के आँखि पर से हटा के ई जवन शुद्ध साहित्य सेवा-यात्रा हो रहलि बा ऊ निष्फल होखे वाली नइखे । एह यात्रा-मार्ग पर राहुल सांकृत्यायन, आचार्य शिवजूजन सहाय, प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद सिंह, महेन्द्र शास्त्री, रघुवंश नारायण सिंह, चतुरीचाचा, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, आ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वगैरह वगैरह के अमिट चरणचिह्न अंकित बा । कवि रामविचार पाण्डेय, सुन्दर जी, भोलानाथ गहमरी, स्वर्णकिरण, आंजनेय जी, डा० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, झड़प जी, अक्षयवर दीक्षित, विप्रजी, सहृदय जी, विजय बलियाटिक, ईश्वरचन्द्र सिन्हा आ डॉ० उदयनारायण तिवारी जइसन सिद्ध लोग कबीरदास से ले के

भिखारी ठाकुर तक का बनावल एह साहित्यिक-यात्रा का मार्ग के प्रशस्त करे में जुटल बाड़न, मंजिल के बिना कवनो चिन्ता कइले ।

आप लोग कहीं अइसन मति सोचीं कि सरकारी मान्यता जइसन चीजे भोजपुरी साहित्य के मंजिल बा । अइसन सोचल एगो भारी भ्रम होई । साहित्यिक आन्दोलनन के मंजिल अतना सस्ता आ सामयिक ना होले । जातीय, राष्ट्रीय आ मानवीय जीवन के अभ्युत्थानमूलक सपनन का सँगे ऊ मंजिल जुड़ल होले । सरकारी मान्यता के ओह ऊंचा लक्ष्य का भीतर एगो उपयोगी पड़ाव कइल जा सकेला । बाकी एकर अर्थ इहो नइखे कि एह पड़ाव के चिन्ता हटि गइलि बा । चिन्ता बनलि बा । हर साल एह मोका पर सरकार के दरवाजा खटखटावल जात बा । पिछला साल अमनौर वाला सम्मेलन में त तनी ढेर जोर से दस्तक दीहल रहे । डॉ० प्रभुनाथ सिंह आ स्व० श्री केदार पाण्डेय सहित कई गो प्रतिष्ठित सरकार के मंत्री लोग त रहबे कइलन, डॉ० नामवर सिंह आपन बहुत समय दीहलन ।

मान्यता का सवाल पर डॉ० नामवर सिंह अपना उद्‌घाटन भाषण में बतवलन कि अब तक भोजपुरी के अष्टम सूची में जगह दे के मान्यता प्रदान करे का सवाल पर सरकार राजनीतिक कारनन से आगा पीछा करति बा । दूसर डर ई बा कि एकरा से हिन्दी के धक्का चोंहपी । आगे डॉ० नामवर सिंह साफ शब्दन में कहलन कि राजनीतिक कारन महज एगो भ्रम बा । एकरा बढ़ती में तमाम सरकारी आदमिन के मदद बा । खुद बिहार सरकार भोजपुरी अकादमी बना देले बा । विश्वविद्यालयन का पाठ्यक्रम में एम० ए० तक भोजपुरी स्वीकृत बीँ । तमाम रूप त साहित्यिक आ सांस्कृतिक बा, कहाँ बा रंचमात्र कवनो राजनीतिक रंग ? रहल सवाल हिन्दी का क्षति के त ई ओह से भारी भ्रम बा । हिन्दी से ओकर कवनो विरोध होइये ना सकेला । मैथिली, अवधी आ ब्रजभाषा जइसे हिन्दी मानलि जाति बाड़ी स, ओइसहीं भोजपुरियो हिन्दी के अंग बा । जइसे हिन्दी का नीचे ओह भषवन के साहित्य शोभा बढ़ावत बा ओइसहीं एकर साहित्य बढ़ी त ओकरे बढ़ंती कहाई । भोजपुरी में कहीं हिन्दी का विरोध के स्वर हइयो नइखे । भोजपुरी के कवि सीताराम पाण्डेय प्रशान्त त हिन्दी का उपेक्षा पर जइसे तड़प के रहि बात बाड़न । उनकर तीन पंक्ति देखीं ।

> 'हिन्दी के हुरपेटल छोड़ऽ!
> ऊ चउदहो में दुलरुई हिन्दी,
> मां भारत के ह ई बिन्दी।'

अब के नालायक भोजपुरी भाषा प्रेमी होई जे भारत माता का एह बिन्दी के मद्धिम करे के सोची ? एह लोकतंत्र में केन्द्र आ प्रान्तन का भीतर जइसे सह अस्तित्व बा ओइसही ओइसहीं केन्द्रीय भाषा हिन्दी आ ओकरा छाया में विकसित होत बोलियन के स्थिति बा । विघटन के प्रवृत्ति ना, भोजपुरी आ भोजपुरिहा लोगन में संघठन के प्रक्रिया होले । इतिहास एकर गवाह बा । ऊ लोग देश का एकता के इतिहास बनवले ह आ ऊहे लोग हिन्दी के जन्मदाता से लेके ओकरा साहित्य के बढ़ावे आ उत्कर्ष पर पहुँचावे वाला का रूप में खपि के ओकरा राष्ट्रीय रूप के निखारे में मूल्यवान योगदान कइले ह । हिन्दी राष्ट्रभाषा का छत्रछाया में महज ऊ लोग अपना मातृभाषा का साहित्यिक रूप के संवारे खातिर छटपटा रहल बा । दूनोंके ई रूप एतना साफ बा कि तनिको कवनो आशंका के गुंजायश नइखे । दूसर आशंका प्रगट कइल जात बा कि

जनगणना में यदि मातृभाषा भोजपुरी अंकित करावल जाई त हिन्दी कमजोर होई । बाकी अइसन काहे होई ? भोजपुरी हिन्दी आ खड़ी बोली हिन्दी में आखिर दूनों त हिन्दीयं ह । एह तरह से भोजपुरियो वाला लोगन के मातृभाषा हिन्दी ह । आशंका जवन बा तवन महज मनोवैज्ञानिक बा । ढेर लोगन का मन में भोजपुरी का गँवारू बोली वाला हीनता के रूप अबहीं तलक ले जड़ जमवले बा । अइसना लोगन से निहोरा बा कि अब तनी एकरा लिखित साहित्य के देखो । अब त हिन्दी का तपोनिष्ठ ऋषि गणेश चौबे का हाथे एकरा सम्पूर्ण प्रकाशित साहित्य के एगो विवरणो पुस्तकाकार प्रकाशित हो गइलि बा । पुस्तक एकरा रचनात्मक साहित्य का संदर्भ में एकदम चौंका के आँखि खोलि देबे वाली बा ।

हम अपना भाषण में घूमि फिरि के भोजपुरी का रचनात्मक साहित्ये पर आ जात बानी । का करीं ? मजबूरी बा । हमरा दृष्टि में इहे ओकरा तमाम-तमाम तरह का समस्यन के हल बा । जइसे अंधकार का समस्यन के एकमात्र समाधान प्रकाशे होला ओइसहीं कवनो भाषा आ ओकरा साहित्य से सम्बन्धित समस्यन के हल ओकरा प्रकाशित मूल्यवान सृजन धर्मी साहित्ये का भीतर से निकले ला । भोजपुरी का मान्यता के सवाल, ओकरा एकरूपता के सवाल भा ओकरा मानक प्रयोग के सवाल आ ओकरा प्रचार-प्रसार के सवाल, कुल्हि सवालन के लड़ाई त एही साहित्यिक समृद्धि का केन्द्र में लड़ा जाई । ई केतना अच्छा बा कि हासिया के लड़ाई छोड़ि के भोजपुरी के साहित्यकार लोग असली केन्द्रे में जूझि रहल बाड़न । उनके भारी सफलतो मिललि बा । भोजपुरी-काव्य का समृद्धि के एगो संक्षिप्त झाँकी आप के हम ई दे चुकल बानी ।

आप शंका कइ सकीलाँ कि एह प्रतिस्पर्धा का युग में खाली काव्य-साहित्य ले के कइसे भोजपुरी जीवन्त बनी? ब्रज-अवधी नियर कहीं ऊहो न गति-शून्य हो जाउ । हम आपके विश्वास दिलावत बानी । भोजपुरी के गद्य साहित्य ओकरा काव्य-साहित्य से समृद्ध बा । हम गद्य-साहित्य में सिर्फ भोजपुरी का कथा-साहित्य का बारे में दू शब्द कहे के आप से इजाजत चाहबि । कवनो जमाना रहे कि काव्य सम्पूर्ण साहित्य के केन्द्रीय विधा रहे । अब ओकर स्थान कथा-साहित्य छोरि ले ले बा । भोजपुरी के कथाकार लोग एह तथ्य के भरपूर मौलिकता आ मानक रचनात्मक प्रतिभा का साथे प्रदर्शित कइले बाड़न । अपना पुस्तक - 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' में हम हिन्दी आ भोजपुरी का कथा साहित्य के तुलनात्मक विश्लेषण करत एह नतीजा पर चोंहपल बानी कि भोजपुरी के कथा-साहित्य हिन्दी कहानी का विकास के कुल्हिये मंजिल एके सँगे पार करे बदे सरपट्ट समानान्तर चालि बढ़ा रहलि बा आ ओकर लक्ष्य बा आधुनिकतम शिल्प-विकास का मेल में आ गइल । एह बाति के एह तरह कहि सकीलां कि भोजपुरी के कहानी-साहित्य के क्रमिक विकास नइखे भइल । ई एकबारगी उछाल ले लेले बा । रामेश्वर सिंह काश्यप, उमाकान्त वर्मा, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, ईश्वरचन्द्र सिनहा, डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरीचाचा), रामवृक्ष राय विधुर, ब्रजकिशोर, पी० चन्द्रविनोद, रामनाथ पाण्डेय और जितराम पाठक आदि के कहानी कलात्मक उत्कर्ष और युगीन जीवन का संश्लिष्ट अंकन का दृष्टि से एक बेरि पढ़ला का बाद फेरु भोर ना परि सकेली स ।

उपन्यास-साहित्य में सतश्रेष्ठ उपन्यास का रूप में 'फुलसुंघी' (पाण्डेय कपिल) के नि:संकोच हम आपका सामने राखि सकी लाँ । ऐहिकता, प्रेमादर्श, लोकक थात्मकता,

वीरत्व-त्याग-भोग, भाग्यवाद, संयोगवाद, संगीताकुलता, आंचलिकता, आदर्श चरित्र सृष्टि, भोजपुरी संस्कृति के निखार के चित्र, मिथकीय प्रभाव आ कुल्हि मिला के रोमैन्टिक सृजन के जइसन कलात्मक शिखर 'फुलसुंघी' में उभरल बा, ओइसन खड़ी बोली हिन्दी में दुर्लभ बा । अइसहीं चार उपन्यास के और नाँव हमसे धरवा लेईं । राही मासूम रजा का 'आधा गाँव' जइसन सघन आंचलिक प्रयोग का दृष्टि से 'घर टोला गांव' (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह), रेणु का 'मैला आँचल' जइसन आजु के बदलत जात गाँव के तसवीर वाला भोजपुरी के सबसे विशालकाय उपन्यास 'भोर मुसुकाइल' (विक्रमा प्रसाद), मैथिली का खट्टर काका जइसन प्राध्यापक अचल के उपन्यास 'सुन्नर काका', आ चतुरसेन शास्त्री के 'वयं रक्षाम:' का स्वर आ स्तर के छुअत 'रावन उवाच' (गणेशदत्त किरण)। बाकी उपन्यासन के चर्चा का करीं ? चर्चा कइल उद्देश्य नइखे उद्देश्य बा ई बतावल कि अपना लक्ष्य सिद्धि का दिशा में भोजपुरी-साहित्य तेजी से बढ़ि रहल बा । ओकरा में नाटक, ललित निबन्ध, रेखाचित्र आ रिपोर्ताज जइसन साहित्यिक विधन के प्रतिष्ठा बढ़ि रहल बा । 'भोजपुरी माटी', 'झकोर', 'अकादमी पत्रिका' आ 'दिअरी' जइसन ढेर-ढेर पत्रिका ओह के बढ़ावे में मदद कइ रहलि बाड़ी स । ओकर सोरि भोजपुरी भाषा-भाषी उत्तरप्रदेश बिहार का जिलन का जमीन में बहुत गहराई से त गड़ली रहलि ह, ओकर डाढ़ि-पात देखीं, हई फइलि के एह मध्यप्रेदश तक चोंहपलि। आप लोगन का एह स्नेह-सद्भाव का प्रति अन्त में केतना आभार प्रकट कइल जाव ? मारीशस, सूरीनाम, ट्रिनीडाड आ गायना वबैरह में एह अन्तरराष्ट्रीय भाषा के प्रसार के सुख त निर्गुण ब्रह्म का स्वाद नियर बा, बाकी विलासपुर के ई प्रकट स्नेह-सुख त एकदम सगुण साकार का रोमांच से भरि देत बा । आप सभ लोग प्रणम्य बानी कि भोजपुरी के अतना नेह भरल हाथन से उठवले बानी ।

जय हिन्दी! जय भोजपुरी !

—विवेकी राय

❐

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

नउआँ अधिवेशन

राँची

(26-27 अक्तूबर 1985)

के

अध्यक्ष

(श्री) गणेश चौबे

के

भाषण

आगत विद्वान, भोजपुरी के प्रेमी भाई-बहिन !

सबसे पहिले हम अपने सभनि के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का एह अधिवेशन के हमरा के अध्यक्ष बनवला लागि बहुत-बहुत धन्यवाद देत बानी ।

एह पद के भोजपुरी क्षेत्र के अइसन-जइसन विद्वान शोभा बढ़वले बाड़े, जेकरा योग्यता के चर्चा देश-विदेश में बाटे । ओह आसन पर हमरा अइसन एगो देहाती किसान के कवना गुन पर रीझ के बइठवलीं हँ, ई हमरा समझ में नइखे आवत । आज का युग में निचला स्तर का आदमी का तरफ लोग के ख्याल बढ़ गइल बाटे । शायद एही से भोजपुरी के झंडा ढोएवाला एगो सिपाही के अपने सभनि अध्यक्ष बनवली हँ । अब त अपनहीं सभनि का निबाहे के बाटे ।

जवना क्षेत्र के आज भोजपुरी मातृभाषा बाटे, ऊ प्रचीन काल में मल्ल, काशी, करुष, बज्जि आदि अनेक जनपद में बँटल रहे । समय का फेर से काशी के छोड़ के आउर सब जनपद इतिहास का चर्चा के वस्तु रह गइल बाटे । लेकिन काशी राजनीतिक इकाई का रूप में त ना, सांस्कृतिक इकाई का रूप में अपना गरिमा के कायम रखले बाटे । ई भोजपुरी बोलेवाला जनता का सांस्कृतिक चेतना के जगा रहल बाटे, ओकरा के संजीवनी बूटी पिआ रहल बाटे । अब काशी जनपद के विस्तार उहाँ तक मानल जा सकेला जहाँ तक भोजपुरी बोलल जाला । भारतवर्ष के प्रथम सम्राट चन्द्रगुप्त एही जनपद के एगो सपूत रहले । काशी में गंगा का किनारा दस बेर अश्वमेघ यज्ञ भइल रहे । एही से ओह स्थान के नाम दशाश्वमेघ घाट परल । इहाँ के भारशिव अपना पीठ पर शिवलिंग के बान्ह के अपना इष्ट देव शिव के भार ढोअत लड़ाई में जास आ उहाँ से भाग के अपन पीठ ना देखावस । हुमायूँ से राज सिंहासन छीन लेबेवाला शेरशाह आ सन संतावन का स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजन के छक्का छोड़ावे वाला बाबू कुंअर सिंह एही क्षेत्र के निवासी रहस । भारत के प्रथम सम्राट चन्दगुप्त एही जनपद के एगो वीर सपूत रहले । आजो का युग में चंपारन के नमक सत्याग्रह आ बलिया के सन बेयालिस के आन्दोलन बेजोड़ रहल बाटे । ई बाटे एकरा शूरता के, एकरा वीरता के कुछ झाँकी ।

भोजपुरी भाषा के क्षेत्र लगभग पचास हजार वर्गमील में फइलल बाटे । एह देश में एह भाषा के बोलनिहार के संख्या आठ करोड़ से उपर बाटे । एतना बड़हन क्षेत्र

भइलो पर इहाँ चीनी उद्योग छोड़ के दोसर कवनो उद्योग नइखे । इहाँ कवनो खनिज ना पावल जाला । गंगा, सरयू, गंडक, गोमती आदि इहाँ का नदियन में भयंकर बाढ़ आ जाला जवन इहाँका खेती के बर्बाद कर देवेला । एह हालत में इहाँ का निवासियन का आपन जनम धरती छोड़ के रोजी-रोटी का तलाश में देश का औद्योगिक क्षेत्रन में, चाय बगान आदि में जाये के परेला । एही सब स्थिति में आज से लगभग डेढ़ सौ बरिस पहिले इहाँ के निवासी बृटिश गायना, ट्रीनीडाड, फीजी, मोरिशस, बर्मा, दक्षिण अफ्रिका आदि अनेक देश में गइले आ अपना मेहनत का बल पर उहाँ का माटी से सोना उपजवले । ऊ लोग कवनो तरह आजतक अपना भाषा आ संस्कृति का बँचावत आइल बाटे । लेकिन ओह देशन में भोजपुरी का पढ़ाई के कवनो व्यवस्था नइखे । एह से नयकी पीढ़ी के लोग अपना भाषा के भुला रहल बाटे । ई एगो खटकेवाला बात बाटे ।

आर्य जाति का ओह शाखा के व्रात्य कहल जाय, जे वैदिक रूढ़िवाद के ना माने । ऊ व्रात्य लोग एही क्षेत्र में रहत रहे । ई जनपद सदा से प्रगतिशील विचार के समर्थक रहल बाटे । जैनधर्म के तीर्थंकर पार्श्वनाथ एही क्षेत्र के एगो राजकुमार रहस । महात्मा बुद्ध एही क्षेत्र का सारनाथ से अपना धर्म के प्रचार शुरू कइले । निर्गुण आ सगुण पंथ का अनेक संप्रदाय का इहाँ फूले-फरे के अवसर मिलल । काशी संस्कृत का पढ़ाई के केन्द्र चलल आवत बाटे, एह से इहाँ के पंडित संस्कृत में रचना कइलें । इहाँ के कृष्ण के भक्त कवि ब्रजी में आ राम के भक्त कवि अवधी में रचना कइलें । अइसन उदार आ व्यापक दृष्टिकोण के फल ई भइल कि इहाँ का पढ़ल-लिखल लोग के ध्यान भोजपुरी में रचना करे का ओर गइबे ना कइल । इहे कारण बाटे कि भोजपुरी में मध्य युग का संत आ भाट के रचना त ढेर मिलत बाटे आ आउर लोग के कम ।

सन् १८५७ ई० का स्वतंत्रता संग्राम के सरकार बहुत सख्ती से दबा देलस । अब सरकारी अधिकारी आ ईसाई पादरी इहाँ का भाषा, साहित्य, लोक साहित्य, जाति-प्रथा, रस्म-रिवाज आदि के जानकारी इहाँ का जनता पर सफलता का साथ शासन करे लागि जरूरी समझलें ओ जेकरा जवना विषय में रुचि रहे ओह तरह के संग्रह आ विश्लेषात्मक अध्ययन करे में लगन का साथ जुट गइले । ओह विषय पर पत्रिकन में लेख निकलल, ग्रंथ तइयार भइल आ छपल । एह दिशा में ऊ लोग के काम बहुत महत्व के बाटे । हमरा त अइसन बुझाला, भारतीय विद्वान अबहीं तक ओह लोग का काम का चारो ओर चक्करे काट रहल बाड़े, उहाँ तक ना पहुँच सकले ह ।

भोजपुरी के भाषा का अर्थ में पहिला उल्लेख सन् १७८९ ई० के मिलेला जे काशी का राजा चेत सिंह का सिपाहियन के बोली 'भोजपुरिया' लागि आइल बाटे । भोजपुरी के पहिला व्याकरण सरकार सारन के कलक्टर जे० बीम्स लिखले जे सन् १८६८ ई० में बंगाल एसियाटिक सोसायटी का पत्रिका में छपल । अपना व्याकरण में बीम्स भोजपुरी के प्रयोग ओह समूचा क्षेत्र का भाषा लागि कइले जहाँ तक ई बोलल जाला । तब से शोधी विद्वान एही व्यापक अर्थ में भोजपुरी शब्द के प्रयोग करत आवत बाड़े ।

भोजपुरी व्याकरण आ एकरा लोक गाथा पर शोध कार्य करेवाला विद्वानन में डा० ग्रियर्सन के काम सबसे बेशी महत्व राखत बाटे । आज से लगभग असी बरिस पहिले उनकर 'भारतीय भाषा सर्वेक्षण' प्रकाशित भइल । ओह में ऊ समूचे भोजपुरी क्षेत्र का भाषा के बहुत बारीकी से छानबीन कइले बाड़े । डा० ग्रियर्सन का भोजपुरी जनता आ ओकरा भाषा लागि अपार श्रद्धा रहे । ऊ अपना 'भारतीय भाषा सर्वेक्षण' का भाग ५ जिल्द २ का पृष्ट ४ आ ५ पर मैथिली आ मगही बोली के चर्चा कइला का बाद लिखत बाड़े-"भोजपुरी एगो कर्मठ जाति के व्यावहारिक भाषा ह, जे अपना के

परिस्थिति का अनुकूल बना लेबेला आ जे अपन प्रभाव समूचा भारत पर जमा चुकल बाटे । हिन्दुस्तान के सभ्य बनावेवाला बड़हन जातियन में बंगाली आ भोजपुरी ई दूनू बाटे। ई काम पहिलका अपना कलम से आ दोसरका अपना लाठी से कइले बाड़े ।'' भोजपुरी के बखान करत आगे चलके ग्रियर्सन साहब कहत बाड़े– ''भोजपुरी बोलेवाला लोग अइसने होखेला आ अइसन समुझल जा सकेला कि ओह लोग के भाषा बराबर व्यवहार में आवेवाला हस्तगत वस्तु अइसन बाटे आ ओह में व्याकरण के जटिलता बेशी नइखे।'' डा० ग्रियर्सन मैथिली आ मगही के बोली का रूप में आ भोजपुरी के भाषा का रूप में चर्चा कइले बाड़े । ऊ मैथिली आ मगही लागि 'डायलेक्ट' आ भोजपुरी लागि ''लैंग्वेज'' के व्यवहार कइले बाड़े ।

भोजपुरी साहित्य का आदि रूप के झाँकी सरहपा, शबरपा, भुसुकपा, कोकिलपा आदि सिद्ध आ गोरखनाथ आदि नाथपंथी योगियन का रचना में देखल जा सकेला । चौरंगीपा के 'प्राण संकली' भोजपुरी गद्य में बाटे । सिद्ध आ नाथपंथी योगियन के समय आठवीं से चौदहवीं सदी तक मानल जा सकेला । लेकिन ओह समय तक पूर्वांचल के भाषा बंगला, असमिया, मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि के रूप निखरल ना रहे । राजा गोविन्द देव के दरबारी पंडित दामोदर शर्मा का 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' में बनारसी बोली के रूप मिलेला ।

भोजपुरी के पहिला का कवि पन्द्रहवीं सदी के कबीर रहले । ऊ अपने निपढ़ रहले । उनका बानी आ सबद के उनकर चेला लोग पुस्तक में समेटलस । देखे में कबीर का भाषा पर खड़ी बोली, ब्रजी, राजस्थानी, पंजाबी आ अवधी के स्पष्ट प्रभाव नजर आवेला लेकिन खुद कबीर अपना बोली के पूरबी कहले बाड़े–''बोली हमरी पूरब की हमें लखै ना कोय । हमको तो वाही लखै, धुर पूरब का होय ।'' एह दोहा से ई मालूम हो रहल बाटे कि पूरबी क्षेत्र का बाहर के उनकर चेला उनका बोली के ठीक-ठीक ना समुझस । एह से जे उनकर पूरबी चेला का कलम से लिखाइल बाटे, ओकरे के प्रामाणिक मानल जा सकेला । उनका पूरबी चेलन के लिखल उनका पोथियन में भोजपुरी के स्पष्ट प्रभाव नजर आवेला । आ ओकरा के भोजपुरी मान लेबे में कवनो दिक्कत नइखे । तब से कबीरपंथी, दरियादासी, शिवनारायणी, धरनीश्वरी, बाबरी, सरभंग आ सखी संप्रदाय के निर्गुणवादी संतन के ढेर के ढेर पद भोजपुरी में रचाइल । अठारहवीं सदी से भोजपुरी में सगुनपंथी संतन आ कथावाचक पंडितन के पद आ कीर्त्तन आवे लागल । आजो भोजपुरी में संत-साहित्य के रचना अबाध गति से चल रहल बाटे ।

जहाँतक भोजपुरी में प्रेमाख्यान आ रीति-काव्य के सवाल बाटे, अब तक अइसन बहुत कम सामग्री प्रकाश में आइल बाटे । तबहुँओं 'सुग्गा सनेस', 'हंसदूत', 'हरकिमुन चौंतीसा' आ कुँअर सिंह का दरबारी कवियन के रचना मिलला पर अइसन आशा होत बाटे कि ठीक से खोज होय त आउर-आउर सामग्री मिल सकेला ।

भोजपुरी के आधुनिक साहित्य के आरंभ विरोधात्मक रचना से भइल बाटे । ओनइसवीं सदी का अंत में उत्तर प्रदेश का सरकारी कँचहरियन में उर्दू भाषा के चलन रहे । ओकरा विरोध में हिन्दी मिलल भोजपुरी में नाटक लिखाइल, मंचन भइल आह समय अंग्रेजी फौज का मांस के जरूरत पूरा करे लागि अनेक कसाई खाना खोलल गइल जवना में गोहत्या होय । ओकरा विरोध में स्व० दूधनाथ उपाध्याय 'गोविलापछंदावली' के रचना कइलें, जवना के सरकार जप्त कर लेलस । राष्ट्रीय कांग्रेस का स्थापना से जनता में राष्ट्रीय चेतना जागे लागल । एकर प्रभाव भोजपुरी क्षेत्र पर परल । फेर भोजपुरी में राष्ट्रीय गीत के रचना शुरू भइल । ई सब गीत जन सभा में गावल जाय । एह गीतन में स्व० रघुवीर नारायण के 'बटोहिया' बहुत प्रसिद्ध भइल । सन १९१२ ई० में

ऊ पहिल -पहिल मोतिहारी का बिहार छात्र सम्मेलन का सार्वजनिक मंच से गावल गइल । ऊ गीत भोजपुरी क्षेत्र में राष्ट्रगीत का रूप में गावल जाला । भोजपुरी में राष्ट्रीय गीत का रचना के सिलसिला तब तक चलत रहल जब तक देश स्वतंत्र ना भइल ।

राष्ट्रीय चेतना का जागृति का साथे-साथ देश में क्षेत्रीय चेतना का [illegible] मिलल आ क्षेत्रीयता के भावना जागल । एकर असर भोजपुरी क्षेत्रो पर परल । चउथा दशक का अंत से आ पाँचवा दशक तक जे जनपदीय आन्दोलन चलत रहल ओकर असर भोजपुरी साहित्य का विकास पर परल । आचार्य बनारसी दास चतुर्वेदी के सवाल उठल कि काशी, प्रयाग आदि केन्द्रीय संस्थन पर निर्भर ना रहके हरेक जनपद में साहित्यिक काम में प्रगति लावे लागि जनपदीय साहित्य सम्मेलन के स्थापना होखे के चाहीं । डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के प्रस्ताव रहे कि प्राचीन साहित्य में आइल जनपदन के इकाई मान के ओकरा भूमि, नदी, वन, पर्वत, जन, भाषा, लोक गीत, कथा, कहावत, इतिहास, पुरातत्व, जाति, प्रथा, नाच, पूजा, पर्व-त्योहार, रहन-सहन, खेल आदि के हिन्दी का माध्यम से सांगोपांग अध्ययन होखे के चाहीं । ओही समय महापंडित राहुल सांकृत्यायन के एगो लेख 'मातृ भाषाओं का प्रश्न' का शीर्षक से 'हंस' का सितम्बर १९४३ ई० का अंक में निकलल । उनकर सुझाव रहे कि प्राचीन जनपद का आधार पर देश का प्रान्तन के फेर से बँटवारा होखे के चाहीं । ओह प्रान्त के शासन के भाषा आ शिक्षा के माध्यम उहाँ का जनपदीय भाषा के बनावे के चाहीं । एह लागि जनपदीय भाषा में साहित्य रचना होखे के चाहीं । इनका सुझाव का अनुसार हिन्दी बोलेवाला तीनू प्रान्त ३० प्रान्त में बँट जात रहे । उनकर इहो सुझाव रहे कि भोजपुरी भाषी क्षेत्र के काशी आ मल्ल दू प्रान्त में बाँट देवे के चाहीं । जवना के भाषा काशिका आ मल्लिका रही। गोपालगंज में सन १९४७ ई० का दिसम्बर में दोसरका भोजपुरी प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के ऊ अध्यक्षता कइले, जवना में घुमा फिरा के ऊपर वाला ओही बात के दोहरवले । उनका नजर में भोजपुरी नाम के कवनो भाषा ना रहे । ऊ भाषा के भाखा, सरस्वती के सुरसती, हिन्दी के हिनुई, हिन्दुस्तान के हिनुतान, मास्टर के महटर लिखस । एही भाषा में ऊ आठ गो एकांकी लिखले रहस । राहुल जी के सुझाव रूस का ढंग पर राजनीतिक प्रस्ताव रहे । हिन्दी जगत से जनपदीय आन्दोलन के कड़ा विरोध भइल । भोजपुरी जनता एह प्रस्ताव के त मान लेलस कि भोजपुरी में साहित्य रचना होखे के चाहीं । लेकिन प्रान्त का फेर से बँटवारा के सवाल आ भोजपुरी का शब्दन के तूर-मरोर के गँवारू भोजपुरी बनावे का प्रस्ताव पर ऊ सहमत ना हो सकल । अग्रवाल जी आ चतुर्वेदी जी के प्रस्ताव त शुद्ध साहित्यिक प्रस्ताव रहे । एकरा के मान लेबे में कवनो कठिनाई ना रहे । फेर स्थानीय साहित्यिक संस्थन के गठन, नया साहित्य के सर्जन आ लोक साहित्य पर शोध कार्य आरंभ भइल ।

राष्ट्रीय आन्दोलन, क्षेत्रीय चेतना के जागृति आ जनपदीय आन्दोलन के फल ई भइल बाटे कि गत चालीस बरिस का अवधि में भोजपुरी में प्रबंध काव्य, गीति काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध, व्यक्तिगत निबंध, साहित्यिक निबंध, समीक्षा, कोश, व्याकरण, छंद शास्त्र, यात्रा-साहित्य, पत्र-साहित्य का हरेक विधा पर हजारों सुन्दर ग्रंथ आइल बाटे । भोजपुरी के साहित्यकार हिन्दी का गतिविधि के सतर्क दृष्टि से देखत रहत बाड़े आ जवना ढंग के पुस्तक हिन्दी में निकलत बाटे, ओइसन ऊ भोजपुरी में ले आवे के प्रयास करत बाड़े । भोजपुरी साहित्य के जवना तेजी से विकास हो रहल बाटे ओह से विश्वास कइल जा सकेला कि भोजपुरी के रागात्मक आ ललित साहित्य जल्दिये आउर-आउर समृद्ध भारतीय भाषा का पाँति में बइठे लायक हो जाई ।

इहाँ एगो बात इहो कहे के बाटे कि दूधनाथ उपाध्याय अपना भोजपुरी रचना के

'दोआबा का बोली', रघुवीर नारायण अपना भोजपुरी के प्रान्तिक भाषा, चंचरीक अपना गीत के 'उत्तर प्रदेश का ग्रामीण बोली' आ मन्नन द्विवेदी अपना भोजपुरी सवैया के सरवरिया हिन्दी के रचना कहले बाड़े । 'भोजपुरी' नाम एह सदी का पाँचवाँ दशक तक शोधी विद्वानन तक सीमित रहल । बेतिया के स्व० श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' पहिलका कवि रहस जे सन १९४७ ई०में अपना पुस्तक 'देहाती दुलकी' पर लिखलें- 'भोजपुरी की कविताएँ ।'

भोजपुरी का लोक-साहित्य के भंडार अपार बाटे । परमपरागत जन्म, जनेव, बिआह के संस्कार गीत, पूजा-व्रत-त्योहार के गीत, लोक गाथा, तीर्थ यात्री, गाड़ीवान, भिखमंगा, मलाह, धोबी, नेटुइन आ देहाती गवैयन के गीत, झूमर, जाँतसारी आदि स्त्रियन के गीत, रोपनी आ सोहनी के गीत, मिसिया (मर्सिया), लोरी, गीतिकथा, नाच आ लोकनाट्य आदि के गीत अनगिनत संख्या में प्रचलित बाटे । एकरा अलावा लोक कथा, कहावत, बुझौवल, बालोक्ति, खेल गीत ढेर के ढेर मिलेला । भोजपुरी लोक साहित्य के अनेक संग्रह प्रकाशित बाटे लेकिन साहित्य का विद्यार्थी का नाते हम अपना अनुभव का आधार पर ई कहे में तनिको संकोच नइखीं करत कि लोक साहित्य के अपार भंडार के देखत अब तक जेतना संग्रह भइल बाटे ऊ ना का बराबर बाटे । बदलल स्थिति में लोक साहित्य तेजी का साथ काल का मुँह में समाइल जात बाटे । एकर तुरत संग्रह हो जाये के चाहीं । एह संबंध में हम एतने कहे के चाहत बानी । अभी ना, त कभी ना ।

भोजपुरी का व्याकरण, लोकगीत, लोक गाथा, लोक कथा, कहावत, शब्द कोश पर युरोपियन विद्वानन का काम के बहुत्त महत्व बा । व्याकरण पर काम का सिलसिला में ऊ लोग जगह-जगह से भाषा के नमूना एकट्ठा कइले बाटे । लोक गाथा में आइल शब्दन पर भाषाशास्त्रीय टिप्पणी बाटे, कोश में शब्दन के व्युत्पत्ति देवे के प्रयास बाटे। डा० ग्रिर्यसन अपना 'बिहार कृषक जीवन' में खेती आ ग्राम्य उद्योग संबंधी शब्दावली देले बाड़े । भोजपुरी क्षेत्र का शोधी विद्वानन में डा० उदयनारायण तिवारी के भोजपुरी व्याकरण पर, डा० कृष्णदेव उपाध्याय के भोजपुरी लोक गीत पर, डा० श्याम मनोहर पाण्डेय आ डा० अर्जुनदास केसरी के 'लोरिकायन' पर काम बहुत सुन्दर आ महत्व के बाटे । अमेरिका का पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय के डा० सुरेन्द्र गंभीर विश्व का ओह सब देशन में, जहाँ भोजपुरी भाषा बोलल जाला, घूम-घाम के भाषा के नमूना एकट्ठा कइले बाड़े । भोजपुरी क्षेत्र का अनेक जिला का कृषि आ भोजपुरी कहावत पर बहुत शब्दावली पर शोध कार्य हो चुकल बाटे। डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के भोजपुरी लोक कथा पर शोध प्रबंध बाटे । भोजपुरी लोक साहित्य, शब्दावली आ कहावत पर शोध प्रबंध देवेवाला विद्वानन के संख्या तीन दर्जन से बेशी बाटे । भोजपुरी का आधुनिक साहित्य पर अब तक बहुत कम शोध कार्य भइल बाटे । डा० अरुण मोहन भारवि भोजपुरी उपन्यास पर शोध प्रबंध दे के उपाधि लिहले बाड़े । श्री ब्रज भूषण मिश्र भोजपुरी का प्रबंध काव्य पर अनुसंधान कार्य कर रहल बाड़े । एह समय लगभग एक दर्जन शोधकर्त्ता भोजपुरी का भिन्न-भिन्न अंग पर शोध कार्य शुरू कइले बाड़े । भोजपुरी पर जेतना शोध कार्य भइल बाटे ओतना हिन्दी का कवनो लोकभाषा पर अब तक ना भइल बाटे । तबहुओं भोजपुरी के संत साहित्य, प्रेमाख्यान, रीति काव्य आ राष्ट्रीय गीत अछूता बाटे। भोजपुरी अपना अइसन सपूत के बाट जोहत बाटे जे मठ, पंडित आ मुंशी घराना का बस्ता के घूरा झारे आ राज दरबारन का पुस्तकालयन का पुस्तकन के पन्ना उलटे में लगन का साथ जुट जाय । साधु-संत, भाट आ राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता का कंठ पर जे गीत बाटे, एह सिलसिला में ओकरो संग्रह जरूरी बाटे । एही तरह एह बात के अध्ययन होखे के चाहीं कि मध्य कालीन हिन्दी साहित्य पर आ ओकरा संत साहित्य

पर भोजपुरी के केतना प्रभाव बाटे । चाहे कवनो भाषा होय, ओकरा बोली में एकरूपता ना रहे । इहे हालत भोजपुरियो के आज बाटे आ आगे रही । ई कवनो चिन्ता के बात नइखे । लेकिन भोजपुरी गद्य का लिखावट में एकरूपता नइखे, ई ओकरा सामने एगो बड़हन समस्या बाटे । जब कहीं भोजपुरी के चर्चा चलेला, लोग चट दे कह देवेला कि भोजपुरी के कवनो मानक रूप नइखे । जवना समय भोजपुरी में साहित्य रचना शुरू भइल, लेखक अपना क्षेत्र का बोली में लिखस । ऊ लोग के ख्याल ई रहे कि साहित्यकारन का अपना-अपना बोली में लिखला से भोजपुरी के समग्र रूप सामने आ जाई आ धीरे-धीरे भोजपुरी अपन एगो मानक रूप बना ली । लेकिन जब भोजपुरी जनता का ओर से सरकार, साहित्य अकादमी आ विश्वविद्यालयन से एकरा के एगो भाषा का रूप में मान्यता देवे के माँग हो रहल बाटे, एकर एगो मानक रूप जरूरी हो जात बाटे । छंदाग्रह से भोजपुरी कविता का भाषा में थोड़ा बहुत एकरूपता आ गइल बाटे, लेकिन गद्य में अराजक स्थिति बाटे । काम जेतना कठिन मालूम हो रहल बाटे, ओतना कठिन नइखे । भोजपुरी का अइसन लेखकन के संख्या तीन सौ से बेशी ना बाटे, जेकर पुस्तक प्रकाशित होत बाटे आ पत्र-पत्रिकन में लेख छपत बाटे । अगर भोजपुरी के लेखक वर्ग भाषा का एकरूपता के उपयोगिता मान लेस त ई काम आसान हो जाई । इहाँ एकरूपता से हमर मतलब बेशी से बेशी समानता से बाटे । कवनो भाषा में सोरहो आना एकरूपता ना बाटे, ना रही ।

भोजपुरी का लिखावट का एकरूपता में दूगो मुख्य बाधक बाटे । एगो त शब्दन का स्थानीय उच्चारण ले के वर्तनी के अलग-अलग रूप आ दोसर स्थानीय प्रयोग का कारण ओकरा व्याकरण में आइल भेद । एह दूनू बात पर विचार करत में मोटा-मोटी कुछ सवाल उठत बाटे, जवना पर सहमति जरूरी बाटे । ऊ सब सवाल बाटे:-

1. कवना क्षेत्र का भाषा के आदर्श मानल जाय ?
2. जवन शब्द हिन्दी आ भोजपुरी दूनू में पावल जात बाटे, ओकर हिन्दी में आइल तत्सम रूप अपनावल जाय कि भोजपुरी के तद्भव रूप ?
3. अप्राणीवाचक शब्दन के भोजपुरी का परंपरा का अनुसार नपुंसक आ अलिंग शब्द मानके ओकरा साथ आइल क्रिया पद के पुलिंग रूप दिहल जाय कि हिन्दी शब्दन का लिंग परंपरा पर क्रिया पद के लिंग लिखाय ?
4. बोली में मुख सुख का आधार पर शब्द के रूप छोटा हो जाला। लिखावट में छोटा रूप रहे कि ओह शब्द के पूरा रूप लिखल जाय ?
5. जवन प्रयोग व्यापक क्षेत्र में प्रचलित बाटे, ओकरा के अपनावल जाय कि जवन क्षेत्र आदर्श मानल जात बाटे ओकर उहाँ के स्थानीय प्रयोग ?
6. जवन शब्द अनेक रूप में लिखात बाटे, ऊ ओइसहीं लिखल जाय कि ओकर कवनो वर्तनी निश्चित कइल जाय ?
7. शब्दन के तूर-मरोर के आ ओकरा के गँवारू रूप दे के लिखल जाय कि ओकर शिष्ट रूप लिखल जाय ?

सिद्धान्त रूप में अगर एतना सवाल पर सहमति हो जाय आ ओकरा के नया रूप दिआय त लिखावट का भाषा में बहुत- कुछ समानता आ जाई । एह गंभीर समस्या वास्ते अपना निवास स्थान के कुछ प्रयोग के मोह छोड़े के पड़ी आ कुछ दोसरा-दोसरा क्षेत्र के प्रयोग अपनावे के परी । भोजपुरी का बड़हन आ व्यापक हित में कुछ त्याग जरूरी बाटे । आज हमनी अपना बाल-बच्चा के मेरठ कमिश्नरी का बोली के मातृ भाषा का रूप में पढ़ा रहल बानी त अपना भाषा के कुछ वैकल्पिक प्रयोग अपना लेवे में हमनी का उजुर ना होई, हमर अइसन विश्वास बाटे ।

खुशी के बात बाटे कि भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा एह सवाल में दिलचस्पी राखत बाड़ें आ हम आशा करत बानी कि एह दिशा में अब काफी प्रगति होई ।

दोसर सवाल जे आगे चलके भोजपुरी का विकास में बाधक हो सकेला, ऊ पाठ्य पुस्तक के अभाव के प्रश्न बाटे । भोजपुरी में अबतक जे पुस्तक आइल बाटे ऊ साहित्य का दृष्टि से । लेकिन कवनो विद्यार्थी के जरूरत एह से अलग होखेला । बिहार विश्वविद्यालय आ भोजपुरी अकादमी कुछ पाठ्य पुस्तक के प्रकाशित कइले बाटे लेकिन ऊ काफी नइखे । उपयुक्त पुस्तक का अभाव में पढ़े आ पढ़ावे वाला दूनू का दिक्कत उठावे के पड़ेला । अब जरूरत एह बात के बाटे कि सिलेबस के ध्यान में रख के कुछ पुस्तक आवे, जे कोर्स में रहे आ विद्यार्थियन के पढ़ावल जाय ।

भोजपुरी का लेखकन का सामने सबसे बड़हन समस्या उनका पुस्तक का प्रकाशन आ खपत के बाटे । अइसन लेखक संख्या में बहुत बेशी बाटे जिनका अपन पुस्तक अपना खर्च से छपवावे के परत बाटे । एह घड़ी प्रकाशन का सामग्रियन के कीमत बहुत बढ़ गइल बाटे । जब उनकर पुस्तक छप के आवत बाटे त ओकर खरीदनिहार नइखे मिलत । एकरा उलटा भोजपुरी पुस्तकन का दूकान का अभाव में जे कवनो पुस्तक खरीदे के चाहेला उनका पुस्तक ना मिले । अगर लेखक कवनो पुस्तक का दूकानदार के अपन पुस्तक बेंचे लागि देत बाड़ें त ऊ दूकानदार ना उनका के ओकर हिसाब देवेला ना उनकर पुस्तक वापस करेला । एह विषम स्थिति में लेखक यश का लोभ से आ सेवा भाव से अपना मेहनत के कमाई खर्च करके अपन पुस्तक छपवावत बाड़े, ऊ बहुत-बहुत धन्यवाद के अधिकारी बाड़े । प्रकाशन का दिशा में पटना के भोजपुरी अकादमी, भोजपुरी संस्थान, भोजपुरी साहित्य संस्थान आ सर्वेन्द्र प्रकाशन, वाराणसी के भोजपुरी संसद, आ जमशेदपुर के भोजपुरी साहित्य परिषद पुस्तकन के प्रकाशित करके बहुत बड़हन काम कइले बाटे । भोजपुरी अकादमी जे लेखक के ग्रंथ प्रकाशित करेला, ओह पर आ अपना पत्रिका में प्रकाशित लेख पर पारिश्रमिक देवेला । तबहुँओं ढेर लेखकन का पास उनकर पांडुलिपि पड़ल बाटे, जेकरा के केहू पुछनिहार नइखे । पुस्तक के प्रकाशन सहकारिता का आधार पर कइल जा सकेला । देश का आउर-आउर राज्य के लेखक अइसन व्यवस्था कइले बाड़े ।

भोजपुरी के पत्र-पत्रिका जवना स्थिति में बाटे, ओहसे बिल्कुल संतोष नइखे होत । भोजपुरी में अबतक लगभग नब्बे दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आ त्रैमासिक पत्र-पत्रिका प्रकाशित हो चुकल बाटे । ओह में पाँच छव के छोड़ के सब बंद हो गइल । एह घड़ी भोजपुरी अकादमी पत्रिका, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका पटना से आ लड़िकन के पत्रिका नव निहाल छपरा से त्रैमासिक रूप में निकल रहल बाटे। पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद के मुखपत्र मासिक 'भोजपुरी माटी' नियमित निकल रहल बाटे । एकरा अलावा जमशेदपुरी के 'जनता ललकार' आ 'लुकार' समय-समय पर सामने आवत रहेला । कवनो भाषा का साहित्य के विकास में पत्र-पत्रिका के केतना जादा योगदान बाटे, ई केहू से छीपल नइखे । जवन पत्र-पत्रिका भोजपुरी में निकलियो रहल बाटे, ओकर हालत महंगी का वजह से अच्छा नइखे । जनता का सहयोगे आ सहायता पर कवनो पत्र-पत्रिका चल सकेला ।

शोधी विद्वानन का, समीक्षक का, आ इतिहास का लेखकन का एगो भोजपुरी के अच्छा आ समृद्ध पुस्तकालय के अभाव बहुत खटक रहल बाटे । एह वास्ते सम्मेलन का एगो अइसन पुस्तकालय के व्यवस्था कइल जरूरी बाटे, जवना में अबतक के प्रकाशित भोजपुरी के सब पुस्तक, पत्र-पत्रिका, देशी आ विदेशी विद्वानन के लिखल

भोजपुरी के आ भोजपुरी पर ग्रंथ आ लेख के प्रतिलिपि, प्रकाशित भोजपुरी पुस्तकन के पाण्डुलिपि आ प्राचीन पोथी के संग्रह रहे । ई काम बहुत खर्चीला बाटे । हम आशा करत बानी कि प्रकाशक आ लेखक लोग का सहयोग से ई काम बहुत कुछ आसान हो जाई ।

आज का युग में प्रचार के प्रमुख साधन बाटे आकाशवाणी आ दूरदर्शन । लेकिन पटना छोड़ के आकाशवाणी का आउर कवनो केन्द्र से भोजपुरी में स्वतंत्र प्रकाशन के व्यवस्था नइखे । पटना केन्द्र में भोजपुरी के ना कोई कार्यक्रम अधिशासी के स्थायी व्यवस्था बाटे ना कम्पीयर के । एह से उहाँ का प्रसारण के स्तर घटिया चल रहल बाटे । केन्द्र निदेशक महोदय का एह तरफ ध्यान देवे के चाहीं आ भारत सरकार का भोजपुरी क्षेत्र का हरेक केन्द्र से भोजपुरी में स्वतंत्र प्रकाशन के व्यवस्था करे के चाहीं ।

भोजपुरी में काफी साहित्य बाटे । एकरा के बिहार विश्वविद्यालय एगो भाषा का रूप में मान्यता दे चुकल बाटे । इहाँ का आउर-आउर विश्वविद्यालय में एकरा के मान्यता देबे के चर्चा चल रहल बाटे । अब देश के विद्वानन का भोजपुरी के एगो भाषा मान लेबे में कवनो हर्ज नइखे । विश्व का अनेक देश में जहाँ भोजपुरी लोग बसल बाटे, उहाँ ई बोलल जाला आ एकर स्थिति एगो अन्तरराष्ट्रीय भाषा के बाटे । बिहार सरकार भोजपुरी में विज्ञापनो देबेला । भोजपुरी क्षेत्र का जनता साहित्य अकादमी से एकरा के मान्यता देबे लागि, भारत सरकार से एकरा के संविधान का आठवीं सूची में जगह देबे लागि आ बिहार सरकार से बिहार लोक सेवा आयोग में परीक्षा के एगो विषय का रूप में मान्यता देबे लागि बराबर मांग करत आवत बाटे, लेकिन एकर आजतक कवनो सुनवाई ना भइल । खैर, एकर परवाह करेके जरूरत नइखे । भोजपुरी अपना बल-बूता पर आज तक आगे बढ़त आइल बाटे । जरूरी ई बाटे कि भोजपुरी क्षेत्र के सामाजिक, साहित्यिक आ सांस्कृतिक संगठन सब के ठोस बनावल जाय, ओह में प्रगति ले आवल जाय, विदेश में बसल भोजपुरी जनता से सम्पर्क बढ़ावल जाय । फेर एगो अइसन समय आई कि सरकार का हमनी के सब मांग पूरा कर देबे के पड़ी आ ऊ समय दूर नइखे ।

कुछ लोग के खयाल बाटे कि भोजपुरी का विकास से हिन्दी के अहित होई । हिन्दी के जेतना प्रसिद्ध लेखक बाड़े, ओह में आधा से बेशी भोजपुरी क्षेत्र के बाड़े । भोजपुरी जनता का दिल में हिन्दी लागि अपार प्रेम बाटे । जे भोजपुरी के लेखक आ कवि बाड़े, ऊ हिन्दियो के बाड़े । भोजपुरी के ढेर पुस्तक के भूमिका हिन्दी में बाटे आ अनेक में भोजपुरी के ठेठ शब्दन के अर्थ हिन्दी में दिहल गइल बाटे । ई सब बात भोजपुरी का साहित्यकारन के हिन्दी के अटूट संबंध के परिचय दे रहल बाटे । भोजपुरी का शब्द संपदा से हिन्दी के भंडार भरी । भोजपुरी जनता कवनो अइसन काम करे के सपनो में ना सोच सकत बाटे, जवना से राष्ट्र आ राष्ट्रभाषा के हानि होय । एह से अइसन भय के कवनो गुंजाइश ना बाटे ।

हम अपने सभनि के फेर एक बेर धन्यवाद देत बानी आ मंगल कामना करत बानी ।

जय भोजपुरी, जय हिन्दी

–गणेश चौबे

❐

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दसवाँ अधिवेशन

बोकारो. स्टील सिटी

(8-9 अक्तूबर 1988)

के

अध्यक्ष

(आचार्य) विश्वनाथ सिंह

के

भाषण

महामहिम उपराष्ट्रपति जी, माननीय अतिथिगण, स्वागत समिति आ संचालन-समिति के अधिकारी लोग, प्रतिनिधिगण, आ भाई-बहिन सभे,

जब हमरा के बतावल गइल कि हम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का एह दसवाँ अधिवेशन के अध्यक्ष बनावल गइल बानी त पहिले त हमरा बिसवासे ना भइल। बाद में अफसोस भइल कि भोजपुरी के दिन अइसन पतरा गइल बा कि अब इहाँ रेंड़ो परधान होखे लागल। बाकी, सोचत-सोचत बात कुछ समझ में आइल--समुझ परी कछु मति अनुसारा। साहित्यरसिक लोगन के परिहास-बोध (sense of humour) बड़ा बारीक होला। भरल सभा में केहू के बनावे के आ ओह से आनन्द लेबे के जइसन परम्परा साहित्यकारन में बा ओइसन अउर कहीं नइखे। जब ई बुझाइल त हमरा बड़ा खुसी भइल। सोचलीं कि चलऽ, विद्वानन का मनोविनोद के साधन बनके हमहूँ सार्थक हो जाईं। साहित्यशास्त्री लोग बतावेला कि हास्य के प्रधान तत्व ह असंगति (incongruity)-जइसे गरदन में गोड़ावँ भा जूता के टोपी। कुछ ऊटपटांग ना होय त हास्य के देवता निर्गुणे रह जइहें, सगुण ना हो सकिहें। ऊटपटांग के मतलबे ह--ऊँट पर टाँग। ई व्यायाम तनी कठिन त बा, बाकी अभ्यास से का ना होखे! अगर कवनो आदमी अइसन कर गुजरी त हास्य-देवता के अवतरण होइबे करी। अब विचार कइल जाव कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० उदयनारायण तिवारी, डा० भगवतशरण उपाध्याय, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा लेखा स्वनामधन्य विद्वानन का पाँत में हमरा नियन अल्पज्ञ के बइठा देला से बढ़के ऊटपटांग आ ऐतिहासिक असंगति अउर का हो सकेला! हमरा अपना प पूरा भरोसा बा आ एकरा में तनिको सन्देह नइखे कि एह इतिहास से अपने सभ के भरपूर मनोरंजन होई। भोजपुरी में अज्ञलोगन के कमी नइखे। देखीं, एगो रहस्य के बात बतावऽतानी। अज्ञ के असली माने होला अ से ज्ञ तक (अर्थात् a से z तक) जानेवाला। एहसे, अपना के ऊहो कहे में हमरा संकोच बुझाता। बाकी, एह उपयोगी चुनाव पर हम अपने सभ के बधाई देतानी आ अपना किस्मत के धन्यवाद देतानी। रउआ लोग जानते बानी कि आजकाल कुरसी आ किस्मत के सम्बन्ध

तनी जादे घनिष्ठ हो गइल बा । किस्मत के देवी पक्षपात करेली त कुरसी मिलेला आ पक्ष-निपात क देली त छिना जाला । जे भी होय, एह सब का मूल में अपँने लोगन के जवन स्नेह-सद्भावना बा ओकराके हम हाथ जोड़के स्वीकार करऽतानी ।

भोजपुरी जवना विशाल जनपद के भाषा ह ओकरा महिमा के बहुत पुरान परम्परा बा । वैदिक काल से ई परम्परा अविच्छिन्न चलल आवऽता । बुझात नइखे, कहाँ से आरम्भ कइल जाव । गायत्री महामन्त्र के दिव्य द्रष्टा, सृष्टि-रचना में ब्रम्हा का अद्वितीयता के चुनौती देवेवाला, प्रतापी भोज लोगन के महातेजस्वी पुरोहित, स्वय विद्यानिधि भगवान राम के विद्यागुरु महर्षि विश्वामित्र राजा गाधि के पुत्र रहन, जिनका नाम के गाधिपुर नगर आज गाजीपुर का रूप में बा जहाँ उनका कौशिक गोत्र के लोग अजुओ बहुत संख्या में विद्यमान बा । रामचरित के सूत्र-संचालन ऊ बक्सर से--ठेठ भोजपुर से--कइलन । एकरो पहिले चलीं, बहुत पहिले, त देवासुर-संग्राम-काल में देवत्व-प्राप्त, अष्टांग आयुर्वेद के अमृतकलश इन्द्र से आयत्तक के ओकराके लोककल्याण खातिर वसुधा पर प्रतिष्ठापित करेवाला भगवान धन्वन्तरि काशी के सम्राट रहन । उनका वंशज राजर्षि दिवोदास के धन्वन्तरि के अवतार का रूप में मान्यता बा ।[1] शल्यचिकित्सा के महान् प्रवर्त्तक स्वनामधन्य सुश्रुत आ उनके टक्कर के दर्जनो देशी-विदेशी प्राणाचार्य एह दिवोदास धन्वन्तरि के शिष्य रहे लोग । आचार्य सुश्रुत महर्षि विश्वामित्र के सुपुत्र रहन । एही विश्वामित्र के नाती आ आर्यावर्त का राजा दुष्यन्त के पुत्र भरत चक्रवर्ती सम्राट भइलन जिनका नाँव प एह देश के भारतवर्ष कहल जाला । कौषीतकि ब्राह्मण उपनिषद् में इन्द्र से ब्रह्मविद्या-सम्बन्धी वार्ता करेवाला, प्राण अउर आत्मा के सम्पूर्ण वेत्ता, प्रत्तर्दन, काशी-नरेश दिवोदास के पुत्र रहन । एही परम्परा में काशी में ब्रह्मदत्त अइसन विद्वान अउर धार्मिक राजा भइलन जिनकर उल्लेख भगवान बुद्ध अपना उपदेश में कइले बाड़न । एह सिलसिला में बृहदारण्यक उपनिषद् के अग्रणी ब्रह्मवेत्ता काशी-नरेश अजातशत्रु के भी नाम महत्त्वपूर्ण बा जे गर्गगोत्रीय ऋषि बालाकि के ब्रह्मविद्या के मर्म बतवलन । बालाकि मत्स्य, कुरु, पांचाल आ विदेह में रह चुकल रहन आ ज्ञानगर्व से चूर रहन, बाकी उनका तत्वज्ञान काशिए में मिलल ।

भगवान बुद्ध के जनम कपिलवस्तु में भइल आ देहान्त कुशीनगर में । ई दूनों स्थान भोजपुरिए क्षेत्र में बा । उनकर पहिला उपदेशो वाराणसी का निकट सारनाथ में भइल रहे जहाँ से आगे चलके ऊ दुनिया-भर में फइलल आ संसार का एक-चउथाई जनसंख्या के प्रभावित कइलस । विशृंखल भारत के एक समग्र राष्ट्र के रूप देवे खातिर इतिहास जवना मगध-सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का महान कृतित्व के गुन गावऽता आ दुखी विश्व-मानवता के बुद्ध-वचन द्वारा शान्ति-सन्देश पहुँचावे खातिर जवना प्रियदर्शी सम्राट अशोक का प्रति नतमस्तक बा ऊ लोग एही जनपद के सन्तान रहे । इतिहास आ संस्कृति के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० भगवतशरण उपाध्याय का शब्दन में–

''चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत की भौगोलिक सीमाओं पर हमारे देश के इतिहास में पहली बार राजनीतिक व्यवस्था स्थापित की और सुदूर के दक्खिन को छोड़ समूचा भारत एक राष्ट्र बन गया । अपने भोजपुरिया वीरों की हरावल लिये वह भारत के बाहर हिन्दूकुश पर्वत के आरपार अफगानिस्तान जा पहुँचा ।... ग्रीकों को अभिभूत कर उसने काबुल और आस पास के चारों ग्रीक प्रांत उस भोजपुर के साम्राज्य में मिला लिये

1. काशिराजं दिवोदसं धन्वन्तरिम् : सुश्रुत सूत्र, 1/3

जिसकी राजधानी तत्कालीन मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी । चन्द्रगुप्त भोजपुरी-जनपद में ही जनमा था, मल्लों के पड़ोसी पिप्पलिवन के मोरियों की सन्तान था, जिसने मगध पर अधिकार कर लिया था ।

अशोक-गोरखपुर और कसिया के बीच मोरियों में जनमा अशोक-तो संसार के राज्याचरण का कीर्तिमान ही बन गया ।...... तपस्वी अशोक भोजपुरी-अंचल से उठा बौद्ध-धर्माकाश का अप्रतिम नक्षत्र था-गोरखपुर और देवरिया के पड़ोस के मोरियों की संतान चन्द्रगुप्त का पोता । उसी अशोक ने भारतीय राष्ट्र को उसकी मुहर दी, चतुर्दिक् सिंहों का मुद्रांकन दिया, उसकी ध्वजा को वह चक्र दिया जिसका धर्ममय प्रवर्त्तन काशी के मृगदाव में बुद्ध ने किया था, जो गति का, मानव-प्रकृति का, प्रतीक था, जो आज भी शांति के चक्रवर्ती तथ्य का स्मारक है ।''

मध्ययुग में भोजपुरी-जनपद का सासाराम नगर में एगो सामान्य घराना में पैदा भइल शेरशाह अपना प्रचंड भुजबल से मुगल-सम्राट हुमायूँ के एही भोजपुर का जमीन प . . . .बक्सर का पासे चउसा में --हराके भारत से बाहर खदेड़ देलस आ अपना महज पाँच बरिस का शासन-काल में आज का ग्रैंड ट्रंक रोड के निर्माण कइलस, देश में डाक-व्यवस्था कायम कइलस, आ जमीन का पैमाइश के जवन सिद्धांत बनवलस ओकर मान्यता अकबर का समय से लेके आज ले बा । मुगल-राज्य के चुनौती देवेवाला भोजपुरी-वीर हेमू अकबर से खाली बदकिस्मती से हारल । अकबरे का समय में भोजपुर के राजा दलपत मुगल-शासन से विद्रोह कइलन जवन शाहजहाँ के समय तक उनकर वंशज लोग चलावल । एह भोजपुरी वीरन के सिरमौर भइलन जगदीशपुर (आरा) के बाबू कुँअर सिंह जे सन् १८५७ का पहिला स्वतन्त्रता-संग्राम में, अस्सी बरिस का पाकल बुढ़ापा में, बिना कवनो प्रशिक्षित सेना के, अँगरेजन का पूर्ण सुसज्जित सेना से लोहा लिहलन । ओह अवस्था में, घोड़ा का पीठ प, अविराम, हजारन कोस के यात्रा कके बिहार आ उत्तर प्रदेश में युद्धसंचालन कइल आ शक्तिशाली अँगरेजी सेना के कई बेर हरावल कुँवर सिंह का अप्रतिम वीरता, अदम्य साहस, अडिग संकल्प, कुशल सेना-संचालन आ अपूर्व देशभक्ति के उदाहरण ह । तलवार आ संकल्प के धनी कुँअर सिंह अपना स्वतन्त्र जगदीशपुर में अन्तिम साँस लिहलन ।

साहित्य आ संस्कृति का क्षेत्र में भोजपुरी--जनपद का ज्ञात इतिहास से पहिला नाम बाणभट्ट के उभरऽता जे संस्कृत-गद्य के शलाक पुरुष भइल । बाणभट्ट के विलक्षण प्रतिभा भलहीं सरस्वती के प्रसाद होखे, बाकी ओकर अक्खड़ स्वाभिमान एकदम भोजपुर का माटी के देन रहे । हमरा कहला का बाद केहू का कुछ कहे के ना रह जाय, अइसन अन्तिम कहे के ओकरा सारस्वत दर्प के लोक-स्वीकृति भी मिलल- **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्** । नाथ-सम्प्रदाय के आ संस्थापक । हठयोग के महान आचार्य, गोरखनाथ, का जन्मभूमि के त पता नइखे, लेकिन उनकर कर्मभूमि एही जनपद में रहे जेकर गवाही गोरखपुर से मिलऽता । निर्गुण-भक्तन के सुमेरु कबीरदास काशी में प्रगट भइलन आ भोजपुरी के प्रथम महाकवि भइलन । एकरा अलावे प्रसिद्ध निर्गुण-भक्तकवियन में धरमदास, धरनीदास, दरिया साहेब (रोहतास के), बुल्ला साहेब, गुलाल साहेब, शिवनारायण, सरभंग-सम्प्रदाय के किनाराम, भिनकराम, टेकमनराम, आ सगुण भक्तकवियन में रसिक-सम्प्रदाय के रूपकला जी, रामा जी, आ सखी-सम्प्रदाय के लछिमी सखी, कामता सखी आदि अनेक महत्त्वपूर्ण नाम एह जनपद के आ भोजपुरी भाषा के गौरव बाड़न स ।

हिन्दी-साहित्य के अधिकांश धुरन्धर महारथी भोजपुरीभाषी रहन । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य शिवपूजन सहाय, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह– ई सब लोग जे हिन्दी के बनावल, सँवारल आ आगे बढ़ावल, भोजपुरीभाषी रहे । एकरा अलावे परमार्थ-दर्शन के रचयिता आ दर्शन अउर साहित्य के प्रकांड विद्वान महामहोपाध्याय पं० रामवतार शर्मा, सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्री काशीप्रसाद जायसवाल, प्रख्यात विधिवेत्ता आ भारतीय संविधान-सभा के प्रथम अध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द सिनहा, भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, आ लोकनायक जयप्रकाश नारायण भोजपुर-जनपद के निवासिए ना, भोजपुरी भाषा के अनन्य प्रेमी रहे लोग । ओसहीं, कंठ-संगीत में ठुमरी आ पुरुबी शैली के आ वाद्य-संगीत में तबला-सम्राट कंठे महाराज, शामता प्रसाद, किशन महाराज, आ शहनाई के जादूगर बिस्मिल्ला खाँ आदि के भोजपुर के महत्त्वपूर्ण देन कहल जाई ।

भोजपुरी-जनपद का महिमा के तनी विस्तार से जे चरचा हो गइल । ओकर प्रयोजन गौरव-बोध के पागुर कइल ना रहे, बलुक ई देखावल रहे कि प्रागैतिहासिके काल से इहाँ के जीवन-दर्शन में कवनो तरह के क्षेत्रीयता या संकीर्ण भावना नइखे रहल । समग्र भारतीय राष्ट्र आ राष्ट्रीयता का निर्माण में आ ओकरा सुरक्षा आ विकास में अउर, ओहूसे आगे बढ़के, विश्वकल्याण में, एह जनपद के अतुलनीय योगदान बा । भोजपुर के आपन संस्कृति बा–जइसे बंगाल, पंजाब आ महाराष्ट्र के आपन-आपन संस्कृति बा । लेकिन इन्हनीके सार्थकता अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व का साथे-साथे भारतीय संस्कृति के समग्र स्वरूप का निर्माण में भी रहल रहल बा । भोजपुरी के साहित्यकार अपना एह उत्तराधिकार आ दायित्व से अपरिचित नइखन । एहसे भोजपुरी भाषा आ साहित्य का विकास से राष्ट्रभाषा हिन्दी का कठिनाई होखे के जे आशंका कबो-कबो व्यक्त कइल जाला ऊ हमरा निराधार आ अनुचित बुझाला । एह प्रसंग में भोजपुरी आ हिन्दी के सम्बन्ध एगो विचारणीय प्रश्न हो जाता ।

भोजपुरी आ हिन्दी का सम्बन्ध पर विचार करे के पहिले प्रश्न उठऽता– जइसन कि बराबर उठावल जाला– कि भोजपुरी भाषा ह कि बोली । देखल जाय त भाषा आ बोली दूनो शब्दन में व्युत्पत्ति का विचार से कवनो अन्तर नइखे । **भाषा** संस्कृत का **भाष्** धातु से बनल तत्सम शब्द ह जे बोले के अर्थ देला । **बोली** प्राकृत का **बोल्लइ** से बनल बा जेकरो ऊहे अर्थ ह । एकरे संस्कृत-रूप नइखे मिलत । प्राकृत **बोल्लइ** ठेठ लोक व्यवहार के शब्द ह जेकर पहिले के संभावित रूप **बोल्लति** बोलचाल में कबो रहल हो सकेला । संस्कृत का **बदति** से प्राकृत **बोल्लइ** के भाषावैज्ञानिक यात्रा तनी कठिन बुझाता । बाकी अइसन मनिओ लिहल जाय कि **बदति** से **बोल्लइ** आ ओकरासे **बोली** बनल तबो अतना त जरूर बा कि **भाषा** तत्सम ह आ बोली **तद्भव** । अर्थ दूनों के भलहीं एक होय बाकी मूल भिन्न-भिन्न भइला से तद्भव **बोली** से जहाँ बोले के सामान्य अर्थ निकलऽता उहाँ तत्सम **भाषा** में संस्कृत का स्वाभाविक आभिजात्य के पुट बा । **बोली** में वाचिक क्रिया के शारीरिक प्रयत्न के भाव बा; **भाषा** में मानसिकता के विशेष योग हो जाता । सत्यं **वद** अइसन वाक्यन में **वद** का प्रयोग से सामान्य वाचिकता प्रगट होता । **न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि में वदेत्** आ **भाषां**, दूनों का एकत्र प्रयोग से **बोली आ भाषा** के व्यावहारिक अर्थभेद समझल जा सकेला। गीता में

आइल बा-**अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे** आ **स्थितप्रज्ञस्य का भाषा** । एह दूनों वाक्यन में **पंडितन** का आ **स्थितप्रज्ञ** पुरुष का बोलला खातिर **भाष्** धातु के प्रयोग भइल बा । कहल जाला- प्रेमचन्द के भाषा बहुत सरल ह । इहाँ **भाषा के बोली** कह दिआय त उपन्यास-कहानी का लिखित भाषा के अर्थे ना निकली । ओसहीं, **जा मैं तोसे नाहिं बोलूँ** का जगह पर केहू कहे-**जा मैं तोसे नाहि भाषण करूँ**, त रुसला-चोन्हइला के मजेदार पैरोडी हो जाई । सभा में विद्वान लोगन के **भाषण** होला, सभे ओहिजा ना **बोले**; आ घर-परिवार में सभे **बोलेला, भाषण** केहू ना करे । एह विवेचन से ई स्पष्ट बा कि **बोली** वाचिक अउर सामान्य व्यवहार खातिर आ **भाषा** प्रायः लिखित अउर औपचारिक व्यवहार खातिर प्रयोग में आवेला । दोसर बात ई कि एह दूनों में परस्पर कवनो विरोध नइखे । कवनो जीवित भाषा का बारे में ई ना कहल जा सके कि ई खाली भाषा ह,बोली ना ह । हिन्दी, बँगला, मराठी, पंजाबी भाषा हई स, आ बोलिओ, काहे कि इन्हनीके लिखित व्यवहार होला आ बोललो जाला । अँगरेजी अँगरेजन के भाषा (language) भी ह आ बोली (mother tongue) भी । भोजपुरिओ भाषा आ बोली दूनों ह । एकरा विपरीत संस्कृत आ पाली भाषा हई स; बोली ना, काहे कि इन्हनीके व्यवहार केवल लिखित रूप में होता, बोलचाल में नइखे रह गइल । भोजपुरी एगो समर्थ आ जीवन्त बोली आ विशाल सम्भावनावाली भाषा ह ।

भोजपुरी आ हिन्दी के सम्बन्ध ठीक से समझे खातिर हिन्दी का स्वरूप के समझ लिहल जरूरी बा । हिन्दी शब्द के का तात्पर्य ह ? हिन्दी केकरा के कहल जाला ? भाषाविज्ञान का पुस्तकन में ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली (कौरवी), भोजपुरी, मगही आदि के हिन्दी के विभाषा, अर्थात् बोली, बतावल गइल बा । बाकी हिन्दी भाषा के इतिहास लिखेवाला लोग खाली खड़ी बोली के इतिहास लिखले बा, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी वगैरह के ना । कामताप्रसाद गुरु के हिन्दी-व्याकरण खड़ी बोली के व्याकरण ह; रामचन्द्र वर्मा के प्रामाणिक हिन्दी-कोश खड़ी बोली के शब्दकोश ह । एहमें भोजपुरी-शब्दन के कहीं स्थान नइखे । ई ओइसने भइल जइसे खाली दिल्ली के भूगोल लिखके ओकराके सउँसे भारतवर्ष के भूगोल कहल जाय । दोसरा ओर, हिन्दी-साहित्य का इतिहासन में डिंगल के चन्दबरदाई, मैथिली के विद्यापति, भोजपुरी के कबीरदास, ब्रजभाषा के सूरदास आ अवधी के तुलसीदास खड़ी बोली के प्रसाद-निराला-पन्त का साथे-साथे हिन्दी के कवि बतावल गइल बाड़न । अगर ई सब भाषा हिन्दी के बोली हई स त इन्हनीका आधुनिक कवियन के भी हिन्दी-साहित्य का इतिहास में स्थान मिले के चाहत रहे । वीरगाथाकाल का बाद के डिंगल-कवि, भक्तिकाल का बाद के अवधी-कवि आ भारतेन्दु का बाद के ब्रजभाषा-कवि कहाँ चल गइलन ! द्विवेदी-युग में खड़ी बोली के हिन्दी के काव्यभाषा बनावल गइल । ओकरा पहिले, भारतेन्दु-युग तक,गद्य खड़ी बोली में लिखात रहे आ कविता ब्रजभाषा में । गद्य आ पद्य में एके भाषा के अतना भिन्न रूप अउर कहीं ना मिली । अब, अगर कवनो **विदेशी-भाषाभाषी**, चाहे कवनो पंजाबीभाषी, या **बँगलाभाषी, हिन्दी पढ़ल चाही** त ऊ हिन्दी-व्याकरण के कुछ दिन **अध्ययन करी आ हिन्दी के गद्य पढ़ी; बाकी** आगे चलके **जब ओकरा तुलसीदास से भेंट होई त विनय-पत्रिका के ब्रजभाषा समझे में कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण ओकर का सहायता करी** ! ओकरा बुझाई कि हिन्दी में गद्य के व्याकरण अलगा होला आ पद्य के अलगा । ऊ हिन्दी के **अध्ययन** कुछ एह भाव से

बन्द कर दी– अब लौं नसानी अब ना नसैहौं । एह असगति के ठीक करे खातिर कहल जाला कि खड़ी बोली का कविता के हिन्दी-कविता मानल जाय आ **पहिले के अवधी-**ब्रजभाषा-भोजपुरी-डिंगल आदि का कवितन के पुरानी हिन्दी का रूप **में विशेष अध्ययन** खातिर छोड़ दिहल जाय, जइसे अँगरेजी में प्राचीन साहित्य का **साथे कइल गइल बा** । बाकी ई उच्ति ना होई; काहे कि अँगरेजी भाषा के वर्त्तमान रूप ओकरा पुरान रूप के विकास ह; जबकि खड़ी बोली हिन्दी अवधी, ब्रजभाषा वगैरह के विकास ना ह । ई उन्हनींके समानान्तर उत्पन्न आ विकसित भइल बा ।

असल बात ई ह कि हिन्दी शब्द के प्रयोग दू अर्थ में होत आइल बा– एक त भाषावैज्ञानिक अर्थ में आ दोसर, सामान्य अर्थ में । सामान्य अर्थ में हिन्दी खड़ी बोली के कहल जाला जे भारत के राष्ट्रभाषा ह । एह अर्थ में हिन्दी शब्द के प्रयोग खड़ी बोली के प्राय: आरम्भिके काल से चलल आवऽता । भाषावैज्ञानिक अर्थ में हिन्दी नाम एगो भाषा-वर्ग के ह जेकरा विभाषा का रूप में खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, अवधी, बुन्देलखंडी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी आदि के गिनल जाला । अब, जब भोजपुरी में हर विधा में साहित्य-रचना हो रहल बा, ओकराके स्वतंत्र भाषा ना मानल उचित ना होई । एह में भोजपुरी अउर हिन्दी का सम्बन्ध– विच्छेद के कवनो बात नइखे । ई सर्वमान्य सिद्धान्त ह कि आदमी स्वाभाविक भावप्रकाशन जतना अपना मातृभाषा में कर सकेला ओतना दोसरा कवनो भाषा में ना । आ एह में सन्देह ना कि भोजपुरी-जनपद के मातृभाषा भोजपुरी ह; हिन्दी हमनीके सीखे के पड़ेला, आ ऊहो आवते-आवत आवेला ।

हिन्दी से भोजपुरी का कवनो विरोध नइखे । आचार्य हजारी-प्रसाद द्विवेदी जी कहले बानी कि दहिनी आँख आ बाईं आँख में कवन विरोध हो सकेला ! बात सही बा । अब खाली अतने समझ लेवे के बा कि दूनो आँख सही रहे तबे देखे के काम पूर्ण रूप से हो सकेला । अगर एगो में कुछ कमजोरी होय त ओकरा लेन्स में पावर देवे के पड़ी । हिन्दी का तुलना में भोजपुरी अबहीं ओही स्थिति में बाटे । एकरा विकास से हिन्दी के लाभे होई, हानि के कवनो सम्भावना नइखे ।

जवना भाषा आ बोली का व्यवहार के क्षेत्र जतने व्यापक रहेला, जीवन का विविधता से ओकर ओतने जादे सम्पर्क होला, आ ओही अनुपात में ओकर अभिव्यंजना-शक्ति विकसित होखेला । ई व्यापकता भूगोल आ इतिहास, दूनों क्षेत्रन में होला । भोजपुरीभाषी जनसमुदाय का एह दूनू क्षेत्रन का विविधता के लाभ मिलल बा जेहसे एह भाषा में व्यावहारिक जीवन-सम्बन्धी शब्दन के बड़ा समृद्ध भंडार हो गइल बा; आ मुहावरा, लोकोक्ति, कहावत, लोकगीत, लोककथा आदि के त अइसन खजाना बा जेकरासे ग्रहण करके हिन्दिओ का अभिव्यंजना-शक्ति के विकास कइल जा सकेला । लाठी भोजपुरिहा लोगन के पुरान ट्रेड मार्क ह आ ओकरा पर लोग पूरा भरोसो राखेला । कहल बा–**सय पुराचरन ना एक हूराचरन** । अब देखल जाय त लाठी-वर्ग के अतना शब्द भोजपुरी में बा जतना अउर कहीं ना मिली– **लाठी, लउर, डंटा, गोजी, छड़ी, छकुनी, सोंटा, पैना, बोंग** । ओसहीं, गगरी शब्द लिहल जाय जे संस्कृत का **गर्गरिका** से बनल बा । भोजपुरी में गगरा भी होला जे **गगरी** से भिन्न होला– आकार में ना, प्रकार में । **गगरी** माटी के होई आ गगरा लोहा, पीतर, ताँबा, सोना भा अउर कवनो धातु के । अब, एह **गगरी**-जाति के छोट-बड़, ना जाने कतना सदस्य बाड़न– माटी के बनल पात्र, **गगरी, घइला, घइली, घड़ा, नाद, नादी, नदिया, मेटा, मटका, मटकी, पतुका, पतुकी,**

चरुआ, चरुई, हाँड़ी, हँड़िया, कूँड़ि, छोंड़ि, भाँड़ा, सोराही, ठिलिया, कुल्हड़, भरुका,पुरवा, टुइयाँ, रमलोटा ।

भोजपुरी के शब्द-सम्पदा का निर्देश खातिर अनेक शब्दन में से इहाँ दुइएगो शब्द प्रतिनिधि-रूप में चुनल गइल- **लाठी** आ **गगरी** । लाठी त एहसे कि ई भोजपुरी संस्कृति के पुरान प्रतीक ह; आ गगरी एहसे कि ईहो जीवन के पुरान प्रतीक ह- कबीरदास का शब्दन में **जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है**। जीवन के गगरी भरत-भरत जब आदमी थाक जाला त दूनों हाथ ऊपर कके मालिक के गोहरावेला- **कते दिन राम भरब हम गगरी !**

भोजपुरी का उत्कृष्ट अभिव्यंजना-शक्ति के दूगो प्रधान साधन बाड़न स- **नामधातु** के सहज रचना आ **अनुरणनमूलक शब्द** के निर्माण । नाम धातु का रचना में भोजपुरी संस्कृतो से आगा बढ़ल बा, हिन्दी के त कवनो बाते नइखे । तनी एकर नख-सिख वर्णन देखन जाव-

लतियावल, लतहरल, ठेहुनियाइल,अँगुरियावल, मुठियावल, हथवसल, हथियावल, केहुनाठल, केहुनियावल, पिठियावल, छतियाइल, गरदनियावल, जिभियावल, नकियाइल, नकियावल, नजरियावल, नकनकाइल, नकनकावल, नजरियाइल, नजरियावल, मुड़ियाइल, मथवसल ।

शरीर के अंगन का नाम से बनल अइसन अभिव्यंजनक शब्द हिन्दी में कहाँ मिलिहन स ! अँगरेजी भाषा नामधातु बनावे में बड़ा फरहर कहाले बाकी ऊहो एह टक्कर में ना आ सके । अब **अग-प्रत्यंग के नाम से बनल संज्ञा आ विशेषण शब्दन के कुछ उदाहरण देखीं-**

कपरवाह, लिलारी, अँखफोर, जिभगर, जीभी, दँतनिपोर, दाँतल, दाँतुल, ओठर, गलचउर, मुँहगर, मुँहमराई, मुखरी, मुखागर, चेहरगर, छतिगर, भुजगर, हथउठाई, हथफेर, पेटपोंछन, पेटभऽरू, पेटा, पेटपोछन, लदगर, लदाह, पिठियाठोक, ढोंढ़ा,गोड़ाइत, गोड़ावँ, हड़गर,गुदगर, मँसगर, रकतावन ।

अनुरणनमूलक शब्दन के, आवंश्यकतानुसार बना लेबे के जवन शक्ति भोजपुरी में बा ऊ अउर कहाँ मिली ।

खट-खट, चक-चक, छर-छर, झक-झक, झन-झन, टन-टन, टप-टप, टर-टर, ठक-ठक, ठन-ठन, ढन-ढन, पट-पट, भक-भक, भन-भन, सन-सन, सर-सर, हर-हर अइसन शब्दन के त इहाँ खजाना बा । ईहे ना, अइसना शब्दन का बीच में स्वरागम करके ओहसे अर्थचमत्कार बढ़ा देवे के भी अपूर्व कला एह भाषा में मिली; जइसे-**खटाखट, चकाचक, झकाझक, दनादन** । अतने ना, ओकरो से नामधातु बनाके अभिव्यंजक क्रियापदन के रचना कर लेबे के गुण भोजपुरी में बा, जवन हिन्दी में दुर्लभ बा; जइसे-**चकचकावल, झकझकावल, दनदनावल** । अनुरणनमूलक शब्दन का सहयोग से विशेषण के चटकार बना देबे के अद्‌भुत विशेषता एह भाषा में मिलऽता- जइसन बहुत कम जगह मिल सकेला; जइसे-- **करिया कुच-कुच, ऊजर धप-धप या झक-झक, लाल टह-टह, पीयर दह-दह हरियर चह-चह, गोर भक-भक ।**

शब्द-निर्माण का एह विलक्षण सामर्थ्य का अलावे भोजपुरी भाषा में लोकोक्तियन के अक्षम भंडार बा । हिन्दी में लोकोक्तियन के ओइसन समृद्धि नइखे । बहुत त

भोजपुरी से अथवा हिन्दी क्षेत्र का दोसरा कवनो भाषा से उधार लिहल लोकोक्ति मिलिहन स जे फरके से चिन्हा जइसन स । एगो मामूली उदाहरण लिहल जाय--

अधजल गगरी छलकत जाय

नाचे ना जाने अगनवें टेढ़

एह में पहिलका त हिन्दी में ज्यों-के-त्यों चलेला, जबकि छलकत जाय का जगह पर हिन्दी के क्रियापद होइत--छलकती जाती है । ओसहीं, नाचे ना जाने अँगनवें टेढ़ के हिन्दी में बना दिहल बा--**नाच न जाने आँगन टेढ़ा** । कहे के ना पड़ी कि एह लोकोक्ति का भोजपुरी रूप में हिन्दी से जादे स्वारस्य आ स्वाभाविकता बा जे ओकरा मौलिकता का ओर संकेत करऽता। कुछ अउर लोकोक्तियन के देखल जाय जेकर लोकोक्ति का रूप में हिन्दीकरण कसहूँ सम्भव नइखे:-

अधाइल बकुला पोठिया तीत । अनका धन प विकरम राजा । आउर जनावर के लीद ना हाथी के चिरिकल । आन्हर गवरइया भरसाई में खोंता । एक नाद दुइ भइँसा, ता घर कसल कइसा । नाच काछ के अइले मोरवा, गोड़वा देखि झँवान । भर बाँह चूरी ना त पट दे राँड़ । मेहरारू के झूला ना, बिलाई के गाँती । रोवे के मन रहे, अँखिये खोदाऽ गइल ।

लोकोक्ति लोक जीवन में अनुभव का गइराई में भइल सत्य का साक्षात्कार से प्रेरित विदग्ध उक्ति ह । ओकरा में अनुभूति आ अभिव्यक्ति के परस्पर कुछ अइसन सम्बन्ध रहेला जेकर भाषान्तरण ना होखे । लोकोक्ति के निर्माण महाकवि लोग ना करे । एकर प्रत्यक्ष ऊ लोग करेला जे चिट्ठी में लिखवावेला--थोड़ा लिखना, बहुत समझना । लोकोक्ति 'नावक के तीर' होला । कवनो भषा के लोकोक्तियन से परिचित भइला बिना ओकरा शक्ति के पूरा ज्ञान सम्भव नइखे ।

भोजपुरी के शब्द सम्पदा अउर अभिव्यंजना शक्ति का चरचा में अक्सर पूछल जाला कि भोजपुरी में संस्कृत शब्दन के प्रयोग तत्सम रूप में होखे के चाहीं कि तद्भव रूप में । एकरा प्रसंग में मौलिक प्रश्न ई उठेला कि भोजपुरी के स्वरूप का ह ? मानक भोजपुरी केकरा के माने के चाहीं-- कवनो निरक्षर ग्रामवासी जवन बोलेला ओकरा के कि तत्सम शब्दनवाली जवना भाषा में हम बोल रहल बानी ओकरा के ?

कवनो बोली जब भाषा बनेले, याने जब ओकर लिखित व्यवहार होखेला तब ओकर कार्य क्षेत्र बढ़े लागेला । बोलचाल का तात्कालिक व्यवहार से जादे स्थायी महत्त्व के विषय ओह लिखित भाषा के उद्देश्य हो जालन स । अइसन विषयन के उपयुक्त अभिव्यक्ति देवे में ओह बोली के आरम्भिक भावप्रधान रूप आ ओकर सीमित शब्दावली--चाहे ऊ कतनो व्यंजक होय--पाछा छूटे लागेलन स आ ओकर विचारात्मक, विवेचनात्मक रूप अपना अनुरूप शब्दावली का साथे प्रगट होखे लागेला । एह दूनों रूपन के एक-दोसरा के विरोधी ना समझे के चाहीं। दूनों एक-दोसरा के पूरक हवन स । इंशाअल्ला खाँ का रानी केतकी की कहानी में जवन **हिन्दवी छुट, और किसी बोली का न मेल न पुट रहे** ऊ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का चिन्तामणि के भाषा ना हो सकत रहे । भोजपुरी के भी आगे बढ़े खातिर हिन्दी नियन अपना मूल से शक्तिसंचय करे के पड़ी--संस्कृत-शब्दन के अपनावे के पड़ी । संस्कृत में प्रकृति-प्रत्यय का योग से गम्भीर-से-गम्भीर भाव या बारीक-से-बारीक विचार का अभिव्यक्ति खातिर शब्द बना लेबे के जवन अनन्त क्षमता बा ओकरा के छोड़के संस्कृत-मूल के कवनो भाषा

कूपमंडूके रह जाई । अइसहूँ--विषयगत प्रासंगिता का अलावे भी स्वाभाविक रूप से, पढ़ल-लिखल भोजपुरी भाषी लोगन में तत्सम शब्दन का ओर झुकाव बढ़ रहल बा । तत्सम शब्द से प्राय: एगो परिनिष्ठित अर्थ के बोध होला जवन तद्भव से ना हो पावे । उदाहरण लिहल जाय--

एग तत्सम शब्द ह--**मन्त्र**, जेकर अर्धतत्सम या तद्भव रूप हो गइल--**मन्तर** । दूनों का प्रयोग में आसमान-जमीन के अन्तर बा । साँप-बिच्छी के मंतर हो सकेला, बाकी गायत्री के मंत्र होई । रामनाम कवनो मन्तर ना, ह--महामन्त्र सोइ जपत महेसू । ओसहीं यन्त्र शब्द बा । वैज्ञानिक प्रयोगशाला में **यन्त्र** होई आ गला में पहिने खातिर **जन्तर** । गाय **गाभिन** होई आ औरत **गर्भिणी, बलुक गर्भवती** । तत्सम आ तद्भव में **नारी** अउर **मादा** के अन्तर हो जाता ।

बाकी, एकर मतलब ई ना भइल कि तद्भव शबदन के खराब समझ के छोड़ दियाय । मोका पड़ला पर ई तत्समो के कान काटेलन स । कबो अइसनो होला कि तत्सम **निम्न** रह जाला आ तद्भव **नीमन** हो जाला त ऊ तत्सम के नाको काट लेबेला । दवाई सही आ बढ़ियाँ होय त रोग **छू-मंतर** हो जाई, **छू-मन्त्र** ना । कम पइसा में जीवन-निर्वाह करेवाला गरीब आदमी बेटी के बियाह ना करे, निबाह करेला । बेटी के निर्वाह त अच्छा-अच्छा लोग ना कर सके । एगो कवि कहऽता--

गुलशन परस्त हूँ मुझे गुल ही नहीं अजीज ।
काँटों से भी निबाह किये जा रहा हूँ मैं ॥

त, ई ह अपना जगह पर तद्भव के खुबसूरती । अफसोस के बात बा कि भोजपुरी के बहुत-स़ा ठेठ शब्द गते-गते प्रयोग से बाहर हो रहल बाड़न स; जइसे--**खोंढ़ा, गाँती, चुहानी, जबून, जाउर, डभकउआ, डसावल, डांड़, डूभा, ढूकल, ढोंढ़ी, तियना, तोरी, निकसारी, नून, पनही, परेह, पितिया, पिसान, पेड़ा (रास्ता), पेहम, बरिया, बाँड़ी (झूला या ब्लाउज), भऽई (भइँस), रहिला, लाद (पेट), सिकहर** । भोजपुरी-लेखक का तत्सम, तद्भव, विदेशीय अउर अज्ञात चारो मूल का शब्दन के अपना जरूरत आ रुचि का मोताबिक प्रयोग करे के चाहीं। तब भोजपुरी साहित्य के चतुर्मुखी विकास होई ।

भोजपुरी में साहित्य-रचना अइसे त आज से पाँच सौ बरिस पहिले शुरू हो गइल रहे बाकी ओकर विकास आधुनिक काल में आके भइल । देश के आजादी मिलला का बाद पद्य आ गद्य , दूनों का विभिन्न विधन में उच्च कोटि के साहित्य आवे लागल । कविता का क्षेत्र में भोजपुरी के प्रगति अउर क्षेत्रन से जादे भइल बा । मौलिक उद्भावना आ मार्मिक भाव-व्यंजना का दृष्टि से कहीं-कहीं भोजपुरी-कवि ओह ऊँचाई के छू लेता जहाँ कवनो भाषा का सर्वश्रेष्ठ महाकवि के आसन हो सकेला । कुछ उदारहण लिहल ठीक होई ।

प्रसंग ह सन् १८५७ के भारत का प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम के । एने पगरी बन्हले, भाला उठवले भोजपुरिहा वीर आ ओने टोप डटवले, बन्छूक सम्हरले अंगरेज । ओह दृश्य के कल्पना करीं जब भोजपुरी जवान अपना भाला का नोंक पर दुसमन के मूड़ी टोप समेत टाँग लेता आ नीचे से ओकरा धड़ से लोहू के फाँफ ओह टोप सहित मूड़ी का ओर छूट रहल बा । कवि कहऽता--

जीत के हारइँ हारि के जीतइँ ठोकि के ताल कबउँ ललकारइँ ।
छातिन में चुभि जाइ सँगीन जवान तबउँ पग पाछ न टारइँ ॥
भोजपुरी सरदार लपालप भालन ऊपर टोप उछारइँ ।
अइसन लागल दीपक बारिके चंडी खड़ी रन काजर पारइँ ॥[1]

नीचे से ऊपर का ओर जात लाल रक्त के फाँफ, जइसे दीया के लौ ऊपर उठ रहल होय़,आ ऊपर से टोप-समेत मस्तक जइसे ढक्कन होखे एह सवइया के अउर सब कुछ अबहीं छोड़ दियाव, खाली एगो उत्प्रेक्षा देखल जाव, तबो अपना मौलिक उद्‌भावना आ सफल विम्बविधान के बल प ई बहुते उत्कृष्ट कविता कहल जाई । एगो बात बा । उत्प्रेक्षा के विधान भइला के इहो व्यंजना बा कि उपमा से काम ना चलल । उपमा का विम्बविधान में अप्रस्तुत प्रायः वास्तविक अथवा सम्भाव्य होला । जब ओकरा से आगे बढ़के काल्पनिक जगत से अप्रस्तुत लिहल जाला तब ओकर सम्भाव्यता माने के पड़ेला । अइसन अप्रस्तुत असम्भव भले होखे, कवि का कल्पना-जगत में ऊ सम्भाव्य होला--**चंडी खड़ी रन काजर पारइँ** । एही से उपमा में **नियन, समान, सदृश, लेखा** आदि वाचक शब्द होलन स । उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द ह--**मानो, अइसन लागल** । ई स्थिति प्रकृत रूप में उपमा का असमर्थ हो गइला का बाद के ह (अब, ई बात दोसर बा कि कवि एही अप्रस्तुत के विधान उपमा का भाषा में कर देवे)। अइसन अद्‌भुत दृश्य के उतारे में उपमा के थाकिए गइला से उत्प्रेक्षा द्वारा स्वयं रणचंडी के आगमन युद्ध भूमि में भइल बा जेकरा से ई दृश्य अद्‌भुत का साथे-साथे दिव्य हो उठल बा ।

एगो अउर सवइया देखीं जवना में एगो नवबधू के पति भारतमाता का गोहार पर रन में खेले जा रहल बा । ओकरा जूझे के तरास का सामने तरुआरि के पानी थोर पड़ गइल । नव वधू झरोखा से झाँकके देखऽतिआ कि ओकर पति (पति ना कहके जेकराके कहऽतिया **मँगिया के निसानी**; ब्रीड़ा, शील अउर आभिजात्य के मिलल-जुलल कइसन मनोहर व्यंजना बा) सबसे आगे जा रहल बा । एह वर्णन में देखल जाय कि अन्तिम पंक्ति में श्रृंगार के वीररस में कइसन मनोहर व्यूहन भइल बा-

कइलसि भूइँ गोहारि जबइ, रन खेलइ चला तब मोर परानी ।
जूझ क लागलि अइसन तास कि थोर परा तरुआरि क पानी ॥
झाँकि झरोखनि मइँ देखलिउँ, सबसे अगवाँ मँगिया क निसानी ।
फूलि के छाती भई गज ऊपर, साटन की अँगिया मसकानी ॥[2]

एही कवि के तीन गो सबइया द्रौपदी-चीरहरण का बीच से प्रस्तुत करऽतानी जे भोजपुरी काव्य के उत्कृष्ट उदाहरण बा--

एक से एक खड़े छतिरी, अँखिया सबकी झुकि सोवन लागीं ।
द्रौपदी चारिउ ओर निहारिके, हारिके धीरज खोवन लागीं ॥
'द्वारिका नाथ, हे द्वारिका नाथ' जुहारि अनाथिनि रोवन लागीं ।
नैन बड़े-बड़े, गाल बड़े-बड़े, मोती बड़े-बड़े बोवन लागीं ॥

लागत कोइ गोहारि न बा, खड़े ठाकुर एक-से-एक सगोती ।
आँखि तरेरत बाटइ दुसासन, बाज लखइ जस सूधी कपोती ॥

---

1. चन्द्रशेखर मिश्र; कुँअर सिंह (महाकाव्य); चउथा सर्ग ।
2. ऊहे ।

तोरे बिना कोइ सूझत ना, तंनी टोकिके छाती सँकारु चुनोती ।
द्वारिका ओर किहे मुँह द्रौपदी ढारत मोती, निहारत धोती ॥[1]

चारि पती मुँड़ियइलन, पंचम पारथ भी बनि बइठे बेचारू ।
आनक हाथ से आपनि नारि उघारि लखइँ, चटके नहिं तारू ॥
अइसे में ना बिसरइहऽ तुहूँ, पति देवे पर पांडव भइलें उतारू ।
कीमत का जनिहैं एन्हने मछरी मरलें, मिलि गइ मेहरारू ॥[2]

अब एगो दोसर कवि के रचना--भोरी का, भोरावेवाला रूप के वर्णन, भोर का पृष्ठभूमि में:-

भोरी का भेस के, भोरी के भोरल, भोरे के भाउ, सबेरे-सबेरे ।
रे मन रूप का देवी के रूपक गाउ-सुनाउ सबेरे-सबेरे ॥
मेघिल सारी में चम्पक नारी के रूप बसाउ सबेरे-सबेरे ।
कोंवल कौंल के फूल खिले जस थीर तलाउ सबेरे-सबेरे ॥[3]

अब एगो नमूना उक्ति का विदग्धता के देखल जाव । पुस्तक के नाँव ह--बदमाश-दर्पण।

हम उनसे पूछलीं, आँखि में सुरमा काहे बदे लागईल।
ऊ हमके कहलन, हम त छूरी पत्थर से चटाइला ॥[4]

ओही कवि के दू गो शेर, जवना में प्रेम के गजलियत सजीव हो उठल बा--

हम खरमटावँ कइलीं ह रहिला चबाय के ।
भेंवल धयल बा दूध में खाजा तोरे बदे ॥[5]
अत्तर तूँ मलके गंगा नहायल करऽ रजा ।
बीसन भरल धयल बा कराबा तोरे बदे॥[6]

भोजपुरी -काव्य में मुक्तक आ गीत के रचना खूब हो रहल बा । प्रबन्ध काव्यन के संख्या अबहीं कम बा । समर्थ कवियन के कमी नइखे । खाली एने ध्यान देला के जरत बा ।

कविता का बाद जवना विधन में भोजपुरी के उत्कर्ष देखल जाता ऊ ह कहानी आ उपन्यास । कहानी में त कथ्य आ शिल्प के विविध प्रयोगन का चलते उच्च कोटि के साहित्य प्राप्त हो रहल बा लेकिन उपन्यास में ओकर प्राय: अभाव बा । **फुलसुंघी 'आ घर टोला गाँव'** जइसन कुछ श्रेष्ठ अपवादन के छोड़ दियाव त उपन्यास में भोजुपरी अबहीं नया जमीन के तलाश करऽतिआ, अइसन लागऽता । नाटक में कुछ काम भइल बा बाकी अइसन ना कि ओकरा के विकसित भषन के साहित्य के सामने गर्व से प्रस्तुत कइल जा सके । निबन्ध में अबहीं डेगाडेगी हो रहल बा । आलोचना-साहित्य के, खास करके सैद्धान्तिक आलोचना के, अभाव खटकेवाला बा ।

भाषा का क्षेत्र में सबसे जरूरी काम बाड़न स--शब्द-संकलन, वर्तनी-निर्धारण, सामान्य आ व्युत्पत्तिमूलक कोषग्रन्थन के सम्पादन, प्रामाणिक व्याकरण के निर्माण, आउर भाषाविज्ञान आ काव्य-शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थन के रचना, जिन्हनी के एही क्रम में लेबे के चाहीं । आ जल्दी । जे जतना देरी से जात्रा सुरू करे ओकरा ओतने डंगार चले

---

1. ऊहे 2. ऊहे 3. आनंद सन्धिदूत: भोजपुरी अकादमी पत्रिका, जनवरी मार्च 1982
4. लेखक तेग अली 'तेग' । 5. ऊहे । 6. ऊहे ।

के पड़ी, दउड़हूँ के पड़ सकेला । अउर लोग बहुत आगे निकल गइल बा ।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के अब पढ़ाई हो रहल बा । बिहार मं ंटर परीक्षा के विषय त ई रहले रहे, एने कुछ बरिस से बिहार विश्वविद्यालय आ मगध विश्वविद्यालय में बी० ए० तक एकर पढ़ाई होये लागल बा। आनर्स व पाठ्यक्रम बनऽता आ जल्दिए एम० ए० के भी पढ़ाई होखे लागी । बाकी अबहीं तक राज्य सरकार से लोक-सेवा-आयोग का परीक्षा खातिर भोजपुरी के मान्यता नइखे मिलल । कई साल पहिले बिहार सरकार विधान परिषद् में ई आश्वासन देले रहे कि मैथिली का साथे-साथे भोजपुरी खातिर भी केन्द्रीय सरकार से मान्यता प्राप्त करेके प्रयत्न कइल जाई । भारत सरकार से मान्यता मिल गइला पर साहित्य अकादमी का माध्यम से भोजपुरी का साहित्यकारन के बहुत प्रोत्साहन मिली जेकरा से एकरा विकास में गति आई । अइसे त कवनो साहित्य अपना साधकन का शक्ति से महान बनेला, राजकीय पोषण से ना; बाकी राजकीय सहायता से आत्मा के उन्नति भलहीं ना होय, लोकयात्रा में कुछ सुविधा जरूर होला, एकरा से इनकार ना कइल जा सके । आ आधुनिक प्रजातन्त्र में राजकीय के ऊ रूप अउर अर्थ नइखे जे मध्ययुगीन राजतन्त्र में रहे। एहसे राजकीय सहयोग आ सहायता भोजपुरी का याचना के ना, ओकरा अधिकार के विषय ह । बिहार सरकार भोजपुरी खातिर कुछ कइले बा ।

ओकरा से आशा बा कि एह सम्मेलन के भवन खातिर पटना में जमीन उपलब्ध कराई आ आवश्यक अनुदान दी । भोजपुरी अकादमी के उचित व्यवस्था आ ओकरा माध्यम से भोजपुरी का विकास में सहायता कइल बिहार सरकार के दायित्व बा । हम आशा करऽतानी कि सरकार एह दिसाईं जागरूक होई । उत्तरप्रदेश सरकार से भी हमनी के कम अपेक्षा नइखे ।

बाकी असल काम बा साहित्य-सृजन । भोजपुरी के कलम जेकरे पास होखे ओकरे से निहोरा बा कि अपना शक्ति के प्रयोग आ उपयोग कइल जाव । भगवान के दिहल विभूति एही खातिर बा कि ओह से लोक मंगल के विधान होखो । तबे भारत आगे बढ़ी, आ अइसन बुझाता कि जब ले भारत आगे ना बढ़ी, तबले मानवता मुक्त ना होई । धन्यवाद !

–विश्वनाथ सिंह

❒

1. लेखक-पांडेय कपिल
2. लेखक-पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

एगारहवाँ अधिवेशन

रेणुकूट

(26-27 मई 1990)

के

अध्यक्ष

(डॉ०) विद्यानिवास मिश्र

के

भाषण

आदरणीय स्वागताध्यक्ष जी,

सम्मेलन के माननीय सदस्यगण,

अधिवेशन में जुटल भोजपुरी के नेही-सनेही बहिन आ भाई लोग !

हमरे खातिर ई एगो अजगुते ह । सम्मेलन के लोग कौने गुन पर रीझल आ कौने अवगुन पर रीझल, ई त उहे लोग जानेला । हम अपनीं ओर से कहि सकीलाँ कि भोजपुरी में हम लगभग नाहिए का बराबर लिखले बानी । भोजपुरी के पसारा में जनम भइल, लालन पालन भइल, भोजपुरी के आँचर में बहुत दुलार मिलल, प्यार मिलल, ई सब बात त ह, लेकिन आजु ले हम सिवा अपने निबन्धन में ओह धरती के कहीं-कहीं चोरा के चन्दन जइसे छिड़काव कइले हईं । कुछ अउर कहीं त भोजपुरी साहित्य के छपववले में आ एह भाषा के प्रचार-प्रसार में कवनो उद्यम ना कइलीं । ब्रज में रहलीं, ब्रजभाषा खातिर उतजोग कइलीं । भोजपुरी खातिर त एतने कइले होब कि सज्जी लोकभाषन के संग्रह तइयार करवलीं त भोजपुरी के श्रेय त मिलहीं के रहे, हमहूँ लिहलीं । एतनो पर अइसन ढूँढ़ली उ सम्मेलन के ई कहबे करब कि सम्मेलन के लोग रामजी के नीयर बा कि 'बिनु सेवा जु द्रवै दीन पर' । भोजपुरी सम्मेलन के जब हम पहिलका अध्यक्ष लोगन के अभिभाषण पढ़ली त मन में बड़ा भयो लागल, डरो लागल, मन में बड़ा संकोच लागल कि ओ पाँति में हम कइसे खड़ा होईं ? स्वर्गीय पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्व० पं० उदयनारायण तिवारी, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय जइसन लोगन के साथे भाई देवेन्द्रनाथ शर्मा, गणेश चौबे जी, विवेकी राय जी, कृष्णदेव उपाध्याय, रामविचार पाण्डेय जइसन लोगन के साथे हमरो नाँव गनती में आवे, एमें हम अपना के धन्य जरूर मानब, लेकिन ओ लायक अपना के समझब ना । काहे कि ईसब बड़ा तपस्या कइले बाड़न आ बड़े लगनं से भोजपुरी के सेवा कइले बाड़न । एह लोगन के हमरे ऊपर बहुत परेम रहल बा, बहुत किरपा रहल बा,आ जे एह समय बा ओंकर आजुओ किरपा बा । हम समझत हईं कि ओह किरपे का बदौलत हम इहाँ खड़ा बाटीं

त कुछ कहहीं के परी । कहे के लूर चाहे हो, चाहे ना ।

राहुलजी के साथ हम काम कइलीं हिन्दी भाषा के कोश के ऊपर लेकिन जब केहू तीसर आदमी ना रहे त राहुलजी भोजपुरी में बतिआवें । जे केहू जानदार आदमी हमके मिलल, बड़गर आदमी मिलल ते भोजपुरिये में बात करें, चाहे स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू होखें, चाहे पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी होखें, डॉ० उदयनारायण तिवारी होखें, डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा, जस्टिस हरिश्चन्द्र पति त्रिपाठी होखें; जस्टिस शंकरशरण होखें । ई सब आपस के बातचीत भोजपुरी में करें आ करे में गर्व क अनुभव करें । हमरे गुरुजन लोग कबो-कबो अनखाय जायँ आ कबो-कबो मजाक करें कि ई दूइ भोजपुरिया मिल गइलन त ई भुला जइहें दूसरो के बाति । अपने बोली खातिर एतना मोह-छोह कवनो दूसरी जगह मिलल नाहीं, एकर कारन का ह ? जेतना हिन्दी साहित्य भोजपुरी बोलेवाला लोग लिखले बा हिन्दी भाषा आ हिन्दी भाषा के रूप जतना रचले बा ओतना दूसरे भाषा आ बोली के लोग नइखे कइले । तबो भोजपुरी बोलेवाला लोग भोजपुरी के ना छोड़ले बा, ना छोड़ी। एह समय सउँसे संसार में गनल जाय त बारह करोड़ के ऊपर लोग भोजपुरी बोलत होई । एतना में त जाने केतना देस के मनई समा जइहें । भोजपुरी बोलेवाला आदमी देस-परदेस कहीं भी जाव अपने सांस्कृतिक धरोहर के साथ जाला, अपने क्षेत्र के वाचिक साहित्य के, सुभाव के, चाल-ढाल के धरोहर अपने साथ रखेला, आ कवनो कीमत पर कवनो चमक-दमक में हेराला नाहीं । वेश-भूषा कवनो अपनावे, ओकर मन ओइसने बिहरत रहेला जइसे आवाँ में रखल बरतन । लोग एके समझेला कि ई त बितले क बिसूरल भइल । अइसन आदमी आगे कइसे जाई? ई ना सब समझेला कि जवन चीज़ आगे ले जाले ऊ ऊर्जा होले, भीतर के तेज होला, आ ऊ तेज एक मनई में ना होला । ऊ तेज सगरो जाति के होला, बल्कि ई कहीं कि सगरो महाजाति के होला । तेज ना रही त आदमी ना दूसरे के चलवले चली, ना अपने चली । भोजपुरी क्षेत्र के आदमी केतना आगे बढ़ि सकेला एकर सबूत चाहीं त इहे देखीं कि मारीशस, फिजी, ट्रिनीडाड, गयाना, बर्मा, थाइलैण्ड, सिंगापुर के दलदल आ जंगल के नन्दन बनावल भोजपुरिये लोग न? किसानन-मजदूरन के आगे बढ़वले में के झंडा उठावल, भोजपुरिये जयप्रकाश बाबू, सहजानन्द सरस्वती, राहुल जी न ?

जे ई समझेला कि भोजपुरी त गँवईपन क इजहार ह ओके ई जनावल चाहत बाटीं कि एक त जेके ऊ लोग गँवईपन कहेला उहे एह देस के सच्चाई ह आ दूसरे जेके लोग बड़ा सौखियाना कहेला ऊ ओकर पहिचान ह आ ई पहिचान जेतना भोजपुरी भाषा में मिली ओतना कहीं ना मिली । हम हिन्दी के शब्द-सम्पदा लिखत रहलीं त हर परिवेश के जतना शब्द जीवन्त रूप में भोजपुरी में प्रयुक्त मिललें ओतना दूसरे जगह ना मिलल । दूसरे जगह लोग नवगढ़ल शब्द के इस्तेमाल करेला । आ जवन शब्द बोलचाल में में धिसके सैकड़न बरसन में ढलल बा ओके ना इस्तेमाल करेलन । नवका पढ़वइया लोग त सोझ-टेढ़ अंगरेजिये जानेला । अंगरेजिये बुके ला । ऊ त अंगरेजिये में नाँव राखी, भलहीं बढ़िया सटीक नामं अपने भाषा में होखे । 'सुगा पंखी' के जगहे अंगरेजी के कवन शब्द बा ? जेके चित्रात्मक भाषा कहल जाला ओकर छटा भोजपुरी में केतना बा ई जाने के हो त दुइ घंटा आदमी गणेश चौबे के पास बइठ जाव । कहीं से पुरान फाइल मिले त चतुरी चाचा क चिट्ठी पढ़ो, विवेकी राय क निबन्ध पढ़ो, भोजपुरी लोकगीत पढ़ो, भोजपुरी इलाका क कहनी सुनो आ कुछ ना करे त दुइ मेहरारुन में जब

बाजि जाव तब उनुकर एक दूसरे के कांसले-सरपलें के भाषा सुने, त अन्दाज मिलि जाई कि भाषा कइसे आगे नाचे लागेले । जब दुलहिन घरे आवे लागेले तब पनवा नीयर बतावल जाला । पाने मतिन सहेज के रखे के सिखावल जाला । सोपारी नीयर ओके ठुरहुर कहल जाला । सोपारी लम्मा होले लेकिन तनिको हवा बहेले त लचकत रहेले । गाछि लचकत रहेले, टूटेले ना । ओकरे भीतर अपने आप शक्ति होला लेकिन ओकरा साथ लचेवाला भाव भी होला । पान के पानी चाहीं लेकिन देर तक नाहीं । धूप चाहीं लेकिन सामने से नाहीं । पाने के पत्ता नीयर फेरे के चाहीं । एक के ऊपर दूसर गाँछ के रख द त सट जाई । भोजपुरी भाषा भी कुछ-कुछ ओह बहुअर मतिन ह । जो भीतर से बड़ा ओज होले, बाहर से बड़ा नवल होले । बड़ा सम्हार माँगेले । सब कुछ बिलकुल नपल-तुलल ह । आ सबसे बड़ बात ई ह कि समूह में रहेले जरूर पर एक-एक बेकति के अलग-अलग पहिचान बनाके रहेले । सबके ऊपर एके रंग चढ़ाके नाहीं । एही से भोजपुरी में एके रंग नाहीं बा, कई ठो रंग बा । एमेंत गली क 'बदमास दरपन' क अइसन भाषा मिली कि 'हम त खरमेटाव करीले रहिला चबाइ के । भेवल धरल बा दूध में खाजा तोरे बदे ।' दूसरी ओर अइसन असीसे वाली भाषा मिली कि 'अमवाँ क नाई बाबू मऊर त महुववा कि महुववा कुच लागे ।' 'पुरइन पात अस पसरल कमल दल बिसरल !'

एक ओर भोजपुरी में गुड़ के कड़ाही नीयर ताव होला, दूसरी ओर लएना नीयर कोमलता । भोजपुरी के ई विचित्र सुभाव एह देस के साधारण मनई के ह । ग्रियर्सन लिखले कि भोजपुरी मनई कवनो लड़ाई-झगड़ा देखे जायँ त कवनो ना कवनो पच्छ लीहें, खाली तमासबीन ना रहिहें । भरसक उहे पच्छ लीहें जवन कमजोर पड़त होखे । ई एके आजु बहुत समझदारी के बात ना कहल जाई । काहे कि किनाराकसिये के आज के समझदार समझदारी कहेलन । लेकिन भोजपुरी 'मोहि काह परा रे भाई' के कायरता समझेले । अइसन भाव, दूसरे के लड़ाई अपने ऊपर लिहल के भाव तबेले अइबो करेला जब मनई दूसरे में अपने के देखेला । दूसरे के अपनिये से जाँचेला । अपने सुख दुख से जाँचेला ।

भोजपुरी इलाका के लोग दूसरे प्रदेश में गइल, दूसरे देश में गइल, अपने धरती से निर्मोही बनिके । एह देश के लाखन मजूर इलाका से बाहर जा ताटन, आ जहाँ जा ताटन खून-पसीना एक कर ताटन । ओह धरती से सोना उपजावताटन, ओह धरती के जेतना सम्भावना बा ओह सम्भावना के उजागिर करत बाटन । पर उनके जवन मिलत बा ओके अपने धरती में लगावे खातिर बराबर सोचत रहत बाटन । कबो आपन धरती, जड़ छोड़ल नइखन चाहत । जेवन रस मिलत बा अपने जरी के फेर से दीहल चाह ताटन, लौटावल चाह ताटन । ई मोह-छोह उनके खाली कजरी-बिरहा से ना जोड़ले बा बल्कि ओह भावना से जोड़ले बा जेवन भाव सभकर भाव हो सकेला । खाली भोजपुरिये के ना । ऊ भाव खाली मनई के ना ह । सउँसे जीवन के ह । सगरो जीवन के ह । जहाँ के गीत में परदेसिया के लौटावे खातिर ई ओरहन दीहल जाव कि 'ओहि देसवा में अमवा ना बउरेला कि ओहि देसवा कोइलिया ना बोलेले ।' उहाँ अपनवले के नेवता गाछि, चिरई, चुरुंग सभ देले बा । पेड़-गाछ, चिरई-चुरुंग इहो सभे देला, खाली मनई ना । जवने साहित्य में दुखवा क गठरी गंगा माई सम्हारेली मंगई माई सम्हारेली । चाहे केतनो अपनइत ना होखे,ओह साहित्य से जे अपना के जेतना जोडले रही ओतने ऊ

भीतर सं पोढ़ होई । ओतने मोह-माया भी होई ओकरा । उहे मोह-माया के पसार ह कि छोटानागपुर के आदिवासी भाई नागपुरिया भोजपुरी अपनाइ लिहलन, सरगुजिया भोजपुरी अपनाइ लिहलन । नेपाल के थारू आ धांगड़, जेकर मूलभाषा जाने का होई, भोजपुरी भाषा अपनाइ लिहलन । मारीशस में चीनी, तमिल जरी के लोग रहलन त तेऊ, लोग बोलचाल में भोजपुरी भाषा के अपनाइ लिहलन । अपने देश में सिनेमा में, जहाँ अपनवले क नाटक ज्यादा होला, उहों भोजपुरी गीतन के टुकड़ा, भोजपुरी कड़ी, भोजपुरी शब्द अपनावल जाता । भोजपरुी कोमल जरूर ह लेकिन पोसुआ नाहीं । केहू ओके पोसुआ ना बना सकल । ना विदेशी, ना अपने देश में । विदेशी संस्कृति के नाम पर फइलल कचराखाऊ अपसंस्कृति । एह खाऊ अपसंस्कृति के मार्ग अइसन बा कि सगरो लोकभाषा विदा होत चलि जा ताटें । एक अजीब चटक रंग में ढरल चलि जा ताटे । आँखि के चोभेवाला चटकारा रंग में रँगल चलि जा ताटे । कहीं-कहीं ओकर असर जरूर नवकी भोजपुरी कविता पर दिखाई पड़ रहल बा, जहाँ सपने के संसार रचल जाता । लेकिन अबहीं ले भोजपुरी के जरि बाँचल बा । अबहीं ले, एक्के, दुक्का सही, भोजपुर के असली रंग ओइसने बा । साँवर सलोन आ पनिगर ।

भोजपुरी के प्रशंसा कवनो एह भाव से नाहीं कर ताटीं कि दूसरे के महत्त्व कम कर ताटी । दूसरो भाषावाला लोग अपने जरी-सोरी क मान करे, ओमें पानी दे, अपने मेहनत आ पसीना के पानी दे, आ ओंकर पानी पहिचाने, रंग पहिचाने, एकरे खातिर हम उकसाव ताटी । जब हम देखी ले कि अवधी ब्रजी बोले वाला लोग अवधी-ब्रजी घरे बोलत खानेँ लजाला त ओह लोगन पर हमरा दया आवेले कि अइसन लोग हवन कि अपने जर-सोर से अलग रहिके आपन पहिचान बनावल चाहल ताटन । आ दूसरो कारण एक ठो ह कि हम ई जान ताटीं कि भोजपुरी इलाका उहे ना बा जेवन बीस बरिस पहिले रहे, आ उहे ना रही जेवन बीस बरिस बाद होई । का खाई का पकाई का लेके परदेस जाई' बोलेवाली चिरई भोजपुरियो इलाका में मुँड़ेरी-मुँड़ेरी उचरतिया । इहो जान ताटीं कि गाँव, गाँव ना रहि गइल बाट, सहरो से बदतर, बेगाना आ अनचीन्ह हो गइल बा । अब गाँव परिवार ना रहि गइल बा । आ गाँव के लोग काका-भतीजा नाइ रहि गइल बाड़न । अब सभे जयहिन्द छाप नेताजी ही गइल बा । 'को बड़ छोट कहत अपराधू ।'

इहो जान ताटी कि कवनो-कवनो घर होइहें जहाँ कहंनी कहल जात होखी आ पुरान गीत गावल जात होखी । कम्मे गाँव होइहें जहाँ कदमे के गाँछी तर झूला पड़त होखी । बिरले लोग होइहें जेके दस-पाँच कोस में बूढ़ी-बूढ़ा मिल जइहें जेके पुरान गीत, कहनी, रीति-रिवाज मालूम होखी । ओहूसे कम लोग होखिहें जे ओके सीखल चाहत होखे । बटोरे वाला लोग बाटे आ बटोरि के डिगरी लेबे वाला बाड़न, बाकिर ओके सीखे वाला आ सीख के ओकरा ओर होखेवाला लोग अँगुरियो भर गनती पर नाहीं होइहें । ई सब त सही, इहे मानिके चुपचाप बइठल ई कवनो कम पाप नाहीं ह । आ ई पाप हमसे नाहीं सहात ह । ईहे एक ठो कारन ह कि हम अपने के अयोग्य जानिके भी ए काम, एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद स्वीकार कइलीं । एह सम्मेलन के जरिए खाली भोजपुरी भाषा के आंदोलन चलो आ भोजपुरी साहित्य के पहिचान बनो, एतने हम नाहीं चाहत बानी । ई सब काम होत आइल बा, आगे इहो बढ़ी, लेकिन एकरे साथ-साथ ई सम्मेलन अखिल भारतीय ह त एगो बड़हर पैमाने पर भाव जगवले के काम करो जेवने भाव क चस्पा हम कइलीं ह । ऊ भाव हमन से कुछ माँगता काहे से

कि हमन के ऊ भाव कब से पूजत आइल बाटीं । आ अब जो नाहियो पूजताटीं त ओकर कहीं-कहीं हूक मन में बा । ऊ हूक खाली मनई के मनई खातिर ना ह, चाहे एक ठाँव-गाँव, गाय-गोरू, पशु-पंछी गाछि खातिर नाइ ह । ऊ सगरो जीवन खातिर ह । अउर दिना कोइली दिन-दुपहरिये बोलेले, आजु अधरतिये काहे बोले ले, एह सवाल क कवनो मतलब दूसर ह ना । एह के जवन साहित्य उठावेला ओकर ध्यान खाली कोइली पर नाहीं बा आ ना ओकर बोली पर बा । जब आदमी कोइली के आ कोइली के बोली के कवनो सुधि ना रखले बा, जब आदमी एक दूसरे से अनचीन्ह हो गइल बा, एक दूसरे के बीच में एक ठो अन्हार हो गइल बा कि केहू आमना-सामना ना होत बा । सब आड़े देके बतियावत बा । कि केहू आपन कहीं लड़कते ना बा । कवनो जोन्हीं ना लउक ताटीं ना कवनो जुगनू कहीं एह अन्हार के चुनौती देबे खातिर कहीं जुगजुगाता । आँखी में पानी ना रहि गइल बा कि ओहू जा कवनो चमक आवे । एह अन्हारे में अगर कहीं कोइली बोलल, पुकार उठल कि हम जहाँ बाटीं उहाँ से कहीं अउर चलीं त बड़ा ओइसन लागेला । कइसन त ई अन्हार एकदम से सुता दीहले ह । मनई के सज्जी फिकिर के ऊपर एक ठो नसा के परदा डालि देले रहल ह । आ कहाँ ई बोध कि कहीं अउर चलीं । बेगानोपन के एक ठो नसा होला आ ओ नसा में आजु के आदमी डूबि गइल बा। ओके इहे बड़ा अनस लागता कि आपन कहे। केतनो अनस लागो, आदमी केतनो एपर झोझियाय कि काहे हमके सुख-सेजिया से उठवल ! जिन्दगी सेजिया पर त कटै के नाहीं ह । जिन्दगी त जगले के आ खटले के नाँव ह। आ जे जागी आ खटी तेके कहीं केहू अपनइत नाहीं लउकी । कहीं केहू आठ-नौ घंटा का पसीना पोंछेवाला ना लउकी, त खटल बोझ हो ज़ाई आ केहू होई चाहे एके छन खातिर मिले, त खटल-जागल, उमंग आ उछाह बनि जाई । एसे ई सवाल आजु जइसन बेधेवाला बा ओइसन शायद मनई के इतिहास में ना रहे। काहे से कि मनई के एतना कबो भाग ना होई अपनवले से, एह जोखिम से कि अपनवले के मतलब होला अपने के दूसरे के हाथ सौंप देल, आपन बहुत कुछ लुटा दिहल । बिना लुटवले ई मिलेला ना । अब जब सज्जी रिश्ता-नाता, नेह-छोह, गीत-नाच, कविता-कहानी सब जिनिस हो गइल होखे त आदमी भी जिनिस हो जाला । आ ऊ फेर तब सोची नाई सकेला कि जिनिस त कुछ नाहीं ह । सब अपने कवनो-ना-कवनो परछाईं ह, आ सभकर परछाईं आदमी ह । पुरान कहनी के जिनिस बनावे वाला मन राच्छस नीयर खाली खाये-खाये करेला आ ओकर भूखि बढ़ते जाला, लेकिन जे बाँटि के खाइल चाहेला, अपने में सभकर हिस्सा समझेला, ते खइले से ज्यादा खियवले में आकुल रहेला । एक जगह हम गइलीं । जनेव रहे । उहाँ के कर्त्ता एके गोड़े दू बजे राति ले खड़ा रहे । पंगत पर पंगत चलि गइल,उनुका मुँह में पानी तक ना गइल, लेकिन उनुकर चेहरा अइसन खिलल रहे आ जे खइलस तेकरे खातिर एतना गदगद रहलन कि आजु सगरो लोग हमार घर कृतारथ कइलन, हमार जग पूरा भइल । ई पूरा भइले के भाव छोट-छोट घरौंदा बनाके जे रहंता ओकरा ना बुझाई । काहे से कि ऊ त ना कबे आन्हीं-पानी सहले होई, आ ना कबे टहकार अँजोरिया में बाँसुरी के पीछे दउरल होई, ना चइत के भोर में महुआ बीने महुआरी में भागल होई । ऊ का जानी कि सम्पूरन का होला । लेकिन हम कह ताटीं कि ओ सम्पूरन क जरूरत आजु आ गइल बा । खाली जब हो जाला तबे सम्पूरन के चाह जागेले। जवने ओर नजर डालीं, गगरी छूँछे लउकत बिया । केहू ओ छूँछ गगरिया के बहरवा से रँगि दिहले बा । आ ओपर

केह सयान बा त फूलो-पत्ती बना देले बा लेकिन बा ऊ गगरिया छूँछे । थोड़े देर ले छूँछे राखी, त छूँछ सहाई ना । आ छूँछे लगल बा । केहू का केहू के ऊपर बिसवास नाहीं ह । ई जाति ऊ जाति पर बिसवास नाहीं करत बा । अपने पार्टी के आदमी अपने पर बिसवास ना करत बा । अपने घरही में आदमी अपने सगे महतारी-बापे पर ना विसवास करत बा । एह अविसवास के खाई के ऊ भरल चाहत बा । तरह-तरह के बिजली के कचरा से, गाना से, सिनेमा से, वीडियो से, पंखा से, ठंढा करेवाला मसीन से, गरमाबे वाला मसीन से । जाने कइसे-कइसे कचरा से खाई पटात बा । खइया चौड़ होत जाले आ ओही के ई परिणाम देखें में आवता कि एक-से-एक कोमल, सुन्नर, पढ़ल-लिखल, सुशील धियरिया ससुरे जा ताटीं त ओकरा पर माटी के तेल छिड़का जाता । काहे नाहीं अपने रूप-गुण के साथे-साथ ऊ दहेज ले अइली। जइसे बिना अपने कमइले अन-धन-सोना घरे चलि आवे । अइसन लगता जइसे लइका आ लइकी अलग-अलग किसिम के कवनो सृष्टि होखे । आ जे लइकावाला के लइकी ना होखे आ जेकर भइलो बा उनुके ई नाहीं मन में रहि गइल बा कि दूसरो के लइकी भी लइकी ह । एके बाँस के दू करेली फूटेली-- एक बँसुरी बनेले आ दूसर बाँस । जवन बाँस बनेला तवनो मारे खातिर नाहीं घाव रोके खातिर बनेला, लेकिन ऊ बँसवा के पोर-पोर में अब खाली एक ठो भूख समा गइल बा । केतना भरीं, केतना खाईं, केतना चबाईं । हम ई बात बढ़ा-चढ़ा के नाहीं कह ताटीं । जेवन सामने होत बा आ सब जेकर चर्चा कर ता आ ओह चरचा के बड़ा चटखारा लोग लेता । अखबार में अगर खबर न छपे कि नई बहुरिया के केहू जरा दिहलस, काट दिहलस, त अखबरवा पढ़ले के कवनो सुखे ना मिली । एक सीता के अग्नि-परीक्षा भइल त सगरो देवता लोग आ गइलें । निर्वासन भइल तब बालमीक जेवन रामायण लिखले खुदे आ गइले आ कहले कि हम अपने तप के बलपर कह ताटीं कि सीता पवित्र ह । आ आजु एतना जगह-जगह कांड होता, एतना जगह-जगह बहुरियन के होम होता आ केहू के मन में देवता ना आवत बाटे । एकर कारण बिचारीं त कारन ईहे ह कि जवने साहित्य के एके रूमानी मोह जानि के सभ खाली मनोरंजन के वस्तु मानता आ जेवन संस्कार एक तमासा मान ता आ अजायबघर के चीज मान ता । कवनो जमाना में ई गीत मटकोर के धुनि पर गावल जात रहे । गाँव में गीत माटी गोढ़ले कै रहे । कवनो जमाना में हल्दी चढ़ावल जात रहे । कर-कन्या के हल्दी लागत रहल । कवनो जमाना में एगो कार होखे चुमावन । "साठी के चउरा लहालहि दूबि रे, चूमे ही चलेली कवने राम धीय रे । जस-जस चूमेली तस-तस देली असीस रे, जीयहू दुलहे राम लाख बरीस रे ।" आ कवनो जामना में जनेव के गीत गावल जात रहे-"ऊसर खेत जोताइब त मोतिया बोवाइब, कंचन थार भराइब त मोतिया लुटाइब ।" कइसन-कइसन उजबकपना होत रहे, खाली सपना क संपती । हम ओह लोगन से एतना ना घबड़ाई ले जे एकदम सहर में बा जे एकदम नवा हो गइल कि ओके जरी से कवनो मतलबे ना रहि गइल । लेकिन जे सहर में रह ता आ गाँव के बाति कबो-कबो कवनो- कवनो बानगी अपने लगे रख ता । ई देखीं खाँटी देहाती चीज ह, जेइसे देहाती चीज ओकरे खातिर एक जिनिस ह । ओकरे से हम घबराई ले । काहे कि ई आदमी हमके बड़ा भयावन लागेला । लोक साहित्य लोक कविता के बाति करेवाला ढेर लोग अइसने बा । कमे लोग अइसन बा जेकरा खातिर ना गाँव तमासा बा ना लोक साहित्य तमासा बा । ई मज्जी साँस-साँस में, रोवाँ-रोवाँ में भरल बा । ओही से

हम आसो कर ताटी कि ओकरे काने तक हमार बात पहुंची । ऊ भोजपुरिहा हो चाहे बुन्देलखण्डी हो । चाहे मगही हो, मैथिल हो, छत्तीसगढ़ी हो, कहीं के अपने के माने, अगर ई समझे कि हम जवन पवलीं अपने धरती से, ऊ सभकर ह । आ ई धरती जइसन हमार महतारी ह ओइसन सभकर महतारी ह । एकरे ऊपर हमार इजारा नाहीं ह। ई जरूर चाही कि हम हीरा पवले बाटींत गठिया के ना राखीं । जहाँ-जहाँ अन्हार होखे हीरवा कहीं ऊँच ताखे पर रख दीं । सभकर चेहरा पर ओकर अँजोर आ जाव । आ जेकरे चेहरा पर कवनो मुखौटा लागल होखे, मुखौटवा चिन्हा जाव । असली आ नकली फरिया जाव ।

ई लक्ष्य अगर आप लोगन के रुचे त एके उजागिर करे खातिर एक ओर त अपने वाचिक परम्परा के अइसन संग्रह तइयार कराई जवने में सगरो जीवन के ए देखेवाली बात सभके एक दूसरे से मिलावे वाली बात हो आ जिन्दगी के हर एक घड़ी के कवनो-कवनो अर्थ देबेवाली बात हो ओकर व्याख्या करीं । ओकर तुलना दूसरे लोक साहित्यन के अइसने सनातन मूल्य वाला पाँतिन से करीं आ अपने के जाँची कि हम एह मूल्यन के जिय ताटी कि ना । ई काम बहुत बड़ संकल्प के काम बा । काहेसे कि एह काम में जे लागी ते अपने के मिटा दी । डॉ० उदयनारायण तिवारी चउदह बरिस ले खटले त भोजपुरी पर आपन बड़का प्रबन्ध लिखलन। पं० गणेश चौबे जी अबहीं ले खटते जा ताड़े । राहुलजी गाँव-गाँव आजमगढ़ में घूमि के नाँव से थाह लगावे के कोसिस कइले कि खाली नाँव के रेख के सहारे कइसे ओकर इतिहास बाँचल जा सकेला । ई सभ काम तपस्या से भइल । गीत लिखेवाला हमरो बीच में बा । आ चटकार गीत लिखेवाला बा । कहानियो लिखेवाला एक-से-एक समर्थ बा । बड़ी जानदार कहानी लिखेवाला बा । लेकिन हम चारूँ ओर देख ताटीं, अइसन आदमी कम बा जे अपने के खपा के ई कुल्हि काम करे । भोजपुरी सम्मेलन के लोग-ई लोग बिना सुविधा-सहायता के भोजपुरी के ई सभ कइले खातिर धुनियाइल बा । एक तरह से सयान लोग त इहे कहिहे कि ई कइसन बउरहपन ह कि ई भोजपुरी के एगो अलगे झण्डा ई लोग खड़ा कइले बा । लेकिन ई कहे के जरूरत आ गइल बा कि ई भोजपुरी के झंडा ना ह । ई हिन्दुस्तान के खाँटी मिजाज के झण्डा ह । जेके भुलवले के कारन आज अइसन लउकता कि आज केहू केहू के ना ह । भोजपुरिये के कारन, पूर्वी उत्तर-प्रदेश आ बिहार में हिन्दू-मुसलमान, बाम्हन-चमार कहीं मिल सकेले । आ एही से बिरहा, चैती, के नाते, केहू कवनो जाति के होखे, कवनो ईमान के होखे, दुइ घड़ी जुट सकेला । लोरिकायन, चनइनी, कजरी, आल्हा गावेवाला जेतना हिन्दू होइहें ओतने मुसलमान होइहें । आ पूरबी धुन जवने में अधिकार भोजपुरिये के होई, कवनो एक जाति के लगे धरोहर नाहीं बा ।

हमरे कहले क ई मतलब नाहीं ह कि भोजपुरी के जवन साहित्य लिखल जाता ओकर कम महत्त्व होखे । लेकिन हम वाचिक परम्परा के फेर से दोहरा-दोहरा के एसे गोहरावल चाह ताटीं कि बिना ओकरा जवन कुछ लिखल जाई, डर ह कि नकली न हो जाव । केहू बुरा ना मानो, केहू एक कवि आ लेखक के ऊपर हमार टीका-टिप्पणी नाहीं ह । कबे-कबे हमें लागेला कि जवन खड़ी बोली में दस-बीस साल पहिले लिखल गइल बा आ ऊ बेरि-बेरि पीटल गइल बा, ओही के अनुवाद कइके भोजपुरी में फिट कइल गइल बा । जबकि ओमें ना भोजपुरी मुहावरा होला ना भोजपुरी माटी के कवनो

सुगन्ध । माटियो में गन्ध कब निकलेला जबकि ओके खूब जोतल जाला आ हराई झँवाये खातिर छोड़ि दिहल जाला । आ बैसाख आ जेठ में जब झँवा जाला त पहिला असाढ़ बरिसला पर माटी गमक उठेले । ओही के कालिदास-'सद्यः सीरोत्कषण सुरभिक्षेत्रमारुह्यमालम्' कहले बाटन । कहले क मतलब ई कि जवन मटिया पहले जोतब जा मटिया के साथे-साथ अपने के झँवाइब तबे ओकर सुगन्ध पाइब । भोजपुरी अइसन होखे जवन भोजपुरी लागे आ ओही के भोजपुरी भोजपुरी लागी जे भोजपुरी के भरपूर जीही । खाली ओकर फूल ना सूँघी, पर काँठ-कूस से आपन हाथ-पैर, अपने लोहू से चभचभाई । आ ओकरे आगी में अपने के तपाई, ओकरे पानी में अपने के सेरवाई । आ ओकरे एकदम जगजगात खुलल अकास के नीचे छँहाई । भोजपुरी शब्द-संसार के जादू तबे ओके जाहिर होई । आ ई कवनो मामूली संसार नाहीं बा । एमें एतना तरह के रंग बा आ तह-के-तह अर्थ बा कि आजु एकर संग्रह के पहिले चिन्ता करेके चाहीं कि ई संसरवा कहीं आँखि से ओझल ना होइ जाव । एसे भोजपुरी के सम्मेलन के सामने दूसरा काम हम भोजपुरी-प्रयोग-कोश के रख ताटीं जवने में खाली भोजपुरी शब्द आ अर्थ ना होखे, ओकर प्रयोग होखे । जरूरत पड़े त उहाँ तसवीरो दिहल जाव । जइसे एगो चउकठ के कम-से-कम बीसो हिस्सा होइहें आ सभकर अलग-अलग नाम आजु केहु-केहू के मालूम होई । बिना तसवीर से समझवले कइसे समझ में आई । आ ई कोश बनि जाई त हिन्दीओ के बहुत बड़ उपकार होई । काहे कि ऊ सबदवा हिन्दी के भी कामे आई । भारतेन्दु, स्व० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', स्व० पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्व० रुद्र काशिकेय, स्व० पं० बलदेव प्रसाद मिश्र और आजु के लेखकन में शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय, कुबेरनाथ राय के साहित्य में अगर लोकतत्व के विलक्षण प्राण-प्रतिष्ठा भइल बा त ओकर मन्त्रवा भोजपुरिये से आइल बा । ओइसन बाँकपन खातिर दूसर लोग ललचात बा ।

अन्त में, तीसर काम हम जब अपने लोगन के अवढर कृपा से विकरमाजीत के सिंहासन पर एक अनगइयाँ मनई के बइठाइ देले बाटीं त एह सिंहासन के परताप से कवनो अवरो अधिकार से नाहीं- ई सौंपब कि चाहे साहित्य अकादमी हो, चाहे सरकार के अऊर संस्था होखे, सभ इहे पूछेला कि भोजपुरी साहित्य के कवनो इतिहासो बा ? एम. ए. में पढ़ावे के होखी त का पढ़ाई ? त कम-से-कम कबीर से लेके आजु तक एतना लमवार साहित्य बा ओकर कवनो परिचय हमनी के तइयार करेके चाहीं । खाली जस गावे खातिर ना हो । कइसे भोजपुरी अपने के एक सगरो राष्ट्र के भाषा के निर्माण में सहायक बनलि ह । कइसे आपन दावा खाली घर के भीतर रखलसि । आ जइसन हम शुरू में कहलीं, एतना समर्थ होइके भी बराबर अपना के नवा के रखलसि । एह पृष्ठभूमि में इतिहास लिखे के चाहीं ! आ आगे खातिर ई सकेती देबे के चाही कि जे बहुत सहेला आ जे बहुत चुप रहेला ऊ कमजोर नाही होला । ओकरा भीतर एकही बिसवास होला कि जहिया जाहब तहिया 'कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ' के करतब देखा देइब । उत्तर प्रदेश के दक्षिणांचल में जंगल आ औद्योगिक संस्कृति के दुपचट में ई सम्मेलन होता **त उत्तर प्रदेश के**, मध्य प्रदेश के आ बिहार के सरकार-**इहाँ तीनो राज के सीवान बा-के काने तब ई पहुंचाई कि एतना बड़ा जनशक्ति आ श्रमशक्ति के निरादर कइल ठीक ना होई । एक ठो ओम चटावे खातिर भोजपुरी अकादमी बिहार सरकार खोलले बा । ओकरे लगे अपना मनइन के दरमाहो देबे खातिर मुसकिल से पइसा मिल**

ता । उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश में ऊहो ना बा । साहित्य अकादमी ई कहेले कि हँ, लोक साहित्य एगो सोता ह, ओसे कवो-कबो पानी लिहल जाला । ओकरे ऊपर कवो-कबो गोष्ठी हो जाए के चाही । आजु ले हमरे जानकारी में उहो ना भइल । लोक-साहित्य के नाम पर भी क़वनो जियतार संस्था अखिल भारतीय स्तर के नाहीं बा । आ ना कवनो एगो शोध-संस्था अइसंन बा जवन एतना बड़वर धरोहर आ एतना जियतार समकालीन रचना-संसार के सम्हारे । कुछ बयारिये अइसन बहता कि जे नाचता, गावता आ तान तूरता ओही क दुनिया मान रखता । साठे हजार जेकरे बोलेवाले क संख्या बा इहाँ तक कि चार सौ, आइ सौ संख्यावाला गनती भी सुरक्षा के अधिकार पाव ताटें आ बारह करोड़ के कोई पूछेवाला ना बा । ई कवनो नीमन चीज नाहीं ह । अन्याय त हइहे ह । जे करता तेकरे खातिर शुभो नाही ह । जे केहू देश के बड़की रक्त के धमनी के चिन्ता नाहीं करी ऊ जानो कि फेरु ऊ सूखी त दूसरन में खून रहबे करे त देह ना चली । भोजपुरी ऊ धमनीं ह जवने से ए देश के श्रम के बड़वर-से-बड़वर काम हो ताटे । पंजाब में फसिल सोना उगिलता, इस्पात ढलाता, कोइला निकालल जाता । बड़का-बड़का कारखाना चल ताटे । एह भट्ठी के आगि जे जराव ता आ जे जरता ओकरा प्राण हुलसावे वाल अगर कुछ ह त भोजपुरी के चइता, कजरी, फगुआ, बिरहा, लोरिकायन । ई खाली शोधे के विषय रखले से काम चली ना । सउँसे जिन्दगी से एकर का रिश्ता बा एके जब तक चीन्ही ना आ चिन्हाई ना तब तक जइसे पहिले कहलीं ह कि अजायबघर के जन्तु होके रहि जाई । भोजपुरी में रचना बड़वार तब होई जब ई चीन्हल-चिन्हावल शुरू होई । काहे कि रचना त भाषा के प्रतिष्ठा से जुड़ल होई । भोजपुरी के प्रतिष्ठा मिली त भोजपुरी रचना के शक्ति जरूर जागी ।

एह अधिवेशन में हम एकर माँगि उठाईं । आ अपने लगे बल-बूता होखे त एकें गाँव-गाँव जगवले के अभियान करीं, त शायद जे देश के, प्रदेश के भार सम्हरले बा ते कुछ चेती ।

बाति त ओराए के बा नाहीं, राति चाहे ओरा जाय । लेकिन कहीं-न-कहीं आपन बाति समेटे के चाहीं । अब हम आपन बात समेटब । आ फेरू एक बेर सबके आगे हाथ जोड़ब । अगर हमरे नीयर अदमी के ई आसा न दीहलीं त ओकर मान राखीं आ अगर कवनो भूल-चूक हो त क्षमा करीं ।

जय भोजपरुी! **जय हिन्दी!!**

—विद्यानिवास मिश्र

❏

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

बारहवाँ अधिवेशन

छपरा

(21-22 मार्च 1992)

के

अध्यक्ष

(श्री) मोती बी०ए०

के

भाषण

जय जय जय भोजपुरिया माई,
तोहरे खातिर भीख मँगाई,
तोहरे खातिर गीति गवाई,
तोहरे खातिर समर लियाई,
ऊ केइसन भोजपुरिया होई,
जे ना तोहके माथ नेवाई।
जय जय जय भोजपुरिया माई॥

जनता जनार्दन स्वरूप जेभरि भाई-बहिन लोग इहाँ आइल बा, सबके हमार प्रणाम।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के बारहवाँ वार्षिक अधिवेशन छपरा में हो रहल बा। एकरे सीवान अधिवेशन में स्वनामधन्य श्री भगवत शरण जी उपाध्याय अध्यक्ष रहलीं। डा० कृष्णदेव उपाध्याय जी देउरिया जिला के बरहज नगर में एकर अध्यक्ष रहीं। एकरे छपरा अधिवेशन में अध्यक्षता के पगरी हमरे माथे पर बनहाइल बा। ई हमार सौभाग्य बा कि एही बहाने छपरा एइसन भोजपुरी संस्कृति के लाल किला के दुआरि पर ठाढ़ होखे के अवसर हम पा गइलीं। दुआरि झारे के, दुआरि पर पहरा देवे के सेवा कार्य हमके मीलल, ई हमरे जीवन के सबसे बड़हन उपलब्धि बा। हम भोजपुरी जनता जनार्दन के चरण में कृतज्ञता से ओत-प्रोत होके आपन माथ नेवावत बानी, रउरे हुकुम के तनाबेदार बानी।

ई ऊ छपरा ह जेकर एगो मणिदीप जवना के ध्रुव तारा कहल जा सकेला नक्षत्र लोक से संसार भरिके जुग-जुग तक ज्योति के दान देत रही। रउरा सभे बुझि गइल होखबि कि ए मणिदीप के नांव का ह। भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के नांव के के ना जानेला। चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, सेनापति पुष्पमित्र शुंग, सम्राट समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एइसन विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक महापुरुष के बाद हजार बरिस ले गुलामी के यातना सहत-सहत भारत जब स्वतंत्र भइल त एही धरती के सपूत के माथे पर राज तिलक लगावल गइल। जवन इतिहास में पढ़ले रहलीं जा ऊ आँखी में प्रत्यक्ष देखि लिहलीं जा। भोजपुरी में भारत के राष्ट्रगीत लीखेवाला

बाबू रघुवीर नारायण एही माटी के उपज हईं । ई गीत समवेत स्वर में आरम्भ होला त हृदय में राष्ट्रीय भावना राष्ट्र ध्वज नीयर फहराये लागेला । विष्णु पुराण में भारत के जवन सीमा रेखा खींचल बा–

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रिश्चैव दक्षिणम्,
वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति।

(दक्षिण में समुद्र जेकरे उत्तर में हिमालय बा, ओही भूमिखण्ड के भारत आ ओइजे निवास करेवाला के भारतीय कहल जाला) । ओसे अधिक साफ, अएना नीयर झलकत भावपूर्ण सरूप भारतीय राष्ट्रीयता के बाबू रघुवीर नारायण के भोजपुरी राष्ट्रगीत में बा । सुनो सभें–

सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा से,
मोर प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया,
एक द्वार घेरे रामा हिम कोतवलवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहराय रे बटोहिया।

ए भोजपुरी राष्ट्र-गीत में चारो दिसा, चारो धाम, पूरा भारतवर्ष व्याप्त बा । भारत के अखण्डता, एकता,संप्रभुता अउर आध्यात्मिकता के पूरा व्याख्या ए राष्ट्र-गीत से हो जात बा । एह दिशा के संकेत करे वाला छपरा धन्य ह, बाबू रघुवीर नारायण ध न्य हईं । हमार ई भोजपुरी राष्ट्र-गीत अमर रहे ।

एही छपरा में मनोरंजन बाबू राजेन्द्र महाविद्यालय के प्राचार्य रहलें जेकर भोजपुरी कविता फिरंगिया राष्ट्रीय चेतना के उभरला में बड़ा योगदान कइले रहे । बाबू कुँअर सिंह पर लिखल उनके कविता बहुत लोकप्रिय रहे । मनोरंजन बाबू हिन्दी आ भोजपुरी के कवि के रूप में विख्यात रहले । हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में अंग्रेजी के प्रवक्ता रहलें । सन् १९३७-३८ में हम उनके छात्र रहलीं बी० ए० कक्षा में । ऊ शान्त प्रकृति के साधु पुरुष रहले । उनके कविता के एगो बानगी देखीं–

हमरा लाज लागेला
राम नाम हम कइसे लेईं लाज लागेला
हमरा लाज लागेला
मुँह से नाम राम के लेईं करीं अधम के काम
हमरे एइसन के होइ दुनिया में नमक हराम
हमरा लाज लागेला

एही छपरा के चमत्कार ह कि एगो नाऊ के थइली के छूरा सुरतरुअरी शाखा लेखनी के स्वरूप बनि गइल । कविवर भिखारी ठाकुर भोजपुरी के अवतारी महापुरुष के रूप में मानल गइले । एही शहर के एगो रतन रहले महेन्दर मिसिर जेकरे पुरबी ध ुन के चमत्कार दिसा-दिसा में व्यापि गईल । पाण्डेय कपिल के उपन्यास 'फुलसुंघी' में उनके चमत्कारिक व्यक्तित्व उरेहल गइल बा । उनके व्यक्तित्व के जादू एइसन रहल कि फुलसुंघी एगो फूल बनि गइलि । फुलसुंघी के अभिमान बाबू हलिवन्त सहाय नाहीं महेन्दर मिसिर कइलें । पटना, आरा, छपरा भोजपुरी लोकगीत के रस के केन्द्र मानल गइल बा । आरे-छपरा असली भोजपुरी भूमि ह । एकर नावें ह भोजपुर ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना कवनो आकस्मिक घटना ना ह । ई बहुत कठोर आ कड़ा तपस्या के वरदान ह । राहुल सांकृत्यायन, बाबू शिवपूजन सहाय, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, बाबा राघवदास जइसन महाप्राण व्यक्ति आ मनीषी भोजपुरी के उन्नयन बदे आन्दोलन आ प्रयास कइल लोग । सामान्य भोजपुरी

जनता के बीच रहिके ई लोग व्यक्तिगत सम्पर्क से उनके सुख-दुःख के अनुभव कइल आ साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्थिति में सुधार ले आवे के वन्दनीय उतजोग कइल लोग । एही आन्दोलन के प्रभाव रहे कि बाबू रघुवंश नारायण सिंह, महेन्द्र शास्त्री, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय उनके अधूरा काम के पूरा कइला में अपने सामर्थ्य भरि कुछ उठा ना राखल लोग । नवयुवकन के टोली जगह-जगह संगठित होखे लागल आ पटना में सन् 1973 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल । तबसे लेके आजु ले ई साहित्य सम्मेलन भोजपुरी साहित्य के विकास कार्य में उत्तरोत्तर आगे बढ़त गइल । शीतलपुर बरेजा के पूरा पाण्डेय परिवार भोजपुरी के प्रति समर्पित सुरुवे से बाटे । ए साहित्यिक संस्था में एक से एक बढ़ के विद्वान, चिन्तक, विचारक, साहित्यकार वृन्द सम्मिलित भइलें आ एह में आपन सक्रिस भूमिका प्रस्तुत कइले । स्वर्गीय सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, भगवत शरण उपाध्याय, उदय नारायण तिवारी, राम विचार पाण्डेय, डा० स्वामीनाथ सिंह, महेश्वराचार्य, पण्डित गणेश चौबे, विवेकी राय, ईश्वर चन्द्र सिनहा, आचार्य विश्वनाथ सिंह, विद्या निवास मिश्र, कुलदीप राय 'झड़प' साहित्य सम्मेलन के स्तम्भन में कुछु के नाँव हँवे जेकरा कारण ए संस्था के विराट वितान तनाइल बाटे । सम्मेलन के सभे सदस्य लोगन के मन में ईहे साध बा कि कइसे हमार भोजपुरी पल्लवित पुष्पित आ फलित होखो । सभे एक जुट बा, सभे समर्पित बा। एगो दृढ़, एगो निश्चित योजना आ एगो निश्चित दिशा में चलला के, चलत रहला के काम बाटे ।

डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय अपने अध्यक्षीय भाषण में बतवले बानी कि भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के सम्बन्ध में जेतना शोध कार्य भइल बा आ जेतना दस्तावेजी रेकार्ड बा ओतना अउरी कवनो भाषा में नइखे । ग्रियर्सन के सेवा भोजपुरी के प्रति स्तुत्य आ महान बा । डाक्टर उदयनारायण तिवारी, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, आचार्य विश्वनाथ सिंह, डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय, पण्डित गणेश चौबे जइसन उद्‌भट विद्वान के स्थायी आ ठोस शोध परक लेखन-कार्य से भोजपुरी के जवन बल मीलल बा ऊ आगे आवे वाली पीढ़ी के बदे अचल सम्पत्ति बा, जवना के अध्ययन मनन आ चिन्तन के द्वारा रचनात्मक प्रतिभा के विकास हो सकेला । आ भोजपुरी साहित्य के भण्डार भरल जा सकेला । भोजपुरी में एकरा बदे सामग्री आ साधन के कमी नइखे । जरूरत बा लगपाती लता के । ई सिकाइति कि भोजपुरी साहित्य शेष भारतीय भाषन के साहित्य के तुलना में पीछे बा, क्षोभ के बाति बा । जेकरे पास कवनो पूँजी नइखे ऊ रोजगार से अढ़तिया बनि गइल बा आ जेकरे लगे पूँजी बा ऊ अपने रहनि से बेकारी काटत बा । ए बात के केहू उचित ना मानी । बाकी एइसन बाति बा ना । हमनी के सजग बानी आ प्रगति के पथ पर अग्रसर बानी जा ।

साहित्य रचना के सम्बन्ध में सरकार के ओर अंगुरी उठावल उचित नइखे । सरकार रचना ना करी साहित्यकार रचना करी । सरकार नाहीं भिखारी ठाकुर भोजपुरी के झण्डा फहरबले । बहुत होई त सरकार आर्थिक मदद क देई जवना से अउर कुछू होखो भा ना होखो साहित्यिक प्रतिभा कुण्ठित हो जाई । साहित्य सर्जना के काम साहित्य सम्मेलन क सकेला काहे से कि एकरे लगे पइसा के सिवाय अउरी कुल्हि चीजु बा । साहित्य सम्मेलन जो धनी हो जाई त ऊहो व्यावसायिक हो जाईं । साहित्य के सर्जनात्मक शक्ति ओकर क्षीण हो जाई । पइसा कमाइल अउर चीजु ह, साहित्य रचना ओसे भिन्न चीजु ह । ए सिलसिला में भोजपुरी अकादमी के नाँव लीहल जा सकेला बाकिर जेतना अदिमी एइमें लगिहें - बकिहें ऊ नोकरी पवला से खुश हो जइहें । अपने

नोकरिए के ऊ साहित्य बूझे लगिहें । भोजपुरी अकादमी नौकरसाही आ लालफीता साही के शिकार हो जाई । साहित्य रचना से केहू जी ना सकेला अमर हो सकेला । साहित्य सम्मेलन ना त राजनीति क सकेला, ना कवनो व्यवसाय । साहित्य के सम्यक रूप से देखभाल कइल ओकर काम ह ।

व्यक्ति आ समाज के सम्बन्ध त समुझ में आवऽता बाकी व्यक्ति आ संस्था के सम्बन्ध त समुझे के परेला । कवनो स्वप्नदर्शी व्यक्ति संस्था स्थापित करेला । कुछ अदिमी एसे प्रभावित होके संस्था में सम्मिलित हो जाले । बाकी सब के सब त स्वप्नदर्शी होला ना। संस्थापक जबले रहेला तबले लड़ि-झगड़ि के अपने सपना के जियवले रहेला । ओकरे ना रहला पर संस्था के गतिविधि में भेद परि जाला । महात्मा गान्धी आ कांग्रेस के उदाहरण एह सम्बन्ध में दीहल जा सकेला । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं में एगो संस्था रहले । ओहींगा महावीर प्रसाद जी द्विवेदी रहलीं । स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान पूरा भारतवर्ष अंग्रेजी आ अंग्रेजियत क़े विरोधी रहे; हिन्दी, हिन्दुस्तानी आ हिन्दू संस्कृति के प्रति समर्पित रहे । बाकी बापू के ना रहला से सब गड़बड़ा गइल । ग्राम स्वराज्य आ राम राज्य के सपना चकनाचूर हो गइल । जवना हिन्दी के आगे क के स्वतन्त्रता के युद्ध लड़ल गइल ओ हिन्दी के अस्तित्व आजुले खटाइए पड़ल रहि गइल । व्यक्ति-समाज आ व्यक्ति संस्था में इहे अन्तर ह । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में एह तरह के कवनो बाति नइखे । अबहिन ले सब कुछ पछावत बा । ई संस्था हरदम ठीक रहो आ अपने महान लक्ष्य के प्राप्त करो । एकर प्रखरता आ तेजस्विता हमेशा कायम रहे, हमरे कहला के ईहे अर्थ ह ।

एही क्रम में भोजपुरी भाषा के सरकारी मान्यता पर आ भोजपुरी के विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कइला के सवाल पर कुछ कहल चाहत बानी। जवन सरकार हिन्दी के राष्ट्रभाषा ना बना पवलसि ओही सरकार के जनमतुआ विश्वविद्यालय भोजपुरी के अपने पाठ्यक्रम में कइसे सम्मिलित करी । जे हिन्दी के खटाई में डरले बा ऊ भोजपुरी के भलाई का करी । हिन्दी ए बात के बूझे भा ना, भोजपुरी एके खूब बूझति बा । असों अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन में सांसद शंकर दयाल सिंह जी ऐलानिया कहले कि भोजपुरी के मान्यता मँगले से ना मीली । ए बयान से साफ जाहिर हो जाता कि भोजपुरी जनता सरकार के नीति से बौखला गइल बा आ अपने मांग बदे आन्दोलन के बदे ओकर मिजाज चढ़ल जाता । जनता में जागृति होखो ई बहुत अच्छा बा बाकी जवन कुछ होखे के चाहीं शान्ति से धैर्य से आ विवेक से, सहनसीलता से होखे के चाहीं । गरमइला से नाहीं ठण्ढा मिजाज से सोच-समुझ के कुछ कइला के काम बा । ताकि सरकार के कुम्भकरणी निद्रा भंग होखे आ भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में स्थान के न्यायपूर्ण मांग के ऊ स्वीकार करें । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एकरा बदे बहुत दिन से प्रयत्नशील बा । भोजपुरी भाषा सम्मेलन आ भोजपुरी परिषद् के चाहीं कि ई दूनू अपने मातृ संस्था के हृदय से समर्थन करे आ मिलि-जुलि के प्रयत्न करे कि सरकार भोजपुरी के मान्यता दे दे । एइसन न होखे कि सरकार ए तीनू संस्थन में फूट के बीया बो दे आ ई तीनू सरकार से लड़ला के बदले अपनिये में लड़े लागे ।

इतिहास से ई बाति सिद्ध बा कि भोजपुरिया वीर जाति ह । एकरा में अकूत बल होला । डा० ग्रियर्सनो ओकरे ए शक्ति के स्वीकार कइले बाँड़ें । बाकी ए घरी ओकर ई शक्ति बिखरि गइलि बा । एकरा बदे एकता आ संगठन के नितान्त आवश्यकता बा । सांसद आ सुप्रसिद्ध साहित्यकार शंकर दयाल सिंह देवघर के भाषा सम्मेलन में ई उद्घोष कइलनि कि भोजपुरी प्रान्त के मांग से सब मांग पूरा हो जाई । राजनीतिक चेतना के

बिना भोजपुरी भाषा के मांग पूरा ना होई । ई समय के गोहार ह बाकी खाली घोषणा कइला से काम ना चली । बिना आत्म-बल आ चरित्र-बल के राजनीतिक चेतना होखबो करी त ओसे लाभ के बदले हानिये होई।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना के पहिले भोजपुरी में ढेर-कुल्हि लिखाइल-पढ़ाइल गइल बाकी सही दिसा में कवनो कदम ना उठल रहे । चाहत सभे रहे, कइल केहू ना । हम ओ पवित्र संकल्प दिवस के धन्य मानत हँई जहिया अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल । ए नीमन काम में जे जे हार्दिक योगदान कइल ओमें से बहुत लोग अब नइखे । तवनो पर जे वर्त्तमान बा ऊ तन मन धन से ए महान कार्य में लागल बा । कुछवे समय में भोजपुरी साहित्य सम्मेलन भोजपुरी के विकास बदे बहुत कइलसि आ करत जाता । एक तरह से ई भोजपुरी के महतारी संस्था ह । आजु भोजपुरी क्षेत्र के कोना-कोना में भोजपुरी के विकास बदे जवन वैचारिक क्रान्ति हो रहल बा ऊ एही महतारी संस्था के पुण्य प्रताप ह । ए संस्था के नाँव के साथ जवन साहित्य शब्द जुटल बा ओकरे श्रीवृद्धि बदे ई संस्था अपने सामर्थ्य भरि कुछ उठा ना रखलसि । अखिल भारतीय नांव सार्थक कइलसि ।

भोजपुरी के सामने समस्यन के कमी नइखे, बाकी एतनी घरी तीनि गो समस्या प्रमुख बाड़ी सँ- जइसे-

(१) संविधान के आठवाँ अनुसूची में भोजपुरी के स्थान;

(२) विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भोजपुरी के शामिल कइल ;

(३) भोजपुरी अकादमी आ भोजुपरी प्रान्त बदे सरकार से माँग कइल । एह में पहिला दूगो साहित्यिक आ तीसरा राजनीतिक महत्व के बा । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच से भोजपुरी प्रदेस के मांग के बाति अबहिन ले कबो नइखे ऊठल । ई विशुद्ध राजनीतिक प्रश्न ह । एह पर विचार कइल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रकृति के बाहर के बाति बा । एकरा बदे अलग से संघर्ष कइल जा सकेला । भोजपुरी साहित्य सम्मेलन चाहो त कार्य समिति के बइठक में एपर विचार क सकेला । शेष दूनू खातिर भोजपुरी साहित्य सम्मेलन बराबर प्रयत्नशील बा । भोजपुरी भाषा सम्मेलन के चाहीं कि भाषा सम्बन्धी समस्या के हल करी । भोजपुरी परिषद् का चाहीं कि भोजपुरी प्रान्त आ भोजपुरी अकादमी बदे संघर्ष करो । भोजपुरी साहित्य सम्बन्धी समस्यन के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन हल करे । ई वैचारिक क्रान्ति आ विकास के लक्षण ह ।

सरकार भोजपुरी के मान्यता ना दे के बहुत अनुचित काम क रहलि बा । ना जाने भोजपुरी में ऊ कौन कमी देखति बा । वीर भोजपुरी भूमि कबो वीरन से खाली ना रहल । सरकार भोजपुरी के बिरावति बा त ई ठीक काम नइखे करति । जवन साफे न्यायपूर्ण लउकत बा ऊहो जो ना करे सरकार त का उपद्रव, अराजकता, आन्दोलन के ऊ निमन्त्रण नइखे देत ? सरकार के इहे नीति देखिके जो अलग भोजपुरी प्रान्त के माँग उठि जाए त कवने बदे सरकार एके नाहीं करी । सरकार भारत के भोजपुरी प्रदेश के उपेक्षा करति बा आ निर्भय होके एकरे सम्पदा के शोषणो करति बा । एइसन सरकार के प्रति निष्ठा में जो कमी होखे लागे त एहमें दोष केकर बा ? केन्द्र में ए घरी उदार आ विचारशील सरकार कायम बा । हम आसा करत बानी कि भोजपुरी के मान्यता दे के सरकार यश के भागी होखी । सब लोग आपन आँखि मुनि के आदेश पालन करत जाउ, कर्त्तव्य पालन में कवनो चूक ना करे आ आपन हक भी छोड़ दे । ई अन्याय ना ह त का ह ? मैथिली शरण गुप्त ई ललकारि के लिखले बाँड़े कि-

अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है

एइसन स्थिति जे उत्पन्न करेला भले ओकर नांव सुयोधन होखे ऊ दुर्योधन कहाला, ओकर भाई दु:शासन होला ।

आजु काल्हि भोजपुरी के मानक रूप आ बर्त्तनी के बड़ा चर्चा बा । हमरा बुझात बा कि एकर चिन्तो ढेर कइल जाता । भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका आ भोजपुरी लोक में ए विषय पर बराबर लेख छपत बाड़े सँ । भोजपुरी में जवन उपन्यास नाटक आ कहानी छपत बाड़े सँ ओह में भाषा सम्बन्धी कंवनो कठिनाई के अनुभव ना होला । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के मूर्धन्य साहियकार आ विद्वान अध्यक्ष लोगन के भाषण पढ़ीं आ बताईं कि भोजपुरी के मानक रूप आ वर्त्तनी में कवन कमी बा । जब हमरे सामने रासि-रासि उदाहरण स्तरीय भोजपुरी भाषा के साहित्यिक कृतिय के बाड़े सँ तबो हम एकर मानक रूप खोजत बानी । भोजपुरी के मानक रूप के सम्बन्ध में सम्मेलन के अमनौर अधिवेशन के अध्यक्ष ईश्वर चन्द्र सिनहा के विचार से हम पूर्ण रूप से सहमत बानी कि –

तमाम दुनिया का भाषा के इतिहास बतावेला कि ओकरा व्यवहार में आवे वाला क्षेत्रीय भाषा रूप अलग ढंग से होला आ साहित्यिक रूप अलग ढंग से होला । ई साहित्यिक रूप तनिक देर में भाषा का घिसत-घिसत जाके निखरला । एह कारण से भोजपुरी के क्षेत्रीय अनेकरूपता कवनो चिन्ता के विषय नइखे । ओकर रूप जइसे जइसे साहित्य लिखात जाई ओइसे ओइसे कवनो रंग-ढंग निखरत जाई । असल में समर्थ साहित्यकार आ साहित्य क पाछा-पाछा भाषा के प्रयोग चलेला । भाषा बनावल चाहे गढ़ल ना जा सकेला । एइसन प्रयास होइबो करी त हास्यास्पद होई । एह से फिलहाल एकरा बारे में चिन्ता कइला के कवनो जरूरत नइखे ।

डाक्टर ग्रियर्सन साहब शाहाबाद आ ओकरे आस पास के भाषा के आदर्श रूप मनले बाड़ें । हमरा समुझ में थोड़ बहुत अन्तर के साथ आरा, छपरा, चम्पारण पश्चिमी, बलिया, गाजीपुर, बनारस, आजमगढ़, बस्ती, गोरखपुर, देउरिया के भीतर जवन लीखल-पढ़ल, बोलल-बतिआवल जाला ऊ सब भोजपुरी ह । एइमें सार्थक आ समर्थ साहित्य रचना होई त भाषा के मानक रूप आ वर्तनी के कवनो समस्या ना रही । थोर-बहुत आंचलिकता होइबो करी त ऊ सोना में सोहागा होई । ओके बरिआई से निकलला के काम नइखें । ऊ भाव-प्रयोग के जरिए धीरे-धीरे मेल में आ जाई ।

संस्कृत निष्ठ भोजपुरी बनाम ठेठ भोजपुरी प्रयोग के सवालो उठावल जाला । जवने घरी हिन्दी, संस्कृत वाली प्राकृत अपभ्रंश आ क्षेत्रीय बोलिन के शहर में लुप्त रहलि ओह घरी लश्करी जवान के माध्यम से एके उभरले के क्रिया अल्प हो गइल रहे । हिन्दवी आ फारसी के रमझल्ला में से हिन्दी के सरूप जब धीरे- धीरे उभरे लागल तब अमीर खुसरो आपन करामात देखवले । चमत्कारी पहेली, सुधरी, सरस गीत, आ मार्मिक दोहा के जरिये ऊ हिन्दी के सरूप उजागर कइलें । अमीर खुसरो लोक जीवन, लोक साहित्य आ संगीत में, घुलमिल गइल रहले । खुसरो के एगो दोहा सुनीं सभे आ तब के हिन्दी के सरूप के कल्पना करीं–

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस॥

संस्कृत निष्ठ भोजपुरी अस्वाभाविक आ असहज हो जाई । ऊ लोकधारा से कटि जाई तब न ऊ घर के रही न घाट के । आवश्यकतानुसार जो कवनो तत्सम शब्द भोजपुरी भाषा प्रवाह में पड़ि जाई त ऊ अपने आप कमल के लेखां खिलि जाई । भाषा में सहज ढंग से ऊ आ जाय त आवे द । ओके खोजि-खोजि के मति ले आईं । रामचरित मानस में जवने तरे संस्कृत के तत्सम शब्द आइल बाँड़े सँ ओही तरे भोजपुरी

के बहुत शब्द अपने व्याकरण सहित बइठल बाँड़े सँ जवना से रामचरित मानस के दोहा आ चउपाई जगमगा गइल बाड़ी सँ । रामचरित मानस मे जो भोजपुरी ना रहीत त मानस जायसी के पदमावत हो गइल रहीत । एगो दूगो उदाहरण देखीं सभें–

हमहुँ कहबि अब ठकुर सोहाती
नाहीं त मौन रहबि दिन-राती

तत्सम आ भोजपुरी के मेल के एगो उदाहरण देखीं–

ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रतिवेद कहे
सो मम उरबासी यह उपहासी सुनत घीर मति थिर न रहे

भोजपुरी बहुत पुरान ह । एइमें कई-कई संस्कृतियन के योगदान बा । भोजपुरी में देखल जाव त उर्दू फारसी शब्दन के भरमार बा । 'सुर्खुरु' फारसी ह । भोजपुरी में ई 'सुरुखरु' हो गइल बा । भोजपुरी में कहल जाला 'बड़ा सुरुखरु भइल बाड़ । अंग्रेजी के तमाम शब्द भोजपुरी में मिलि-खिलि गइल बाँड़े सँ, जइसे–टीकट, टीसन, लालटेन,रेल, इन्जन, सिंगल, पोसकाट वगैरह- वगैरह । जब ई कुल्हि भोजपुरी के साथ गलबहियाँ डारि के चलिहें सँ त का संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दवे दूबर बाँड़े सँ ? अवधी आ भोजपुरी में खाली क्रिया पद आ विभक्ति के प्रयोग में अन्तर बा। अवधी आ भोजपुरी दूनू सगी बहिन बुझाली सँ । सुप्रसिद्ध विद्वान पण्डित विद्यानिवास के विचार से–अइसन ह कि हिन्दी के जेतना बोली बाटी अइमें अवधी आ भोजपुरी बड़ा करीब के बोली हई, लगभग पूरा संस्कृति एक्के है ।' एह उद्धरण में पण्डित जी के भाषा स्वयं प्रमाण बा । एह में अवधी भोजपुरी के मिश्रण गंगा-यमुना के संगम एइसन पवित्र लागत बा । बाटे बाटी भोजपुरी ह । एह में खाली क्रिया पद 'ह' भरि अवधी बटे । भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मूर्धन्य विद्वान लोग अध्यक्ष पद से जवन भाषण देले बाँड़े ओइमें तत्सम शब्द खूब आइल बाँड़े सँ आ भाषा-प्रवाह के साथ-साथ विचार-प्रवाह के तरंग अपने पूर्ण बेग से हिलोरा ले रहल बा । साहित्य के समृद्धि एकरे बिना हो ना सकेला ।

भोजपुरी के कवने तरे देश निकाला भइल,एकर कहानी बहुत मार्मिक बाटे । बाकी भोजपुरी जहाँ-जहाँ गइल अँजोर होत गइल–एह प्रसंग के कथा बहुत रोचक आ सुने-समुझे लायक बा ।

अंग्रेज, फ्रान्सीसी, पुर्तगाली, स्पेनी आ डच लोग भारत में आपन धरम, रोजगार आ हुकूमत कायम करे बदे आइल । एह लोगन के सभ्यता आ संस्कृति के प्रभाव हमरे देस पर परल । एकरे पहिले इसलामी ताकत के प्रवेश हमरे देस में हरबा-हथियार आ लाव-लस्कर से भइल । तब हमार देश कमजोर रहे फुटमति से। इसलामी हुकूमत भारत में कायम भइल । एहू के प्रभाव हमरे देस पर परल । राज-पाट लुटि गइल बाकी धरम-करम कवनो तरे बचि गइल ।

अंग्रेजी हुकूमत के जमाना में भोजपुरी प्रदेश के गरीबी से लाभ उठाके बँधुआ मजूरन के रूप में गरीब भाई लोग पूर्वी-पश्चिमी द्वीप समूहन में भेजि दीहल गइल जहाँ से ई लोग अपने देस में फेरु लवटे ना पावल । एह लोगन पर तरह तरह के अत्याचार क के जंगल पहाड़ नदी से इनके भिड़ा दीहल गइल । ई लोग रो के भा गा के परिस्थितियन से जूझत सब तरह के काम कइल आ सगरे टापुन के इलाका के इलाका हरियर कंचन बना दीहल । ई लोग उहवें के बासिन्दा हो गइल । सगरे द्वीप सम्पन्न हो गइले सँ बाकी ई लोग गुलाम के गुलामे रहि गइल । अपने संगे रामचरित मानस आ गीता ई लोग लेके गइल रहे । ईहे दूगो पोथी भवसागर के नाइ हो गइली सँ । परमात्मा के दया भइल । ई लोग अब अपना द्वीपन के स्वतंत्र नागरिक हो गइल बा । कवनो कवनो द्वीप में एह लोगन के राजो कायम हो गइल बा । सूरीनाम अबहिन हाले स्वतन्त्र

भइल ह । अपने भाषा के सहारे ई लोग जीयत चलि आइल आ अपने भोजपुरियें परिवेश में ई लोग सम्पन्न समृद्ध आ जीवन्त बनल बा । सागर में भोजपुरी नाव अब झिझरी खेलति बा ।

बिदेसी जलवायु आ बिदेसी परिवेश से ई लोग वञ्चितो नइखे रहि पावल । हमरे भाई लोगन के अस्तित्व बिदेसी गर्द-गुवार के भीतर से सोना अइसन दग-दग चमकत बाटे । सिंगापुर, हांग-कांग, मारीशस, मलेसिया, सुमात्रा-जावा, फीजी, त्रिनीदाद, केनिया, सूरीनाम-सोचल जाव त एक तरह से ई संगरे देस भारत के एगो अभिन्न अंग नीयर बाड़ें । भारत के धर्म, भारत के संस्कृति, भारतीय लोकगीत आ भारतीय संगीत इहाँ पूर्ववत बा । धन सम्पति में कमी नइखे। भाई लोग सुखी आ सम्पन्न बा । राजनीति आ साहित्य में ई लोग आगे बा । सबसे बढ़ के नीमन ई बाति बा कि अपने के ई लोग भारत के मूल निवासी बूझेला आ अपने मातृभूमि के इयादि करेला । एह लोगन में भोजपुरिया चइता, फगुआ, कजरी, अल्हा, पुरुबी, लोरिकायन, बिजयमल, सोरठी वगैर गीतन के गावे वाला, होली-दीवाली अष्टमी-नउमी मनावेवाला, रामलीला रचावेवाला, ढोलकझालि धोती कुरता वालां भोजपुरी भाई लोगन के संख्या अपरिमित बा । ई लोग भोजपुरी में बाति वेहवार करेला, लीखेला-पढ़ेला बाकी जलवायु आ बिदेसी-संगति के कारण इनके स्वभाव पर त नाहीं, भाषा पर प्रभाव कुछ परि गइल बा । ओइसन प्रभाव त हमनियों के भोजपुरी पर लउकेला, क्षेत्रीयता के कारण ।

हम सूरीनाम के सुप्रसिद्ध विद्वान साहित्यकार डाक्टर जीतनराइन सरनामी के एगो कविता प्रस्तुत करऽतानी-

बरिसन अँखिया मिलाइस रहा
पल भरि में कांहे धूरि परि गैल
हमके समझ ना आइल है
एक एक गुलाब से रोज रोज तोहरे
दिल खात माला गुथले रहलि
तोहरे जीव के माठा करि के
प्यार के बत्ति बरले रहलि, बरले रहलि, बरले रहलि
माठा जमि गैल, बत्ति बुनगैल
प्यार ना जानी कौन खोंकड़ में घुसगैल
हम झुरे रह गैलि, प्यार ना समझ में आइल है
बरिसन अँखिया मिलाइए रहा
इधरो ना उधरो, किधरो ना लागे है दिल हमार
चन्दा तू चल जा, सूरज तू ढल जा
हम रहबे करब, रहबे करब
रहि जाब अकेल ।
चाँदन में आपन पुरखन
के खुसियाली हमके
जय जय देश हमार
जय हक पर लड़ेवाला
तू सुख के चिन्ह है
हम तोहर रखवाल ।

सूरीनाम के इहे भाषा ह । उहाँ रोमन लिपि के प्रयोग होला । 'जीत नराइन की सरनामी कविताएँ' नांव से देवनागरी लिपि में ई संग्रह पहिला बेर पं० माता प्रसाद

त्रिपाठी के सम्पादन में शीला प्रिंटर्स, लहरतारा, वाराणसी से मुद्रित भइल बा । बिदेसी आन्ही-पानी से जवन भोजपुरी बचलि बा जीयत बा तवन रउरा सभन के साझा बा ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से हमार निवेदन बा कि अपने मूल्यन के रच्छा बदे ऊ आपन दृष्टिकोण व्यापक बनावे आ बिदेस में जहाँ ले जेतना ले भोजपुरिया साहित्य बा ओकर सुधि ले, साज-सम्हार करे । मारीशस, केनिया, त्रिनीदाद, फीजी, बंकाक में अनगिनत साहित्यकार बाँड़न । उहाँ के महिला वर्ग भी साहित्य सृजन में आगे बा । एह लोगन से सर्म्पक स्थापित कइल आ इनकर सुख-दुख, हालि-चालि जानल बहुत जरूरी बा । भारत में जवन साहित्य रचना हो रहल बा तवन त थोर-बहुत जानले जाता । एहू पर पूरा-पूरा नजर रखे के पुण्य काम साहित्य सम्मेलन के ह । जे काम करे ओही के यश गान होला । भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सामने कार्य क्षेत्र के बहुत व्यापक विस्तार बा । रिगउलि में परि के एकरा से न पाछे हटे के चाहीं ना हतोत्साह होखे के चाहीं– जेही धाई ऊहे पाई, एही के बाजार बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच से हम ई बाति कहि के बहुत प्रसन्नता के अनुभव करत बानी कि बम्बई के फिल्म संसार भोजपुरी भाषा संस्कृति के प्रभाव सिर झुका के स्वीकार कइलसि । भोजपुरी पर अधिकार करे खातिर फिल्मी दुनिया में होड़ लाग गइल । एकर तात्कालिक कारण रहे शाहाबादी के पहिला भोजपुरी फ़िल्म 'गंगा मइया तोहें पियरी चढइबों ।' बाकिर एकर भूमिका तैयार भइल सन् १९४८ में 'नदिया के पार' फिल्म में । पहिले पहिल दुनिया के कान में आवाज गूँजल-'कठवा के नइया बनइहे रे मलहवा, नदिया के पार दे उतार ।' 'मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार', 'अँखिया मिलाके अँखिया, रोवे दिन रतिया न भूले बतिया भूले ना सुरतिया हो तोहार', 'दिल लेके भागा दगा देके भागा' आदि । ए गीतन से, दुनिया के, भोजपुरी गीतन के आन्तरिक मिठास से, भिखारी ठाकुर के छपरहिया धुन के रस से परिचय मीलल । एकरे पहिले हम सन् १९४६ में फिलिमिस्तान में एगो भोजपुरी गीत लिखि के सुनवले रहलीं जवना से हमार नियुक्ति फिलिमिस्तान में गीतकार के पद पर हो गइल । अशोक कुमार ए गीत के सुनि के मस्ती में झूमे लगले । ओ गीत के स्थायी पंक्ति सून लीं रउरो सभें–

> काटे ना कटे मोरा दिनवा गवनवा कब होई
> पिया के अवनवा मिलनवा कब होई
> भइले सजनवा सपनवा गवनवा कब होई
> काटे ना कटे ....

सफलता के सब मान्यता देला। फिल्म में भोजपुरी के पहिला प्रयोग के ई संक्षिप्त विवरण ह, जवना के बादे दिलीप कुमार अवधी में गंगा-यमुना आ भोजपुरी में शाहाबादी जी "गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबों" बनाके सफलता के मोहर लगा दिहले । भोजपुरी बोले वाला लोग हिकारत के नजर से देखल जात रहे । अब ओ लोगन के सम्मान बढ़ गइल । भोजपुरी देस-बिदेस के कोना-कोना में पहुँच गइल । ई त होखहीं के रहल । श्रीगणेश 'नदिया के पार' से भइल । चाहीं कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एहू बाति के स्वीकार करे । भिखारी ठाकुर के सभ मानल । ना जाने ए बात के केहू काहे ना मानत बा ।

हम देवरिया जिला के हईं । देवरिया भरि के आँखि एनिये लागल होई कि हमरो दुख-सुख ए बड़का जगह में सूनल जाई । एही से आपन अलहन छोड़ावे खातिर दू-एगो बाति के चर्चा कइल चाहतानी । पूर्वी उत्तर प्रदेश पूरा के पूरा खांटी भोजपुरी प्रदेश ह । बस्ती, आजमगढ़, गोरखपुर, नेपाल के तराई क्षेत्र, देवरिया, बलिया, गाजीपुर, वाराणसी,

मिर्जापुर, इलाहाबाद आ जौनपुर के कुछ भाग पूर्वी उत्तर प्रदेश में आवेला । जवन सरगरमी भोजपुरी के विकास बदे पश्चिमी बिहार में बाटे ऊ पूर्वी उत्तर प्रदेश में नइखे, बाकी भोजपुरी के सबल सुदृढ़ स्तम्भ इहाँ अनगिनत बाटे । हम नाँव का गिनाई । रउरा सभें जानते भरि नइखीं इनके खूब मानतो बानी । हम थोर बहुत नाम स्मरण औ लोगन के कइल चाहतानी जे बहुत कुछ लिख भइल आ अबो लीखता बाकी लोग चर्चित ना भइल एसे कि स्वयं ई लोग साहित्य सम्मेलन से सक्रिय रूप से जुटि ना पावल । आजमगढ़ के विश्वनाथ लाल शैदा, राम प्रकाश शुक्ल निर्मोही, गोरखपुर के अरुण गोरखपुरी, चंचरीक, रवीन्द्र श्रीवास्तव जोगानी, मैनावती देवी, रामनवल मिश्र, राजनाथ त्रिपाठी (राजू गोरखपुरी), उर्मिला शुक्ल । बलिया के जगदीश ओझा 'सुन्दर', नागेन्द्र भट्ट, प्रभुनाथ मिश्र, देउरिया के छांगुर त्रिपाठी 'जीवन', धरीक्षण मिश्र, दूधनाथ शर्मा श्याम, जनार्दन पाण्डेय अनुरागी, विश्वनाथ पाण्डेय राहगीर, गोरख पाण्डेय आ कुबेरनाथ मिश्र ''विचित्र'' भोजपुरी के प्रति समर्पित आत्मा ह ई लोग । कविता लिखे वालन के कतार लागल बा बाकी गद्य में कुछु लिखे के उत्साह देखे में ना आवेला । चर्चित ना भइला के कारण सक्रिय सहयोग के अभावे ह। कवि सम्मेलन से दिलचस्पी अधिक, पत्र-पत्रिकन से लगाव कम, ईहो कारण बा । बाकी बिहार के भोजपुरी क्षेत्र में भाषा साहित्य आ संस्कृति के प्रति बड़ा सक्रियता बाटे । जागरण के काम में छोट-बड़ जे भी बा सभ लागल बा । झड़पजी, आञ्जनेय जी, श्री भोलानाथ गहमरी जी, विवेकी राय जी सम्मेलन के प्रत्येक कार्य में जी जान से लगल रहले लोग उत्तर प्रदेश में । एकरे बादो बहुत रचनाकार बाँड़ें । सबके संगिरहा करे के चाहीं ।

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, बाबू रघुवंश नारायण सिंह, पण्डित महेन्द्र शास्त्री, पण्डित गणेश चौबे, डा०स्वामीनाथ सिंह, प्रो० ब्रजकिशोरजी आ पाण्डेय कपिल जी जवने तरे मिशनरी भावना से भोजपुरी के उन्नयन कार्य कइल ओही के परम्परा आगहूँ चले के चाहीं । भाषा सम्मेलन के मंच से श्री रास बिहारी पाण्डेय के भी भोजपुरी उत्थान कार्य कम सराहनीय नइखे ।

सबसे आखिर में पथ सम्वल के दृष्टि से हम श्रद्धेय डा० उदय नारायण तिवारी के एह विचार से पूरा सहमत बानी कि मीलि-बइठि के एकरे विकास खातिर सबके जुटि जाय के चाहीं । सरकारी सहायता के बारे में तिवारी जी कहतानी कि एकरा खातिर सरकार से एक्को पइसा के मदत लीहल एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ठीक ना होई । काहे कि जहाँ सरकारी पइसा आई उहाँ सम्मेलन सरकारी हो जाई आ सरकारी मदत मिलला से लोगन में गुटबंदी हो जाई । हमनी का चाहीं कि बीसन लाख लोगन के एक-एक रुपया के सदस्य बनाईं आ ओसे मीलल धन से भोजपुरी कथा साहित्य, काव्य-नाटक, एकांकी आ व्याकरण के सुन्दर किताबी-पोथी छापल जाए । धन के कमी से भोजपुरी के बहुत से किताबी अच्छा ढंग से छपि नइखी सँ पावत । ई बड़ा हँसी आ दुखके बाति बा ।

डा० उदयनारायण तिवारी के ई विचार शत-प्रतिशत सही बा । एहींगा विश्वविद्यालयन में भोजपुरी पाठ्यक्रम सम्मिलित कइला के सवाल बा । भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्तर तक पहुँचि जाइल चाहति बा । कांहे नाहीं एकरा बदे ऊ प्राथमिक शिक्षा के स्तर से उठल चाहति बा ? भोजपुरी के प्रारम्भिक शिक्षा के छोड़ के कइसे सीधे उच्च शिक्षा के स्तर तक ऊ जाई । साथे-साथ निजी प्रयास के जरिए प्राइमरी आ पूर्व माध्यमिक स्तर के भोजपुरी शिक्षण के बाति काँहे ना सोचल जाता । प्रौढ़ शिक्षा में भी भोजपुरी के माध्यम से शिक्षा दीहल जा सकेला । उच्च शिक्षा बदे स्तरीय ज्ञानवर्द्धक पुस्तकन के कमी दूर कइला के आवश्यकता बा । जबले भोजपुरी में पढ़ाई-लिखाई नाहीं होई तबले

भोजपुरी सुसंस्कृत भाषा कइसे होई ? कवने योग्यता आ क्षमता के बल पर ऊ अगिला प्रस्ताव प्रस्तुत करी ?

बिना पढ़ल-लिखल मनई करी कविता त का करी
करे के काव्य रचना ज्ञान भाषा के जरूरी ह
जो कवनो बून आँसू के गिरल चाही, कहां गीरी
बिला जाए न कतहीं, हाथ आसा के जरूरी ह
जो जनमलि भोजपूरी दूध के संग-संग, भला भइल
एहू के सन्स्कारन के तरह मांजल जरूरी ह
ककहरा, व्याकरण, साहित्य–दर्शन मति रहे मइल
प्रगति चाहीं त भोजपुरिया पढ़ल–लीखल जरूरी ह
पढ़ावल जायँ लइके भोजपुरी–हिन्दी के मिडियम से
चलेला रवानगी जवना तरें देखी ले सिसु मन्दिर
चलाई प्रौढ़ शिक्षालय परिश्रम अउर उद्यम से
रही शासन व्यवस्था पुष्ट, जनता तुष्ट मन भीतर
बइठि होटल में ध के चाय टेबुल पर जो बतिआई
इहे नीमन 'एकेडिमी' घूमि आई, फिल्मि में जाईं

स्वावलम्बन स्वाभिमान दृढ़ संकल्प लगन कर्मठता आदमी के इहे पूँजी ह । एही से आत्म बल बढ़ेला,काम होला । छोड़ सब के कहल सूनल आपन ल सहारा । तनी अउरी दउर हिरना पा जइब किनारा । भोजपुरिया स्वभाव प्रगति के ह, जीवन्तता के ह । केहू के वैभव आ ऐश्वर्य से एकरा इर्ष्या ना होला बल्कि एसे एकर मनोबल, बढ़ेला आत्मोत्थान के भावना जागेला । आत्म सन्तोष के बल ई जानेला–

दालि रोटी आ माठा जो मीलल करी
जबले गमछा में भूजा आ भेली रही
तेल सरिसो के बुकवा जो लागल करी
अपने किस्मत पर झंखत चमेली रही

देखीं सभे गमछा के भूजा आ भेली सरिसो के तेल आ बुकवा चमेली के वैभव के कवने तरें चुनौती देता–

भोजपुरिया के हे भइया का कहे ल
खुलि के आव अखाड़ा लड़ा दीहें सँ
तोहरे चरका पढ़वला में का धइल बा
तोहके सगरे पहाड़ा पढ़ा दीहे सँ ।

देस बिदेस के पनरह सोरह करोड़ भोजपुरी भाषा भाषी जन समुदाय के अकूत बल, एकता आ संगठन के स्वर के प्रतीक्षा करत बा । आवश्यकता बा समर्पित नेतृत्व के । नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के 'मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के माँग पर खून के समुद्र गरजि उठल तड़पि उठल बरिस गइल । एक-एक रुपया कवन चीजु बा । ताकत होखे त केहू ई रुपया उठा लेउ ।

सन् १९५१–५२ में कवनो पत्रिका के मुख पृष्ठ पर छपल डा० राम विचार पाण्डे के कविता–'का कहीं कुछऊ कहाते नइखे । कहले बिना रहातो तइखे' हम पढ़लीं । भोजपुरी में काव्य रचना आ साहित्य सृजन हो सकेला एकर आभास हमके सर्व प्रथम भइल । बाबू रघुवंश नारायण सिंह आ जगदीश ओझा 'सुन्दर' हमके भोजपुरी में कविता लीखे के बहत प्रोत्साहित कइलें । चतुरी चाचा के चिट्ठी आ आकाशवाणी पटना से प्रसारित 'लोहा सिंह' नाटक से हमके बहुत बल मीलल । सुन्दर जी के एगो भोजपुरी

गीत- 'का जानी ए अँखिया में केतना ले लोर बा । जबले सनेहिया बा तब ले अँजोर बा' सुनि के हम भोजपुरी के रस के सागर में डूबे-उतराए लगलीं । इलाहाबाद आकशवाणी ग्राम जगत के प्रोडूसर केशव चन्द्र वर्मा हमके भोजपुरी में लीखे के बहुत प्रेरित कइलें आ लोक भाषा कवि गोष्ठी में हमके बराबर आमंत्रित कइले आ संगीत रूपक कई गो प्रसारित कइले । आकाशवाणी गोरखपुर केन्द्र में हरिराम द्विवेदी, रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव जोगानी भाई आ ब्रजभूषण शर्मा मुखिया जी भोजपुरी के विजय केतु आसमान में फहरा दीहल लोग । आकशवाणी पटना, इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर के हम बहुत कृतज्ञ बानी कि ए कुल्हिन के प्रयत्न से भोजपुरी दिशा-दिशा में मँहके लागल ।

चन्द्रशेखर मिश्र के कविता कुँअर सिंह हम सन् ५२-५३ में सनुलीं आ भोजपुरी के भाषा शक्ति के प्रभाव से हम मोहि गइलीं । चन्द्रशेखरजी भोजपुरी के नाम यश जेतना बढ़वले बाँड़े ओतना कमे लोग करी । एइसने मूल्यवान सेवा गोरखपुर के त्रिलोकीनाथ उपाध्याय अपने अल्पकालीन जीवन में कइले । उनके कविता-"रोइ-रोइ पतिया लिखावे रजमतियाँ" भोजपुरी इलाका में गूँजि गइल । कैलाश गौतम औ देवेन्द्र बंगाली के भोजपुरी कलम भोजपुरी के नया रंग देले बा । एगो उदाहरण देवेन्द्र बंगाली के देखीं सभे-"ना चली तोर ना मोर पिया होखे द भोर ।" कैलाश गौतम से बहुत आशा कइल जा सकेला । कृष्ण मुरारी शुक्ल गोरखपुरी, चकाचक बनारसी, विजय बालियाटिक भोजपुरी के पालकी में आपने कान्ह लगवले बा लोग । भोजपुरी बिहार में जेतना व्याप्त बा ओसे कम उत्तर प्रदेश में नइखे । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ई कुल्हि निधि हँउवे सँ । सम्मेलन के चाहीं कि एकर रक्षण करो काहे कि सम्मेलन ह मातृ संस्थान ।

हम अपने उद्‌गार के समापन एहीं-नारा से करतानी कि-

जय जय जय भोजपुरिया माई
तोहरे खातिर भीखि मंगाई
तोहरे खातिर गीति गवाई
तोहरे खातिर समर लिआई
ऊ केइसन भोजपुरिया होई
जे ना तोहके माथ नेवाई
जय जय जय भोजपुरिया माई ।

जय भोजपुरी जय हिन्दी

– मोती बी० ए०

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

तेरहवाँ अधिवेशन

आरा

(3-4 अप्रैल 1993)

के

अध्यक्ष

(दण्डिस्वामी) विमलानन्द सरस्वती

के

भाषण

आदरणीय स्वागत-समिति के अध्यक्ष महाशय, सम्मानित प्रतिनिधिगण भोजपुरी-प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल भाई-बहिन लोग !

पहिले त रउरा सभका एह आदर-सम्मान दिहला खातिर हम आपन आभार प्रगट करत बानी । सचहूँ सभका सरधा प्रेम आ विश्वास आदर से हम अपना के दबाइल मानत बानी । हमरा बुझात नइखे कि हमार कवन अइसन सेवा बा कि रउरा लोग एह अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का तेरहवाँ अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर हमके बइठा दिहलीं । ई सवाल बराबर हमरा मन में खटकि रहल बा, हिरदय के कोंचत बा कि हम कवना लायक बानी, रउरा सभ का एह संस्था कऽ कवन सेवा कइ सकबि ? पद का गरिमा आ मरजादा कऽ निरवाह कइसे होई ? हमरा खातिर तऽ उचित इहे जनाता कि निरबाह के भार रउरा सभ के सउँपि दीं । रउरा सभ भारवाली मरजादनइया के पार करीं, किनारे पहुँचाईं भा बुड़ाईं । किनारा बहुत दूर तऽ नइखे जनात, बाकी राजनीतिक दलदल आगे लडकत बा आ नेता लायक लोग क लूरि-सहूर, साथ-साथ समाज कऽ छितिराहटि देखि के कबे-कबे मन में शंका होता आ हमरा नियर लोग घबड़ाता ।

हमरा त जनात रहल ह कि भोजपुरी भासा-भासी भारी प्रदेश में बड़े-बड़े दिमागदार पंडित विचारक कवि-लेखक बाड़न, ओह लोग का माँथे ई मुकुट बान्हल रहित त शोभित । बड़-बड़ रालि तहाँ दूर कही कमरी । जहाँ शाल- दुशाला लोई गँजाइल बा ओंहिजा कमरी क कवन मोल ? ई तऽ गहुँवन का रहते डोंड़ का माँथे टीका लगावल कहाई । जवना पद पर रउरा लोग डा. कृष्णदेव उपाध्याय, आचारज हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा. भगवतशरण उपाध्याय, डा. कृष्णदेव उपाध्याय आचारज देवेन्द्र नाथ शर्मा, आचारज विश्वनाथ सिह, डॉ. राम विचार पाण्डेय, श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा, प. गणेश चौबे, डॉ. विवेकी राय, डॉ. विद्यानिवास मिश्र आ श्री मोती बी.ए. नियर महारथी विदमान के समय-समय से बइठवलीं ओहिजा हम बइठि रउरा के सभ का संस्था कऽ केतना मरजादा बढ़ाइबि आ बढ़न्ती- विकास करबि ?

बस एतने सोचि-समुझि के कि हमहूँ एह भोजपुरी धरती क एगो संतान हईं, साहस बटोरत बानी कि हम छूँछ बानी, हमरा में कवनो गुन नइखे, कुछ पुरुसारथ नइखे

तबो महँतारी कऽ सेवा कइल तऽ हमार धरम ठहरल । हम अपना लूरि-सहूर का मोताबिक सेवा में भागीं काहें ? सेवा धरम बड़ा कठिन हऽ। जेकरा कवनो टिशुना ना होई, जे लालच आ गुमान- गरूर से दूर रही, ऊहे अपना माई आ भाई-बंधु, हीत-मीत, सुजन-संगी चाहे गावँ, देहाति जिला-जवार भा देश-समाज कऽ सेवा कइ सकत बा ।

भोजपुरी धरती कऽ इतिहास बड़ा गौरव आ महिमा वाला बा । जइसहीं भारत का इतिहास-पोथी के उघारीं तऽ, भोजपुरी भाषा के बोले- समुझे, बेवहार करे वाला लोग का वीरता आ बल-पुरुसारथ, साहस, लगन, धीरता कऽ कथा पढ़ि के, छाती फूलि उठति बा, माथा ऊँच हो जाता । भारत का बहुत पुरान इतिहास के गढ़ि के तइयार करे वाला भोजपुरिये वीर पहिली पाँति में आदमान पाके चमकत लउकत बाड़न । राजा गाधि क पुत्र महरसी विश्वामित्र जी एही धरती पर तप कइके ब्रह्मरसी बनलन । एहिजे गंगा-सरजू (घाघारा)संगम से लगभग दूइ जोजन दक्खिन रोहतास का इलाका में सहसरावँ का पास उनकर आस्रम रहे, जहाँ राम-लछुमन के उहाँ का बला-अतिबला दूनो विद्या कऽ शिच्छा दिहलीं । बगसर आ सहसरावँ का मध्य में जखिनी भवानी ऊ जगहि ठहरलि जहाँ मुनिवर कऽ आसरम रहे । वालमीकि रामायण एकर प्रमाण बा । महरसी जगदग्नि आ अवतारी पुरुष परशुराम जी एही धरती कऽ लाल रहलन, जिनकरा लाली से आजो हमन क प्रदेश आ सवँसे भारतीय चमचमाति बा । भगवान बउधदेवजी के धरमविचार के पहिला गुरूदेव आराड़ कलाम एही आरा में केसपुक्तनिगम में निवास करत रहलन । केशपुत्तनिगम ओह जुग में कोशल महाजनपद के अंग रहे। काशी ओह महाजनपद कऽ एगो जनपद रहे । मगध आ कोशल के राजा लोग एह अनमोल धरती पर कबजा जमावे खातिर बहुत बेर लड़ाई ठानि के आपन जोर-बल अजमावे । कबे मगह विजयी होखो तऽ कबे महाकोशल । आखिर में मगधराजा बिंबीसार कऽ विजय भइलि आ कोसलाधीस प्रसेनजीत अपना बहिन कऽ बियाह बिम्बीसार से कइके एह काशी जनपद के बहिनि का खोंइछा में दहेज दे दिहलन । पुराना इतिहास क मजे में ना जनला-समुझला से बहुतन का आराडकालाम रिसी का तपोभूमि का संबंध में भरम हो जाला । बाकी असलियत ईहे हऽ ।

केशपुत्तनिगम में कलाम जाति के छतिरी लोग बसल रहे आ धनसंपत्ति से ज़नता के खुशहाल बनवले रहे ।

भगवान बुउधदेव जी आरा में आपन सोरहवाँ चतुरमास बितवले रहलन । छानबीन कइला से पता चलल बा कि आलवक जच्छ के सासतरारथ (वाद-विवाद) में हराके ऊ महापुरुष एह नगर में चार महीना ठहरल रहलन । अशोक उनका तप का जगहा पर असतूप बना के भा चइत, चउरा नियर इयादगार बना के ओपर बउधदेव जी के सोना के मूरति थापित कइ देले रहलन । अनुमान से ऊ जगहा जहाँ रहे 'ओइजे आज राउन-इसकूल भा विद्यालय, जवन कहीं बनल बा । आगे बढ़ीं तऽ पिप्पलीवन का मोरिय महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त का जनम भोजपुरिये धरती में भइल रहे। ऊ मल्ललोग का पड़ोसी जनपद पिप्पलीवन का मोरियन कऽ लाल रहे । चन्द्रगुप्ते पहिले पहिल विदेशी यूनानी हमलावरन के, अपना एही भोजपुरी वीरन का बल से पिठिया के देश से बहरी, वक्षु नदी का ओह पार अफगानिस्तान से दूर खदेड़ि दिहलसि । यूनानी सेनापति सेलूकस पोंछि दबा के एहिजा ले भगबे ना कइलन, बलुक महाराजा का आगे झुकिके, उनसे अपना बेटी कऽ बियाह कइ दिहलन । एकरा साथे साथ चन्द्रगुप्त ऊ पहिला सुलायक राजा साबित भइल जे, निचाट दक्खिनी भाग के छोड़ि सवँसे भारत के अपना राज्य-सिवाना में शामिल कइके पहिला अखंड भारतीय राज कायम कइलसि । चन्द्रगुप्त

भोजपुरी बहादुरन का मदति से मगध का सिंहासन पर दखल जमा ले ले रहें । अब अशोक कऽ कथा का कहीं ? अशोक-गोरखपुर आ कसया का बीच मारियन में बिलच्छन सपूत बनि के अवतार लिहलसि, आ अपना अचरज में डालेवाला तप-त्याग, बुद्धिबल, दयालुता, सरधा-प्रेम-पुरुसारथ से एशिया महादेश का बहुत बड़ा भाग के काया पलटि दिहलसि, एतने नाहीं, अपना चमतकारी कामन से ऊ संसार का राज-काज कऽ कीरति-मान बनि गइल, मानवता कऽ धमकत सुजस पताका हो गइल । बउध-धरमाकाश कऽ उपमारहित चमचमात तारा रहल ऊ जे आकाश-लोक का बिरसपति-शुका का तेज के, अपना धमकत जोति से हेठ बना के जगत का धरग-लोक में आजो जगमगात बा । ऊहे हमन का भारतदेश के ओकर मोहरि दिहलसि, चारोभर सिहन कऽ मुद्रा-चिह्न दिहलसि, ओकरा धजा के ऊ चक्का दिहलसि जेके महामानव बउधदेवजी काशी का रिसिपत्तन, मिरिगदाव- मिरिगावन में आज ले आ ढ़ाई हजार बरिस पहिले जगरा के चालू कइले रहलन, जवन कि गतिशीलता कऽ मानव-सुभाव कऽ निशान रहे, जे शति कऽ बारह अंगनवाला अछय अनंत चक्का सनासत शांति कऽ इयादगार बा ।

आगे चलिके मदगुमान में बउराइल मोरिय राजसत्ता भोगविलास में भुला के जनता का सुख-सुविधा कऽ चिन्ता छोड़ि, ओकरा दुख-दुरदसा से मुँह मोड़े लागल आ विदेशी हमलावर कुसान सवँसे देश रउँदत पटना-पाटलिपुत्र निगिचा लिहलन तऽ ओही घरी बाभन सेनापति पुष्यमित्र, विलासी वृहद्रथ कऽ अंपना तलवार से अन्त कइके देश कऽ मरजादा बचा लिहलन । पुष्यमित्र अपना भोजपुरिया वीरन का मदति से बहरिया के दम लिहलन । एह तरह से हमन कऽ भोजपुरी-छेतर, जे कि ओह समय काशी का आस-पास ले लेके पिप्पलीवन, आ ठेठ लुंबिनी तक ले फइलल रहे, जेकरा सिवान का भीतर सारन-चंपारन सभ समाइल रहल, सवँसे भारत का धरम-मरजादा, साहित्य, कला, विद्या-विग्यान सभकर रइछा कइलसि । पुष्यमित्र अपना विजय का खुशी में पाटलिपुत्र में दुइ बेर अस्सुमेघ-जग्य कइले रहलन । पंतजलि उनकरे शासन-छाता का छाहँ में बइठि के आपन महाभास्य लिखलन । पुष्यमित्र आ अग्निमित्र का कुल में, सोन का तरियानी में प्रीतिकूर-पियूर-पियरा अथवा आज का कियालगढ़ से सुरसति का अमर सपूत बाणभट्ट कऽ जनम धरती रहल आ ऊ एही भोजपुर धरती पर अपना साधना का मनमोहक काव्य-ग्रंथ कादंबरी कऽ रचना कइके अमर सुजस कऽ अधिकारी बनल । कादंबरी का सुरसरि में गोता लगा के ओकरा सुरसजल कऽ आचमन कइके भगत-प्रेमी साहित्यरसिक लोग अघात नइखे। ओही वाणभट्ट का कुल में पंडित ब्रह्मदत्त भइलन । कुमारिल भट्ट उनके एकलौता पूत रहलन आ भारती देवी कन्या । कुमारिल भट्ट पिता का बारबार कहलो-समुझवलो पर बियाह ना कइलन, आ बरम्हचारी रहि के विद्या-ग्यान अरजे में लागल रहिके धरम कऽ सेवा कइलन । कुमारिल काशी में रहि के मीमांसा दर्शन कऽ खास तरह से गूढ़गंभीर ग्यान पा धरम-परचार कइलन। ब्रह्मदत्त का पास अपार धनसंपत्ति रहल आ कई जोजन में फइलल खेती-लायक जमीन । उनका पास एक हजार घोड़ा, पांच सई हाथी आ हजारन सेवक रहलन । विद्या-प्रेम आ धरमसेवा का शुभविचार से ऊ अपना अपार धनसंपति के विद्यादान, शिच्छा-परचार का काम में लगा दिहलन आ तीरथराज प्रयाग में एगो भारी विश्वविद्यालय थापित करे में लगा दिहलन । प्रतिष्ठानपुर-झूँसी में ऊ शिच्छा संस्था, बनि के बहुत दिन तक उत्तरी भारत कऽ परधान विद्यामंदिर रहल। कुमारिल भट्ट ओकर कुलपति बनल रहलन । भगवान आद्यशंकराचारज जी से शासतरारथ में हारि गइला का बाद जब मंडन मिसिर सामी सुरेसराचारज बनि गइलन, संन्यास ले लिहलन तऽ भारती ओही विश्वविद्यालय में महिला लोग का महाविद्यालय कऽ परधान

आचारजा का पद के सम्हरली । हँ, कुछ बाति तऽ भुलाते रहलि हऽ । भोजपुरी भासा कऽ नाम-छेतर रोहतास इलाका कऽ भारी महिमा कऽ बाति छूटति रहलि हऽ। अजोध्या का राजवंश में जनमल, सचाई के पच्छधर राजा हरिश्चन्दरो का राज-शासन कऽ ई परध ान अंग रहल हऽ। हरिश्चन्दर का बेटा रोहितास का नावँ पर एहिजा अकबरपुर में किला बनल । ओही के लोग आज रोहतासगढ़ का नावँ से जानत बा । वैदिक सभ्यता रामायण-महाभारत का जुग में निचाट उत्तर गंगाकिनार से रोहतास आ शुरगुजा का पंजरा तक फइलल एह भाग के 'करुष' देश कहात रहे । एह भाग पर बहुत दिन ले चेरो आ करुखवार लोगन कऽ राज रहे । बाद में मालवा का ओर ले परमार लोग आ पहुँचले, लड़ाई-भिड़ाई में ओह लोग का हारि के जंगल-पहाड़ कऽ शरण लेबे के परल ।

दूसर बाति कि भगवान तथागत का ग्यानधाम बोधगया का डहरि में जवन सोहासुत सुधर पड़ाव रहे ऊहे न सहसरावँ हऽ। पालीभासा का बउध-धरम-ग्रंथन में लिखल बा कि एही जगहा पर अशोक सुधरमी एक हजार बउध-भिक्खु लोगन का ठहरे आ सुख-सुबहिता, तप-ध्यान खातिर 'आराम' मठ-विहार बनववले रहलन । सहस+आराम से सहसरावँ भइल । एहिजा अशोक एगो तालाब का बीच में बउध-असतूप बनववले रहलन । बहुत विदमान लोग कऽ ई अनुमान बा कि आज जवन शेरशाह कऽ रौजा कहाता, कबे काल ऊ बउध-असमारक रहल हऽ । सहसरावँ शहर का पँजरा चंदनपीर पहाड़ी पर पावल जायेवाला अशोक कऽ,भारत में पावल जाये वाला सात परधान ध रमलेखन में, एगो लेख एकर भारी आ पक्का सबूत बा ।

आगे बढ़ला पर इतिहास का दूसरा-तीसरा पड़ावे पहुँचि के हमार छाती खुशी से अउरी फूलि उठति बा कि भोजपुरी लोग केतना सूर-बीर, पुरुसारथी आ जोगी-जती, मुनि-तपसी सभ मरजादा-पदन पर पहुँचि के आचार-विचार कऽ झंडा, कहे कऽ मतलब कि संसकिरती कऽ पताका, बहुत जुगन ले फहरावत आवत, भोजपुरी धरती माता का कोखी जनम लिहला कऽ रीन चुकवले आ लाली रखले बा । एह भोजपुरी समाज में, भोजपुरी जनता पर, भारशिव नागवंशी राजा आपन वीरता आ धरमविचारन कऽ असर जमा के एह इलाका में घुसरल-पइठल शक लोगन के पिठिया के देश ले बहरी कइलन । भोजपुरिया लोगन का एह बल-पुरुसारथ पर मगन हो के भारशिव राजा समाजे. का मदति से काशीधाम में दसबेरि असमेध जग्य कइलन । एतने ना, गुप्तवंशी राजा चनरगुपुत दूसरा, वीर विकरमादित्त एही भोजपुरी वीरन का बल से चउकस सेना साजि शान से शक लोगन के पिठियवलन आ खेदि के देश से बहरी कइलन । सानी आ ध नी भोजपुरी वीर हिन्दुकूस के लाँघि, सहजे में बलख-बुखारा धांगत आमू नदी का ध पकत धारा में आपन तेगा धोवलन आ विजय-खुशी में गाजत, केसर का कियारिन कऽ सुघर मनमोहक सुगंध लेत, अपना घोड़न के दउरावत दिल्ली आ पहुँचलनि । मेहरौली में जमुना नदी का किनार पर विग्यानी-कला से बनल लोहा-खंभ में चनरगुपुत दूसरा-वीर विकरमादित्त का ओह विजय कऽ जस कथा टाँकलि बा ।

आगे हूणन क हालि सुनीं । जिनकर देन 'हुणहा' शब्द भोजपुरी भासा, एहिजा का लोगन कऽ गाथा सुना रहल बा । भोजपुरी का मानिता आ पद-मरजादा देबे का अपना अरज-गरज के आठ अक्टूबर एकहत्तर के हम ओह समय का साहित्य अकादमी अध्यक्ष, नामी-गरामी भासा-पंडित डॉ॰ सुनीति कुमार चटरजी के जवन खुली चिट्ठी भोजपुरी कविता में लिखि के भेजले रहलीं, ओकरा दूर-चारि गो डाँड़िन के रउरा सुनीं । ओसे भासा आ भाव दूनो कऽ झलक रउरा सामने आ जाई-

''बिगरल हूण धूमंतू,
वीरबली मनसोख,
बउराइल गुमानवश,
रहलन देत दरेरा सभके ।
सवँसे महादेश बड़,
निपुन एशियावाला,
थरथराइ के उनसे
बनल रहे बेचारा ।
ओहू घरी वीर भोजपुर कऽ
ओह ढीठ जुलमिन कऽ
कनवाँ कसि के मललन ।
अउरी अगुवा आपन-
बना वीर असकंद गुपुत के,
धकियवलन उनका के ।
परिकल गोइयाँ ढीठ 'हुणन' का,
मुँह में करिखा लागल-
आ ऊ लोग पोंछि सटकवले,
भागि पराके निकलल,
देसवा से हमनी का ।
गाजीपुर जनपद का,
सैदपुर-भितरी में,
ओह विजय कऽ
कथा लाट पर टाँकलि बा ।

एहि बलिया का दोआबा छेतर से ले के आरा शहर का पांजर में मसाढ़, जेके हुवेनसांग-मोहोसोलो का नावँ से उजागर कइले बा, ओहिजा तक द्रोणबाभन कऽ एगो छोट सुतंतर राज रहल, जेके ओह समय में बेठदीप कहाते रहे, जबकि अढ़ाई हजार बरिस पहिले छव छतिरी राजा लोग भगवान बउधदेव का कुशीनगर कुशावती में निरवान पवला पर उनकर धातु भाग पावे खातिर चढ़ाई कइले रहल। द्रोणबाभन अपना सूझ-समझ आ साधुभावन से सुलह-समझौता कराके ओह लड़ाई का घटांटोप बादरन के उधिया दिहलन । रउरा सभ जानते बानी कि धातु कऽ आठ भाग आठ राजा लोगन के बँटाइल । द्रोण बाभन सहित सात भाग मगध का अजाताशत्रु, वैशाली का सानियल लिच्छवी लोग, कपिलवस्तु के शाकिमवीर, अल्लकथके बहादुर बुली, पावा के मल्ल पवलन । बैठदीप वासी राजा द्रोण धातुभाग धइल सोना क घइला पवलन आ ओपर भगवान कऽ इयादगार असतूप बनववलन । हुवेनसांग का बतवला मोताबिक ऊ जगहि इहे मसाढ (मोहोसोलो) साबित होता।

गुप्त राजवंश का राजशासन का बाद एह भोजपुरी भासा-भासी जनपदन में सुध रमी गहड़वार राजालोग कऽ हुकूमति कायम भइलि रहे । जनता एह राजन का समय में सुखी आ धरमप्रेमी बनलि रहलि । काशी ले पटना तक कन्नोज के राजा चन्द्रदेव कऽ, जे कि गहडवार राज के कायम करे वाला राजा रहलन, शासन रहे। ऊ अजोध्या में सरग दुवार नावँ का जगहा सरजू आ घाघरा का संगम तीरथ पर नहाके बाभन पंडितन के बहुत सोना, चानी आ अपना भोजपुरी प्रदेश का सिवान में तीस गाँव अगहार रूप में दिहलन ।

गाजीपुर जिला आ बनारस का बीच चन्द्रावती नावँ का गावँ म गंगाकिनार का मंदिर का नेवँ मे ले १८१३ ई० में जवन पाँचगो तामापतर में भारी दानपतर मिलल रहे ऊ एकर पक्का सबूत बा । डा० दयाराम साहनी ओके बाँचि समुझि के लखनऊ का संग्रहालय में जमा कइ देले रहन । दानपतर में पाँच सइ बाभन लोग के तीस गावँ दिहला कऽ पुरहर चरचा बा । ई गावँ आजो बहुत कुछ ओही नावँ ठेकान गाजीपुर आ बनारस जिलन में पावल बाड़न । चन्द्रदेव का बाद उनका लड़िका विजयचन्द्र कऽ ओइसन तामावाला दानपत्तर आरा का पियरो इलाका में ओह समय का पटना का कमिसनर श्रीधर वासुदेव सोहोनी के मिलल रहे । तीसरा दानपत्तर मनेर में तीसरा राजा गोविन्दचन्द्रदेव का राज कऽ मिलल बा । मनेर गोविन्दचन्दर देव का राज कऽ एगो परगना रहे आ आरा का साथ भोजपुरी इलाका में गनात रहे । मनेर में काश्यपगोत्रीय मनेरिया बाभन ठाकुर शिव शरमा आ उनका पूत गुजेसर शरमा के अग्रहार में दूइ गावँ मिलल रहे । एह से भोजपुरी प्रदेश आ ओहिजा का समाज का नीति-वीति कऽ पता चलत बा ।

एही भोजपुरी धरती कऽ मंगल पाँड़े अइसन सानीवीर सन् सनतावन में बारिकपुर में, गुलामी का छानपगहा हथकड़ी-बेड़ी के तोरि आजादी का समर कऽ पहिला शंख बजवले रहन । एही भोजपुरी धरती कऽ सानी सिह बाबू कुवँर सिंह बागी जनता का सुरेमन सरदार बनि देश का सुतंतरता खातिर कठिन लड़ाई लड़लन आ फिरंगी लोग का फउदि क छक्का छोड़ा दिहलन ।

अब पुरुखन कऽ गाथा गावे में कुछ बेसी समय लागि गइल । बाकी अपना कुल-परिवार भाई-बंधु, हीत-मीत, सुजनसंगी सभका विद्या-बुद्धि बल-पवरुख तप-त्याग पुरुसारथ का कथा के जानहीं खातिर हमन का जुटि-बटुरा के बूझि-विचार करीला, कइले बानी आ आजो करे खातिर बटुरल बानी । इतिहास तीसरी आँखि हऽ। सामने बा तवन लउकते बा, आगे का करेके होई, ई समझे-विचारे खातिर पुरनियो लोग कऽ कुछ रीति-नीति जानल जरूरी होला। एहसे रउरा लोग हमार ढिठाई माफ करबि । हम त बे-नाथ-पगहा कऽ घूमता जीव रमता संत संन्यासी सभकरा हित आ बढन्ती में अपनो हित देखेवाला ठहरलीं। हमार तऽ ई सवँसे जीवने बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय खातिर बा ।

अब भोज, भोजपुर आ भोजपुरी भासा कऽ कुछ बेवरा आ भेद के जानी सभे । बिहार का तीनि लोकभासा, जिनके बहुत पहिले अपना भासा-सरबे आ लेखा-जोखा करे का सिलसिला में पच्छिमी भासा-पंडितन के सिरताज डा. गिरियरसन 'बिहारी-बोली' कऽ नावँ देले बाड़न--मगही, मैथिली आ भोजपुरी, अब उनके भासा के बिदमान भासा मानि चुकल बाड़न, उनकर भारी आ कीमतवाला दमगर साहित्य बा. उनका में बिसतार का विचार से भोजपुरी सभका ले आगे बा । ओकर पसार-परचार आ बेवहार परुबी उत्तर प्रदेश आ कुछ-कुछ दक्खिी-पच्छिमी आ थोरे-बहुत उत्तरो क पसरल बिहार कऽ कई जिलन तक बा। ई भारी सिवान लगभग पचास हजार बरगमील मे फइलल बा ।

भोजपुरी भासा कऽनावँ, पुराना शाहाबाद जिला का भोजपुर परगना का नावँ पर भइल बा । एह जिला कऽ शाहाबाद नावँ मुगल बादशाह बाबर का समय में धराइल रहे । बाबर अपना विजय-जातरा में एहिजा ठहरल रहे । अकबर का समय में एह भोजपुरी इलाका के दूइ सरकारन का शासन में बाँटल रहे । उत्तरी भाग शाहाबाद सरकार आ दक्खिनी भाग रोहतास-सरकार का नावँ से जानल जात रहे।

शेरशाह एही भोजपुरी धरती का सहसगवँ में पैदा होके, अपना पुरुसारथ आ चतुराई का बल पर भोजपुरी जवानन कऽ दमगर सेना साजि मुगल बादशाह के हरा के

दिल्ली का राजसिंहासन पर जा बइठल । शेरशाह जनता का दुख-दरद के समझे आ जनता कऽ भलाई करेवाला निपुन राजा रहल । ऊहे पहिले-पहिल जमीन कऽ नाप-जोख कराके खेती कऽ बढ़ियाँ इतिजाम कइलसि । डाक-प्रथा घोड़न का जरिये अपना राज में चिट्ठी-पाती आये-जाये का सही रीति-नीति के कायम कइके जनता कऽ भारी भलाई कइलसि । ऊहे दिल्ली से पेशावर तक सीधा राजपथ-लंबी सड़कि बहुत मजे से बनवा के सभके सुबहिता पहँचवलसि । ई लोगनि का सुख-चैन खातिर बड़ा जरूरी काम रहल ।

सन् १९१२ई० में पच्छिमी विदमान डा० बुकानन बिहार का भूमि-सरवे का सिलसिला में भोजपुर आइल रहे । ऊ अपना लेखन में मालवा का भोजवंशी उजैन राजपूत लोग का 'चेरो' जाति के हराके भोजपुर इलाका दखल कइला कऽ चरचा कइले बा । बंगाल का एशियाटिक सोसाइटी का १८७१ ई० कऽ पत्रिका-'जरनल' में, छोटानागपुर, पचेत आ पालामऊ बोगयरह का बारे में मुसलमान लेखकन का बेवरा कऽ चरचा करत ब्लाचमैन भोजपुर कऽ जिकिर कइले बाड़न । ऊ लिखत बाड़न कि बंगाल का पच्छिमी प्रांत आ दक्खिनी बिहार के राजा दिल्ली का बादशाह खातिर कपरवाहि नियर दुखदायी रहलन । अकबर का राजकाल में बगसर का पँजरा भोजपुर के राजा दलपत, बादशाह से हारि के कैद हो गइलन आ अंत में, जब बहुत धन-दउलति जुरबाना का रूप में डाँड़ दिहला का बाद जेहल से छुटलन तऽ फेरु मजे में हथियारबंद होके गदर मचा दिहलन । जहाँगीरो के राज में उनकर गदर जारिये रहल । जेकर नतीजा भइल कि भोजपुर लुटाइल-फुँकाइल बरबाद भइल आ उनका धन-धरती कऽ दावेदार प्रताप के शाहजहाँ फाँसी दे दिहलसि ।

अकबरनामा में दलपति के 'उज्जनिह' लिखल बा । शाहजहाँ का राज समय में दलपत का हैसियत-मिलकियत कऽ दावेदार राजा प्रताप के पहिला बरिस १५०० आ एक हजार घोड़न कऽ मनसब मिलल ।

एही किताबि में आगे एहू बाति कऽ जिकिर बा कि रोहतास सरकार का भीतर 'सहसराम' (ससरावँ) परगना का उत्तर आ आरा का पच्छिवँ, भोजपुर में एह उज्जैनी राजन कऽ निवास रहे । शाहजहाँ का राज का दसवाँ बरिस में राजा प्रताप, बादशाह का विरोध में गदर मचवलन । एही समय अबदुल्ला खाँ फिरोज जंग भोजपुर पर घेरा डललसि आ ओके जीति लिहलसि । एकरा बाद प्रताप अपना के बादशाह का हाथन में सउँपि दिहलन । बाद में उनके फाँसी दे दियाइल ।

ऊपर का बेवरा से ई साफ जनात बा कि कवनो समय में भोजपुर राज बहुत नामी-गरामी, सरगना आ सुरेमन रहे । एकर शासन करवइया राजा उज्जैन राजपूत पुराना समय में मालवा ले, जे कि उनकर पहिले कऽ निवास कऽ जगहा रहे, बिहार चलि आइल रहलन । मध्य-जुग का भारतीय इतिहास--खास तरह से पच्छिमी बिहार का इतिहास में एह राजपूत लोग कऽ जगहा बहुते महाबता आ मोल-मरजाद वाला बा । सन् १८५७ ई० का क्रांति तक इनकर अगुवाई आ चउधुरावँ पर कवनो तरंह के आँचि ना आइलि रहे । एही घरी राजकुँवर बाबू कुवँर सिंह अँगरेजन का विरोध में गदर कइलन जेकर नतीजा भइल कि भोजपुर फिरंगी ज़ालिमन से रउँदल जाके तहस-नहस हो गइल । अब ई बाति एकदम साफ हो गइल कि उज्जैन कऽ भोजे लोग का नावँ पर भोजपुर नावँ परल; काहे से कि पुराना समय में ईहे लोग एह इलाकन पर कबजा कइके राज करे शुरू कइल । डुमराँव का पास भोजपुर एह लोग कऽ राजधानी रहे । जदपि कि पुराना विभो आ चमुक दमक बिनसि गइल बा बाकी आजो पुराना आ नया भोजपुर का नावँ से ओह

राजशाही राजधानी कऽ नावँ-निसान कायम बा। 'नवरतन-किला' कऽ खँड़हर अबहियों एहिजा ठाढ़ रहि के आपन कथा मौनी भासा में कहि रहल बा। एकरा भवन का रचना-कला आ कारीगरी-कुशलता से ई साफ हो जाता कि ई मध्य जुग कऽ रचना आ किरती हउवे।

भोजपुर का पुराना नगर का नावें पर एहू छेतर कऽ नावँ भोजपुर परि गइल आ आगे चलि के एह नावँ कऽ परगना आ जिला का नावँ कऽ कारन बनल। एह तरह से १८वाँ शताब्दी में भोजपुर एगो प्रात भा प्रदेश रहे। धीर-धीर एकर विशेषण गुन-विशेख भोजपुरी, एह प्रांत का निवासिन आ उनका बोली खातिर भी बेवहार में चालू हो गइल। एह प्रांत कऽ बोलिये एकरा उत्तर, दक्खिन आ पच्छिवँ में भी बोलल जात रहे, एह से भूगोल का नजारि से, भोजपुरी प्रांत का चउहद्दी सिवान ले बहरी भइलो पर एने का जनता आ ओकरा भासा खातिर भी भोजपुरी शब्दे चालू हो गइल।

भोजपुरी भोजपुरिया बीरन कऽ तेज-ताप, जोति-जगमगाहटि, बल-गौरव कऽ, जन 'जीवन वाली बेजोड़ भासा हऽ; जे कि हरदम ठेंगा-गोजी, लाठी-भाला, तीर-धनुष, तलवारन आ गुरिया-गुरदेलि का बीच सगरे ठनकलि-गूँजलि। भारत देश का हर संकट, आफति-विपत्ति का मोका पर काम आइलि, देश के उबरलसि, मरजादा के रखलसि आ समाज के माँजि-चमका के भारत माता का मरजादा कऽ रइछा कइलसि। देश कऽ पुरान इतिहास, सभ जुगन में एकर गवाह बा।

भोजपुरी वीर सोचलन कि कलमि घँसला-रगरला कागकरिया कइला ले देश का मरजादा आ गौरव कऽरइछा होई आ कि बल-पुरुसारथ से तप-तेयाग, बलिदान से। ऊ जुझारू ठहरलन, एह से माँथ देइ मरजादा रखलन। 'बउधायन' में कहल बा कि 'छतिरी असल उहे जे मौथ देइ मरजादा राखे, करनी करे समय पर, झूठे नाही माखे।' भोजपुरी वीरन का कंठ से परगट भइल ई अमरबानी भोजपुर का चारो ओर दूर आ कमबेश तीन प्रांतन में गूँज उठलि, पसरलि-फइललि आ लोगन के जगा के ठाढ़ कइ दिहलसि। भोजपुरी भासा कऽ शबदन आ मुहावरा-कहावतन से ओकरा वीरता आ वीरन कऽ धुनि निकलि रहलि बा। रउरा एगो मशहूर कहावति सुनले होइबि। कहाउति बता रहलि बा कि भोजपुरिया लोग कथनी ना करे, समर-शूर होला। ऊ लोग जुलुम ना सहे न जालिमन के कबे माथ नवाबे। आगे एकर ममूना देखीः-

''भागलपुर के भगेलुआ,
कहलगावँ के ठग।
पटना के देवालिया,
तीनो नामजद।
सूनि पावे भोजपुरिया,
तऽ तीनों के तूरे रग। ॥''

''रही-ला रन-बन खाई ला मकोय,
सात हुड़ार के चरबन होय,
बाघ मारि-मारि करीला इयारी
सिंह जोहत मोर पाकल दाढ़ी ॥''

भोजपुरी जनता आ उनका भासा के दूसरो नावँ भी मिलत बाड़न। मुगलन का राज-समय में दिल्ली आ पच्छिवँ में भोजपुरियन--खास कइके भोजपुरी-इलाका का तिलगन के--बगसरिया कहल जात रहे। १७वीं आ अठारहवीं सताबदी में भोजपुर आ ओकरा पँजरे बसल बगसर (पुरान-व्याघ्रसर-बाघसर, बघसर, बगसर), फौजी सिपाहिन

का भरती कऽ परधान जगहा-अड्डा रहे । १८वीं सइबरसी में जब अँगरजन का हाथ में राजकाज कऽ बगड़ोरि आइलि तऽ ऊहो लोग एह पुरान परंपरा के कायम राखल ।

सबसे अधिका भोजपुरी बंगाल में अपना कामधंधा, उतजोग-बेवहार खातिर जालन । ओहिजा बंगाली लोग इनके हिन्दुस्तानी, पछिवँहा, आ कबे-कबे मगवालियो कहेलन ।

उत्तरी भारत में 'भोजपुरियन' के 'पुरुबहा' आ उनका बोली-भासा के 'पुरुबी' आ पुरबही' कहि के पुकारेलन । उत्तरी भारत में 'पुरुब' कऽ मतलब 'अवध', बनारस आ बिहार प्रान्त होला । एह से 'पुरुबहा' आ 'पुरुबिया' एही प्रान्तन का निवासिन के कहल जाला। भोजपुरी मंडल का बहरा भोजपुरियन कऽ सबले बड़हन अड्डा कलकत्ता हउवे आ सभदिन रहल हऽ। कलकत्ता के हम असल में भोजपुरी जीवन आ आचार-विचार बेवहारन कऽ नाभ कहि सकी ला। हजारन भोजपुरी, भगवती भागीरथी का किनारे जूट-मिलन में, कलकत्ता नगर में अनेकन संस्थन में, पाठशाला-महाविद्यालय चाहे रोजिगार-धंधन में काम करेलन । ई उनका पुरुसारथ आ बिलच्छन बुद्धि कुशलता कऽ नमूना ठहरल । भोजपुरिया, बडधदेव का एह अमरबानी के कि 'अपना खातिर रउरा अपने दीया बनी'- अहलदिल से मानि के अपनवले बाड़न, साँच माने में कइके देखवले बाड़न ।

भासा मानुस-हिरदय का भीतरी भावन कऽ सहज सुधर मूरति हऽ। ई मानुसहिरदय का सहज सुभाविक मनोरथ, मांग-चाह-इच्छा के परगट करेले, बतावेले । बुद्धि-ग्यान-विग्यान, बिसय-वासना-टिशुना सभकर सकमक ओइसने तसबीरि उरेहि के सभके देखावे-बतावे ले । ई मानुस के मानस से नेह-नाता में जोरि-बान्हि के सुघर समाज रचे-बतावे ले । मानुस सिरजना करेवाला परानी ठहरल, ऊ बे समाज कऽ कहवाँ कइसे रही ? एही से बस सहज सुभाव बस ऊ अपना रुचि का मोताबिक समाज गढ़ि के सुख-शांति-चैन से धरती पर रहि आनंद पावल चाहे ला ।

एशिया के महान् भासा-विशारद, नामी-गरामी विदमान डा० सुनीति कुमार चटरजी आ भोजपुरी धरती के अमर सपूत सुरेमन भासा-विग्यानी डा० उदयनारायण तिवारी का मत का अनुसार, भोजपुरी पच्छिमी मागधी से जनम लेके देश-दशा-समय का छाँह में फूलल-फरलि, बढ़लि-पसरलि बा । भोजपुरी का भीतर जगहि-भेद से बोलिन के नावँ भी परि गइल बा । छपरा जिला का भोजपुरी भासा के 'छपरहिया' आ बनारस का भोजपुरी के 'बनारसी' बोली कहाला । एही तरे बलिया का पच्छिमी आ आजमगढ़ का पुरुबी छेतर कऽ बोली 'बँगरही' कहाले । बाकी भोजपुरी के अइसन छोट-छोट टुकड़न में बाँटि के छितिरावल उचित नइँखे । एह से पुरान जवारी नावँ के फेर चलावे का जगहा पुराना ऐतिहासिक नावँ के बेवहर जथारथ होई । एह नावँ का साथ भी कम से कम तीनि-सइ बरिसन के परंपरा बा ।

भोजपुरी एगो जानदार भासा हऽ। ई पचास हजार बरग-मील का गिरदा में बोललि जाले । भोजपुरी कऽ सिवान गंगा नदी का साथ-साथ पटना का पच्छिवँ कुछ दूर तक जाला । ओहिजा ले सोन नदी कऽ डहरि धइले ई रोहतास तक पहुँचि जाले । एहिजा ले दक्खिन-पुरुब कऽ पकड़ि राँची कऽ आँजर-पाँजर झाँकत ई राँची ले बीस मील पुरुब तक आपन असर अधिकार जमवले बा । ओने ले मुड़ि के फेरु सोन नदी लाँघत हमन कऽ दमगर भोजपुरी, अवधी के सिवान के छूवत, मिरजापुर का पँजरा तक पहुँचति बा । भोजपुरी बड़ी मउजी आ घुमक्कड़ि भासा हऽ, ऊ अकबरपुर का किला ले ऊपरे-ऊपर कैमूर पहाड़ी का जंगलन के खाक छानत, चेरो-खरवार, यादव भा अउरी जनता दलन

से बोलत-बतियावत, वन का देवता-देबिन के चरनन के छूवत, माँथ नवावत, अजोध्या का सुरुजवंशी राजा दशरथ आ सरवन का कथा-कहनी के गुफा-खोहन से छिपले-छिपल सुनत, पशुपतिनाथ महादेव आ उनका गणन के गोड़ लागत, तथागत बउधदेव का उपदेशन के पत्थल-चट्टानन का लेखन से पढ़त, गैर गुनावन करत, काशी विश्वनाथ दरबार-बनारस में हाजिरी लगा गंगा नहातिया । बनारस में शिव भगतन के टाँड़ा झरना का आदर सत्कार कइला कऽ बाति बतावत, कबीर आ संत तुलसी दास से भेंट कइके रामकथा सुनत, स्वामी रामानंद जी का चरनपादुका के फूलमाला चढ़ावत, तैलग स्वामी का समाधि पर माथा टेकत-कोटागिरी-केराकत तहसील का अपना हीत-नाता से मिले जाति बा । फेरु ई घाघरा नदी का उत्तरी धार में बुड़की मारिके आपन आँचर फइलवले टेढ़-ढाढ़ डहरि धइले गोरखपुर बस्ती देउरिया का गावँन में घूमत सभलोगन से गोरखनाथ बाबा का जसकथा, भजन आ जोग उपदेशन के सूनत पुरुब में भगवान बउधदेव का जनम धरती, रूम्मन देई (पुरान-लुंबिनी) पहुँचि के उनका समाधि पर माला-फूल चढ़ा पलग्गी करति बा ।

भोजपुरी का पसार कऽ नकशा देखला से जनात बा कि एह समय ई दुई प्रदेशन--पुरुबी उत्तर प्रदेश आ पच्छिमी बिहार कऽ भासा हऽ। पच्छिमी विदमान डा० ग्रियरसन भोजपुरी के चारि भागन में बँटले बाड़न । ऊ भाग, उत्तरी, दक्खिनी, पच्छिमी आ नागपुरिया नावँ वाला हउँवनि । सोननदी का दक्खिन 'नागपुरिया' भोजपुरी कऽ भाग बा । उत्तरी आ नागपुरिया भोजपुरी का बीच में दक्खिनी--आ पच्छिमी भोजपुरी कऽ छेतर बा । असल में दक्खिनी 'भोजपुरिये' नगद नमूना भोजपुरी हऽ । एक दखलदहानी के इलाका शाहाबाद-भोजपुर-रोहतास-बगसर-भभुआ, सारन, बलिया, पुरुबी देउरिया आ पुरुबी गाजीपुर हऽ। पच्छिमी गाजीपुर, आजमगढ़, बनारस, मिरजापुर आ जौनपुर का कुछ भागन में पच्छिमी भोजपुरी बोललि जाले ।

आदर्श-नमूना भोजपुरी सुने में बहुत मीठ आ मोलायम होले । नमूना (आदर्श) भोजपुरी के एकरा अउरी बोलिन से अलगावे वाला-सरबनाम-'रउरा' हऽ। आदर्श भोजपुरी कऽ 'राउर' शबद एतना महत्व वाला आ मशहूर बा कि अवधी के कवि सुरमन गोसाई तुलसीदास आ ब्रज-भासा के सूरदास से लेके जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' तक ले सभ एकर बेवहार कइले बा । असल बाति ई बा कि अवधी ब्रजभासा आ दूसर पच्छिमी बोलिन में एह 'सरबनाम' का समान अरथवाला कवनो शब्द हइये नइँखे। गोसाईं तुलसीदास जी अपना रामचरितमानस में लिखत बाड़न :-

"जो राउर अनुशासन पाऊँ ।
कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ।।"

सूरदास कऽ एगो पद-'मधुप रावरी पहिचान'।

जगन्नाथदास रत्नाकर के 'ऊद्धव-शतक' कऽ एगो पदः-

'फैले बरसाने में न रावरी कहानी यह।'

भोजपुरी भासा-संसकिरती-आचार-विचार आ साहित्य---असल में भासा ससकिरती--जेके आज हमनी का आचार-विचार से जानत बानी ओकरे के कहाला । संसकिरती-'कल्चर-'Culture' कऽ उलथा हऽ। 'कल्चर' शब्द-अपना 'लैटिन' मूल से निकलल बा । भासा संसकिरती कऽ सवारी हऽ। ओही पर चढ़ि के आचार-विचारन कऽ गहरी सगरे पहुँचले । संसकिरती भा आचार-विचार कवनो देश, समाज चाहे जातीय दलन कऽ रीढ़ ठहरलि, जवन पर ऊ देश, समाज भा जाति जुगन तक धरती पर जीयत-जागति रहेले। कवनो बेकती कऽ जवन संस्कार कहाला, ऊहे सामूहिक समाज

कऽ रूप धइके संसकिरती हो जाला ।

हम पढ़े-लिखे, विदमानन कऽ दरबार करे में जे कि सुरसति मंदिर कऽ महंथ-पुजारी ठहरलन, बहुत समय लगवलीं, भगवती सुरसती का मंदिर में झार-पोंछ, दीया-बाती बारे कऽ काम सत्तर बरिस ले करत आवत बानी । एह लंबा समय में बहुत तरह के खट-मीठ अनुभव भइल आ हो रहल बा। बहुत कुछ देखलीं-सुनलीं । हमरा विचार में हरेक संसकिरती कऽ गति आ जीवन शिच्छा से जोराइल बा जवन कि अखंड बा अउरी शिच्छा कऽ अखंड संबंध भासा से रहेला। जब ई तिरबेनी खंडित हो जाले-छिंतिर-बितिर हो एने-ओने बेजगहा, बे अरथ-माने कऽ होले- मतलब कि भासा दूसर होले, शिच्छा कऽ भाव-उद्देश दोसरे होला अउरी संसकिरती दूसरा दिशा में बहेले तब अइसने अराजक दशा-बे बूझ-विचार, बिना माने-मतलब आ बिना कायदा-कानून कऽ समय आके आसन जमा ले ला । आज लोग कहत सूनल जाता कि 'अपना देश में आपन राज, कवना बाति कऽ डर आ लाज ।' आज रउरा सभ ओह अराजक-बे नाथ-पगहा, का समाज में बिना मेंह के दवँरी देखते बानी । आपन-आपन खँजड़ी-आपन-आपन ताल । केहू कऽ केहू सुने वाला नइँखे । जेतना सिपाही ना ओतना हवलदार-सूबेदार आ सेनापति । सुनेवाला जेतना नइँखन ओतना कहे-सिखावे वाला बाड़न । चारो ओर सुनत बानी कि हम तोहार कहुआ हई कि जवने कहबऽ ऊहे करबि । अइसने में तिरबेनी कऽ तीनो धार सूखि के रेत परि जाला ।

पुराना जुग-जमाना का जीवन-मोलन के आज सामने का हालति, दशा आ रीतिनीति से जोड़े अउरी आज का कठिन सवालन आ अझ्रराहटनि का अँजोरा, अगाही सुख-शांति, जीवन-गति कऽ सुघर-सवतुक रूपरेखा तइयार करे में समय-खंडन का समुन्दर पर पुलि बनावे कऽ काम शिक्षे करेले । एह सेतु के बनावे का ओर से मुँह मोड़ले उदास भइले न तऽ पुरुखा-पुरनियन से पावल पुराना संपदा-ग्यान-गुन-कला-कारीगरी के समाज का सभ अंगन के पहुँचावल जा सकेला न अगाही कऽ कवनो रूपरेखा तइयार कइल जा सकेले जे से कि मधुर सपना साकार होखे । रउरा सभ भोजपुरी संसकिरती कऽ कुछ झलक पवलीं । भोजपरी लोगन का आचार-विचार, रीति-नीति, करनी-कथनी सभ ओर से परिचित भइलीं । अब कुछ देखीं कि भोजपुरी जनता, ओकरा परिवार के पंडित-विदमान, कवि-साहित्यकार, कला कारीगरी के पुजारी आगे अपना आ समाज के साजि-सवाँरि के गढ़ि के तइयार करे खातिर आगे का कइलन । उनका उतजोग-पुरुसारथ, तप, धीरज, साहस आ लगन-सरधा से रउरा अपना जीवन के सुंदर बनावे सीखीं ।

कवि दूरदरसी होलन । उनकर भीतरी आँखि खुललि होले । एह से ऊ भीतरो देखेलन । एही से समाज कऽ सुघर सुरूप गढ़े में उनकर भारी हाथ होला । पुरान कविन में हम सबले पहिले बिसराम के इयाद करत बानी जे कि अपना सरस आ भावभरल बिरहन कऽ रचना कइके भोजपुरी भासा आ भोजपुरी भाई लोग कऽ सवतुक सेवा कइलन । बिसराम, आजमगढ़ का सिरामपुर गावँ में, जवन कि टौंसनदी का किनार पर बा, एगो छतिरी-परिवार में जनम लेइके अपना जनमधरती के पवित्तर कइलन आ अपना काव्य-कला से भोजपुरी जनपद में अँजोर फइलवलन । बनारस का तेगअली कऽ रचना 'बदमाश-दरपन' बनारसी-बोली में भोजपुरी भासा का जीवन-जातरा में कुछ दूरी तय कइला के एगो मील कऽ पथल बा । बलिया के दूधनाथ उपधिया भोजपुरी के एगो प्रतिभाशाली कवि रहलन। लोगन का जीवन से जुटल-जोराइल रहले। उनका कविता कऽ जनता पर भारी असर रहल । पंडितजी बलिया आ आजमगढ़ का गोरच्छिनी-आन्दोलन से जोराइल रहिके अनेकन सभा-सम्मेलनन में पहुँचि के अपना सरस कविता से लोगन

का हिरदय के मोहि लेसु । उहाँका 'गो-विलाप' संबंधी बहुत पद रचले रहलीं । कहल जाला कि पंडित दूधनाथ जी कऽ रचल बीर रस कऽ कविता कायरन का हिरदय में भी बीररस कऽ भाव जगा देत रहलि ।

हम जब अपना भोजपुरी जनपद का दरसन का सिलसिला में डंग बढावत सरजू का पार अगिला पड़ाव पर छपरा शहरि में पहुँचल बानी तऽ कवि सुरेमन रघुबीर नारायण से भेंट होता । रघुवीर नारायण जी छपरा का एगो मरजादा वाला कायथ-परिवार में २० अक्टूबर १८८४ ई० के पिता जयनारायण जी वकील का घरं अवतरित भइल रहलन । रघुवीर नारायण जी कऽ 'बटोहिया' मथेला वाली कविता जनता में बहुत मशहूर भइलि । भोजपुरी जाने-समुझे वाला लोग एह कविता के बहुत सरधा-प्रेम से सुनल आ कवि के आदर दीहल । एह सरस कविता में अखंड भारत कऽ सुघर मन के मोहेवाली तसवीरि उरेहलि बा । एकरा के भोजपुरी-मंडल के राष्ट्रगीत कहल जा सकेला । भोजपुरिया भाई ऊहे मरजादा एके देतो बाड़न । कविता में भारत का अखंडता के जोगा के राखेवाला चउकस पहरुवा परबतराज हिमालय, गंगा जमुना, सरजू, सोनभद्र सभका दइबी सोभा कऽ तसबीरि खींचल बा । दूसरा ओर बतावल बा कि नानक, कबीर, शंकराचारज जी आ परमहंस रामकिशुन नियर समाज-सुधारक संत महापुरुष अपना अमरबानी से देश के जगवलन आ पतन का गड़हा में ले बहरी कइके सुमारग पर आगे बढ़वलन । कालिदास, जयदेव, विद्यापति, सूर आ तुलसी वोगयरह कऽ रचना देश के कइसे बढ़न्ती कइलसि, सुख-शांति पहुँचवलसि ।

अब अपना समय के एगो निपुन आ सजग समाज-सुधारक भिखारी ठाकुर के हम कइसे बिसारीं ? भिखारी ठाकुर कऽ नावँ उत्तर प्रदेश का पुरुबी जिलन आ बिहार का पच्छिमी जिलन में बहुत मशहूर बा । एह इलाकन कऽ लड़िका ले बूढ़ तक सभे इनका 'बिदेशिया नाटक' से परिचित बा । भिखारी ठाकुर बिलच्छन प्रतिभा वाला कवि आ नाटककार रहलन । खास भोजपुर ले सटले डुमरावँ का धरती पर देहि धइके उतरेवाला सुरसति-सपूत प्रिंसपल मनोरंजन रउरे नगीना लाल रहलन । देश का आजादी का समर में उनकर 'फिरंगिया' कविता गाँव-गावँ में सभे सजगी देश भगतन का जबान पर रहे । उनका हिन्दी आ भोजपुरी साहित्य सेवा के हमनी हरदम इयाद करी ला ।

भोजपुरी जनपद का बलिया मंडल में, साहित्य का सोहासुत कंचन-बाटिका के दुइ गो सुंगध आ मधुरपराग से भरल फूल हमन के बरबस अपना ओर खींचत बाड़न । ऊ मोहक फूल डा० रामविचार पाण्डेय आ प्रसिद्धनारायण सिंह का नावँ से समाज में जानल मानल बाड़न । उनका सुगंध से सवँसे भोजपुरी-प्रदेश गमगमा रहल बा । पाण्डेय जी के 'बिनिया-बिछिया' उनका भोजुपरी कवितन के एगो सुघर नमूना हऽ, जेकर सभी कविता एक ले एक बढ़ि के बाड़ी । उनकर 'अंजोरिया' केकर मन ना मोहले होई । ओही तरे तेयागी-तपसी कवि आ बहादुर सुतंतरता सेनानी प्रसिद्ध नारायण सिंह का सन् बयालिस का अगस्त-क्रांति से संबंधित कविता दब्बू आ कायर लोगन में भी वीरभाव जगावे वाली बाड़ी सऽ ।

एह तरह से हम देखत बानी कि भोजपुरी भासा में धड़ाधड़ बहुत साहित्य कऽ सिरिजना हो रहल बा । अनेक विधा कऽ रचना कलाकारन का कलमि से सुघर सरूप धइके सामने आ रहल बाड़ी । अब भोजपुरी में अनेकन महाकाव्य रचा गइल बाड़न जिनसे लोग कले-कले परिचित होत बा । बउध-धरम-दरसन, रसगर काव्य-गुनन से सजल आ इतिहास-गाथा से पुरहर सोहत 'बउधायन', भोजपुरी अकादमी से प्रकाशित रउरा आगे बा । ओकरा संबंध में हम कुछ कहे कऽ अधिकारी नइँखीं । एकरा बाद रउरा

आगे भोजपुरी वीरता के बेजोड़ पुरुस बाबू कुँवर सिंह पर पाँच गो महाकाव्य कऽ रचना भइल बा । उनका में भारतीय आजादी का पहिला समर के तसबीरि उरेहल बा । सभे तसबीर एक ले एक चुहिलगर आ सराहे जोग बाड़ी । ओह बीच में नगद नगीना, डा० सर्वदेव तिवारी कऽ 'कालजयी कुँवर सिंह' कहल जा सके ला ।

एकरा बाद रउरा सामने कुशल कलाकार आ निपुन कवि रामबचन शास्त्री 'अंजोर' कऽ 'किरनमयी' महाकाव्य आ उनका नया प्रयोग कऽ नमूना-'निरधन के धन श्याम' आवत बा । शास्त्रीजी भोजपुरी भासा में दोहा, चौपाई, सोरठा, चौबोला, सवैया, वीरछंद, आल्हा-छंद आ मुक्त-छंद वोगयरह कऽ सफल प्रयोग कइके कला-कारीगरी में अपना बिलच्छन चमत्कार से सभके मोहि लेत बाड़न । ध्यान अपना ओर बरबस खींचे वाला आ दमगर कला-कारीगरी का दीठि से कसौटी पर सभ तरह से खरा उतरे वास्ते कवि सुरेमन अविनाशचन्द्र 'बिदारथी' बेजोड़ आ बिना पटतर के बाड़न । उनकर दूइ गो रचना-'कौशिकायन' आ 'सेवकायन' इनका बिलच्छन प्रतिभा कऽ नगद नमूना मानल जइहँन । उनकर भासा टकसाली भोजपुरी कऽ आदर्श मानल जाई । कविवर अपना सभे रचना में तरह-तरह का छंदन कऽ बेवहगार कइले बाड़न आ उनके पुरहर सफलता मिललि बा । दबहुर-दबल-पिसाइल, दुखी आ सतावल जनता का जीवन का हर अंगन कऽ कवि सवतुक तसबीरि उरेहले बाड़न ।

एकरा बादो भोजपुरी के सेवा करेवाला कवि-कलाकारन कऽ एगो भारी संख्या बा जिनका भोजपुरी सेवा कऽ महत्त्व कम नइँखे । एक-एक ईट के जुटा के सीमेंट-मसाला से जोड़ले भोजपुरी माता कऽ सुघर मनभावन मंदिर बनल बा । हमन का ओह सभे कवि कलाकारन, कथा-उपन्यास-नाटक रचवइयन कऽ रिनी बानी जे मंदिर के बनावे आ साजे-सँवारे में मनचित से लागल बाड़न । इनका में हम मोती बी० ए०, केदार पाण्डेय 'प्रशान्त', नंदकिशोर मतवाला, अरुण भोजपुरी, विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, महेन्द्र गोस्वामी, सीताराम पाण्डेय 'प्रशान्त', रघुनाथ प्रसाद गुस्ताख, योगेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रिंसिपल श्रीधर दूबे, कुबेरनाथ विचित्र, रामनारायण उपाध्याय, विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा', श्रीनिवास मिश्र, व्रजभूषण मिश्र, विपिनबिहारी चौधरी, राजवल्लभ प्रसाद 'सेवक', कैलाश कमरपुरी वोगयरह कऽ रचना, भोजपुरी साहित्य का बहुत विस्तार में सोहत फुलवारी कऽ रंग-बिरंगा फूल नियर बाड़ी ।

भासा का शरीर कऽ रीढ़ व्याकरण होला। ओकरा बिना भासा-साहित्य कऽ कवनो घर-मकान, महल-मंदिर खड़ा ना हो सके । भोजपुरी मंदिर का अनेक शिखरन, गुंबजन कऽ चरचा भइल, बाकी आगा का परधान गोपुरम् का ओर ले नजरि कइसे फेरल जाय ? पद बिना कहले रोवेला । असल कहीं तऽ बिना जोर बल लगा के कहले हमन कऽ हक-पद मारल जाता । जवना भासा का बोले-समुझे, जीवन का बेवहार में लावेवालन कऽ गिनती संख्या सवँसे भारत देश का आबादी कऽ दसवाँ भाग बा आ जेकरा में खण्डकाव्य, महाकाव्य, नाटक, कहानी,उपन्यास, शब्दकोश, व्याकरण सभकुछ बा ओकर अनादर काहें ? ओके हुरपेटल-धकियावल काहे जाता ? ई हमन का विचारल जरूरी बा ।

भोजपुरी में कई गो शब्दकोश तइयार हो चुकल बा । बीस बरिस पहिले पहिला शब्दकोश भोजपुरी-संसद वाराणसी से प्रकाशित भइल । ओकरा बाद शास्त्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी कऽ 'शब्दसागर' आगे आइल, एह में ६०० पन्ना में बीस हजार शब्दन कऽ बहुत सजग होके भासा-विग्यान का नियमन का मोताबिक अरथ कइल बा । शब्द सागर का साथ-साथ व्याकरण-शब्दानुशासन, भासा के कोड़ा-चाभुकि के चरचा जरूरी बा । एह

दिशा में डा० रसिकबिहारी ओझा 'निभीक' का 'भोजपुरी शब्दानुशासन' नियर मानक रचनां तइयार कइ के बहुत खटके वाली कमी के पूरा कइला कऽ हमन का बहुत रिनी बानी ।

हिन्दी में कामता प्रसाद 'गुरु' के व्याकरण जवना घरी तक ना तइयार हो सकल रहे कि भोजपुरी के एगो व्याकरण सन् १९९५ ई० में तइयार हो गइल रहे । पं० शिवदास ओझा का एह महत्त्व का व्याकरण के भोजपुरी-अकादमी बहुत बढ़ियाँ रूप में छापि के भारी उपकार कइले बा ।

भोजपुरी का एह लमहर जातरा में आज अइसना पड़ाव पर पहुँचि के अपना भाई-बधु, संगी-साथी, सुजन-संबंधी, रउरा सभ से मिले में हमके अपार आनंद कऽ अनुभव होता । हम ओकर बरनन का करीं ? हमरा बानी में ऊ बल नइँखे, न हमरा कलम-कूँची में ओइसन कला-गुने बा कि अपना हिरदय में लहरात भावन के तसबीरि उरेहि के देखाईं । भगवती भागीरथी जइसे हिमालय का गोमुख-गंगोतरी से धावत-धूपत ठोकर खात, ऊँचे-नीचे गिरत, जंगल-झाड़ में लुका के चुपके भागत, आखिर में ग्यानी मुनिवर कपिलदेव जी का आसरम में उनका चरण-कमलन के छुवत, आशीर्वाद लेत सागर का गोदी में पहुँचि मगन-मन हो जाली, हमके कुछ ओइसे सुख-शांति कऽ झलक मिलत जनाता । लगभग बावन बरिस पहिले आपन अँचला-लंगोटी लिहले, हाथ में एगो फाटल झोला आ कवंडल का साथ चललीं तऽ डहरि में कहीं केहू ना भेंटाय । ई जातरा फाहियान का भारत-दरसन का जातरा नियर-दुरगम आ दुखदायी जनाय । बाकी तऽ हमरा पास झोरा में साहस आ लगन कऽ कलेवा रहे, एकरा करते हम चलते गइलीं । कवन उमेदि रहे फाहियान का कि गोबी का भारी मरूभूमि से उबरि के काशी नालंदा आ बोधगया पहुँचे के कवन आशा रहे ? बाकी तऽ अपना संकलप के ऊ साकार कइयं दिहलसि आ बउध-तीरथ-धामन कऽ दरसन पाके जीवन सफल बनवलसि । हमहूँ अपना भोजपुरी माता का छोह-दुलार आ सेवा के इयाद करत ओइसहीं, कलेश काटत बढ़त गइलीं, पाछे ना तकलीं ।

कबे काल एह तीरथ जतरा में हमके डा० उदयनारायण तिवारी आ महाराज कुमार दुरगाशंकर सिंह नियर लोगन से भेंट भइल आ उनसे बाति-विचार होते रहल, बल मिलत रहल । कबे-कबे आरा पहुँचि बाबू रघुवंश नारायण सिंह से मेहनति-पुरुसारथ-साधना-तप कऽ पाहुर पाई आ आगे बढ़ीं । १९४५-४६ ई० में हम जब आपन भोजपुरी कहानी कऽ पहिली पोथी गद्य का नमूना का रूप में तइयार कइके परयाग उदयनारायण तिवारी जी किहें जा पहुँचलीं तऽ उहाँ का अपना भोजपुरी भासा का शोध-प्रबंध के तइयार करे में लागल रहलीं । उहाँ का हमरा कारज से बहुत खुश भइलीं । ओही पयान में हम महापंडित राहुल साकिरतायन जी से भी मिललीं, जेकि किसान सभा संगठन आ आंदोलन का सिलसिला में हमार पुरान परिचित रहलन । उहाँ से सलाह लेके आ तिवारी जी से पोथी कऽ भूमिका लिखवा के हम ओके छापे-छपवावे का कठिन काम में जूटि गइलीं । किताबि पटना का नया बिहार प्रेस में छपलि । कुछ पइसा दियाइल, कुछ बाकी परल । कइसहूँ आरजू-बिनती आ बिसवास का बल पर हम 'जेहल कऽ सनदि' क तीनिचारि सइ प्रति पवलीं । ओही साथे हमार हिन्दी मुक्त गीतन कऽ एगो संग्रह 'मकरंद' भी छपल रहे। अब किताबि लेके हम आरा से रोहतास, कबे रामगढ़-मोहनिआ-भभुआ आ कबे कलकत्ता तक कऽ दौड़ लगवलीं । कहीं-कहीं दुइ-चारि गो किताबि लोग शील-संकोच में परिके खरीदे । 'मकरंद' लोग पसंद करे बाकी भोजपुरी कहानी का पोथी के देखि के नाँक-मुँह बिजुकावे । कहीं-कहीं

नीन-खट सुनं कं भी परे । कलकत्ता का १९४८ ई० का अपना जातरा में हमरा बड़ा कड़ुवा अनुभव भइल । हम सिमरी का सत्यनारायण राय का बाड़ी में ठहरल रहलीं । कलकत्ता भोजपुरी कऽ भारी अड्डा रहे । ओहिजो बहुत कम किताबि खपली सऽ। एक दिन गाजीपुर जिला के एगो रईस चन्द्रिका राय, जे कि ओह समय में 'राइटर्स-बिल्डिग' में कुछ काम करसु, उनसे संजोगन भेंट भइल । सत्य नारायण राय उनसे हमार दूनो किताबि देखवलन आ एक-एक प्रति देके कुछ प्रतिन के खपावे कऽ सिपारिसि कइलन । चन्द्रिका राय तऽ हमके जानत-चीन्हत रहलन ना । उनका ई का पता रहे कि रचयिता एहिजे मुँह लुकवले दबकल बाड़न । ऊ मकरंद लिहलन आ 'जेहल कऽ सनदि' के उलटि-पलिट कं देखला का बाद झनकि के किताबि सत्य नारायण राय का आगा फेंकि के कहलन-''यह कोई पुस्तक है! किस उल्लू ने यह किताब लिखकर भासा भ्रष्ट किया है ? मिलता तो यहीं हावड़ा की सड़क पर घसीटवा देते...।'' सत्यनारायण धीरे से कुछ इशारा करतं रहं कि लेखक यहीं हैं पर ऊ काहे समुझते-सुनते । हमरा ऊ दिन इयाद कइके अचरज होता कि हम आज का देखत बानी । ई कवनो सपना ह कि साँच कऽ साकार रूप दरसन ।

अब तऽ हम एह जातरा में अइसन बहुत लोग के चलत देखत बानी, उनसे मिलत-बतियावत बानी जे कि बिकरी का आसा का माथे लात धइके, रोजिगारी चश्मा के आंखि पर ले उतारि के अपना साहित्य सेवा जातरा में साहस का साथे हरदम आगे बढ़ि रहल बाड़न । आज एह जातरा में डा० उदयनारायण तिवारी, डा०कृष्णदेव उपाध्याय, डा० देवेन्दर शर्मा, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डा० अचारज भगवत शरण उपाध्याय, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी वोगयरह का बाद डा० विवेकी राय, डा० विश्वनाथ सिंह, डा० विद्यानिवास मिश्र, पं० गणेश चौबे, कवि वर 'अचल', डा० आंजनेय, पाण्डेय कपिल नियर 'फुलसुंघी' के कुशल शिल्पकार, कबीर से लेके डा० उदयनारायण तिवारी का बनावल रास्ता के साफ-सुथर, लमहर-चाकर बनावे में लागल बा । एह ले भारी खुशी आ गौरव कऽ बाति का बा ?

आज सबसे भारी अड़चन बा कि भोजपुरी साहित्यकार-रचनाकार बस अपना तेयाग-तप, साहस-धीरज का बल पर काम करत बाड़न । बिहार सरकार बहुत पहिले भोजपुरी अकादमी बनवलसि तऽ जरूर बाकि आज ओकर धेयान ओकरा विकास का ओर नइँखे । राजनेता राजनीतिक कारनन से उदासीन बाड़न । एही राजनीतिक दाँवपेच, शतरंजी पैंतरा आ कुरसी छिनाये का भय-शंका, मोहभ्रम में लोग भोजपुरी के आठवीं सूची में शामिल नइँखे करत । हमन का एह कारज में कुछ कमजोर परतो बानीं । जब तमिल, मलयालम, मराठी, नेपाली, डोगरी, मैथिली भा अउरी-अउरी जनपदीय भासन के मानिता देति बा तऽ भोजपुरी के ई अपमान काहें ? अब बिहार का दूइगो विश्वविद्यालय में भोजपुरी कऽ विधिवत पढ़ाई होखे लागलि । पढ़े वाला उत्साही विदारथिन का सामने किताबन कऽ भारी आ कठिन सवाल पत्थल का चट्टान नियर डहरि में अड़क पैदा करत बा । एकरा साथे-साथ रोटी कऽ भी सवाल बा । रचनाकार केतना दिन भूखे रहि के साहित्य का हर अंगन के पोढ़ बनावे वाली रचना तइयार करिहन ? रचना तइयार भइलो पर केतना लोग का ई बेंवत बा कि अपना रचना के छपवा के सगरे पहुँचावे, परचार-परसार करें ?

हम भोजपुरी भासा में दरजनों पत्रिकन के परकाशन होत देखत बानी आ कुछ अंकन का निकलला का बाद उनकर बंद होत देखत बानी । हमरा हिरदय के, एह कमी से भारी धक्का लागत बा । बाकी एह थाकल-थउसल बुढ़ापा में हम करबे का करीं ?

पत्रिकन कऽ दशा देखि के हमरा भोजपुरी के पुराना महारथी आ तपेसरी साहित्यकार-पत्रकार, कवि, सवाँरक, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय जी कऽ मधुर इयाद ताजा हो जाता । पाण्डेयजी कऽ व्यक्तित्व, रहन-सहन, आचार-विचार पुरुसारथ आ तेयाग देखि के साफ-साफ जनाता कि उहाँ का इसपात कऽ बनल लोहा-पुरुस आ टिशुनारहित सवतुक करमजोगी रहलीं । उहाँ का कठिन साधना कइके जवना साहस आ धीरज का साथ बीस बरिसन ले 'अँजोर' पत्रिका के चलवलीं आ ओहमें पूरा सफल रहलीं, ऊ हमन का आगा एगो चकित करे वाला नमूना बा । 'अँजोर' केतना हिरदयन के अपना अँजोर से लाभ पहुँचवलसि ओकर बतावल सहज नइँखे । अंजोर का जरिये सहाय जी भोजपुरी भासा में केतने लेखक, कवि आ कथा-नाटक-रितोरताज वोगयरह के सफल रचयितन के बनवलीं, सजवलीं ।

बहुत पहिले, अठारहवीं-ओनइसवीं शताब्दी का संकट काल में, अंगरेजी राज का जुग में भोजपुरी जनपद का गाजीपुर, आजमगढ़, गोरखपुर, छपरा आ आरा शाहाबाद का गावँन के भोजपुरी किसान-मजदूर भाई, ठेठ देहाती गावँ के मेहनति-मजदूरी, खेती-बारी करे वाला समाज का हर अंगन कऽ लोग अपना रोजिगार-धंधा का खोज में चाहे शासन करेवाला सरकार का जोर-जुलुम का करते जनम धरती से, देशवासिन से बहुत दूर, समुन्दरधार का बीच विदेशन में, मोरिशस, फीजी, सूरीनाम आ अउरी कुछ जगहन में जा बसलन । ओह जगहन में उनकर सोना नियर देहि गलि-पचि गइलि, जवानी खाक में समा गइलि, ऊ मोह-ममता में अपना देश आ भाई बंधुन का ओर ताकत रहलन, उनकरा से नेह-नाता लगवले रहलन । एतने नाही, अपना जनम धरती भोजपुरी मंडल का पिरीत आ दुलरुवी भासा भोजपुरी से, भोजपुरी-संसकिरती-आचार विचारन से बराबर आपन गाढ़ नाता बनवले रहलन । अपना गाँव-गीत, संस्कार-गीत, लोकगीत-लोरकी, कुँवर विजयमल, बिरहा आ कथा-कहनी के इयाद करत जोगावत गइलन । उनका एह काम में तुलसीदास कऽ रामायन बड़ा काम कइलसि, साहस धीरज दिहलसि, उनका धरम-विचारन के रइछा कइलसि ।

ओइसना आफति-विपति का गाढ़ दिनन में जब हमनी के अपने घर-परिवार के भाई अपना भोजपुरी भासा के संग ना छोड़लन तऽ हमन का काहे घबड़ायीं । हमन का तऽ बहुत कुछ पवलीं, आगे बढ़लीं अब पुरहर सफलता कऽ किनारा लउकि रहल बा । नाव किनारे पहुँचले बोलति बा । हमन का हरियरी से सोहल धरती पर उतरबे करबि । अपना मेहनति कऽ कमाई पाके निहाल होइबि । सेवा से मेवा मिलवे करी, एकरा में कवनो शक सुबहा नइँखे । बाग-बगइचन के सुरस सवदगर.......फल भेंटाई । गेहूँ, बासमती, दूध-दही मिली । सुख-शांति आनंद भेंटाई । भोजपुरी साहित्यकारन का साहस, लगन आ पुरुसारथ से भोजपुरी कऽ उन्नति हो रहलि बा । आगहूँ उनका अपने बल-पवरुख कऽ भरोसा राखे के चाहीं । भोजपुरी साहित्यकार अपना जिम्मेवारी के पूरा समुझि के कवनो काम करत बाडन । एह से राष्ट्रभासा हिन्दी आ भोजपुरी का आपसी मतभेद कऽ कवनो तरहं कऽ शंका नइँखे । भोजपुरी का विकास से हिन्दी मजबूत आ धनी होई । देहि में सभ अंगन कऽ अपना-अपना जगहे ओतने महत्त्व बा । हाथ, गोड़, अंगुरी, ठेहुन-पेडुरी-पहुँचा, आँखि, कान केकर कम महत्त्व बा ।

भासा विग्यान का पोथिन में ब्रजभासा, अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली, मगही, भोजपुरी वोगयरह के हिन्दी के बोली बतावल बा । एहसे रउरा ओह संबंध के समुझीं । बाकी हिन्दी भासा के इतिहास लिखे वाला लोग खाली खड़ी बोली कऽ इतिहास लिखले बा । एही तरे कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण आ नागरी-प्रचारिणी भा रामचन्द्र वरमा कऽ

शब्द कोश हिन्दी कऽ कोश हऽ। ओह में भोजपुरी के कवनो जगहि नइँखे । अइसहीं दिल्ली का भूगोल इतिहास के भारत कऽ सरूप आ ओकर इतिहास ना मानल जाई । ब्रजभाषा के सूरदास, अवधी के तुलसीदास आ भोजपुरी के कबीरदास के लोग पंत-निराला साथे खड़ी बोली का इतिहास में शामिल करत आ गिनत बा ।

जवना भासा आ बोली के बेवहार कऽ सिवान जेतने बिस्तार वाला होला ओकरा जनता से ओतने लगाव होला । ओही संबंध से भासा कऽ सरूप आ सिंगार बनेला, लोग देखे-जानेला । एकर प्रमान भोजपुरी कऽ विशाल शब्दभंडार आ मुहावरा कहावतनि के भारी संख्या से मिलत बा । एकर नमूना गाय, लाठी, बरतन बोगयरह का शब्दन में लउकत बा । गाय के-धेनु, बकेन, कलोर, बिसुकलि, बाधा-बछरू, लाल, आ एही तरे गगरी, मेटा, घइली, चेरुवा छाँड़ि, कुड़ा, चेरुवी, नादी, हाड़ी, कहँतरी, बेहुँड़ी ।

कहावतनि के देखीं---रहीला रनबन खाईला मकोहि भा मकोय, सात हुँडार कऽ चरबन होय । बाघ मारि-मारि करीला इयारी; सिंह जोहत मोर पाकल दाढ़ी । मइल लुग्गा, दुबर देहि, कुकुर कटला में कवन संदेह । बकसऽ बिलारि मुरगा बाँड़ होके रहिहन । गाठि में दाम ना पतुरिया देखि रोवाई । सइ पुराचरन न एक हुराचरन । रहे भूइँ में चाटे बादरि । गदहा सरगे गइलन बाकी छान लागले गइल । लूट बनउर कऽ मारि बरछी कऽ । नाती के गाँती ना, बिलारी के झुल्ला । भगई के ठेकाना ना तम्मू बिना फजीहति । अनका धन पर बिकरम राजा । हर ना जुवाठि, अँकवारी भरके पैना । परई में खाये के लुक्का कऽ अँजोर । मूसर नियर परल बानी, का करिहन चोर ? बेल पाकल तऽ सुग्गा का कौन खुशी बा ? दही दूध मोरा, मथान बाजे तोरा। दादा मुवलन दोहबे हाथ लागल । नावँ लखन कऽ मुँह कुकुरन कऽ । बाभन, कुकुर, नाऊ, जाति देखि गुरनाऊ । चोरवा कऽ मन बसे कंकरी का खेत में । ए बकुला का लवलऽ दीठि, केतने जालि रगरलीं पीठि । अन्हरा सियार के महुवा मिठाई । सहकल गवँरइया, भरसाईं में खोंता । भेड़ि मुवली काहें खउरला बिना । अब्बर देवी जब्बर बोका । करवा कोहार के घीव जजमान के स्वाहा । चिउरा दही, चउदह कोस, लुचुई अठारह कोस । लजाइल लइका ढिढुकी टोवे । बस केतना कहल जाय खजाना अथाह बा ।

अंत में हम कहबि कि आपन बल-पवरुख तऽ जरूरिये बा । बाकी हमार सरकार। हमहीं ओके चलावे वाला, बनावे वाला । एहसे सरकार का भी आपन जिम्मेवारी समझ के लोकभासा भोजपुरी का विकास खातिर पच्छपातरहित हो के मदति देवे के चाहीं । भोजपुरी अकादमी कऽ सभ कामकाज सरकार का धेयान ना दिहला से ठप्प बा । बे मदति कऽ गाड़ी कइसे आगा बढ़ी ? दूसरा ओर सभ साहित्यकार रचनाकार सनमति-सुमति से संगठित होके जनता कऽ समरथन जुटावे आ सरकार पर दबाव डालिके ओके अपना जिम्मेवारी के समुझे खातिर मजबूर करे । बिना भासा का उन्नति के जनता लोकतंत्र का महत्त्व के न तऽ समझी न ओके मजबूत बनावे पाई । शिक्षा सुबहित भइले पर गावँ-नगर जनपद आ देश चाहे मानुस समाज कऽ कयलान होई । छूटल फटकल, नीक-जबून, सभसे भूलचूक खातिर माफी चाहत बानी ।

जय हिंदी! जय भोजपुरी!!
ऊँ शांतिः शान्तिः शान्तिः!!!

–विमलानन्द सरस्वती

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

चउदहवाँ अधिवेशन

मुबारकपुर

(18-19 अक्तूबर 1994)

के

अध्यक्ष

(श्री) भोलानाथ गहमरी

के

भाषण

आदरणीय भाई सभे, महतारी आ बहिन लोग !

आज एह मंगल वेला पर जहवाँ हजारन भोजपुरी के विद्‌वान, किसान, नेता, मजदूर आ कलाकार लोग जूटल बा, पहिले हम सभकर स्वागत करत के प्रनाम कर रहल बानीं । शहर-बजार से एतना दूर, एगो खांटी गाँव-देहात में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सालाना ज़लसा, यानी कि चउदहवाँ अधिवेशन हो रहल बा, जवना के रउवाँ सभे आपन भरपूर सहयोग दे के सफल बनावे बास्ते इहवाँ इकट्ठा भइल बानीं । एहसे, हम रउरा सभे के बार-बार धन्यवाद दे तानीं आ आभार मान रहल बानीं ।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, जेकर नेंव 19-20 बरिस पहिले ध राइल आ ओकर केन्द्रीय कार्यालय पटना में रखाइल, अब तलक ले भोजपुरी के बढ़ोतरी खातिर बहुत-बहुत काम कइलस । भोजपुरी क्षेत्र के कई जिलन में सम्मेलन-शाखा के गठन आ करीब-करीब 15-16 करोड़ भोजपुरी बोले वाला लोगन के भीतर अपना भाषा के प्रति मोह, ललक आ प्रेरना जगावे क बहुत बड़ काम भइल, अउरी ई क्रम आगहूँ चलि रहल बा । ई कूल्हि के रहते आ होते हम भोजपुरी लोगन के अबहीं असली मनसा पूरा ना भइल । उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल आ बिहार का पश्चिमांचल से जे भी बड़-बड़ मंत्री, नेता आ बिद्‌वान भइलें उनसे हमहन क उमेद बहुत कइनी स, कि ई लोगिन के पटना, लखनऊ आ दिल्ली सरकार में रहला से , भोजपुरी के मान्यता मीली । बाकिर आजु ले कन-भूसी कीछु ना फरिआइल ।

एकरा के हम सौभाग कहीं या दुर्भाग कि हमार भोजपुरी भाषा-भाषी, देश के पूर्व प्रधान मंत्री श्री चन्द्रशेखर जी से बहुत बड़ उमेद बन्हल कि अब भोजपुरी भाषा के मान्यता मिले में कवनों कठिनाई ना होखी, बाकिर उहाँ का थोरिके दिन बाद कुर्सी छोड़ देलीं आ भोजपुरी लोग फिर टुअर हो गइल । आज त सभे मंत्री, मुख्य मंत्री आ नेता लोग राजनीति के रंग में डुबल, अपना-अपना पार्टी भा कुर्सी का मोह में फँसल बा । भाषा-साहित्य का लम्बी दौड़ में भोजपुरी अब केकरो से पीछे नइखे रह गइल । हँ [illegible] बिचार का गन्दी राजनीति के कारन हम दल-दल में जरूर फँसल बानीं । कहल गइल

या कि 'आपन हाथ जगन्नाथ' । हमके अपना बाहुबल पर भोजपुरी भाषा के राजसिंहासन पर बइठावे वास्ते एगो ठोस आ कड़ा कदम उठावे के जरूरत महसूस हो रहल बा । अब तक सरकार के सामने कतने प्रस्ताव गइल, चिरउरी-मिनती कइल गइल, बाकिर कवनो नतीजा ना निकलल । तब का होखी ? अँगुरी के सीधा ना, अब टेढ़ करेके समय आ गइल बा । आज एह भरल सभा में, अध्यक्ष भइला का नाते, एह बात क एलान करे चाहतानीं कि भोजपुरी के आपन उचित स्थान आ हक दिलावे वास्ते हम दिल्ली, पटना, लखनऊ एक कर देब आ अगर समय के मांग होखी त संसद का सामने अनिश्चित काल खातिर भूख हड़ताल पर भी जायेब । काहें से कि सभा के निर्णय आ प्रस्ताव पास कइला से अब कुछ होखे वाला नइखे बुझात । समय काफी बीत गइल, आ अइसहीं बीतत जाई । हमके त अपने सभे क बल आ आसीरबाद मीलत रहे के चाहीं ।

ई अब कोई से छीपल बाति नइखे कि भोजपुरी साहित्य पिछले 35-40 साल से बहुत धनी आ ठोस हो गइल बा । विश्वविद्यालयन में बी० ए०, एम०ए० में अब भोजपुरी के पढ़ाई काहें ला हो रहल बा ? का एकरा पीछे हमार जन संख्या आ साहित्य भंडार क हाथ नइखे ? जे भी विद्वान भोजपुरी लेखक आपन एह भंडार के बढ़ावे में सहजोग कइले बा भा कइ रहल बा, ओकर भोजपुरी समाज रिनी बा । कहानी, उपन्यास, नाटक, गीत-गजल, प्रबन्ध काव्य आ महाकाव्य के भी ठोस रचना भइल बाड़ी स । भोजपुरी में पत्र-पत्रिकनों के अब अभाव नइखे रह गइल । पश्चिम बंगाल से ले के बिहार अउरी उत्तर प्रदेश तक नीक-नीक पत्रिकन क प्रकाशन हो रहल बा । ई खुसी के बाति बा आ एकरा के सुभ लच्छन कहल जाई । एक बात हम भोजपुरी पत्रिकन के सम्बन्ध में बहुत साफ आ बेलौस कहल चाहब कि सम्पादक बन्धु लोग भोजपुरी के ऊँचाई देबे वास्ते रचना पर जरूर ध्यान दीं । हल्का-फुल्का रचना के भरसक क्षमा के साथ लौटा दीहल जाय, भा ओकरा के छापले न जाय । हम एहू बात के समझतानी कि अबहीं अच्छी रचनन के अभाव भी बा बाकिर एकर ई मतलब ना होवे के चाहीं कि 'जवने लिखऽ, तवने द' आ 'जवने द तवने छापीं' । एह बिचार के रोके के चाहीं । 'कुछुओ लीखत चले के, कइसहूँ लीखत चले के' वाली प्रवृत्ति आ मानसिकता के खातम कइल बहुत जरूरी बा । भाषा के चरित्र बनावे वाला तथ्य आ तत्व का बारे में बैज्ञानिक सोच आ सांस्कृतिक परम्परा के समाहार के आज ज्यादा जरूरत बा । अभिव्यक्ति के क्षमता बढ़ावल पहली शर्त होखे के चाहीं ।

भोजपुरी के महत्व बढ़त जा रहल बा । आकाशवाणी, दूरदर्शन जइसन मीडिया से भोजपुरी के प्रतिष्ठा स्थापित हो रहल बा । एह मारे भोजपुरी भाषा के सरूप तय कइला का बारे में हमके सचेत हो जाये के बा । अब ई सोचल बेवकूफी होई कि आवे वाला समय अपनहीं से भाषा के सरूप तय कर दी । भोजपुरी के विद्वान लेखकन के समझला के जरूरत बा कि लेखन का क्षेत्र में फइलल अराजकता के अंत होखे के चाहीं । समसामयिक लेखन के दशा-दिशा, भाषा के सरूप में किसिम-किसिम के बानगी आ अकादमिक उपलब्धि के आज जरूरत बा । स्नातकोत्तर स्तर तक भोजपुरी अपना में शिक्षा-परीक्षा क एगो पूर्ण भाषा बन गइल । शोध-ग्रंथ भी भोजपुरी साहित्य, भाषा आ संस्कृति जइसन विषय पर लिखाये लागल । एह मारे इहवाँ बटुराइल भोजपुरी के विद्वान लोगन से आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पदाधिकारी लोगन से हमार निहोरा बा कि भोजपुरी भाषा के सरूप तय करे वास्ते अलग से बइठक कर-कर के एगो ई रचनात्मक काम समय रहते कर लीहल जाय ।

भोजपुरी साहित्य के विकास खातिर के सबका हिरदया में एगो छटपटाहट जरूर

देखाता । आ हर जगह अपना-अपना ढंग से काम हो रहल बा । बाकिर अलग-अलग रहि के काम कइला से ताकत में कमी त अइबे करी । एपर हम कवनों व्यक्ति आ संस्था के आलोचना ना कर सकीले । जे जइसे भी भोजपुरी के बढ़ोतरी खात्तिर काम करत बा, करो । लेकिन का ई ना हो सके कि अपना-अपना ढंग से काम करे वाला भाई लोग कबहूँ-काल एक साथ एक बइठकी कइ के अपना विचार क लेखा-जोखा दुसरो के सामने रखे आ अपना प्रगति के जानकरी देत रहे । अइसना में कवनों अउरियो लोगंन के विचार आ सुझाव क महत्व काम करेला । एहसे आपसी सौहार्द भी बनल रही आ अच्छा काम होखी । एकरा पीछे ब्यापक दृष्टिकोण रही त अच्छा नतीजा निकल सकेला । महज आपन नाँव, संस्था के नाँव आ पत्रिका के नाँव खतिर काम कइल जाई त प्रगति में बाधा आइल स्वाभाविक बा । आपन-आपन डफली बजे, बाकिर राग सभकर एकही होखे त हर तरफ से मजबूती आई ।

अब आईं दू आखर चरचा हम करी अ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के आपन स्थायी भवन का बारे में । भवन निर्माण क ललसा त पहिला-दुसरा अधिवेशने से लागल बा । धन जुटावे क माध्यम, जमीन जुटावे क जोगाड़ बहुत दिन से चलल आ रहल बा । बिहार सरकार से मदद लेबे वास्ते सम्मेलन के कुछ वरिष्ठ लोगन के जिम्मा भी दीहल गइल जे बात-चीत के आगे बढ़ावल आ उमीद देखाये लागल कि काम जल्दिये होई । बाकिर कुछ कानूनी अड़चन आ राजनीतिक उथल-पुथल का चलते अभी तक हमके पूरी सफलता ना मिल सकल । एह सम्बन्ध में हमनी आपन प्रयास छोड़ले नइखीं, न त निरास भइल बानीं । सम्मेलन के आपन निजी भवन के जरूरत अब के नइखे महसूस करत ? एकर कभी सबके खलि रहल बा । एह सम्बन्ध में अधिवेशन के बितते हम खुद भी सक्रिय हो के रउवा सब के सहजोग से कोसिस करेब ।

हिन्दी हमरा देस के राष्ट्रभाषा का रूप में स्थापित हो चुकलि बा । भोजपुरी भाषा-भाषी एकरा के हिरदय से अपना ले ले बा । हमरी के कवनों भाषा से न तो कबों बिरोध रहल हा आ न त होई । सम भासा फूले-फले ई हमार कामना बा । बहुत बिद्वान लोगन के मतिभ्रम बा कि भोजपुरी के मानता मिलला पर या पनफला पर हिन्दी के बड़ा अहित हो जाई । हालाँ कि ई खियाल अब धीरे-धीरे लोगन का दिलो-दिमाग से उतर रहल बा । आज भोजपुरी के सब्द हिन्दी में धड़ल्ले से लीहल जा रहल बा जवना से हिन्दी के अभिव्यक्ति में जान त आइये गइल बा, ऊ सशक्त आ धनी हो रहल बा । सत्तर-अस्सी फीसदी भोजपुरी लेखक हिन्दीयो में आपन कलम मजबूती से चला रहल बाड़े । हम हिन्दी खातिर के आज भी लड़ाई लड़ रहल बानी । राष्ट्रभाषा हिन्दी अपनी जगह बा आ हमार भोजपुरी मातृभाषा अपनी जगह बा । दूनों के बहुत आदर अउरी प्रेम के साथ हम अपना के चल रहल बानीं । राष्ट्रभाषा हिन्दी हमार अस्मिता बा उहवें भोजपुरी हमार पहिचान भी बा । बाति बहुत साफ बा कि हम एह दूनों के छोड़ ना सकीं। जे अबहियों भरम में परल बा ऊ अपना दिमाग से एह भरम के निकाल देउ । भोजपुरी के तरह हम अवधी, ब्रज, बुन्देलखण्डी, छत्तीसगढ़ी आ मगही के भी आदर करीले । ई कुल्हिये हिन्दी के उत्थान में आपन-आपन जोगदान देत बाड़ी स । बाकिर जवना भोजपुरी क क्षेत्र एतना लम्बा-चौड़ा आ जनसंख्या सत्रह-अठारह करोड़ पहुँचि गइल, ओ के संविधान में अबहीं स्थान ना मिलल ई बहुत बड़ बिडम्बना बा । एही भावना के ले के हम्में आपन कमर कसे के बा । भले अब लाठी-डंडा खाये के, अउर भूख हड़ताल करे के परे, बाकिर ई करहीं के परी । अइसे फरिआये वाली बाति देखात नइखे । एकरा वास्ते हम अपना नौजवान लेखक साथियन के आवाहन करेब कि हमहन

के साथे ऊ लोग भी एह जज्ञ में, एह मिशन में खुल के हमार साथ दें । एह अधिवेशन का बाद जल्दिये हम एपर कदम उठावे क तेयारी करेब ।

आज बहुत से क्षेत्रीय भाषा में भोजपुरी के प्रचार-प्रसार आ लोकप्रियता आकास छू रहल बा । एह भाषा का जरिये सस्ते में धड़ा-धड़ फिलिम बना बना के बम्बइया निर्माता लोग पइसा कमा रहल बाड़ें । भोजपुरी फिल्मन से भोजपुरी के बल त बहुते मीलल बाकिर व्यावसायिकता में फँस के निर्माता लोग भोजपुरी क नुकसानों बहुत कइ रहल बा । भोजपुरी गीतन में अश्लीलता के नंगा नाच हो रहल बा । अपना संस्कृति के गलत ढंग से पेस कइल जाता । एकरा रोके क उपाय करे के पड़ी, अंकुस लगावे के पड़ी । एह विषय पर अंकुस ना लागी त सचमुच आपन संस्कृत्ति आ संस्कार चरामरा के बइठि जाई । आज घर घर में, चाहे गाँव हो या शहर, हर जगह संस्कार गीत के जगह अब माई-बहिन लोग फिल्मी गीत गा रहल बा । बबुआ जी लोग डैडी-मम्मी कह के पुकारे लागल । ईहे ना, नामों में अजीब बदलाव आइल चलि जाता । रिंकू, मिंकू आ स्वीटी जइसन नाम क उदाहरन रउवा सभे के सामने बा । कहाँ जा रहल बा हमार संस्कार आ कहाँ तक जाई ? जन-जन से हमार निवेदन बा कि एपर विचार करीं सभे आ घर के आपन संस्कृति आ संस्कार के अबहियों से सँवारीं आ बचावे के कोसिस करीं ।

एक बात अउरो कहल चाहब, काहें से कि एह सभा में बहुत अधिकारी लोग भी आ के बइठल होई । हम ओह सभे से चिरउरी-मिनती करेब कि अब समय आ गइल बा कि ऊँच कुर्सी पर बइठि के भी अपना मीले वाला भाई लोगिन से अपने ही भासा भोजपुरी में बतिआवे के आदत डालीं । एहमें अब लजाये-सरमाये के बाति नइखे रह गइल । ई प्रवृत्ति बहुत दिन से देखल जा रहल बा कि बड़-बड़ ओहदा क साहेब-सूबा लोग घर में भोजपुरी बोलली पर बाहर में एकरा के गँवारू भाषा समझि के बतियावल हीनता समझत रहल हा । अइसन समझ के, अपना भीतर से निकाल दीं सभे । बगले में मैथिली आ बंगला के देखीं आ गौर करीं त दिमाग खुल जाई ।

अंत में हम अपना ओह सभे प्रेमी जन आ सुधीजन के धन्यवाद दे रहल बानीं, उनकर आभार प्रगट कर रहन बानी जे हमरा अइसन छोट कद आ छोट बुद्धि-विचार वाला आदमी के एतहत बड़ जिम्मेदारी सऊँप दीहल । फिर भी आ० भा० भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का प्रवर समिति के सम्मानित सदस्य लोगिन के हम बिसवास दिआवल चाहतानीं कि जवना भरोसा आ बिसवास के साथ हमके जिम्मेदारी दिआइल बा ओकरा के अपनहीं सभे का सहजोग से पूरा क पूरा निबाहे क कोसिस करेब । मुबारकपुर के धरती आ एह क्षेत्र के सभे भाई लोगिन के ई भोजपुरी सम्मेलन रिनी बा जे आपन सुख-दुख के धिआन छोड़ि के आ जी-जान से जुटि के एह अधिवेशन के सफल करे वास्ते रात-दिन एक कइलस । बिसेस करके विद्वान भाई डॉ० प्रभुनाथ सिंह जी आ उनका साथ कंधा से कंधा मिलावे वाला भाई लोगिन के हम भोजपुरी सम्मेलन का ओर से साधुवाद दे रहन बानीं आ उनकर जय-जयकार करतानीं जे एह गाँव-देहात में भोजपुरी क अलख जगा के जन-चेतना के नया जोति-किरन दीहल ।

'जय भोजपुरी', 'जय हिन्दी' ।

–भोलानाथ गहमरी

❐

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पन्द्रहवाँ अधिवेशन

गाजीपुर

(6-7 अप्रैल 1996)

के

अध्यक्ष

(आचार्य) पाण्डेय कपिल

के

भाषण

भोजपुरी के नेही- सनेही बहिन लोग आ भाई सभे ।

जब हम सुनलीं कि हम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बनावल गइल बानी, त हम फिकिर में पड़ गइलीं । हम त आज ले एह सम्मेलन के जब जइसन जरूरत पड़ल, 'पीर – बबर्ची – भिश्ती – खर' के काम करत रहल बानी । अब, जब हमहीं अध्यक्ष के आसन पर बइठा दिहल गइलीं, त एह पद के मोले का रह गइल ! आ, आज ले जे हम करत रहल बानी, ऊ जो ना करब, त हमरा से रहलो कइसे जाई ! हमरा इयाद पड़त बा कि जब आचार्य महेन्द्र शास्त्री जी के सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बनावल गइल, त ई सुनके आदरणीय श्री पुण्यदेव नारायण सिंह जी कहलीं कि ई निर्णय त बहुत अच्छा भइल ह, बाकिर हमरा एकरे डर बा कि शास्त्री जी जब अध्यक्षता करे खातिर मंच पर पहुँचब त एही खातिर छरिया जाइब कि स्वागत–गान हमहीं गाइब । अपनो बारे में हमरा कुछ ओइसने डर आ फिकिर बा कि अपना आदत से लाचार हमरा से ऊ कुल काम शायदे छूट पावे जे हम आज ले करत अइलीं । तब, फेर, अध्यक्ष के एह उच्च आसन के गरिमे का रह जाई ! बड़ा अफसोस भइल ई सोच के कि भोजपुरी के दिन अइसन पातर नू हो गइल कि अब रेंड़े परधान होखे लागल । सोचे के चाहत रहे कि डॉ० उदयनारायण तिवारी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० भगवतशरण उपाध्याय, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय जइसन स्वनामधन्य मनीषी लोग जवना आसन के पवित्र कर चुकल बा, ओही आसन पर हमरा जइसन सामान्य जनके बइठावल कतना अनेत आ अंसगत बा ! भोजपुरी में, मनस्वी विद्वानन आ वर्चस्वी साहित्यकारन के कमी थोड़े बा । बाकिर, सम्मेलन के प्रवर समिति का एह निर्णय के माथे चढ़ावल छोड़के, दोसर उपायें का रहे ? हम त हुकुमी बन्दा ठहरलीं । भोजपुरी के आ एह सम्मेलन के जब जवन काम करेके पड़ल, लाज–शरम छोड़के, करत अइलीं । आज फेर प्रवर समिति के आदेश के अनुपालन में, लाज–शरम छोड़के, अध्यक्ष के एह ऊँच आसन पर

आ गइल बानी । आभारी हम जरूर बानी सम्मेलन के प्रवर समिति के, आ अपना किस्मतो के, कि भोजपुरी के आ एह सम्मेलन के इहो सेवा हमरा से ना बाँचल ।

अबहीं कुछुए दिन पहिले, भारत के संविधान के अष्टम अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करावे खातिर आ साहित्य अकादमी से भोजपुरी के मान्यता खातिर, पिछला 27 फरवरी 1996 के, भारत के राजधानी दिल्ली में, संसद भवन का सामने, 'धरना' के सफल आयोजन भइल रहे । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पिछला अधिवेशन में अइसन 'धरना' आयोजित करे के जिम्मा डॉ० प्रभुनाथ सिंह जी के सउँपल गइल रहे । उनका कर्मठता के लोहा·माने के होई कि भोजपुरी के सैकड़न प्रतिनिधि सगरो से दिल्ली पहुँच गइले, आ दिल्ली–वासी भोजपुरियन का सहयोग से, हज़ार से ऊपर लोग एह 'धरना' में शामिल भइल ।

राष्ट्रपति जी से मिल के, भोजपुरी के सवाल पर ज्ञापन्न देवे खातिर जे सात-सदस्यीय शिष्टमण्डल 27 फरवरी के राष्ट्रपति–भवन गइल रहे ओकर नेतृत्व सांसद डॉ० गिरिजा देवी जी कइली । उनका अलावे, शिष्टमण्डल के आउर सदस्य रहले सांसद श्री लालबाबू राय, डॉ० प्रभुनाथ सिंह, श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ० भीमसेन सिंह आ पाण्डेय कपिल । बहुते असरदार ढ़ंग से गिरिजा देवी जी भोजपुरी के सवाल राष्ट्रपति जी का सामने राखत, भोजपुरी के अष्टम अनुसूची में समावेश आ साहित्य अकादमी से मान्यता के अनुरोध कइली । हमरा महसूस भइल कि ओकर बहुते असर राष्ट्रपति जी पर पड़ल, आ कम–से–कम साहित्य अकादमी से मान्यता का बारे में राष्ट्रपतिजी के अनुकूल आदेश भा अनुशंसा के उमेद हमनी का भइल बा । बाकिर संविंधान का अष्टम अनुसूची में भोजपुरी के समावेश का सन्दर्भ में, राष्ट्रपतिजी चिन्ता व्यक्त कइलीं कि भोजपुरी के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल कइला पर ब्रजी आ अवधी के भी माँग उठी, आ तब हिन्दी कहाँ रही ?

'हिन्दी कहाँ रही ?' – राष्ट्रपतिजी के एह चिन्ता पर विचार कइल जरूरी बा । अइसने चिन्ता जब-तब आउरो लोग करत रहेला । एह चिन्ता के कारण पर गौर करेके होई, आ हिन्दी के सही स्वरूप पर विचार करेके होई । हिन्दी एह देश के राष्ट्रभाषा ह, त का ई जरूरी बा कि ऊ कवनो क्षेत्र के मातृभाषा होखबे करे ? सही स्थिति समझ के एह सवाल पर विचार करेके होई ।

जैसलमेर से भागलपुर तक के लगभग डेढ़ दर्जन क्षेत्रीय मातृभाषा सभन खातिर 'बोली' भा 'लोकभाषा' विशेषण के जरूरत शायद एह से पड़ गइल होई कि हिन्दी एह पूरा क्षेत्र के मातृभाषा कहाये लागल रहे । हिन्दी त वस्तुत: आ मूलत: एगो भाषा-समुच्चय के नाम ह, जे कवनो क्षेत्र-विशेष से ना बँध के, राष्ट्रीय भाषा का रूप में विकसित भइल, आ एह देश के सार्वदेशिक अभिव्यक्ति आ सम्पर्क के माध्यम बनल । बाकिर राष्ट्रभाषा का रूप में मान्यता खातिर ज़रूरत से तनी जादहीं सचेत हिन्दी के हिमायती लोगन का बुझाइल जे एह देश के विशालतम क्षेत्र आ सर्वाधिक बड़ जनसंख्या के मातृभाषा पद ओकरा राष्ट्रभाषा पद के स्वीकृति के आधार बन जाई । एही से, वास्तविकता से अलग हट के, हिन्दी के एह विशाल क्षेत्र के मातृभाषा बतावल गइल आ जनसंख्या के बल देखावल गइल । बाकिर पासा उल्टा पड़ गइल, आ नतीजा ई भइल कि 'हिन्दीभाषी क्षेत्र' आ 'अहिन्दीभाषी क्षेत्र' के भिन्न–भिन्न मानसिकता·पनक उठल,

जे एह देश में भाषिक विवाद के कारण बन गइल ।

बीस-बाइस बरिस पहिले, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ का तत्वावधान में अहिन्दी-भाषी लेखकन के एगो सद्भावना-मण्डल बिहार के दौरा पर आइल रहे । एह सद्भावना- मण्डल के तीन गो सदस्य रहले – तमिल के लेखक अखिलन, मलयालम के लेखक कृष्ण वाडियर आ बंगला के लेखक विमल मित्र। एगो स्वागत-समारोह में बोलत विमल दा एगो गजब के सवाल उठा दिहले । ऊ कहले कि रउआ सभे हमनी के अहिन्दी-भाषी काहे कहत बानीं ? का हिन्दी हमार ना ह ? हिन्दी का राउरे ह ? हिन्दी जब राष्ट्रभाषा ह त ऊ हमार-राउर सभकर ह, आ एह देश के कवनो नागरिक के अहिन्दी-भाषी कहल एह देश के राष्ट्रीयता आ एह देश के राष्ट्रभाषा के अपमान कइल होई । विमल मित्र के एह कहनाम पर सभकर बोलती बन्द हो गइल । सोचे के बात बा कि हिन्दी के सही स्वरूप का बा । अगर सही ढंग से सोचल जाई त आज एह देश में जवन भाषिक विवाद रह-रहके उठत रहल बा ऊ अपने-आप खतम हो जाई ।

कहल जाला कि दक्षिण में हिन्दी के जे विरोध बा ऊ राजनीतिक बा । ठीके बात बा । एह देश के कवनो कोना में हिन्दी के जे भी विरोध बा ऊ राजनीतिक बा। बाकिर, हमनी के इहो सोचे के होई कि कहीं हिन्दी के समर्थन भी त राजनीतिक नइखे ? अगर एह समर्थन के कारण, सोच आ चाल राजनीतिक होई, अगर एह समर्थन के उद्देश्य राजनीतिक होई, त विरोधो राजनीतिक होई ।

1971, 1981 आ 1991 के जनगणना का बेरा मातृभाषा का सवाल पर दुर्भाग्यपूर्ण विवाद उभरत रहल बा, जवना से हिन्दी आउर तथाकथित हिन्दीभाषी क्षेत्र के लोकभाषा सभन के परस्पर स्नेह-सौहार्द में व्यवधान पड़त रहल बा । एकरा खातिर, हिन्दी के अतिशय हिमायती लोगन से जादे, भारत सरकार दोषी बा जवना पर हम आगे विचार करब । बाकिर, इहाँ तत्काल, मातृभाषा का बारे में कुछ महत्वपूर्ण पहलू बिचारल जरूरी बा । आ कुछ अहम सवाल पर सोचहीं के पड़ी । जनगणना में मातृभाषा का रूप में हिन्दी लिखावल जाय, एकरा पक्ष में ई दलील दिहल जात रहल बा कि अगर जो मातृभाषा भोजपुरी, अवधी, मैथिली, छत्तीसगढ़ी आदि लिखावल जाय त हिन्दी भाषियन के संख्या घट जाई, आ हिन्दी-विरोधी लोग के ई कहे के मौका मिल जाई कि हिन्दी-भाषी लोग के संख्या कम बा । अब इहें हिन्दी का समर्थन में राजनीतिक उद्देश्य सामने आ गइल।

रउआ वोट के बल से हिन्दी के बचाइब ? का रउआ समझत बानी कि हिन्दी रउरे वोट से खड़ा बा ? हिन्दी खड़ा बा ओह लोगन के इच्छा से जेकरा के रउआ अहिन्दी-भाषी कहीले । हिन्दी के खड़ा कइले राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी आ उनके जइसन देश के अहिन्दी-भाषी नेता । आ हिन्दी के खड़ा कइलस कश्मीर से लेके कन्याकुमारी तक आ द्वारिका से लेके कामरूप तक के विशाल क्षेत्र में फइनल एह देश के जनता । एही हिन्दी का सहारे उत्तर के अनपढ़ किसान रामेश्वरम के तीरथ करत आइल आ दक्षिण के दूर-देहात के अंग्रेजी से अपरिचित किसान बदरिकाश्रम के तीरथ करत रहल आ गयाजी में अपना पितरन के पिण्डा पारत रहल । हिन्दी खड़ा बा एह से कि ऊ एह देश के अनिवार्यता बा । हिन्दी के बिना ई देश चल नइखे सकत । रउआ ई सोचल भुला जाईं कि हिन्दी रउरा जनसंख्या का बल

से आ वोट से खड़ा हो गइल । रउआ हमरा के माफ करब । चमगादड गाछ में उलटे लटकल रहेला त बूझेला कि सउँसे आसमान हमरे गोड़ पर टिकल बा । हमनी के गलत समर्थन दीहल आ गलतबयानी कइल छोड़ीं । एह से हिन्दी के अहित होता, आ ओह लोकभाषा सभन के अहित त होते बा, जेकर मातृभाषा पद छीन के रउआ हिन्दी के ध रावत रहल बानी । रउरा, हिन्दी के समर्थन में राजनीतिक उद्देश्य से गलतबयानी करत, हिन्दी के मातृभाषा कहत रहब, त दक्षिण से ई बराबर आवाज उठत रही कि उत्तर के मातृभाषा दक्षिण के ऊपर थोपल जा रहल बा ।

क्षेत्रीय भा लोकभाषा सभन का विकास से हिन्दी के बाधा होई, ई सोचल गलत दृष्टिकोण बा । हिन्दी के असली बाधा त अंग्रेजी बा । अंग्रेजी आ अंग्रेजियत के बढ़त प्रभाव असली चिन्ता के कारण बा । हिन्दी के हिमायती लोगन का ओह सब क्षेत्रीय भाषा के विकास से घबराये के जरूरत नइखे, जेकरा के ऊ लोग आज ले 'भाषा' नाम देवे से कतरात रहल बा आ 'बोली' भा जादे–से–जादे 'लोकभाषा' कहके ओकर उपेक्षा करत रहल बा । बंगला, गुजराती, मराठी, तेलगु, तमिल आदि भारत के समृद्ध भाषा सभन का ओर से भी जे विरोध भाव हिन्दी का मिलेला, ओहू से चिंतित होखे के कवनो कारण नइखे, काहे कि हिन्दी अपना के अइसन माध्यम साबित कर चुकल बा, जवना में अनूदित होके ओह भाषा सभन के उत्कृष्ट साहित्य के अखिल भारतीय प्रसार मिलत रहल बा । हिन्दी के चिंता हो सकत बा त खाली अंग्रेजी आ अंग्रेजियत से, जवना के लहर एह घड़ी अइसन असरदार बा, जइसन अंगरेजनों का जमाना में ना रहै ।

एगो समय रहे जब अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी, भोजपुरी आ मैथिली जइसन लोकभाषा के साहित्य से हिन्दी के साहित्यिक स्वरूप खड़ा भइल । आ एगो उहो जमाना रहे जब जनपदीय आन्दोलन के जरूरत हिन्दी के संरक्षक लोग का महसूस भइल आ क्षेत्रीय भाषा सभन के विकास के बढ़ावा मिलल । बाकिर आज जब कि भोजपुरी जइसन क्षेत्रीय भा जनपदीय भाषा सभन में साहित्य के सिरिजना धड़ल्ला से हो रहल बा, त अब शंका उठावल जाता कि भोजपुरी आदि भाषा सभन के विकास से हिन्दी के अहित होई । एह परस्पर–विरोधी चिन्तन के आधार समुझ में नइखे आवत ।

कहल जाता कि भोजपुरी के विकास से स्वतंत्र भाषावाद जनम ले रहल बा । इहो तर्क हमरा नइखे बुझात । एह देश के कवन भाषा अपना आप में आज ले स्वतंत्र रहल बा ? संस्कृत जइसन समृद्ध भाषा त अपना के प्राकृत से अलग रखिए नइखे सकल । 'शाकुन्तल' के स्त्री-पात्र प्राकृत में बोलत बा । तमिल जइसन द्रविड़ परिवार के भाषा में आधा शब्द संस्कृत मूल के बा । हिन्दी के त बाते छोड़ दीं । हिन्दी के उपजीव्य एह देश के छोट–से–छोट आ बड़–से–बड़ कवन भाषा नइखे रहल ? कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आ विद्यापति अगर ना रहिते त हिन्दी कहाँ रहित ? डी० एल० राय के नाटकन के जवन अखिल भारतीय प्रसिद्धि हिन्दी से मिलल ऊ बंगला से सम्भव ना रहे । बंगला के प्रसिद्ध उपन्यास 'गणदेवता' पर जवना घड़ी ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलल ओह घड़ी ले ओह महान कृति के बंगला में पुस्तकाकार प्रकाशन ना हो सकल रहे, जब कि हिन्दी में ओकर संस्करण आ चुकल रहे । आज पंजाबी भाई लोग का हिन्दी में उतर गइला पर हिन्दी का भाषिक रूप में जवन परिवर्तन आइल बा ऊ सभका सामने बा ।

जहाँ ले मातृभाषा के सवाल बा, ई स्वस्थ मन से सोच लेवे के जरूरत बा कि

हमनी के मातृभाषा का ह । भोजपुरी ह ? मैथिली ह कि ना ? अवधी आ छत्तीसगढ़ी ह कि ना ? अगर जो भोजपुरी ह कि ना ? मैथिली ह, मगही, अवधी आ बुन्देलखण्डी ह, आ एह सब भाषा सभन में साहित्य के सिरिजना हो रहल बा, त मातृभाषा का रूप में हिन्दी लिखावे के बात कहाँ ले सही होई ? आज जवना क्षेत्र के हिन्दी भाषी कहल जाला, ओह में कहाँ के मातृभाषा हिन्दी बा ? हमार त ई दावा बा कि कहीं के मातृभाषा हिन्दी नइखे । दिल्ली, गुड़गाँव आ मेरठ का दूर देहात में जवन भाषा बोलल जाता उहो ओह खड़ी बोली से भिन्न बा, जवना के आज हमनी का हिन्दी कहीले । हिन्दी के विकास एह देश के भाषा-समुच्चय के अवदान का रूप में भइल बा आ ओकरा के कवनो क्षेत्र-विशेष से मातृभाषा के रूप में जोड़ल हिन्दी के व्यापक स्वरूप के प्रतिकूल होई । हिन्दी एह देश के कवनो क्षेत्र विशेष के मातृभाषा ना ह, ऊ सउँसे देश के, सार्वदेशिक भाषा ह । ई दोसर बात बा कि जवना क्षेत्र के हमनी हिन्दी- भाषी कहीले ओह क्षेत्र में, जैसलमेर से लेके भागलपुर तक के, नागर जीवन में हिन्दी के व्यवहार मातृभाषो से जादे होला आ हमनी शहर में रहेवाला लोग जादे हिन्दीए के व्यवहार करीले। बाकिर तेहू पर, हिन्दी हमनी का घरन में ना बोलल जाला । उहाँ त भोजपुरिए आदि मातृभाषा सभन के राज बा । एह से सही स्थिति के सही ढंग से समझल बहुत जरूरी बा ।

असल में हरियाणवी, ब्रज, अवधी, छत्तीसगढ़ी, बुन्देलखण्डी, मगही, मैथिली आ भोजपुरी, अइसन बोली ना ह, जवना के खाली हिन्दी के बोली कह देला से समस्या सझुरा जाई । कुछ लोग समुझेला कि एह सब भाषा सभन के हिन्दी के बोली मान लिहला से हिन्दी एगो मजबूत भाषा कहाए के अधिकार पा जाई । बाकिर ई खाली भरम बा । एह सब भाषा के ताकतवर भइला से हिन्दी के ताकते बढ़ी, हिन्दी के खिलाफन ना होई । अंग्रेजी जइसन बलवान भाषा का रहते आजुओ वेल्स आ आयरलैण्ड के लोग अपना मातृभाषा केल्टिक के व्यवहार करेलन । जब प्रिंस आफ वेन्स दीक्षान्त समारोह का मौका पर वेल्स युनिवर्सिटी जालन त उनका 'केल्टिक' भाषा में कुछ बोलहीं के पड़ेला । संसार के एगो सबसे बलवान भाषा अंग्रजी जब केल्टिक जइसन कमजोर भाषा के ना मिटा सकल त ई कइसे उमेद कइल जा सकत बा कि हिन्दी एह सब क्षेत्रीय बोलियन के भा लोकभाषा सभन के दबा दी । जहाँ तकले भाषा आ बोली के सवाल बा, भाषा आ बोली के फरक साफ-साफ अलग करेवाली कवनो रेखा नइखे । जनजीवन के सहारा पाके आ साहित्य से समृद्ध होके बोली' 'भाषा' के रूप ले लेला ।

त मातृभाषा का रूप में भा क्षेत्रीय भाषा का रूप में भोजपुरी के भा तथाकथित हिन्दी भाषी क्षेत्र के दोसर-दोसर भाषा सभन के जे विकास हो रहल बा ओकरा मान्यता से हरके के जरूरत नइखे । एह से हिन्दी के कवनो हरज ना होई । तथाकथित हिन्दी क्षेत्र के तथाकथित बोलियन में जे साहित्य के सृजन हो रहल बा, ऊ कुछ अइसन जानदार बा आ ओकर गति अइसन सन्तुलित बा कि ओकरा स्वीकृति मिलबे करी, आ अइसन हालत में ऊ कुल भाषा एगो हिन्दी में ना गिनाई, बलुक अलग-अलग भाषा के रूप में गिनल जाई । एक देश के भाषिक नक्शा अगिला दस बरिस में बदल जाई, आ ई केहू रोक नइखे सकत । ऊ दिन एह देश खातिर आ राष्ट्रभाषा हिन्दी खातिर बड़ा सौभाग्य के दिन होई । काहे कि, तब हिन्दी एह देश के कवनो क्षेत्र-विशेष से जुड़ल

ना रह जाई आ तबे हिन्दी के राष्ट्रीय स्तर पर, आत्मिक स्वीकृति मिल सकी ।

बाकिर जइसन कि हम पहिलहीं संकेत कर चुकल बानी, भारत सरकार एह तथाकथित हिन्दीभाषी क्षेत्र के क्षेत्रीयभाषा भा लोकभाषा सभन के सूली पर चढ़ावे से बाज नइखे आइल, आ जनगणना में इन्हनीं के जनसंख्या शून्य क के उलट गंगा बहावे के जतन में लागल बा । बिहार आ उत्तरप्रदेश के पूर्वांचल के प्रमुख क्षेत्रीय भाषा भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि अपना-अपना विशिष्टता का बदौलत समूचे देश में आपन अलगे अस्तित्व बनवले बा, बाकिर सरकारी दुर्नीति आ क्षेत्रीय भाषा सभन के कुचले के प्रवृत्ति का वजह से इन्हनीं के जनगणना के रेकर्ड से मेटाइये दिहल गइल बा ।

क्षेत्रीय भाषा सभन के जन-आकांक्षा के कुचल देवे के उद्देश्य से भारत सरकार ई स्पष्ट आदेश देले बा कि ई भाषा सब हिन्दी के बोली ह, एह से अगर जनगणना में केहू आपन मातृभाषा भोजपुरी, मगही, मैथिली आदि लिखावे त ओकरा के हिन्दी में मिला के गिनल जाय । जहाँ ले भोजपुरी के सवाल बा, त ई उत्तर भारत के प्राचीनतम भाषा में एक रहल बा । एकर पहिले आपन अलग लिपि कैथी रहल बा । एकर साहित्यिक परम्परा लमहर आ साहित्य-भंडार समृद्ध बा । विश्वविद्यालय - स्तर पर एकर पढ़ाई एम० ए० तक होखे लागल बा । बिहार सरकार एह भाषा के अलग अकादमी स्थापित कइले बा, जे पिछला बीस-बाईस बरिस से क्रियाशील बा । आकाशवाणी के अनेक केन्द्र से भोजपुरी के कार्यक्रम आपन रंग जब-तब जमावत रहेला । आ एकरा में बहुते फिल्मन के निर्माण भइल बा । तब फेर एकरा के हिन्दी के बोली माने के का औचित्य बा ? 1981 आ 1991 के जनगणना के रपट में मैथिली, भोजपुरी, मगही आदि भाषा-भाषियन पर टिप्पणी तक नइखे कइल गइल आ ना एह भाषा-भाषियन के जनसंख्या के कवनो उल्लेख बा ।

पहिले अइसन स्थिति ना रहे । पं० जवाहरलाल नेहरू का पहल पर भारत सरकार, 1991 में मातृभाषा के स्पष्ट परिभाषा घोषित कइले रहे, आ ओकरे आधार पर भोजपुरी, मगही, अवधी, मैथिली, छत्तीसगढ़ी आदि सहित उत्तर भारत के सब क्षेत्रीय भाषा-भाषियन के अलग-अलग गणना करेके आदेश देले रहे, जवना के पाठ इहाँ उद्धृत कइल जाता–

''जनगणना के क्रम में लोग जैसा कहते हैं, उसी प्रकार मातृभाषा का उल्लेख, बोली सहित, पूर्णरूपेण करें । मातृभाषा वह भाषा है, जिसमें किसी व्यक्ति की माँ बाल्यावस्था में उससे बोलती है या वह भाषा है जो मुख्यतः परिवार में बोली जाती है । अगर बाल्यावस्था में ही माँ की मृत्यु हो गई हो तो उस भाषा का उल्लेख करें जो इस व्यक्ति की बाल्यावस्था में उसके घर में मुख्यतः बोली जाती हो । बच्चे या गूंगे-बधिर के सम्बन्ध में उस भाषा का उल्लेख करें जो उन सबों की माँएँ बराबर बोलती हों ।''

फलस्वरूप, बिहार में, 1991 के जनगणना में भोजपुरी भाषियन के संख्या 78 लाख, मैथिली भाषियन के संख्या 50 लाख आ मगही भाषियन के संख्या 28 लाख रेकार्ड कइल गइल रहे । भोजपुरी-भाषियन के ई आँकड़ा करोड़न में गइल रहित, अगर जो आम आदमी के दिमाग में ई भ्रांत धारणा ना बइठावल गइल रहित कि भोजपुरी त हिन्दीए के बोली ह, आ मातृभाषा हिन्दी ना लिखावल जाई त हिन्दी राष्ट्रभाषा ना बन

सकी । तेहू पर, हिन्दी का समर्थन में एह गलत प्रचार का बावजूद, आ भोजपुरी का समर्थन में कवनो प्रचार ना भइलो पर, सिर्फ बिहार में भोजपुरी-भाषियन के आँकड़ा 78 लाख पहुँचल रहे । पूर्वांचलीय उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश के भोजपुरी भाषी जिलन के आँकड़ा के जानकारी हमरा नइखे ।

बाकिर आगे चलके लोकभाषा सभन के दबा के राखे के नीति का चलते, क्षेत्रीय भाषा-भाषियन के इहो जनसंख्या भारत सरकार का ना सहाइल, आ मातृभाषा के परिभाषा वाला उपर्युक्त आदेश वापस ले लिहल गइल । अतने ना, आदेश इहो भइल कि भोजपुरी, मैथिली, अवधी आदि उत्तरभारत के क्षेत्रीय भाषा सभन के हिन्दी मान के ओह सभन के हिन्दी में मिला के गणना कइल जाय । 1971 का बाद से जे जनगणना भइल बा, ओकरा में लोगन के मातृभाषा भोजपुरी मगही, मैथिली आदि गणना-पत्र पर लिख त लिहल जाला, बाकिर ओकरा के हिन्दी मान के गिन लिहल जाला, आ रपट तैयार होखे से पहिलहीं समूचा गणना-पत्र नष्ट कर दिहल जाला । ई एह बात खातिर कइल जाला कि विभिन्न क्षेत्रीय भाषा-भाषी लोग अपना सही जनसंख्या के अनुमान ना लगा सके आ ओह आधार पर सरकार के अपना न्यायोचित माँग खातिर बाध्य ना कर सके । भारत सरकार, अइसन कदम हिन्दी के बढ़ावा देवे के नीयत से उठावत होखे, से बात नइखे । भारत सरकार में आज ले अंग्रेजी का आगा, हिन्दी के के पूछत बा ? अइसन नीति हिन्दी का समर्थन में ना अपनावल जाला, उत्तरभारत के क्षेत्रीय भाषा सभन के प्रगति रोक राखे खातिर अपनावल जाला, जेमें संविधान के अष्टम् अनुसूची में भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषा सभन के शामिल करके मांग जोर ना पकड़ सके, आ साहित्य अकादमी में मान्यता के सवाल मत खड़ा होखे पावे ।

आश्चर्य के बात ई बा कि उत्तर भारत के ई सब क्षेत्रीय भाषा-भाषी लोग, आ खास के भोजपुरी-भाषी लोग, हिन्दी के राष्ट्रभाषा आ सम्पर्क भाषा का रूप में सम्मान करत रहल बा, अपना मातृभाषो से जादे हिन्दी के पूजत रहल बा, आ हिन्दी के समृद्ध करे के दिसाईं आपन खून–पसेना एक करत रहल बा, तेहू पर उनका मातृभाषा के सूली पर चढ़ा दिहल गइल बा ।

बाकिर एह स्थिति में बदलाव आई, जरूर आई । बदलाव एह से आई कि मातृभाषा का सवाल पर ''साँच'' भोजपुरी आदि क्षेत्रीय भाषा सभन का पक्ष में बा । एकरा खातिर आन्दोलन करेके होई, जबर्दस्त आन्दोलन । आन्दोलन शुरू बा, आ उत्तरोत्तर एकर रूप प्रखर होत जा रहल बा ।

भोजपुरी आन्दोलन का पाछा कबो कवनो राजनीतिक उद्देश्य नइखे रहल । राष्ट्रीय जीवन के सुर में, सुर मिलावे का काम में, भोजपुरिया लोग आ भोजपुरी भाषा बराबर आगे रहल बा । 'बटोहिया' जइसन राष्ट्रगीत 1912 में रचाइल रहे । आ ई दावा का साथे कहल जा सकत बा कि राष्ट्र के समग्रता के जवन आ जइसन अभिव्यक्ति 'बटोहिया' में भइल बा, साइत कवनो दोसरा राष्ट्रगीत में नइखे हो सकल । 'बटोहिया' के रचना भोजपुरी सोच आ दृष्टिकोण के अनन्य प्रतीक बा ।

पिछला बीस-पचीस बरिस में भोजपुरी का काम में जे प्रगति भइल बा, ऊ सर्वथा संतोषजनक बा । लेखन का दिसाईं, प्रकाशन का दिसाईं, संगठन का दिसाईं, आन्दोलन का दिसाईं आ मान्यता का दिसाईं भोजपुरी के डेग पिछला पचीस बरिस में

बहुत आगे बढ़ल ह । हो सकेला जे एह यात्रा के गति जतना चाहत होखे ओतना तेज ना हो सकल होखे । बाकिर हमरा ई कहत बड़ा खुशी हो रहल बा कि भोजपुरी-विकास का एह यात्रा में कवनो डेग गलत नइखे उठल, आ हमनी का बहुत स्वस्थ आ सही राह पर चल रहल बानीं ।

भोजपुरी में साहित्य सर्जना के स्थिति अब कुछ अइसन हो गइल बा कि ऊ एह देश के कइएक मान्यताप्राप्त भाषा सभन से कहीं आगे बा । भोजपुरी के साहित्यिक जागरूकता एह स्तर पर पहुँच चुकल बा कि ओकरा के नकारल अब सम्भव नइखे । एह भाषा के बोलेवाला लोग के चेतना-बोध के ध्यान में राखत संविधान के अष्टम अनुसूची में एकर स्वीकृति आ एकरा साहित्यिक विकास के ध्यान में राखत एकरा साहित्य अकादमी से मान्यता मिल के रही । राष्ट्रीय स्तर पर आपन स्थान बनावे खातिर भोजपुरी-भाषी मनीषा अपना सृजनात्मक क्रियाशीलता में दृढ़ संकल्प का साथे लागल बा । एकर भाषिक आ संवेदानात्मक क्षमता पोढ़ हो चुकल बा । अपना गतिशील भंगिमा, आधुनिकता के अभिव्यक्ति, अभिव्यक्ति के लायक भाषिक रूपाकार आ नया शिल्प प्रयोग का दृष्टि से भोजपुरी लगातार प्रगति कर रहल बा ।

समस्या त भोजपुरी का सामने बहुत बा । भाषा के समस्या, भाषिक एकरूपता के समस्या, वर्तनी के समस्या, व्याकरणिक समाहार के समस्या, साहित्य के समस्या, साहित्य रचना के समस्या, लोकाश्रयिता के समस्या, आधुनिक शिल्प आ शैली के समस्या, लेखन के समस्या, प्रकाशन के समस्या, संगठन के समस्या, अर्थ के समस्या, आ सबसे बढ़के राजनीतिक स्तर पर मान्यता का दिसाईं प्रयास के समस्या । ई कुल समस्या कवनो भाषा का सामने नइखे ? भोजपुरी अपना एह कुल समस्या से जूझ रहल बा, आ दृढ़ संकल्प लेके जूझ रहल बा । संकल्प रही त कुल समस्या के समाधान अपने आप होखत चली । सब काम आपन समय से होखेला । निष्ठा आ संकल्प रहे के चाहीं । हिम्मत आ धीरज रहे के चाहीं । आ एकर कमी भोजपुरी में नइखे । धन्यवाद !

–पाण्डेय कपिल

❑

अध्यक्ष परिचय

डा० उदय नारायण तिवारी- जन्म 1903 ई0 में बलिया जिला के पीपरपाँती गाँव में भइल रहे । पढ़ाई लिखाई प्रयाग, आगरा आ कलकत्ता विश्वविद्यलाय में भइल । मुख्य कार्य क्षेत्र रहल भाषा विज्ञान । उहाँ के शोध प्रबन्ध-'भोजपुरी भाषा का उदगम और विकास' बहुते लोकप्रिय भइल । तिवारी जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के संचालकन में से एक रहलीं । प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर आ जबलपुर विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान के अध्यक्ष पद के सुशोभित कइलीं । देस के कतने संस्था के अध्यक्ष आ कई-कई रूप में जुड़ल रहलीं । लेखन के काम खातिर इहाँ के बहुते सम्मानो मिलल । अवकाश ग्रहण कइला के बाद जुलाई 1984 ई0 में इहाँ के निधन हो गइल।
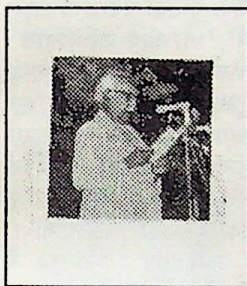
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के जन्म सन् 1907 ई0 में बलिया जिला के 'आरत दूबे का छपरा' गाँव में भइल रहे । इहाँ के उच्चकोटि के निबन्धकार, उपन्यासकार, आलोचक, चिन्तक आ शोधकर्त्ता रहीं । 'वाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'अनामदास का पोथा' आ ' पुनर्नवा' प्रसिद्ध उपन्यास बड़ुए । आलोचनात्मक ग्रंथन में - ' हिन्दी साहित्य की भूमिका', हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'कबीर', 'नाथ संप्रदाय' आ कलिदास की साहित्य योजना' प्रमुख बा त ललित निबंधन में 'अशोक के फूल', नाखून क्यों बढ़ते हैं' 'आम फिर बौरा गए है', आ 'कुटज' में उहाँ के विद्वत्ता के दर्शन हो जाता । शान्ति निकेतन में आपन नोकरी शुरू करत उहाँ के 40 से 50 तक हिन्दी भवन के निदेशक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष, चंडीगढ़ में विभागाध्यक्ष और प्रोफेसर पद पर कार्य कइलीं । भारत सरकार के ओर से 1957 में 'पद्मभूषण' के उपाधि से सम्मानित भइलीं । एकरा अलावे बहुते सरकारी गैर-सरकारी पद के सुशोभित कइलीं आ सम्मानित भइलीं । इहाँ के निधन सन् 1978 ई0 में हिन्दी ग्रंथ अकादमी, उ0 प्रदेश के अध्यक्ष पद पर रहते हो गइल ।

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय के जन्म सन् 1910 ई० में बलिया जिला के उजियार गाँव में भइल रहे । संस्कृत साहित्य, प्राचीन इतिहास आ पुरातत्व में इहाँ के बहुत गहन अध्ययन रहे । कई विश्वविद्यालय में अध्यापन के काम कइलीं । कई बेर यूरोप अमेरिका चीन आदि देशन के भ्रमण कइलीं । इहाँ के सौ से अधिक किताब प्रकाशित बा । इहाँ के ख्याति अंग्रेजी पुस्तकः 'इन्डिया इन कालिदास', 'विमेन इन ऋगवेद' से भइल । हिन्दी में 'खून के छींटे इतिहास के पन्नोंपर', 'कालिदास और भारत' भाग-1 एवं भाग-2, 'विश्वसाहित्य की रूपरेखा' 'भारतीय संस्कृति की कहानी' आ ' अंग्रेजी साहित्य का इतिहास' प्रसिद्ध पुस्तक बड़ुए । एकरा अलावे संस्मरण, निबन्ध आ फीचरन के संग्रहो कइगो बा जे स्मरणीय बड़ुए । अध्यापन के अलावे पुरातत्व में विशेष रुचि रहला के चलते इहाँ के पुरातत्व विभाग, प्रयाग संग्रहालय आ लखनऊ संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर काम कइलीं । काशी नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वावधान में प्रकाशित 'हिन्दी विश्वकोश' के संपादक मंडल के सदस्य रहल बानी । आखिरी समय में मारिशस के उच्चायुक्त के पद पर काम करत अंतिम साँस लिहलीं ।
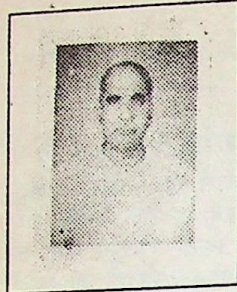
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के जन्म सन् 1910 ई० 'भाद्र कृष्ण अष्टमी के बलिया जिला के सोनवर्षा गाँव में भइल रहे। शिक्षा दीक्षा पूरा कइला के बाद उत्तर प्रदेश के सरकारी कालेजन में चालीस साल तक अध्यापन कइलीं । लोकसाहित्य आ लोक संस्कृति के प्रति इहाँ के विशेष रुझान रहल एह से इहाँ के जे भी विशिष्ट साहित्यिक अववान बा ऊ एही दिशाईं बा । लोक साहित्य लोक संस्कृति से संबन्धित इहाँ के कई दर्जन, पुस्तक हिन्दी आ अंग्रेजी में प्रकाशित बा, जवना में 'भोजपुरी साहित्य का इतिहास', भोजपुरी लोक-संस्कृति' आ भोजपुरी लोकगीत-तीन भाग' काफी महत्त्वपूर्ण काम बा । एकरा अलावे हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास- भाग-16 के संपादन राहुल जी के साथे कइले बानी । लोक साहित्य के प्रचार प्रसार खातिर इहाँ के यूरोप, अमेरिका, पश्चिमी जर्मनी आदि देशनी के दौरा कइलीं । लोकसाहित्य के श्रीवृद्धि खातिर लोक संस्कृति संस्थान के संचालन करत इहाँ के अंतिम सांस लिहलीं ।

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के जन्म गोपालगंज जिला के कृतपुरा गाँव में भइल रहे । कुशाग्र बुद्धि भइला के चलते इहाँ के एम० ए० हिन्दी के परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कइलीं । इहाँ के दू दर्जन के करीब भौतिक पुस्तक प्रकाशित भइल बा । इहाँ के पुस्तक 'अलंकार मुक्तावली', 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र', व्रजभाषा की विभूतियाँ' आ 'भाषा विज्ञान की भूमिका' प्रसिद्ध पुस्तक बड़ुए । एकरा अलावे एकांकी आ ललित निबंध के क्षेत्र में इहाँ के योगदान अमूल्य बा । विश्वविद्यालय आयोग के नेशनल फेलो के सम्मान पानेवाला पहिलका हिन्दी विद्वान रहीं । इहाँ के कई विश्वविद्यालय के कुलपति, कई नीति-निर्णायक समितियन के अध्यक्ष, सदस्य आ सलाहकार रहल बानीं । इहाँ के ग्रंथन पर अनेक पुरस्कार मिलल बा ।

डा० राम विचार पाण्डेय के जन्म सन् 1900 ई० में बलिया जिला में भइल रहे । इहाँ के हिन्दी साहित्य में एम० ए० कइला के बाद आर्युवेद के अध्ययन कइलीं आ पैंसठ वर्ष में एम. बी. बी. एस. कइलीं । भोजपुरी साहित्य के सेवा के साथे साथे डाक्टरी के माध्यम के जनतो के सेवा कइलीं । इहाँ के कविता पुस्तक 'बिनिया-बिछिया' 'आसा', आ ' गुरुम्हा' लोगन के बीच काफी लोकप्रिय भइल एगो नाटक 'शहीद मंगल पांडेय' प्रकाशित बा । जीवन पर्यन्त इहाँ के भोजपुरी सेवा में लागल रहलीं । अनेक संस्थन के जरिए इहाँ के भोजपुरी सेवा खातिर सम्मानित कइल गइल ।
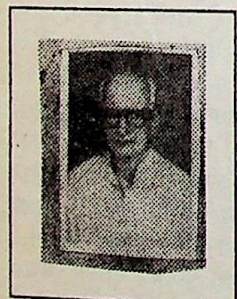
श्री ईश्वर चंद्र सिनहा के जन्म 6 जुलाई 1914 ई० के वाराणसी के ईश्वरगंगी मुहल्ला में भइल रहे । राजनीति आ पत्रकारिता में जीवन के शुरुआत कइलीं आ ' साप्ताहिक हिन्द केसरी, दैनिक 'सन्मार्ग' 'आज' आ जनवार्त्ता' अइसन बहुप्रचारित आ प्रसारित अखबारन में संपादक, सहायक संपादक आ प्रधान संपादक के रूप में ख्याति प्राप्त कइलीं । भोजपुरी संसद वाराणसी से इहाँ के भोजपुरी कहानी संग्रह 'गहरेबाजी' प्रकाशित बा । भोजपुरी संसद वाराणसी आ बहुते सरकारी गैर-सरकारी समितियन के अध्यक्ष आ सदस्य रहलीं । सहकारिता आन्दोलन से जुड़ल रहला के चलते नगरीय सहकारी बैंक वाराणसी के चेयरमैन के रूप में आपन सेवा अर्पित कइलीं ।

सामाजिक आ साहित्यिक सेवा खातिर इहाँ के हिन्दी उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर साहित्यकार मंच, आ भारतीय जन मंच परिषद से सम्मानित भइलीं । संप्रति वाराणसी में रहके साहित्य के सेवा कर रहल बानीं ।

डॉ० विवेकी राय के जन्म 20 नवम्बर 1923 ई० के बलिया जिला के भरौली गाँव (ननिहाल) में भइल रहे साहित्य में 'मनबोध मास्टर को डायरी' 'आ' फिर बैतलवा डाल पर' से साहित्यिक पहचान बनल जे उत्तरोत्तर शिखर का ओर बढ़त गइल । हिन्दी भोजपुरी में अबहीं ले कुल इक्यावन गो एकल आ संपादित ग्रंथ प्रकाशित बा । हिन्दी आ भोजपुरी के ललित निबंध कार के रूप में ख्याति प्राप्त डॉ० विवेकी राय जी भोजपुरी हिन्दी उपन्यास के एगो अमिट हस्ताक्षर बन गइल बानी । साहित्य सेवा खातिर भोजपुरी साहित्य मंडल, बक्सर अन्तर जनपदीय परिषद, विक्रमशीला विद्यापीठ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, मध्य प्रदेश शासन, हिन्दी संस्थान, उ० प्र० के अलावे बहुते संस्थन से सम्मानित आ पुरस्कृत । 'सोनमाटी' पर प्रेमचंद पुरस्कार, 'मंगलभवन' पर आनंद सम्मान', 'श्वेतपत्र' आ 'लोकऋण' पर उ० प० सरकार द्वारा पुरस्कार मिल चुकल बा । इहाँ के कई संस्थन के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आ सदस्य रूप में आपन सेवा अर्पित कइले बानीं । सम्प्रति अवकाश प्राप्त कइला के बाद से गाजीपुर में रहके साहित्य सेवा कर रहल बानीं ।

पं० गणेश चौबे के जन्म 5 दिसम्बर सन् 1912 ई० में मुजफ्फरपुर जिला के साँढ़ा डम्भर गाँव (ननिहाल) में भइल रहे । सन् 1932 ई० में मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास भइला का बाद पढ़ाई आगे जारी ना रह सकल । सरकार नौकरी में मन ना लागल त छोड़के गृहस्थी के काम शुरू कइलीं । एकरा बाद साहित्य लेखन का ओर रुझान भइल । मुख्यरूप से चौबे जी के रुझान भोजपुरी लोकसाहित्य आ ओकरा संस्कृति का ओर भइल । एही के चलते इहाँ के लोकगीत, लोककथा, बुझौबल, कहावत, रस्मोरेवाज लोकविश्वास आइसन विषयन से संबन्धित सामग्री संचय कइलीं जवन करीब सात हजार पृष्ठन में बा । इहाँ के लिखल करीब अढ़ाई सौ लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित बा । 'भोजपुरी के भोजपुरी के प्रकाशित ग्रंथ', भोजपरी कुछ समस्या आ समाधान' आ भोजपुरी प्रकाशन के सह बरिस' प्रकाशित बा । एकरा अलावे Bihar in Folk lore study के संपादन डा0 एल० पी० विद्यार्थी के साथे कइलीं । एकरा अलावे बहुते पत्र-पत्रिका आ पुस्तकन के संपादक मंडल के सदस्य रहल बानी । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के वैज्ञानिक जा तकनीकी शब्दावली समिति के सदस्यो रहलीं। इहाँ के सबसे महत्त्वपूर्ण काम बा- 'भोजपुरी शब्दकोश' जवना में करीब पच्चीस हजार भोजपुरी शब्दन के संग्रह बा जवना के प्रकाशन, साहित्य अकादमी दिल्ली से हो रहल बा ।

साहित्य सेवा खातिर सरकारी गैर-सरकारी संस्था सब इहाँ के सम्मानित अभिनन्दित कइले रहे । भोजपुरी साहित्य के सेवा करत इहाँ के निधन 1997 में हो गइल ।
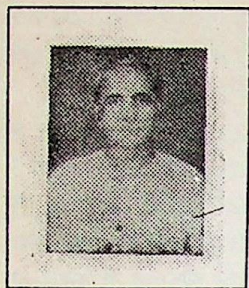
आचार्य विश्वनाथ सिंह के जन्म एक अगस्त सन् 1928 ई० में भोजपुर जिला के चौगाई गाँव में भइल रहे । पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान स्वर्णपदक के साथ पवला के बाद इहाँ के अध्यापन कार्य बी० एन० कालेज से शुरू कहलीं । आ ए० एम० कालेज गया के प्रधानाचार्य पद से हाल ही सेवा मुक्त भइलीं हँ। हिन्दी में इहाँ के दूगो किताब पहिलका 'निर्गुणधारा' आ दोसरका 'नाटककार प्रसाद और उनका चन्द्रगुप्त' प्रकाशित बा । एकरा अलावे बहुत सा लेख प्रकाशित बा जवन पुस्तक रूप में नइखे छप सकल । भोजपुरी में लिखल 'मानक भोजपुरी वर्त्तनी' पुस्तक छपल बा । भोजपुरी बर्तनी प ई मानक दिशा निर्देशक पुस्तक बड़ुए । एकरा अलावे इहाँ के बहुत अच्छा आ उच्चकोटि के ललित निबंधकार बानीं । इहाँ के आरा से निकले वाली पत्रिका 'भोजपुरी' आ 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका' के संपादनो कइले बानी । सम्प्रति अवकाश प्राप्त कके गया में रह रहल बानीं ।
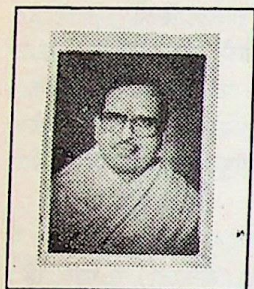
आचार्य विद्यानिवास मिश्र के जनम 14 जनवरी 1926 ई० गोरखपुर जनपद के पकड़डीहा गाँव में भइल रहे। इहाँ के ख्याति ललित निबंधकार के रूप में बा। ललित निबंध आ पुरा विद्या के सत्तर से उपर पुस्तक प्रकाशित बा । देश-विदेश में अध्यापन के अलावे कई गो संस्थन के निदेशक, काशी विद्यापीठ आ सपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के कुलपति पद के सुशोभित कइलीं । 'नवभारत टाइम्स' के प्रधान संपादको रहलीं । एकरा अलावे बहुते साहित्यिक संस्थन से संबन्धित बानीं । साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता' रउआ मिलल बा । संस्कृत भाषा सलाहकार मंडल के सदस्य बानीं । सरकारी-गैरसरकारी स्तर पर सम्मानित-पुरस्कृत भइलीं, जवना में प्रमुख बा भारतीय ज्ञानपीठ के 'मूर्त्ति देवी पुरस्कार', भारत सरकार के 'पद्मश्री', बिड़ला फांउडेशन के 'शंकर सम्मान', हिन्दी संस्थान उ० प्र० के 'भारत -भारती', संस्कृत अकादमी से 'विश्वभारती' सम्मान से सम्मानित हो चुकल बानीं । सम्प्रति हिन्दी मासिक पत्रिका 'साहित्य अमृत' के संपादन के अलावे 'इनसाइक्लोपिडिया ऑफ हिन्दूइज्म' लिख रहल बानीं ।

श्री मोती: बी० ए० के जन्म एक अगस्त सन् 1919 ई० के देवरिया जिला के बरेजी गाँव में भइल । इतिहास से एम० ए० कइला के बाद इहाँ के 'आम्रपाली 'आज' आ 'आर्यावर्त्त' के संपादकीय विभाग से जुडल रहीं । फेरू इहां के पंचोली आर्ट से गीतकार के रूप में जुड़लीं । एहिजो भोजपुरी के प्रतिष्ठा दिआवे के काम शुरू कइलीं आ पहिला बेर 'नदिया के पार' फिल्म में भोजपुरी गीत गावल गइल । हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू आ भोजपुरी भाषा में लेखन करत इहाँ के कई दर्जन पुस्तक के सृजन कइलीं जवना में मौलिक लेखन के अलावे अनुवाद साहित्य भी बा । भोजपरुी में लिखल, मोती के मुक्तक, सेमर के फूल, अब्राहम लिंकन, बन-बन बोले कोयलिया आ भोजपुरी सानेट के अलावे मेघदूत के अनुवादो प्रकाशित बा । शिक्षक आ कवि के रूप में इहाँ के बहुते सम्मानित आ पुरस्कृत कइल गइल बा । साहित्य के अलावे कइगो फिल्मन में गीत लेखन कइले बानी । सम्पति अवकाश प्राप्त कइला का बाद बरहज में रहके साहित्य सेवा क रहल बानीं ।
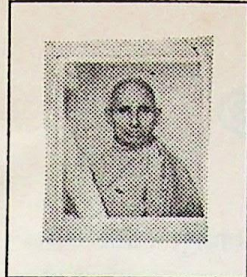
दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती के जन्म 14 जनवरी 1921 ई० में बक्सर जिला के मंगराँव गाँव में भइल रहे । इहाँ के पूर्व नाम रहे अवध बिहारी 'सुमन'। लरिकाइयें से साहित्य आ राजनीति के चस्का लागल जे सन्यासी बनला के बादो ले ना छूटल। बक्सर से प्रकाशित पत्र 'कृषक' से राउर लेखकीय यात्रा शुरू भइल जे अविराम चल रहल बा । स्वतंत्रता आन्दोलन आ किसान आन्दोलन में आपन भागीदारी निभवलीं । ओकरा चलते जेलयात्रा भी करे के पड़ल । 1948 में इहाँ के दूगो पुस्तक प्रकाशित भइल । पहिला 'मकरन्द' नाँव से जवना में हिन्दी के मुकतकन के संगृहीत कइल गइल बा । दोसरा की पुस्तक 'जेहल क सनदि' प्रकाशित भइल । ई पुस्तक भोजपुरी कहानी के पहिली पुस्तक ह । एकरा अलावे इहाँ के सबसे बड़ योगदान कविता के क्षेत्र में बा । इहाँ के लिखल भोजपुरी बृहद् महाकाव्य 'बउधायन' प्रसिद्ध बा । साहित्य सेवा खातिर इहाँ के बहुत मान-सम्मान मिलल बा । भोजपुरी अकादमी पटना से 'ताम्रपत्र' दे के सम्मानित कइल गइल बा आ 'बउधायन' 'रामनगीना राय' पुरस्कार से पुरस्कृत भइल बा । सम्प्रति वाराणसी में राजगुरुमठ शिवालाघाट में सन्यासी जीवन व्यतीत करत साहित्य सेवा आ समाज सेवा कर रहल बानी। भोजपुरी में लिखल उपन्यास जिनिगी के टेढ़ राह' धारावाहिक छपल बा ।

श्री भोलानाथ गहमरी के जन्म उत्तर प्रदेश के गहमर गाँव में 17 दिसम्बर सन् 1923 के भइल । गहमरी जी सरकारी सेवा में रहत साहित्य साधना कइलीं । अपना लमहर काव्य यात्रा में गहमरी जी के योगदान ऐतिहासिक बा । इहाँ के गीतन के पढ़ला से इहाँ के नया लय-छंद के कौशल, विम्बसृजन के सामर्थ्य, आ वातावरण निर्माण करे के क्षमता के दर्शन होला । अब तक भोजपुरी में इहाँ के तीन गो गीत संग्रह प्रकाशित हो के प्रशंसित हो चुकल बा । 'बयार पुरवैया', 'अंजुरी भर मोती' के बाद 'लोक रागिनी' में उत्तरोत्तर भोजपुरी कविता के शिखर का ओर ले जाये के प्रयास लउकत बा । साहित्य सेवा के अलावे इहाँ के फिल्म के माध्यम से भी साहित्य सेवा कइले बानी । आकाशवाणी, दूरदर्शन आ कैसेट से इहाँ के दर्जनो गीत जनता के बीच प्रतिष्ठित हो चुकल बा। एकरा खातिर इहाँ के कईगो साहित्यिक संस्था से सम्मान मिलल । आज-काल्ह अवकाश ग्रहण कइला के बाद गाजीपुर में रह के साहित्य सेवा कर रहल बानीं ।

आचार्य पांडेय कपिल के जन्म 24.9.1930 ई० में सारण जिला (बिहार) के शीतलपुर बरेजा गाँव में भइल रहे । हिन्दी में एम० ए० कइला का बाद सरकारी नौकरी में अइलीं । लेखन के शुरुआत छपरा से प्रकाशित साप्ताहिक 'नारद' से शुरू कइनी जे अवाध गति से आज ले चल रहल बा । अब ले इहाँ के लिखल आ अनुवादित हिन्दी आ भोजपुरी के कई गो पुस्तक छपल बा, जवना में 'आभास' (हिन्दी गीत संग्रह) भोर हो गइल, कह ना सकतीं आ फुलसुंघी (भोजपुरी) प्रमुख बा । लेखन के अलावे इहाँ के उरेह, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संपादन के काम कइलीं आ कर रहल बानीं । साहित्य सेवा खातिर इहाँ के विक्रमशिला विद्यापीठ आ हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सम्मानित कइल गइल बा । एकरा अलावे भोजपुरी अकादमी आ अखिल भारतीय भो० सा० सम्मेलन से पुरस्कृतो भइलीं । एकरा अलावे दर्जनों संस्थन से सम्मान आ मानद उपाधि मिलल बा । आजकाल अवकाश ग्रहण कइला के बाद साहित्य सेवा आ सम्मेलन पत्रिका के संपादन के अलावे भोजपुरी संस्थान के संचालन कर रहल बानीं ।

सम्पादक परिचय

1. आनन्द संधिदूत । जन्म 27.10 1949. गहमर, गांजीपुर (उत्तर प्रदेश) । सम्प्रति इलाहाबाद बैंक मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) में सेवारत। मुख्य रूप से कविता लेखन के साथेसाथे निबंध लेखन । भोजपुरी में 'एक कड़ी गीत' पुस्तकाकार प्रकाशित । एकरा अलावे सैकड़न गीत आ निबंध प्रकाशित बा जवन पुस्तकाकार होखे के प्रतीक्षा में । इहाँ के जरिए संपादित पुस्तकन्न के आपन महत्व बा ।

2. कृष्णानन्द कृष्ण । जन्म 2.7.1947. चाँदी (नरही चान्दी) भोजपुर । सम्प्रति सहायक अभियंता सिविल, बिहार सरकार के लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग में । मुख्य रूप से कहानी लेखन । भोजपुरी में 'एह देस में', 'रावन अबहीं भरल नइखे' गावँ बहुते गरम बा' आ 'हादसा' आ हिन्दी में 'एक सही निर्णय' (कहानी संग्रह) प्रकाशित । एकरा अलावे 'भोजपुरी कहानी विकास आ परंम्परा' 'भोजपुरी लघुकथाः सिद्धान्त आ समीक्षा' आ 'हिन्दी लघुकथा स्वरूप और दिशा' समीक्षा पुस्तक प्रकाशित । एकरा अलावे कई पुस्तक के संपादन । 'पुनः' अनियतकालीन पत्रिका के संपादन ।

3. भगवान सिंह भास्कर । जनम 20.10. 1949 लखराँव, सीवान (बिहार) । संप्रति बैक सेवा में सहायक प्रबन्धक । मुख्य रूप से कविता आ लोक साहित्य-लेखन। प्रकाशित किताबन में 'इन्द्रधनुष' (हि० कविता) 'लोक धर्म', 'भोजपुरी के विवाह गीत', 'मंगल गीत', आ 'भगवान गीता' प्रमुख बा। 'बयार' त्रैमासिक भोजपुरी पत्रिका के संपादन । एकरा अलावे यात्रा संस्मरण, साहित्य-इतिहास, लोक साहित्य आ विविध विषयन के दू दर्जन किताब प्रकाशन के प्रतीक्षा कर रहल बा ।

❐